मानवता के सामने विनाश का संकट

दुनिया आज एक ऐसे दौर से गुजर रही है जहां शक्ति प्रदर्शन और प्रतिशोध की राजनीति मानवता के भविष्य पर भारी पड़ती दिखाई दे रही है। पश्चिम एशिया में अमेरिका और ईरान के बीच बढ़ता सैन्य टकराव केवल दो देशों का संघर्ष नहीं रहा बल्कि यह पूरे विश्व के लिए चिंता का विषय बन गया है। जिस तरह से एक के बाद एक मिसाइल हमले ड्रोन हमले और बमबारी हो रही है उससे यह आशंका गहराने लगी है कि कहीं यह संघर्ष व्यापक युद्ध का रूप न ले ले। युद्ध का इतिहास हमेशा यही बताता है कि इसकी आग में केवल सैनिक ही नहीं बल्कि आम नागरिक भी झुलसते हैं और सभ्यता को भारी नुकसान उठाना पड़ता है।

हाल के दिनों में समुद्र और आसमान दोनों ही युद्ध के मैदान बन गए हैं। ईरान और अमेरिका के बीच बढ़ती सैन्य कार्रवाई ने पूरे क्षेत्र को अस्थिर बना दिया है। युद्धपोतों पर हमले तेल टैंकरों को निशाना बनाना और बड़े शहरों पर बमबारी यह संकेत देते हैं कि स्थिति लगातार खतरनाक होती जा रही है। इन हमलों में बड़ी संख्या में लोगों की मौत हो रही है और हजारों लोग घायल हो चुके हैं। सबसे दुखद पहलू यह है कि इन संघर्षों में मरने वाले अधिकांश लोग वे होते हैं जिनका युद्ध से कोई सीधा संबंध नहीं होता। वे केवल आम नागरिक होते हैं जो शांति से अपना जीवन जीना चाहते हैं। युद्ध केवल मानव जीवन को ही नहीं बल्कि आर्थिक और सामाजिक संरचना को भी गहरे स्तर पर प्रभावित करता है। जब बड़े देश युद्ध में उलझते हैं तो उसका असर पूरी दुनिया पर पड़ता है। व्यापार रुक जाता है तेल और ऊर्जा की कीमतें बढ़ जाती हैं और वैश्विक बाजार अस्थिर हो जाते हैं। वर्तमान संघर्ष में भी यही स्थिति देखने को मिल रही है। फारस की खाड़ी और मध्य पूर्व का क्षेत्र दुनिया के सबसे बड़े ऊर्जा स्रोतों में से एक है। यदि यहां युद्ध लंबा चलता है तो तेल की आपूर्ति प्रभावित होगी और इसका सीधा असर पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था पर पड़ेगा। भारत जैसे देश के लिए यह स्थिति विशेष चिंता का विषय है। भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों का बड़ा हिस्सा इसी क्षेत्र से आयात करता है। यदि युद्ध के कारण तेल की कीमतें बढ़ती हैं या आपूर्ति बाधित होती है तो इसका असर भारत की अर्थव्यवस्था पर पड़ेगा। पेट्रोल और डीजल की कीमतें बढ़ेंगी जिससे परिवहन महंगा होगा और इसका प्रभाव आम जनता की रोजमर्रा की जिंदगी पर पड़ेगा। महंगाई बढ़ने की संभावना भी बढ़ जाएगी और विकास की गति प्रभावित हो सकती है।

इसके अलावा मध्य पूर्व के देशों में लाखों भारतीय काम करते हैं। ये लोग वहां से अपने परिवारों के लिए पैसा भेजते हैं जो भारत की अर्थव्यवस्था के लिए भी महत्वपूर्ण है। यदि युद्ध की स्थिति गंभीर हो जाती है तो इन भारतीयों की सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है। कई बार ऐसे हालात में लोगों को अपने काम छोड़कर वापस लौटना पड़ता है जिससे उनके परिवारों पर आर्थिक संकट आ सकता है। इसलिए भारत के लिए यह जरूरी है कि वह अपने नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करे और कूटनीतिक प्रयासों के जरिए शांति की दिशा में योगदान दे। युद्ध का एक और गंभीर प्रभाव पर्यावरण पर पड़ता है। जब तेल टैंकरों पर हमले होते हैं या समुद्र में तेल का रिसाव होता है तो समुद्री जीवन को भारी नुकसान पहुंचता है। समुद्र में रहने वाले जीवों की बड़ी संख्या नष्ट हो जाती है और समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र को गहरा आघात पहुंचता है। इसके अलावा बमबारी और मिसाइल हमलों से शहरों का बुनियादी ढांचा नष्ट हो जाता है। अस्पताल स्कूल सड़कें और घर तबाह हो जाते हैं। इन सबको पोंछा बनाने में वर्षों लग जाते हैं इतिहास गवाह है कि युद्ध कभी भी स्थायी समाधान नहीं देता। पहले और दूसरे विश्व युद्ध ने पूरी मानवता को विनाश का भयावह अनुभव कराया था। करोड़ों लोग मारे गए और कई देशों की अर्थव्यवस्था बर्बाद हो गई। उसके बाद ही दुनिया ने शांति और सहयोग के महत्व को समझा और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं का गठन किया गया ताकि ऐसे संघर्षों को रोका जा सके। लेकिन आज भी जब बड़े देश शक्ति प्रदर्शन में लगे रहते हैं तो ऐसा लगता है कि इतिहास से सबक पूरी तरह नहीं लिया गया है। दुनिया के कई देश इस समय शांति की अपील कर रहे हैं। भारत भी लगातार यह कहता रहा है कि किसी भी समस्या का समाधान युद्ध नहीं बल्कि संवाद और कूटनीति से ही संभव है। यदि सभी देश संयम और धैर्य का परिचय दें तो टकराव को कम किया जा सकता है। कूटनीतिक बातों के माध्यम से विवादों को सुलझाना ही सभ्य और जिम्मेदार समाज की पहचान है। आज जरूरत इस बात की है कि दुनिया के शक्तिशाली देश अपनी जिम्मेदारी को समझें। शक्ति का उपयोग विनाश के लिए नहीं बल्कि शांति और स्थिरता के लिए होना चाहिए। यदि युद्ध की आग और फैलती है तो इसका परिणाम केवल एक क्षेत्र तक सीमित नहीं रहेगा बल्कि पूरी दुनिया को प्रभावित करेगा। ऐसे में यह आशंका भी व्यक्त की जा रही है कि कहीं यह संघर्ष तीसरे विश्व युद्ध की दिशा में कदम न बन जाए। मानवता का भविष्य तभी सुरक्षित रह सकता है जब देश आपसी मतभेदों को बातचीत के जरिए सुलझाने का रास्ता अपनाएं। युद्ध केवल विनाश को जन्म देता है जबकि शांति विकास और समृद्धि का मार्ग खोलती है। इसलिए समय की मांग है कि सभी देश संयम बरतें और युद्ध के बजाय शांति और सहयोग की दिशा में कदम बढ़ाएं। यही मानवता के हित में होगा और यही आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित और बेहतर दुनिया की नींव रखेगा।

बेटियों के सपनों को पंख दे रही योगी सरकार

डॉ. ज्ञानेश्वरी
लेखिका दिल्ली विश्वविद्यालय के हंसराज कॉलेज के संस्कृत विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर हैं।

उच्चस्तरीय शिक्षा, नवाचार और स्किल डेवलपमेंट योजनाओं से बेटियां बन रहीं आत्मनिर्भर

उत्तर प्रदेश में बेटियों को सुरक्षित माहौल देने के बाद योगी सरकार का लक्ष्य उन्हें आत्मनिर्भर और सशक्त बनाना है, ताकि उनके सपनों को पंख मिल सकें। इसके लिए सरकार शिक्षा और कौशल विकास के क्षेत्र में लगातार नए अवसर सृजित कर रही है। उच्चस्तरीय शिक्षा, नवाचार और उद्योगों की जरूरत के अनुरूप प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से प्रदेश की बेटियों को अपने सपनों को साकार करने का अवसर मिल रहा है। प्रदेश सरकार का लक्ष्य है कि बेटियां केवल पढ़ाई तक सीमित न रहें, बल्कि आधुनिक तकनीकी और व्यावसायिक कौशल के साथ रोजगार और उद्यमिता के क्षेत्र में भी आगे बढ़ें। इसी दिशा में राज्य सरकार द्वारा संचालित उत्तर प्रदेश स्किल डेवलपमेंट मिशन के माध्यम से बड़ी संख्या में युवतियों को रोजगारपरक प्रशिक्षण दिया जा रहा है। मिशन के तहत आईटी, हेल्थकेयर, फैशन डिजाइनिंग, ब्यूटी एंड वेलनेस, इलेक्ट्रॉनिक्स और रिटेल जैसे क्षेत्रों में प्रशिक्षण देकर उन्हें रोजगार से जोड़ा जा रहा है। सरकार ने कौशल प्रशिक्षण को उद्योगों की जरूरतों के अनुरूप बनाने पर विशेष जोर दिया है। प्रशिक्षण केंद्रों में युवतियों को आधुनिक तकनीक, डिजिटल स्किल और व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जा रहा है, जिससे प्रशिक्षण के बाद उनके लिए रोजगार के अवसर बढ़ रहे हैं। इसके साथ ही बेटियों को स्वरोजगार और स्टार्टअप के लिए भी प्रोत्साहित किया जा रहा है।

तकनीकी प्रशिक्षण के साथ अब युवतियों को सॉफ्ट स्किल्स, डिजिटल लर्निंग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसी आधुनिक क्षमताओं में भी प्रशिक्षित किया जा रहा है, ताकि वे बदलती वैश्विक अर्थव्यवस्था में आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ सकें। इसी दिशा में कौशल विकास मिशन ने छह प्रतिष्ठित संस्थाओं के साथ समझौता कर प्रशिक्षण कार्यक्रमों को और आधुनिक बनाया है। इन संस्थाओं के सहयोग से युवतियों को मंच कौशल, संवाद क्षमता, व्यक्तित्व विकास और डिजिटल दक्षता का प्रशिक्षण दिया जाएगा। परफॉर्मिंग आर्ट्स और सॉफ्ट स्किल्स के प्रशिक्षण से युवतियों में संवाद कौशल, आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता का विकास होगा। भारतेंदु नाट्य अकादमी के सहयोग से प्रशिक्षणार्थियों को मंच कौशल और रचनात्मक अभिव्यक्ति का प्रशिक्षण मिलेगा, जिससे कला आधारित रोजगार के नए अवसर भी खुलेंगे।सरकार कौशल प्रशिक्षण को उद्योगों की मांग के अनुरूप बनाने पर जोर दे रही है। इसी उद्देश्य से इन्वेस्ट यूपी और कौशल विकास मिशन के बीच 'कौशल कनेक्ट सेल' का गठन किया गया है, जिससे निवेश करने वाले उद्योगों को प्रशिक्षित वर्कफोर्स उपलब्ध कराई जा सकेगी। इससे युवतियों के लिए भी रोजगार और स्वरोजगार के नए अवसर बढ़ेंगे।

तकनीकी प्रशिक्षण के साथ अब युवतियों को सॉफ्ट स्किल्स, डिजिटल लर्निंग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसी आधुनिक क्षमताओं में भी प्रशिक्षित किया जा रहा है, ताकि वे बदलती वैश्विक अर्थव्यवस्था में आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ सकें। इसी दिशा में कौशल विकास मिशन ने छह प्रतिष्ठित संस्थाओं के साथ समझौता कर प्रशिक्षण कार्यक्रमों को और आधुनिक बनाया है। इन संस्थाओं के सहयोग से युवतियों को मंच कौशल, संवाद क्षमता, व्यक्तित्व विकास और डिजिटल दक्षता का प्रशिक्षण दिया जाएगा। परफॉर्मिंग आर्ट्स और सॉफ्ट स्किल्स के प्रशिक्षण से युवतियों में संवाद कौशल, आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता का विकास होगा। भारतेंदु नाट्य अकादमी के सहयोग से प्रशिक्षणार्थियों को मंच कौशल और रचनात्मक अभिव्यक्ति का प्रशिक्षण मिलेगा, जिससे कला आधारित रोजगार के नए अवसर भी खुलेंगे।सरकार कौशल प्रशिक्षण को उद्योगों की मांग के अनुरूप बनाने पर जोर दे रही है। इसी उद्देश्य से इन्वेस्ट यूपी और कौशल विकास मिशन के बीच 'कौशल कनेक्ट सेल' का गठन किया गया है, जिससे निवेश करने वाले उद्योगों को प्रशिक्षित वर्कफोर्स उपलब्ध कराई जा सकेगी।

कौशल प्रशिक्षण को अधिक प्रभावी बनाने के लिए प्रशिक्षण संस्थानों की परफॉर्मेंस-बेस्ड ग्रेडिंग प्रणाली लागू की गई है। इस व्यवस्था के तहत बेहतर प्रदर्शन करने वाले संस्थानों को अधिक अवसर दिए जाएंगे, जिससे प्रशिक्षण की गुणवत्ता में सुधार होगा और युवाओं के साथ ही युवतियों को बेहतर रोजगार के अवसर मिलेंगे।युवाओं को योजनाओं और रोजगार अवसरों से जोड़ने के लिए मिशन मुख्यालय में 'कौशल कॉल सेंटर' भी शुरू किया गया है। इसके माध्यम से प्रशिक्षण, प्लेसमेंट और रोजगार से जुड़ी जानकारी सीधे युवाओं तक पहुंचाई जाएगी, ताकि कोई भी बेटी केवल जानकारी के अभाव में किसी अवसर से वंचित न रह जाए।

तकनीकी और उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भी बेटियों की भागीदारी लगातार बढ़ रही है। प्रदेश के विभिन्न तकनीकी संस्थानों और विश्वविद्यालयों में छात्राएं इंजीनियरिंग, सूचना प्रौद्योगिकी और अन्य तकनीकी विषयों में शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। वर्तमान में प्रदेश में लगभग 35 सेक्टर्स और 1300 से अधिक जॉब रोल्स में कौशल प्रशिक्षण दिया जा रहा है। वित्त वर्ष 2026-27 के बजट में भी कौशल विकास और व्यावसायिक शिक्षा को सशक्त बनाने के लिए महत्वपूर्ण प्रावधान किए गए हैं। योगी सरकार की इन पहलों से उत्तर प्रदेश की बेटियां शिक्षा, कौशल और रोजगार के क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रही हैं और आत्मनिर्भर उत्तर प्रदेश के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

अमेरिका-ईरान युद्ध और भारतः एक गहन विश्लेषण

दुर्गेश उपाध्याय
वरिष्ठ पत्रकार

अमेरिका और ईरान के बीच बढ़ता तनाव सिर्फ दो देशों के बीच की टकराहट नहीं है. इसका असर पूरी दुनिया की राजनीति, ऊर्जा बाजार और वैश्विक व्यापार पर पड़ सकता है। अगर यह टकराव युद्ध में बदलता है तो इसके परिणाम उन देशों के लिए और गंभीर होंगे जिनके आर्थिक और रणनीतिक हित पश्चिम एशिया से जुड़े हुए हैं. भारत भी ऐसे ही देशों में शामिल है. इसलिए अमेरिका-ईरान संघर्ष को भारत के संदर्भ में समझना बेहद जरूरी हो जाता है, क्योंकि इसका सीधा असर भारत की ऊर्जा जरूरतों, खाड़ी क्षेत्र में रहने वाले भारतीयों और समुद्री व्यापार मार्गों पर पड़ सकता है.

भारत की अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ रही है और इसके साथ ही ऊर्जा की मांग भी लगातार बढ़ती जा रही है. भारत अपनी जरूरत का बहुत बड़ा हिस्सा कच्चे तेल के रूप में विदेशों से आयात करता है और इस आयात का बड़ा भाग पश्चिम एशिया से आता है. ईरान कभी भारत के प्रमुख तेल आपूर्तिकर्ताओं में शामिल रहा है. हालांकि अमेरिकी प्रतिबंधों के बाद भारत को ईरान से तेल आयात काफी हद तक कम करना पड़ा. अगर अमेरिका और ईरान के बीच युद्ध की स्थिति बनती है तो इसका सबसे पहला असर तेल बाजार पर पड़ेगा. युद्ध या युद्ध जैसी स्थिति में तेल की कीमतें तेजी से बढ़ सकती हैं. इसका सीधा असर भारत की अर्थव्यवस्था पर पड़ेगा, क्योंकि महंगे तेल का मतलब है परिवहन लागत में वृद्धि, महंगाई में तेजी और सरकार पर आर्थिक दबाव. ऐसे में भारत के लिए ऊर्जा सुरक्षा का सवाल और गंभीर हो जाएगा

इस संकट का दूसरा बड़ा पहलू खाड़ी देशों में रह रहे भारतीयों से जुड़ा हुआ है. पश्चिम एशिया के कई देशों में बड़ी संख्या में भारतीय काम करते हैं. यह प्रवासी समुदाय भारत की अर्थव्यवस्था के लिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि वे हर साल अरबों डॉलर की विदेशी मुद्रा भारत भेजते हैं. यदि क्षेत्र में युद्ध की स्थिति पैदा होती है तो इन भारतीयों की सुरक्षा एक बड़ी चुनौती बन सकती है. इतिहास में पहले भी ऐसे हालात सामने आ चुके हैं जब युद्ध के कारण भारत को अपने नागरिकों को बड़े पैमाने पर वापस लाना पड़ा था. इसलिए किसी बड़े संघर्ष की स्थिति में भारत को अपने नागरिकों की सुरक्षा और संभावित निकासी की तैयारी भी करनी पड़ सकती है.

तीसरा महत्वपूर्ण पहलू समुद्री व्यापार मार्गों से जुड़ा हुआ है. खाड़ी क्षेत्र दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों में से एक का केंद्र है. होर्मुज जलडमरूमध्य से होकर दुनिया के बड़े हिस्से का तेल परिवहन होता है. भारत के लिए भी यह मार्ग अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि उसके तेल आयात का बड़ा हिस्सा इसी रास्ते से आता है. यदि युद्ध के कारण इस क्षेत्र में अस्थिरता बढ़ती है या समुद्री रास्तों पर खतरा पैदा होता है तो इसका असर केवल तेल आपूर्ति पर ही नहीं बल्कि पूरे वैश्विक व्यापार पर पड़ सकता है. भारत के लिए यह स्थिति इसलिए भी चुनौतीपूर्ण होगी क्योंकि उसकी ऊर्जा सुरक्षा और व्यापारिक हित दोनों इस क्षेत्र से जुड़े हुए हैं.

इन आर्थिक और मानवीय पहलुओं के साथ-साथ एक बड़ा प्रश्न भारत की कूटनीतिक रणनीति का भी है.

अंतरराष्ट्रीय राजनीति में आज अमेरिका, रूस और चीन तीन प्रमुख शक्तियां हैं और भारत के इन तीनों के साथ अलग-अलग तरह के संबंध हैं. अमेरिका के साथ भारत के संबंध पिछले कुछ वर्षों में काफी मजबूत हुए हैं, खासकर रक्षा, तकनीक और रणनीतिक सहयोग के क्षेत्र में. दूसरी ओर रूस लंबे समय से भारत का भरोसेमंद रक्षा साझेदार रहा है. वहीं चीन के साथ भारत के संबंध जटिल हैं, जिनमें प्रतिस्पर्धा और सहयोग दोनों मौजूद हैं. अमेरिका और ईरान के बीच संघर्ष की स्थिति में इन बड़ी शक्तियों की भूमिका भी सामने आएगी. रूस और चीन अक्सर ईरान के पक्ष में नरम रुख अपनाते रहे हैं, जबकि अमेरिका और उसके सहयोगी अलग स्थिति में रहते हैं. ऐसी परिस्थिति में भारत के सामने सबसे बड़ी चुनौती संतुलन बनाए रखने की होगी. भारत की विदेश नीति लंबे समय से रणनीतिक स्वायत्तता के सिद्धांत पर आधारित रही है. इसका अर्थ है कि भारत किसी एक शक्ति के साथ पूरी तरह खड़े होने के बजाय अपने राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता देता है. अमेरिका-ईरान तनाव की स्थिति में भी भारत को यही संतुलन बनाए रखना होगा. एक ओर वह अमेरिका के साथ अपने रणनीतिक संबंधों को बनाए रखना चाहेगा, वहीं दूसरी ओर ईरान के साथ अपने ऐतिहासिक और भू-रणनीतिक संबंधों को भी पूरी तरह नजरअंदाज नहीं कर सकता

ईरान भारत के लिए केवल ऊर्जा का स्रोत नहीं है बल्कि वह मध्य एशिया और अफगानिस्तान तक पहुंच के लिहाज से भी महत्वपूर्ण है इसलिए भारत की कूटनीति हमेशा इस कोशिश में रहती है कि वह पश्चिम एशिया में किसी एक पक्ष के साथ पूरी तरह न जुड़कर सभी पक्षों के साथ संवाद बनाए रखे

स्पष्ट है कि अमेरिका और ईरान के बीच संभावित युद्ध भारत के लिए दूर की घटना नहीं है. इसका प्रभाव सीधे भारत की अर्थव्यवस्था, ऊर्जा सुरक्षा, प्रवासी भारतीयों और वैश्विक व्यापारिक हितों पर पड़ सकता है. इसलिए भारत के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह होगी कि वह बदलते अंतरराष्ट्रीय माहौल में संयम और संतुलन के साथ अपनी नीतियों को आगे बढ़ाए. पश्चिम एशिया में स्थिरता और शांति भारत के दीर्घकालिक हितों के लिए बेहद आवश्यक है, क्योंकि इस क्षेत्र में किसी भी बड़ी उथल-पुथल का असर अंततः भारत तक जरूर पहुंचता है

चिंतन

ताडोबा में बाघों की वापसी की कहानी और जंगल में वन्य जीवन का रोमांच

एक समय था जब भारत में बाघों के विलुप्त होने की आशंका जताई जाने लगी थी। एक दशक पहले तक महाराष्ट्र के ताडोबा-अंधारी बाघ अभयारण्य की स्थिति भी कुछ ऐसी ही थी, जब यहां बाघों की संख्या सिमटकर महज 30 रह गई थी लेकिन संरक्षण के लगातार और सुनियोजित प्रयासों ने तस्वीर पूरी तरह बदल दी-आज इस अभयारण्य व आसपास के क्षेत्र में बाघों की संख्या बढ़कर करीब 200 हो गई है। ज्यादातर पर्यटक जहां ताडोबा में बाघों की एक झलक पाने की उम्मीद से आते हैं, वहीं यह अभयारण्य कई अन्य वन्य जीवों का भी घर है, जो सफारी पर आने वालों को उतना ही रोमांचित करते हैं। आइए नजर डालते हैं ताडोबा के कुछ प्रमुख और आकर्षक वन्य जीवों पर: हिरण: हिरणों के परिवार में सांभर, चीतल और काकड़ शामिल हैं। नर हिरणों के सींग प्रजनन के मौसम में अपने पूरे आकार में आ जाते हैं और हर साल झड़ जाते हैं। ये सींग शाखाओं वाले हो सकते हैं और पूरी तरह हड्डी के बने होते हैं, लेकिन इनमें केराटिन नहीं होता। केराटिन वही पदार्थ है जो हमारे बालों और नाखूनों में पाया जाता है। जंगल में खतरे की आहट मिलते ही सांभर का व्यवहार देखने लायक होता है। यह घबराकर तुरंत भागता नहीं, बल्कि पहले आसपास की झाड़ियों में आड़ लेता है या खुले मैदान में जाकर ठिठककर चारों ओर नजर दौड़ाता है-मानो अदृश्य खतरे को भांपने की कोशिश कर रहा हो। सतर्क होते ही उसकी पूंछ तनकर ऊपर उठ जाती है। अगर उसे चकीन हो जाए कि खतरा सचमुच पास है, तो वह अपने अगले पैरों को जमीन पर जोर से पटकता है और 'चेतावनी भरी तेज 'आवाज' निकालता है। जंगल के जानकारों के लिए यह आवाज लगभग पक्की खबर होती है कि कहीं आसपास बाघ घूम रहा है-ठीक वैसे ही जैसे चीतल की रंभाने जैसी आवाज भी बाघ की मौजूदगी का संकेत देती है। काकड़ जंगल का एक बेहद दिलचस्प और रहस्यमय जीव है। इसकी आवाज कुत्ते के भौंकने जैसी होती है और जब जंगल की खामोशी में इसकी भौंकने जैसी आवाज गूंजती है, तो आसपास के जानवर तुरंत सतर्क हो जाते हैं। दुनिया के सबसे प्राचीन हिरणों में गिने जाने वाले इस जीव की चाल भी निराली है। चलते समय यह ऐसे उछलता-कूदता है, मानो उसके पैरों में स्प्रिंग लगी हो। इस छोटे से हिरण की एक खासियत यह भी है कि स्तनधारियों में इसके क्रोमोसोम की संख्या सबसे कम मानी जाती है। मृगः ताडोबा बाघ अभयारण्य के जंगलों में मृगों की दुनिया भी कम दिलचस्प नहीं है, जहां मुख्य रूप से नीलगाय और चौसिंगा जैसी प्रजातियां पाई जाती हैं। इन मृगों की सबसे खास पहचान उनके स्थायी सींग होते हैं जो हिरणों की तरह हर साल गिरते नहीं और न ही इनमें शाखाएं निकलती हैं। इसके बजाय इनके सींग कई बार अनोखा और विचित्र आकार ले लेते हैं, जो इन्हें जंगल में अलग पहचान देते हैं। ये सींग अंदर से हड्डी के बने होते हैं और ऊपर से केराटिन की परत से ढके रहते हैं। भारतीय गौरः पहली नजर में अक्सर इसे भैंस समझ लिया जाता है, लेकिन सच यह है कि भारतीय गौर का उससे कोई सीधा संबंध नहीं है। यह करीब 1,000 किलोग्राम तक वजनी नर गौर बोवाइड परिवार का सबसे विशाल सदस्य माना जाता है। माथा और शावक, नर जितने गहरे रंग के नहीं होते, लेकिन एक पहचान सबमें समान होती है-पैरों पर सफेद मोजों जैसे निशान, जो दूर से ही उनकी पहचान बता देते हैं। गौरों का समाज भी बड़ा रोचक होता है। उनका झुंड एक अनुभवी मादा के नेतृत्व में चलता है-वही दिशा तय करती है और वही खतरे को भांपती है। नर गौर आमतौर पर दूर ही रहते हैं और केवल प्रजनन के मौसम में इस झुंड से जुड़ते हैं। स्लॉथ भालू: जंगल की खामोशी में पेड़ों के तनों पर पड़े गहरे नाखूनों के निशान अक्सर एक खास मेहमान 'स्लॉथ भालू' की कहानी कहते हैं। यह भालू अपने पसंदीदा शहद की तलाश में फुर्ती से पेड़ों पर चढ़ जाता है और पीछे छोड़ जाता है अपने पंजों के तीखे निशान। जहां ज्यादातर जानवरों के चारों पंजों के निशान लगभग एक जैसे दिखते हैं, वहीं इस भालू के पिछले पैर लंबे और चपटे होते हैं, जिनके निशान कीचड़ में लगभग इंसानी पैरों जैसे दिखाई देते हैं। वहीं इसके अगले पैरों के निशान मांसाहारी जानवरों के पंजों से मिलते-जुलते लगते हैं। इसकी वजह भी खास है-इंसानों की तरह भालू भी अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो सकता है। एशियाई जंगली कुत्ताः लाल रंग, घनी झबरीली पूंछ और झुंड में गूंजती सीटी जैसी आवाज-यही पहचान है ढोल यानी एशियाई जंगली कुत्तों की। जंगल में ये आपस में भौंककर नहीं, बल्कि सीटी जैसी आवाजों से संवाद करते हैं। नर ढोल कभी-कभी अपने पिछले एक या दोनों पैरों को उठाकर हाथ के बल खड़े होने जैसी मुद्रा बनाते हैं और इसी अंदाज में पेशाब कर अपने इलाके की सीमा तय करते हैं। आकार में छोटे होने के बावजूद इनका साहस कम नहीं होता। ये आमतौर पर झुंड बनाकर शिकार करते हैं और कई बार इतनी हिम्मत दिखाते हैं कि बंगाल टाइगर या तेंदुए के मारे गए शिकार पर भी धावा बोलकर उसे छीन लेते हैं।

पाठकगण अपने विचार **responsemail.hindipioneer@gmail.com** पर भेज सकते हैं।

जंग के मोर्चे

जब दो या अधिक देशों के बीच युद्ध का मोर्चा खुलता है, तो उसका असर सिर्फ इस रूप में सामने नहीं आता कि एक-दूसरे पर किए गए हमले के नतीजे में जानमाल की व्यापक क्षति होती है। बल्कि जंग के लंबा खिंचने पर कई स्तरों पर जरूरी सामग्री की आपूर्ति बाधित होती है और नतीजतन बाजार में लगभग सभी चीजों की कीमतें तेजी से बढ़ने लगती हैं। ईरान पर इजराइल और अमेरिका के साझा हमले के बाद जिस बात का डर था, उसकी शुरुआत अब हो चुकी है। यानी जो देश इस जंग में शामिल नहीं हैं, उन तक भी इसकी आंच पहुंचनी शुरू हो चुकी है। हाल ही में भारत के शेयर बाजार पर भी इसका असर देखा गया, जहां बड़ी गिरावट की वजह से निवेशकों को लगभग उन्नीस लाख करोड़ रुपए का नुकसान हुआ। चूंकि युद्ध की तीव्रता में फिलहाल कोई नरमी नहीं देखी जा रही है, इसलिए यह स्थिति अभी कायम रहने की आशंका है। मगर इससे इतर अब युद्ध का असर देश के आम लोगों के घर के दरवाजे तक पहुंचना शुरू हो चुका है। मसलन, रसोई गैस की कीमत में साठ रुपए की बढ़ोतरी कर दी गई है। कच्चे तेल की आपूर्ति बाधित होने की वजह से भारत सहित अन्य कई देशों को नए रास्तों की ओर देखना पड़ रहा है। इस बीच कच्चे तेल की कीमतों के सौ डालर प्रति बैरल तक पहुंचने की आशंका जताई जा रही है।

अंदाजा लगाया जा सकता है कि बाजार के इस रुख का असर कहां तक जा सकता है और अगर युद्ध लंबा खिंचा, तो वैसे देशों में कैसी मुश्किल पैदा होगी, जहां की अर्थव्यवस्था और जीवनयापन का एक बड़ा हिस्सा बाहर से आपूर्ति पर निर्भर है। इजराइली हमले के बाद प्रतिक्रिया में ईरान ने जो रुख अख्तियार किया है, उससे पहले ही कई मुख्य तेल उत्पादक देशों में असुरक्षा का माहौल है। फिर होर्मुज जलडमरूमध्य से गुजरने वाले जहाजों के रास्ते को ईरान ने जिस तरह बाधित कर दिया है, उससे दुनिया के एक बड़े हिस्से में तेल की आपूर्ति प्रभावित होगी। होर्मुज की नाकाबंदी की वजह से उस इलाके में फंसे जहाजों को लंबा रास्ता तय करना होगा। भारत के सामने ही स्थिति यह है कि इसके पास अगले छह से आठ हफ्ते का तेल भंडार है। स्वाभाविक ही भारत को अब तेल के लिए अन्य वैकल्पिक स्रोतों की ओर देखना होगा।

राहत की बात यह है कि एक ओर रूस ने भारत को तेल बेचने की पेशकश की, तो दूसरी ओर अमेरिका ने भी इस मसले पर नरम रुख अपनाया है। इसके बावजूद पश्चिम एशिया में चल रहे इस युद्ध का असर केवल वैश्विक स्तर पर तेल और गैस के बाजारों पर ही नहीं पड़ा है, बल्कि तनाव में बढ़ोतरी कई बड़े उद्योगों के लिए भी चिंता का कारण बन रहा है, क्योंकि इस क्षेत्र के लिए कच्चे माल की आपूर्ति भी बाधित हो रही है। खासतौर पर तेल की कीमतों में भारी उछाल आना और इसका असर बाजार में अन्य लगभग सभी सामान पर पड़ना तय माना जा रहा है। दरअसल, इसके समांतर माल ढुलाई के महंगा होने की वजह से सब्जियों से लेकर दूसरी कई जरूरी चीजों के दाम भी बढ़ेंगे। निश्चित रूप से इससे प्रभावित देशों को अपने स्तर पर विकल्प और समाधान निकालने की जरूरत है। मगर सवाल है कि क्या युद्ध में शामिल देशों को इस बात की फिक्र है कि उनकी वजह से दुनिया भर में आम लोगों के सामने अपनी अनिवार्य जरूरतें पूरी करने के लिए जद्दोजहद के कितने मोर्चे खुल गए हैं।

ताक पर नियम

अस्पताल सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं का महत्त्वपूर्ण केंद्र होते हैं। इसी आधार पर निजी अस्पतालों के निर्माण के लिए सरकार की ओर से रियायती दर पर जमीन उपलब्ध कराई जाती है। मगर इसमें कुछ नियम-शर्तें भी लागू होती हैं, जिनमें आर्थिक रूप से कमजोर तबके के लोगों के लिए तयशुदा सीमा में मुफ्त इलाज की सुविधा भी शामिल है। मगर इन नियमों का पूरी तरह पालन हो रहा है या नहीं, इसकी चिंता शायद ही सरकार या अस्पताल प्रबंधन को होती है। यही वजह है कि सर्वोच्च न्यायालय ने हाल ही में देश की राजधानी दिल्ली के 51 अस्पतालों को नोटिस भेजकर नियमों का पालन नहीं करने पर कारण स्पष्ट करने को कहा है। साथ ही पूछा है कि क्यों न उनके खिलाफ अवमानना की कार्रवाई शुरू की जाए। ऐसे में सवाल है कि जो जिम्मेदारी सरकार की है, वह कार्य शीर्ष अदालत को क्यों करना पड़ रहा है? आखिर क्या वजह है कि नियमों की अनदेखी को सरकारी तंत्र में गंभीरता से नहीं लिया जा रहा है?

दरअसल, केंद्र सरकार ने वर्ष 2012 में एक नीति लागू की थी, जिसके तहत दिल्ली में गरीब लोगों के लिए निजी अस्पतालों में मुफ्त इलाज की सुविधा का प्रावधान था। इसके मुताबिक, निजी अस्पतालों के निर्माण के लिए इस आधार पर रियायती दर पर जमीन उपलब्ध कराई जाएगी कि उनके आंतरिक रोगी विभाग में कम-से-कम दस फीसद और बाह्य रोगी विभाग में पच्चीस फीसद गरीबों का निशुल्क उपचार किया जाएगा। वर्ष 2018 में सर्वोच्च न्यायालय ने रियायत पर जमीन लिए दिल्ली के सभी निजी अस्पतालों को सरकार के इन नियमों का सख्ती से पालन करने का निर्देश दिया था। इसके बावजूद अगर कोताही बरती जा रही है, तो इसके लिए कौन जिम्मेदार है? जाहिर है, निजी अस्पतालों में नियमों के अनुसार गरीबों को स्वास्थ्य सुविधाएं मिलें, यह सुनिश्चित करने की प्राथमिक जिम्मेदारी सरकार की है। और अगर अदालती निर्देश के बाद भी सरकारी तंत्र तथा निजी अस्पताल इस मसले को गंभीरता से नहीं लेते हैं, तो इसे किस रूप में देखा जाएगा? ऐसे में जरूरी है कि लापरवाही बरतने वाले अधिकारियों की जवाबदेही तय कर उनके खिलाफ उचित कार्रवाई की जाए, ताकि व्यवस्था पर आम लोगों का भरोसा बना रहे।

विकास के सफर में सूक्ष्मजीवों का साथ

देश में आज भी सड़कें, पुल, उद्योग और निवेश के आंकड़े मुख्य रूप से प्रगति के पैमाने माने जाते हैं। ऐसे समय में केरल ने एक जीवाणु को आधिकारिक रूप से 'राज्य सूक्ष्मजीव' घोषित किया है, जिसे विज्ञान को नीति और समाज के बीच सेतु बनाने की कोशिश के रूप में देखा जा रहा है।

मणिमाला शर्मा

देश में विकास की परिभाषा अब भी बड़े ढांचों के इर्द-गिर्द घूमती है। सड़कें, पुल, उद्योग और निवेश के आंकड़े प्रगति के पैमाने माने जाते हैं। ऐसे समय में केरल ने एक ऐसा कदम उठाया है, जो इस प्रचलित समझ से अलग और नई संभावनाओं की राह दिखाता है। हाल ही में केरल देश का पहला राज्य बन गया है, जिसने किसी जीवाणु को आधिकारिक रूप से 'राज्य सूक्ष्मजीव' घोषित किया है। एक ऐसा सुक्ष्म जीव, जिसे नंगी आंखों से नहीं देखा जा सकता है, वह अब राज्य की पहचान का हिस्सा बन गया है। यह कदम केवल एक औपचारिक घोषणा भर नहीं है, बल्कि इसे विज्ञान को नीति और समाज के बीच सेतु बनाने की कोशिश के रूप में देखा जा रहा है।

इसमें दोराय नहीं कि भारतीय समाज में 'जीवाणु' शब्द आज भी लोगों के भीतर डर पैदा करता है। स्वच्छता अभियानों और स्वास्थ्य चेतावनियों ने इसे बीमारी फैलाने वाले तत्त्व के रूप में स्थापित कर दिया है। नतीजा यह हुआ कि सूक्ष्म जीवों की पूरी दुनिया हमारे लिए संदेह, भय और घृणा का सूचक बन गई। जबकि सच्चाई इससे कहीं अलग है। विकासवाद के सिद्धांत पर गौर करें, तो धरती पर जीवन की शुरुआत ही सूक्ष्मजीवों से हुई। मिट्टी की उर्वरता, पौधों का पोषण, जल शुद्धिकरण, मानव पाचन तंत्र और प्रतिरक्षा प्रणाली, सब कहीं न कहीं जीवाणुओं पर निर्भर हैं। सभी तरह के जीवाणु समस्या पैदा नहीं करते, बल्कि समस्या हमारी अधूरी और एकांगी समझ है। केरल सरकार का यह कदम इसी मानसिकता को बदलने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण प्रयास माना जा रहा है। यह सूक्ष्म जीवों को समाज में व्याप्त भय के दायरे से बाहर निकालकर समझ के दायरे में लाने की कोशिश है।

दरअसल, केरल सरकार ने आधिकारिक तौर पर 'बैसिलस सबटिलिस' नामक जीवाणु को 'राज्य सूक्ष्मजीव' घोषित किया है। यह छड़ के आकार का एक लाभकारी जीवाणु है, जो मिट्टी में पाया जाता है और कृषि तथा जैव-प्रौद्योगिकी अनुसंधान में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। राज्यों की ओर से समय-समय पर राज्य का पशु, पक्षी या वृक्ष घोषित किया जाता है, जो केवल सांस्कृतिक औपचारिकता मात्र नहीं होता है, बल्कि इसके जरिए समाज को यह बताया जाता है कि प्रकृति तथा पारिस्थितिकी तंत्र के किन हिस्सों, तत्त्वों और संसाधनों की पहचान एवं संरक्षण जरूरी है। ये प्रतीक शिक्षा और चेतना के माध्यम बनते हैं। केरल में 'राज्य सूक्ष्मजीव' की अवधारणा इसी परंपरा का विस्तार है। फर्क बस इतना है कि यह प्रतीक नंगी आंखों से दिखाई नहीं देता। यह कदम बताता है कि अब संरक्षण और सम्मान की परिभाषा को केवल दृश्य जगत तक सीमित नहीं रखा जा सकता। यह विज्ञान को सार्वजनिक विमर्श का हिस्सा बनाने का प्रयास है।

इसी तरह देखा जाए, तो देश की खेती लंबे समय से रासायनिक खादों और कीटनाशकों पर निर्भर होती जा रही है। शुरुआत में उत्पादन बढ़ा, लेकिन धीरे-धीरे मिट्टी की सेहत बिगड़ती चली गई। लागत बढ़ी, उपज की गुणवत्ता घटी और किसान आर्थिक दबाव में फंसता गया। ऐसे में लाभकारी जीवाणु आधारित खेती एक वैकल्पिक रास्ता दिखाती है।

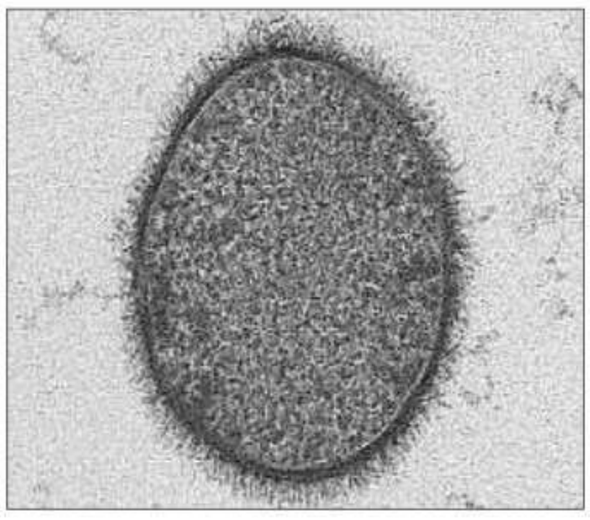

कुछ जीवाणु मिट्टी में नाइट्रोजन स्थिर करते हैं, कुछ पौधों की जड़ों को मजबूत बनाते हैं और कुछ रोगों से लड़ने में मदद करते हैं। यदि केरल इस पहल के जरिए ऐसे सूक्ष्म जीवों की पहचान को बढ़ावा देता है, तो यह खेती को रसायन-निर्भरता से बाहर निकालने की दिशा में ठोस कदम हो सकता है। केरल का यह कदम कृषि को प्रकृति और विज्ञान के साझा रास्ते पर वापस लाने की संभावना पैदा करता है।

> आत्मनिर्भर भारत की चर्चा अक्सर उद्योग और तकनीक तक सीमित रह जाती है। मगर असली आत्मनिर्भरता तब आएगी, जब भोजन, स्वास्थ्य और तकनीक जैसी जरूरतों को पूरा करने के लिए देश की बाहरी निर्भरता घटेगी। ऐसे में लाभकारी जीवाणु आधारित समाधान सस्ते, स्थानीय और टिकाऊ हो सकते हैं। केरल का यह कदम आत्मनिर्भरता की उसी जैविक व्याख्या की ओर इशारा करता है, जिसमें ज्ञान और प्रकृति सबसे बड़े संसाधन हैं। हो सकता है कि आम नागरिक के लिए इसका असर तुरंत महसूस न हो, लेकिन लंबे समय में इसके परिणाम आम जीवन से जुड़ने की पूरी संभावना है।

आधुनिक चिकित्सा अब यह मानने लगी है कि शरीर को केवल दवाओं से स्वस्थ नहीं रखा जा सकता। मानव शरीर खुद एक जटिल सूक्ष्मजीव तंत्र है। पाचन, प्रतिरक्षा और यहां तक कि मानसिक स्वास्थ्य में भी जीवाणुओं की भूमिका पर लगातार शोध हो रहे हैं। केरल, जो पहले ही सार्वजनिक स्वास्थ्य माडल के लिए जाना जाता है, वह इस पहल के जरिए स्वास्थ्य को अस्पताल और दवा-केंद्रित सोच से आगे ले जाने का संकेत देता है। यह पहल त्वरित नतीजे नहीं दे सकती, लेकिन लंबे समय में समाज को अधिक संतुलित और आत्मनिर्भर बना सकती है।

प्रदूषण, कचरा और जल संकट आज विकास की सबसे बड़ी कीमत बन चुके हैं। इनके समाधान अक्सर महंगे और तकनीक-निर्भर होते हैं। लेकिन प्रकृति के भीतर ही कुछ ऐसे सूक्ष्म समाधान मौजूद हैं, जिन पर हम ध्यान कम ही देते हैं। कुछ जीवाणु गंदे पानी को साफ करने, जैविक कचरे को विघटित करने और प्रदूषकों को निष्क्रिय करने में सक्षम होते हैं। केरल जैसे राज्य में, जहां जल संसाधन और जैव विविधता दोनों अहम हैं, ऐसे समाधान पर्यावरण नीति का हिस्सा बन सकते हैं। यह पहल पर्यावरण संरक्षण को नारे से निकालकर व्यावहारिक धरातल पर लाने की संभावना से भरी है। मगर यहां एक सवाल यह भी उठ रहा है कि कहीं यह पहल केवल कागजों पर प्रतीक बनकर न रह जाए, क्योंकि भारत में प्रतीकों की कमी नहीं है, लेकिन उन्हें जमीन पर उतारने की इच्छाशक्ति अक्सर कमजोर पड़ जाती है। यदि 'राज्य सूक्ष्मजीव' की घोषणा भी केवल अधिसूचना और समारोह तक सीमित रह गई, तो यह हमारे लिए अवसर चूकने जैसा होगा। इस पहल की असली परीक्षा तब होगी, जब इसे शिक्षा, शोध और नीति से जोड़ा जाएगा। स्कूलों के पाठ्यक्रम, विश्वविद्यालयों के शोध और किसानों एवं पर्यावरण से संबंधित योजनाओं में इसका उपयोग तय करेगा कि यह प्रयोग कितना असरदार साबित हो सकता है।

आत्मनिर्भर भारत की चर्चा अक्सर उद्योग और तकनीक तक सीमित रह जाती है। मगर असली आत्मनिर्भरता तब आएगी, जब भोजन, स्वास्थ्य और तकनीक जैसी जरूरतों को पूरा करने के लिए देश की बाहरी निर्भरता घटेगी। ऐसे में लाभकारी जीवाणु आधारित समाधान सस्ते, स्थानीय और टिकाऊ हो सकते हैं। केरल का यह कदम आत्मनिर्भरता की उसी जैविक व्याख्या की ओर इशारा करता है, जिसमें ज्ञान और प्रकृति सबसे बड़े संसाधन हैं। हो सकता है कि आम नागरिक के लिए इसका असर तुरंत महसूस न हो, लेकिन लंबे समय में इसके परिणाम आम जीवन से जुड़ने की पूरी संभावना है। इस योजना का उद्देश्य लोगों को यह संदेश देना होना चाहिए कि बेहतर मिट्टी, सुरक्षित भोजन, स्वच्छ जल और संतुलित स्वास्थ्य के साथ-साथ एक ऐसे समाज का निर्माण करना है, जो विज्ञान से डरता नहीं, बल्कि उसे समझने की कोशिश करता है। इस तरह यह पहल नई पीढ़ी को सिखा सकती है कि जीवन केवल दिखाई देने वाली चीजों से ही नहीं चलता, बल्कि उन सूक्ष्म तंत्रों से भी चलता है, जिन्हें हम अक्सर नजरअंदाज कर देते हैं। केरल सरकार की ओर से एक जीवाणु को 'राज्य सूक्ष्मजीव' घोषित करने का फैसला आज नया लग सकता है, लेकिन यह भविष्य के लिए नई संभावनाओं को बल देता है। यह याद दिलाता है कि कभी-कभी सबसे बड़े बदलाव वहीं से शुरू होते हैं, जहां हमारी नजर कम जाती है। अगर यह पहल गंभीरता से आगे बढ़ती है, तो देश में वैज्ञानिक चेतना और पर्यावरणीय समझ के विस्तार का मार्ग प्रशस्त हो सकता है।

अहं का दुश्चक्र

अशोक कुमार

मानवीय वृत्तियों के अनेक स्वरूप हैं, जिसके नेपथ्य में अच्छाई और बुराई के बीच हमारे दैनिक आचरण संचालित होते हैं। मानव जीवन में सबसे बड़ी जंग बाहरी दुनिया की कठिनाइयों से नहीं, बल्कि हमारे अंतर्मन में उठने वाले तूफानों से होती हैं। ऐसा देखा जाता है कि सामाजिक प्रक्षेत्र की विभिन्न प्रकार की घटनाओं से उत्पन्न परिस्थितियां प्रायः हमारे नियंत्रण से बाहर होती हैं, लेकिन हमारे चेतन मन में छिपी सकारात्मक ऊर्जा इतनी शक्तिशाली है कि वह प्रतिकूल चिंतन धाराओं को अनुकूलता में बदल सकती है। दैनिक जीवन की गतिविधियां हमें बार-बार ऐसी स्थितियों में डालती हैं, जहां हमारी शक्ति, हमारे साधन, यहां तक कि हमारा धैर्य भी जवाब देने लगता है, पर मानव होने का अर्थ ही यह है कि हम उन परिस्थितियों से ऊपर उठने की क्षमता भी रखते हैं, जो जिंदगी में सबसे ज्यादा चुनौतीपूर्ण होती है। बाहरी स्थितियां कभी-कभी हमारी सीमाएं बेशक तय कर सकती हैं, लेकिन यह निर्णय हमेशा हमारा होता है कि हम उन परिस्थितियों के प्रति कैसा चिंतन दृष्टिकोण रखते हैं और उसे किस रूप में परखते हैं।

हमारा विवेक यह स्वीकार करता है कि हम दर्द से नहीं टूटते, बल्कि हम बिना उद्देश्य और लक्ष्य के दर्द से टूट जाते हैं। जब हमें ज्ञात होता है कि हमें क्यों जीना है, कैसे जीना है, तो इसका मार्ग हमारा विवेक तय करता है। भौतिक संसार की प्रतिकूल धाराओं पर विजय का ध्वज फहराने वाले हम प्राणी कभी-कभी खुद के भीतर के संघर्षों से थक-हार भी जाते हैं। मन में संचालित द्वंद्व और संशय, कभी अपने किसी काम, निर्णय, अतीत या अनुभव को लेकर अपने को कोसने लगते हैं। किसी पीड़ा का दंश जब मन के किसी कोने में पड़ाव बना लेता है, तो हमारा चेतन मन विवेक के अस्तित्व की गहराई को झकझोरने लगता है।

व्यक्तित्व की परिधि में स्वाभिमान की शक्ति जहां स्वयं जीवन पथ में सुगमता और सरलता के पुष्प बिछाती हैं, वहीं 'अहं' यानी 'इगो' के तरंग मस्तिष्क मंडल में आत्मकेंद्रित सह आत्ममुग्धता के भाव का बीजारोपण करते हैं। यह आचरण व्यक्ति के मस्तिष्क में एक दिन में स्थान नहीं ग्रहण करता, बल्कि क्रमशः इसकी वृद्धि हमारे आसपास सामाजिक तथा पारिवारिक परिवेश की घटनाओं के कारण होती है। कुछ लोग मानते हैं कि अहं व्यक्ति के स्वभाव का वह अक्षय अंश है, जिससे मुक्ति कठिन है, लेकिन किसी आकस्मिक घटना, प्रेरणा या अध्ययन के कारण इस भाव का तिरोधान संभव भी हो जाता है। इसका एक पक्ष हमारे आत्मसम्मान, आत्मविश्वास और आत्म-प्रगति को दर्शाता है, जो हमें अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित भी करता है। दूसरी ओर, यह हमें अहंकार और स्वार्थ के सांचे में ढालते हुए आत्मश्लाघा के आंगन की यात्रा भी करा देता है। यह हमें अपने दायित्व के बारे में सकारात्मकता की उपस्थिति कराते हुए अपने लक्ष्यों, अधिकारों और जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक भी करता है।

अहं के अपने नुकसान भी हैं। यह हमें एकपक्षीय प्रवृत्ति की ओर प्रवृत्त करते हुए हमारे पारिवारिक या सामाजिक रिश्ते में विघ्न भी उत्पन्न करता है, जिसके कारण हम अपने लक्ष्य-मार्ग से भटक जाते हैं। यह वृत्ति हमें कभी-कभी दूसरों की भावनाओं, अपेक्षाओं और जरूरतों को नजरअंदाज करने के लिए विवश कर देता है, जिससे आपसी संबंधों के सेतु कमजोर हो जाते हैं। पैर जमाए अहं की वजह से हम दूसरों के साथ अपने संबंध सामान्य बनाए रखने में विफल इसलिए होते हैं, क्योंकि हठी स्वभाव की वजह से हम अपनी बातें उन्हें मानने पर अधिक जोर देते हैं, बिना यह विचारे कि अपनी बातों में तथ्य और दम कितना धरातलीय है। अहं के वशीभूत होने से हम अपनी गलतियों को स्वीकारने की स्थिति से विमुख होकर सामने वाले के समक्ष कुतर्क गढ़कर आत्म-प्रवंचना से ग्रस्त हो जाते हैं, जिससे हम आगे बढ़ने के बजाय पीछे रह जाते हैं। यह मानसिक स्थिति हमें अंदर से अधिक दबाव और तनाव के साये में रोके रहता है, क्योंकि हम हर समय अपनी कृत्रिम छवि बनाए रखने की आभासी कोशिश करते रहते हैं, बिना यह सोचे कि हमारे व्यक्तित्व की अच्छाई की कसौटी पर कैसा आकलन किया जा रहा है।

दुनिया मेरे आगे

> अहं के वहम का शिकार होने पर हम दूसरों से सीखने की प्रवृत्ति और क्षमता भी खो देते हैं, क्योंकि यह हमें निष्पक्ष वैचारिक चिंतन धुरी से अलग कर देता है। सवाल यह है कि अहं यानी मिथ्या मर्यादा की कमजोर कड़ी को धीरे-धीरे नियंत्रित करते हुए उसे समूल नष्ट कैसे किया जाए।

अहं के वहम का शिकार होने पर हम दूसरों से सीखने की प्रवृत्ति और क्षमता भी खो देते हैं, क्योंकि यह हमें निष्पक्ष वैचारिक चिंतन धुरी से अलग कर देता है। सवाल यह है कि अहं यानी मिथ्या मर्यादा की कमजोर कड़ी को धीरे-धीरे नियंत्रित करते हुए उसे समूल नष्ट कैसे किया जाए। इसके लिए आत्मावलोकन एक प्रभावकारी मानसिक अवस्था मानी गई है, जहां इस प्रवृति के एक-एक तार को तोड़ने की जरूरत है। हालांकि यह एक जटिल और धैर्यपूर्ण अभ्यास है, लेकिन प्रबल इच्छाशक्ति के सहारे इससे निवारण के यत्न किए जा सकते हैं। हर इंसान के मस्तिष्क कोश में असीम क्षमताएं निहित हैं, जिसके सकारात्मक गुण से व्यक्ति अपने भीतर व्याप्त अहं के कणों को बाहर निकालने में सफल हो सकता है। इस चेष्टा से व्यक्ति खुद को शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक तौर पर उन्नत करने का अतिरिक्त गुण भी विकसित करने की सामर्थ्य दिखा सकता है। जब हम अपने विचारों और मन पर नियंत्रण करने का अभ्यास शुरू करना चाहते हैं, तो बाह्य भौतिक उपसर्गों से निवृत्ति पाना भी प्रारंभ कर लेते हैं। यह सिलसिला हमें अपने व्यक्तित्व में अनुकूल क्षमता के स्रोत ढूंढ़ने में सहायक होता है। आज जब कृत्रिम बुद्धिमता के नूतन संस्करण में हमारे जीवन की गतिविधियां तीव्र रूप में सम्मिलित हो रही हैं, तो पुरखों द्वारा निर्मित नैसर्गिक मानवीय प्रवृत्तियों के कुछ भूले-भटके सूत्रों में से अहं जैसे प्रतिकूल सूत्र को विसर्जित करने का प्रयास करें। इससे हमारे सामाजिक ताने-बाने के तत्त्वों की पुनर्स्थापना के द्वार खुल सकेंगे।

सत्ता की छाया

विद्यालय की पाठ्यपुस्तकें किसी भी राष्ट्र की सामूहिक स्मृति और भविष्य की दिशा तय करती हैं। जब इन्हीं पुस्तकों की सामग्री बार-बार विवादों में घिरने लगे, तो सवाल केवल एक अध्याय का नहीं रह जाता, बल्कि शिक्षा की आत्मा का हो जाता है। हाल के वर्षों में एनसीईआरटी की किताबों में किए गए बदलाव, चाहे वे इतिहास के प्रसंगों का संक्षेपण हों, संवेदनशील घटनाओं का लोप हो या वैचारिक संतुलन में परिवर्तन, ये इस आशंका को जन्म देते हैं कि कहीं पाठ्यक्रम तथ्य से अधिक विचारधारा का वाहक तो नहीं बनता जा रहा। किसी भी लोकतंत्र में शिक्षा का उद्देश्य आलोचनात्मक चेतना विकसित करना होता है, न कि पूर्वनिर्धारित निष्कर्षों को स्थापित करना। यदि राजनीतिक, धार्मिक या संस्थागत दबावों के तहत सामग्री बदली जाती है, तो यह न केवल शैक्षणिक स्वायत्तता पर प्रश्नचिह्न है, बल्कि विद्यार्थियों के बौद्धिक अधिकारों पर भी आघात है। तथ्य असुविधाजनक हो सकते हैं, परंतु उन्हें हटाना समाधान नहीं है। इतिहास को काट-छांट कर प्रस्तुत करने से वह सरल अवश्य दिख सकता है, किंतु सत्य से विद्यार्थियों को वंचित कर देता है।

– मो अजहर आलम अंसारी, पूर्णिया

जागरूकता की जरूरत

'अंधविश्वास की मार' (संपादकीय, 2 मार्च) तार्किक एवं विचारणीय है। दुर्भाग्य की बात है कि कोई भी इस गंभीर मुद्दे पर विचार नहीं करता, बल्कि इसी पुराने ढर्रे पर लोग चलते रहते हैं। इसकी वजह यह है कि हमारे माहौल में धर्म के नाम पर जनता के जेहन में इतना खौफ भर दिया जाता है कि न चाहते हुए भी लोग शातिरों के जाल में फंस जाते हैं। दरअसल, इतनी शैक्षिक और वैज्ञानिक प्रगति के बाद भी हम अंधविश्वास की मार झेल रहे हैं, तो कहीं न कहीं हमारी शिक्षा में दोष है। दुख तो तब होता है, जब अशिक्षित तो छोड़िए, पढ़े-लिखे और समाज का मार्गदर्शन करने वाले भी इस जाल में फंसे हुए रहते हैं। इस मार से बाहर निकालने के लिए स्कूलों में 'अंधविश्वास' के खिलाफ एक अनिवार्य विषय प्राथमिक कक्षाओं से पढ़ाया जाना चाहिए। अंधविश्वास के विरुद्ध जब तक चेतना जागृत नहीं होंगी, तब तक असहाय लोगों का शोषण होता रहेगा। नई पीढ़ी को भी जागरूक करना होगा।

– हेमा हरि उपाध्याय 'अक्षत', उज्जैन

गहराता संकट

मध्य प्रदेश में जल संकट अब चेतावनी से आगे बढ़ कर आपदा का रूप ले रहा है। सिवनी जिले में मार्च की शुरुआत में ही स्थिति इतनी गंभीर हो गई है कि प्रशासन इसे जल अभावग्रस्त घोषित करने की तैयारी कर रहा है। बांधों का जलस्तर तेजी से गिर रहा है और भूजल एकदम निचले स्तर तक जा चुका है। आदिवासी इलाकों में महिलाएं और बच्चे कई किलोमीटर दूर से पानी ढोने को मजबूर हैं, जबकि कई पेयजल योजनाओं के नलकूप सूख चुके हैं। उधर, इंदौर, भोपाल और उज्जैन जैसे शहरों में दूषित पानी से नागरिकों की मौत की घटनाएं व्यवस्था की कमजोरियों को ही उजागर करती हैं। इंदौर का भागीरथपुरा कांड इसका बड़ा उदाहरण है। राष्ट्रीय हरित पंचाट और उच्च न्यायालय के निर्देशों के बावजूद पाइपलाइन और सीवर में खामियां बनी हुई हैं। यदि अभी जल संरक्षण, वर्षा जल संचयन और पेयजल ढांचे में सुधार नहीं हुआ, तो यह संकट राज्यव्यापी आपदा में बदल सकता है।

– आरके जैन 'अरिजीत', बड़वानी

मानवता के विरुद्ध

वर्तमान समय में विश्व शांति गंभीर संकट के दौर से गुजर रही है। एक ओर रूस-यूक्रेन जंग चल रही है, वहीं दूसरी ओर अमेरिका-इजराइल और ईरान के बीच युद्ध ने पूरी दुनिया को चिंतित कर दिया है। कुछ ही दिनों के हमलों में कई लोगों की जान जाने की खबरें सामने आ चुकी हैं। किसी भी युद्ध का प्रभाव केवल युद्धरत देशों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि उसका असर पूरी दुनिया की राजनीति, अर्थव्यवस्था और सामाजिक जीवन पर पड़ता है। अमेरिका-ईरान संघर्ष से वैश्विक स्तर पर तेल की कीमतों में अस्थिरता, व्यापार में बाधा और सुरक्षा संबंधी चिंताएं बढ़ गई हैं। युद्ध कभी भी किसी समस्या का स्थायी समाधान नहीं है। इसमें सबसे बड़ी हार मानवता की होती है। ऐसी स्थिति में अंतरराष्ट्रीय समुदाय की प्रमुख शक्तियों की जिम्मेदारी है कि वे संवाद, कूटनीति और समझदारी से इस युद्ध को रोकने का प्रयास करें।

– हिमांशु शेखर, गयाजी

मोबाइल फोन : जितनी चादर, उतना पैर पसारें

जनसत्ता कारोबाजार

आजकल बाजार में हर दूसरे दिन एक नया स्मार्टफोन आ जाता है। बेहतरीन कैमरा, चकाचक डिस्प्ले और तगड़े फीचर्स देखकर हर किसी का मन ललचा जाता है। फिर ऊपर से 'नो कास्ट ईएमआइ' और 'जीरो डाउन पेमेंट' जैसे लुभावने प्रस्ताव आग में घी डालने का काम करते हैं, लेकिन इसका नतीजा यह होता है कि हम जोश में आकर वो फोन भी खरीद लेते हैं जिसका बजट हमारी सीमा से बाहर होता है। ऐसा करना ख़राब वित्तीय योजना है। इसलिए यदि आप नए नए महंगे स्मार्टफोन खरीदने के शौकीन हैं तो आपको मोबाइल खरीदने के 2-6-10 नियम के बारे में जरूर जान लेना चाहिए। असल में यह नियम बताता है कि फोन की कीमत, ईएमआइ की अवधि और मासिक किस्त आपके मासिक वेतन के हिसाब से कितनी होनी चाहिए, ताकि आप कर्ज और आर्थिक तनाव से बच सकें।

2 का नियम :

खरीदारी में समझदारी

यह नियम आपकी खर्च करने की क्षमता तय करता है। हमेशा फोन की कुल कीमत महीने के वेतन के आधे से ज्यादा नहीं होनी चाहिए। अगर आप महीने का ?50,000 कमाते हैं, तो अधिकतम ?25,000 तक का ही फोन खरीदें। फोन एक ऐसी चीज है जिसकी कीमत डिब्बे से बाहर निकलते ही 20 फीसद गिर जाती है। यह कोई निवेश नहीं है जो आगे चलकर बढ़ेगा। एक महीने की पूरी कमाई या दो महीने के वेतन को एक फोन पर खर्च कर देना वित्तीय गलती है।

6 का नियम:

आजकल कंपनियां 18 महीने और 24 महीने की ईएमआइ का लालच देती हैं ताकि आपको किस्त छोटी लगे। ये ईएमआइ ही एक जाल है, जिसमें लोग फंस जाते हैं। अगर फोन किस्त पर ले रहे हैं, तो उसकी अवधि 6 महीने से ज्यादा नहीं होनी चाहिए। अगर आप दो साल की ईएमआइ पर फोन लेते हैं, तो बड़ी बात है कि एक साल बाद ही वो पुराना लगने लगता है या खराब हो जाता है। तब आपको दुख होता है कि फोन चल नहीं रहा लेकिन किस्त अभी भी भरनी पड़ रही है। 6 महीने में लोन खत्म करने का मतलब है कि आप जल्द ही कर्ज मुक्त हो जाएंगे और ब्याज भी कम लगेगा।

10 का नियम:

यह नियम आपके घर के बजट को बिगड़ने से बचाता है। फोन की मासिक किस्त (ईएमआइ) आपकी महीने की कुल कमाई के 10 फीसद से ज्यादा नहीं होनी चाहिए। फोन खरीदने से पहले खुद से पूछें कि क्या आपको अपनी वित्तीय सीमा से अधिक महंगे फोन खरीदने की जरूरत है। क्या आपको पता है कि जो फोन आप आज ?50,000 में ले रहे हैं, एक साल बाद उसकी बिक्री कीमत ?25,000 भी नहीं बचेगी। यह भी सोचें कि आप नया माडल के नाम पर अपना पैसा बर्बाद तो नहीं कर रहे हैं, जबकि आपका मौजूदा फोन काम कर ही रहा है।

पेशेवरों की सीख, 'पोर्टफोलियो' को पांच कसौटियों पर परखें

जनसत्ता कारोबाजार

बाजार पोस्ट समूह के मुखिया और खुद एक बड़े निवेशक सेठ क्लारमैन ने 'द अटलांटिक' में वारेन बफेट के लिए एक भावनात्मक विदाई संदेश में लिखा कि वारेन की अरबों डालर की दौलत बहुत ही साधारण और बुनियादी तरीकों से बनाई गई थी। यह सिर्फ किस्मत का खेल नहीं था बल्कि यह एक खास तरीके और फार्मूले को बिना रुके बार-बार अनुसरण करने का नतीजा था। जबकि भारतीय निवेशकों की फितरतउतार-चढ़ाव वाले क्षेत्रों में बहुत तेजी से मुनाफा कमाने की होती है।

खराब शेयरों को ढोना बंद करें

निवेश गुरु पीटर लिंच की बात को दोहराते हुए क्लारमैन कहते हैं कि, बफेट ने कभी भी अपने फूलों (अच्छे शेयरों) को नहीं काटा और न ही खरपतवार (खराब शेयरों) को पानी दिया। क्लारमैन बताते हैं कि बफेट की असल काबिलियत यह थी कि उनमें बेहतरीन कंपनियों को सालों तक पकड़ कर रखने की समझ और हिम्मत थी। इसलिए आप अपने पोर्टफोलियो की जांच कीजिए, अगर किसी कंपनी के बुनियादी सिद्धांत कमजोर हो चुके हैं, कमाई ठहरी हुई है या प्रबंधन सवालों के घेरे में है, तो उसे पकड़े रखने के फैसले पर दोबारा सोचिए।

खराब वक्त में परीक्षा के लिए तैयार रहें

क्लारमैन बताते हैं जब बाजार ऊपर जा रहा होता है, तो हर व्यापारी खुद को अक्लमंद समझता है क्योंकि चढ़ता हुआ बाजार हर छोटे-बड़े शेयर को ऊपर ले जाता है, लेकिन बफेट ने शेयर बाजार की तेजी और मंदी, आर्थिक संकट, युद्ध और महामारियों का सामना बड़ी आसानी से किया क्योंकि वे कभी बिना तैयारी के नहीं रहे। अगर आप बफेट की तरह निवेश करना चाहते हैं, तो आपको मजबूत स्थिति से काम करना चाहिए, न कि मजबूरी या हड़बड़ाहट में। आपको बफेट की तरह अपना खुद का 'फ्लोट' बनाना चाहिए। एक आम निवेशक के तौर पर, आपका फ्लोट आपका इमरजेंसी फंड और कर्ज-मुक्त होना है। अगर आप उधार के पैसे पर ट्रेडिंग कर रहे हैं या शेयर खरीदने के लिए निजी कर्ज ले रहे हैं, तो असल में आप बिना तैयारी के काम कर रहे हैं। इसलिए, यह पक्का करें कि आपके पास इतना पैसा अलग रखा हो कि अगर दो साल तक बाजार मंदा रहे, तो भी आपको अपने शेयरों को छूना न पड़े।

लंबी रेस का खेल कंपाउंडिंग

शेयर निवेश की दुनिया में सबसे खतरनाक वाक्य है- 'इस बार चीजे अलग हैं।' चाहे वो क्रिप्टो के प्रति दीवानगी हो या शेयर के पीछे भागती भीड़, हर कोई तुरंत पैसा बनाना चाहता है। क्लारमैन बताते हैं कि असली रोमांच लंबी अवधि में पूंजी के लगातार बढ़ते जाने, यानी कंपाउंडिंग के पक्के गणित से मिलता है। कंपाउंडिंग दुनिया का आठवां अजूबा है और इसका सबसे बड़ा दुश्मन है, बीच में रुक जाना। लंबी दौड़ जीतने के लिए पहले छोटी दौड़ में जिंदा रहना जरूरी है। बफेट ने अपनी दौलत महंगी गाड़ियों, याट्स या लग्जरी आर्ट पर नहीं उड़ाई।उन्होंने अपनी संपत्ति को पोकर के चिप्स की तरह देखा, जिनका इस्तेमाल और ज़्यादा कंपाउंडिंग के लिए किया जाता है। इसलिए धैर्य रखिए और सही मौके यानी 'फैट पिच' का इंतजार कीजिए।

बाजार बारीकी

जटिल शब्दों के जाल से बचें

बफेट ने अल्बर्ट आइंस्टीन की उस बात को सच कर दिखाया, जिसमें कहा गया था कि अगर आप किसी चीज को छह साल के बच्चे को नहीं समझा सकते, तो इसका मतलब है कि आप खुद उसे ठीक से नहीं समझते हैं। भारत के निवेश जगत में अक्सर निवेशक हरित हाइड्रोजन थीम या रक्षा निर्यात 'आर्डर बुक' जैसे भारी-भरकम हौव्वा के पीछे छिप जाते हैं। अगर किसी कारोबार माडल को समझाने के लिए पीएचडी की ज़रूरत पड़े, तो बफेट के मानकों पर वह शायद अच्छा कारोबार नहीं है। किसी आइपीओ या एसएमई शेयर में 'बाय' बटन दबाने से पहले 'रिलेटिव टेस्ट' जरूर करें। क्या आप तीन सरल वाक्यों में बता सकते हैं कि कंपनी पैसा कैसे कमाती है, ग्राहक उसे क्यों नहीं छोड़ेंगे और वह आगे कैसे बढ़ेगी? या क्या आप उस कारोबार माडल को एक 6 साल के बच्चे को समझा सकते हैं? कहने का मतलब शेयर चुनने के लिए ऐसी कंपनी तलाशिए जिसका बिज़नस माडल समझने में आसान हों, जो लगातार पैसा कमाती हों और अपने इलाके या अपने छोटे से बाजार में आगे हों। जटिल माडल से बचें।

'बोरिंग अल्फा' विश्लेषण पर ध्यान दें

एक आम निवेशक अपना दिन-रात कंपनियों की मोटी-मोटी वार्षिक रपटें और उनके 'फुटनोट' खंगालने में नहीं लगाता, लगा भी नहीं सकता। इसलिए वह बाजार के सलाहकारों पर भरोसा कर लेता है और मान्य ट्रेंड में बह जाता है। बफेट इनसे बचते थे। वे खुद कंपनियों की गहरी जांच-पड़ताल करते थे व विश्लेषण पर पूरा ध्यान देते थे। वे कंपनी की ऐसी बातें पकड़ते थे जो बाजार की नजर से छूट गई होती थीं। यह काम बोरिंग (उबाऊ) जरूर है पर इसमें मुनाफा (अल्फा) छुपा होता है। इसलिए किसी कंपनी के शेयर खरीदने का पहले और खरीदने के बाद भी उसकी अच्छी तरह गहरी छानबीन करें।

ठहरें...सोचें...एसआइपी या एकमुश्त निवेश में कौन सी रणनीति है ठीक

फंड्स का फंडा

जनसत्ता कारोबाजार

बाजार में उतार-चढ़ाव अक्सर म्यूचुअल फंड निवेशकों के सामने एक पुरानी दुविधा खड़ी कर देता है कि, उन्हें एकमुश्त बड़ी रकम निवेश करनी चाहिए या एसआइपी के माध्यम से निवेश जारी रखना चाहिए? अभी माहौल वैसा ही है। वैश्विक अनिश्चितताओं के कारण पिछले कुछ वर्षों में भारतीय शेयर बाजार के सूचकांक सेंसेक्स और निफ्टी में भारी उतार-चढ़ाव देखने को मिले हैं। पिछले साल दिसंबर में जोरदार वापसी करते हुए 52 सप्ताह के उच्चतम स्तर पर पहुंचने के बाद, बाजार एक बार फिर उन स्तरों से लगभग छह फीसद तक गिर गया है। इस अस्थिरता ने इक्विटी म्यूचुअल फंडों के प्रदर्शन को भी प्रभावित किया है । ऐसे दौर में निवेशकों के बीच एक आम बहस फिर से शुरू हो गई है, क्या उन्हें बाजार में गिरावट के दौरान अपनी एसआइपी रोक देनी चाहिए या एकमुश्त निवेश करना चाहिए?

एमएफआइ के आंकड़ों से म्यूचुअल फंड निवेशकों के बीच व्यवस्थित निवेश (एसआइपी) में लगातार वृद्धि का पता चलता है। जनवरी 2026 में कुल मासिक एसआइपी योगदान 31,002 करोड़ रुपए रहा, जो जनवरी 2025 के 26,400 करोड़ रुपए से 17% अधिक है। एसआइपी खातों की संख्या में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है और यह 10.29 करोड़ तक पहुंच गई है, जबकि इस माह के दौरान 74.11 लाख नए एसआइपी पंजीकरण दर्ज किए गए हैं। एसआइपी के तहत प्रबंधित परिसंपत्तियों (एयूएम) में सालाना आधार पर 24 फीसद की वृद्धि हुई और यह बढ़कर 16.36 लाख करोड़ रुपए हो गई।

चुनाव से पहले किन तथ्यों पर विचार करें

एसआइपी और एकमुश्त निवेश के बीच निर्णय लेने से पहले, निवेशकों को कई प्रमुख बातों पर विचार करना चाहिए। इनमें वर्तमान बाजार मूल्यांकन, निवेश की अवधि, जोखिम सहनशीलता और अतिरिक्त निधियों की उपलब्धता शामिल हैं। निवेशकों को अल्पकालिक बाजार गतिविधियों की भविष्यवाणी करने की कोशिश करने के बजाय, अपनी वित्तीय स्थिति के अनुकूल एक अनुशासित निवेश रणनीति पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। बाजार में उतार-चढ़ाव अक्सर निवेशकों के लिए अनिश्चितता पैदा करता है, लेकिन यह अनुशासित निवेश के अवसर भी प्रदान करता है।

हालांकि अनिश्चित और अस्थिर अवधि के दौरान एसआइपी अपने औसत लाभ के कारण बेहतर काम करती है, लेकिन सही समय पर किया गया एकमुश्त निवेश अधिक मजबूत रिटर्न दे सकता है। सही रणनीति निवेशक की जोखिम लेने की क्षमता, निवेश की अवधि और वित्तीय लक्ष्यों पर निर्भर करती है।

एसआइपी में भागीदारी में लगातार वृद्धि से पता चलता है कि बाजार में उतार-चढ़ाव के बावजूद, खुदरा निवेशक व्यवस्थित निवेश जारी रखे हुए हैं। एकमुश्त निवेश का मतलब है म्यूचुअल फंड में एक ही बार में बड़ी रकम का निवेश करना। यह रणनीति अक्सर उन निवेशकों द्वारा अपनाई जाती है जिनके पास निवेश करने के लिए अतिरिक्त धनराशि उपलब्ध होती है। दूसरी ओर, एसआइपी निवेशकों को नियमित अंतराल पर (आमतौर पर मासिक रूप से) छोटी-छोटी रकम निवेश करने की अनुमति देता है। यह विधि निवेशकों को समय के साथ धीरे-धीरे अपना निवेश पोर्टफोलियो बनाने में मदद करती है।

दोनों रणनीतियों के जोखिम स्तर, समय संबंधी निहितार्थ और उपयुक्तता निवेशक की वित्तीय स्थिति और बाजार की परिस्थितियों के आधार पर भिन्न-भिन्न हैं। एकमुश्त निवेश अनुकूल बाजार स्तरों पर किए जाने पर संभावित रूप से उच्च प्रतिफल दे सकता है। हालांकि, अस्थिर बाजारों में इसमें समय का जोखिम अधिक होता है। यदि एकमुश्त निवेश करने के तुरंत बाद बाजार गिर जाता है, तो निवेशक को अल्पावधि में अधिक नुकसान हो सकता है। वहीं, यदि निवेश के बाद बाजार में तेजी से सुधार होता है, तो एकमुश्त निवेश करने वाले निवेशकों को लाभ की अधिक संभावना होती है। जब बाजार गिरता है, तो समान एसआइपी राशि से अधिक शेयर खरीदे जा सकते हैं, जबकि बढ़ते बाजार में इससे कम शेयर खरीदे जा सकते हैं।

यदि एकमुश्त निवेश करने के लिए पैसे नहीं हैं, और एसआइपी ही एकमात्र विकल्प है, तो अस्थिरता भरे समय में अपने निवेश को अधिकतम करने के लिए आप तीन से छह महीनों के लिए स्टेप-अप एसइईपी शुरू कर सकते है।

हथकरघा

तिरुवनंतपुरम में स्थित त्रावणकोर हथकरघा केंद्र में एक बुजुर्ग महिला काम करती हुई।

सोने में बना रह सकता है उतार-चढ़ाव

पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष के बीच सोने की कीमतों में अगले सप्ताह भी उतार-चढ़ाव जारी रहने की संभावना है। निवेशकों की पश्चिम एशिया से जुड़े घटनाक्रमों और घरेलू बाजार की धारणा को प्रभावित करने वाले प्रमुख वृहत आर्थिक आंकड़ों पर नजर होगी। विश्लेषकों ने यह कहा।

जेएम फाइनेंशियल सर्विसेज लि. के उपाध्यक्ष प्रणव मेर ने कहा, 'पश्चिम एशिया में जारी घटनाक्रमों पर नजर बनी रहेगी। तनाव बढ़ने से सोने की कीमतों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा, लेकिन तनाव कम होने के संकेत मिलने पर भारी बिकवाली हो सकती है। चांदी में अभी सीमित दायरे में घट-बढ़ हो रही है। लेकिन इसमें भारी अस्थिरता देखी जा रही है। इसका कारण सोने और तांबा तथा जस्ता जैसी औद्योगिक धातुओं में सीमित दायरे में घट-बढ़ के कारण इसके लाभ सीमित हैं।'

पिछले सप्ताह घरेलू बाजार में सर्राफा वायदा में भारी उतार-चढ़ाव देखने को मिला। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज में चांदी 14,359 रुपए यानी 5.08 फीसद टूटी, जबकि सोना 470 रुपए यानी 0.3 फीसद फिसला। वैश्विक स्तर पर कामेक्स में चांदी के वायदा भाव में 8.98 डालर यानी लगभग 10 फीसद की कमी आई।

पश्चिम एशिया संघर्ष : संकट में सहारा बन रही क्रिप्टोकरंसी

मार्च 2026 के मध्य में विश्व एक नए बड़े संघर्ष के बीच खड़ा है। 28 फरवरी 2026 को अमेरिका और इजराइल ने ईरान पर संयुक्त सैन्य हमले शुरू किए, जिनमें ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्लाह अली खामेनेई सहित कई शीर्ष नेता मारे गए। इस युद्ध ने पूरे मध्य पूर्व को हिला दिया है। नतीजतन, वैश्विक तेल आपूर्ति प्रभावित हुई है, नौपरिवहन घटा है और यूरोपीय गैस कीमतें बढ़ गई हैं।

युद्ध अब क्षेत्रीय रूप लेता जा रहा है और वैश्विक अर्थव्यवस्था पर इसका दबाव बढ़ रहा है। इससे क्रिप्टो व्यापार भी अछूता नहीं है। युद्ध की शुरुआत में क्रिप्टो बाजार में भारी गिरावट आई।

बिटकाइन 63,000 अमेरिकी डालर तक लुढ़क गया, लेकिन जल्दी ही वापसी कर 67,000-73,000 डालर के स्तर पर पहुंच गया। एथेरियम भी 6.5 फीसद ऊपर चढ़ा। कारण? निवेशक पारंपरिक बाजारों से निकलकर सुरक्षित स्थान की तलाश में क्रिप्टो की ओर मुड़े। युद्ध की अनिश्चितता ने बिटकाइन को 'हेज' के रूप में मजबूत किया। विशेषज्ञों का कहना है कि अगर युद्ध लंबा चला तो युद्ध खर्च से तरलता बढ़ेगी, जो बिटकाइन के लिए सकारात्मक रहेगी।

ईरान का क्रिप्टो इस्तेमाल

क्रिप्टो करामात

ईरान पिछले कई सालों से क्रिप्टो को अमेरिकी प्रतिबंधों को चकमा देने का हथियार बना चुका है। 2025 में ईरान का क्रिप्टो लेन-देन का आकार आठ से 11 अरब डालर पहुंच गया। इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कार्प्स (आइआरजीसी) ने 50 फीसद से ज्यादा बाजार हिस्सेदारी हासिल कर ली और तीन अरब डालर प्राक्सी समूहों (हिजबुल्लाह, हमास, हूती) को क्रिप्टो से वित्त पोषण दिया। बिलकाइन्स (खासकर यूएसडीटी) सबसे ज्यादा इस्तेमाल हो रहे हैं। हमलों के तुरंत बाद ईरानी एक्सचेंज से 20 लाख डालर से अधिक का पूंजी निकली, लोग अपनी पूंजी बचाने के लिए क्रिप्टो में भागे। इसलिए युद्ध के हालत में क्रिप्टोकरंसी लेनदेन और निवेश का साधन बन कर उभर रही है। क्रिप्टो का यह नया अवतार है।

भविष्य में क्रिप्टोकरंसी की क्या भूमिका होगी?

1. *प्रतिबंध*-बचाव का सबसे बड़ा माध्यम बनेगा : युद्ध और बढ़ते प्रतिबंधों के बीच ईरान, रूस और उत्तर कोरिया जैसे देश क्रिप्टो को और बढ़ावा देंगे। चैनालिसिस रपट के मुताबिक 2025 में राज्य-प्रायोजित 'सैंक्शंस एवेजन' 694 फीसद बढ़ गया। 2026-27 में यह ट्रेंड और तेज होगा। ईरान पहले से ही बिटकाइन 'माइनिंग' को कानूनी बना चुका है और नोबिटेक्स जैसे लोकल एक्सचेंज वैश्विक वित्त का विकल्प बन गए हैं।

2. *वैश्विक हेज के रूप में बिटकाइन :* युद्ध से तेल महंगा, मुद्रास्फीति बढ़ेगी। ऐसे में बिटकाइन 'डिजिटल गोल्ड' की तरह चमकेगा। विशेषज्ञ आर्थर हेयज कहते हैं कि लंबे युद्ध ने सेंट्रल बैंक को फिर प्रिंटिंग पर मजबूर कर सकता है, जो क्रिप्टो के लिए बहुत अच्छा है।

3. *नियमन और चुनौतियां:* अमेरिका और यूरोप अब क्रिप्टो मंच पर सख्त नजर रख रहे हैं जो ईरान को मदद कर रहे हैं। नए प्रतिबंध और केवाईसी नियम आ सकते हैं, लेकिन विकेंद्रित वित्त इनसे बच निकलेगा।

4. *ईरान के अंदर क्रिप्टो क्रांति :* रियाल की गिरावट से आम ईरानी स्टेबलकाइन्स में भाग रहे हैं। युद्ध के बाद नया सर्वोच्च नेता आने पर भी क्रिप्टो नीति और उदार हो सकती है। इसके बाद ईरान समेत मध्य पूर्व के और देश भी क्रिप्टो को अपना सकते हैं।

बदल रही अर्थव्यवस्था

ईरान-अमेरिका युद्ध न सिर्फ मध्य पूर्व को बदल रहा है, बल्कि वैश्विक वित्तीय व्यवस्था को भी नए सिरे से परिभाषित कर रहा है। जहां पारंपरिक बैंकिंग और तेल बाजार अस्थिर हैं, वहीं क्रिप्टोकरेंसी स्वतंत्र, 247 और सीमा रहित विकल्प साबित हो रही है। 2026-2030 के बीच क्रिप्टो का भविष्य चमकदार दिख रहा है। खासकर प्रतिबंधित अर्थव्यवस्थाओं में। लेकिन याद रखें, युद्ध की अवधि यह तय करेगी कि बिटकाइन 100,000 डालर का आंकड़ा कब छुएगा। वर्तमान में निवेशकों को सलाह है कि वे सतर्क रहें, लेकिन लंबी अवधि में क्रिप्टो पर भरोसा रख सकते हैं।

-दिव्या तंवर

मंडे पॉजिटिव 25-30 साल बाद इतनी बड़ी संख्या में विदेशी पक्षियों का लगा रहा जमावड़ा, दूर देश से आए पक्षियों ने दिए 30 हजार अंडे...अब लौटने लगे अपने देश

चार माह प्रवासी मेहमानों से गुलजार रही झीलें, 15 देशों के 150 प्रजाति पक्षी करते रहे कलरव

भास्कर न्यूज | मोतिहारी

जिले की चौर, झीलें और नदी किनारे के दलदली इलाके पिछले चार महीनों से प्रकृति के अनोखे उत्सव के साक्षी बने रहे। नवंबर में जब सर्दी की शुरुआत हुई, तभी दुनिया के अलग-अलग कोनों से हजारों किमी की उड़ान भरकर विदेशी प्रवासी पक्षियों का झुंड जिले की झीलों में आ पहुंचा। इन रंग-बिरंगे मेहमानों ने यहां न सिर्फ सर्दियों का आश्रय लिया, बल्कि अपने घोंसले बनाए, अंडे दिए और अब अपने बच्चों के साथ धीरे-धीरे वापस अपने

देश लौटने लगे हैं। वन एवं पर्यावरण विभाग के अनुसार इस वर्ष जिले के आठ प्रमुख चंवर और झीलों में 15 देशों से आए करीब 150 प्रजातियों के प्रवासी पक्षियों ने डेरा डाला। इसमें कई दुर्लभ प्रजातियां भी शामिल है। चार महीने के प्रवास के दौरान इन पक्षियों ने करीब 30 हजार से अधिक अंडे दिए। अब अंडों से बच्चे निकलने के बाद उनके साथ वापसी का सिलसिला शुरू हो गया है और अगले कुछ दिनों में अधिकांश पक्षी अपने मूल स्थानों की ओर लौट जाएंगे। बताया जाता है कि 25 से 30 वर्षों के बाद इतनी बड़ी संख्या में प्रवासी पक्षियों का जमावड़ा जिले में इसबार देखने को मिला है। नवंबर से ही ठंड का असर बढ़ जाने के कारण इस बार पूर्वी चंपारण की आर्द्रभूमि प्रवासी पक्षियों के लिए सुरक्षित और अनुकूल ठिकाना बन गई। जिले की सरोतर झील, बासमनपुर झील, सोनबरसा, चिलरांव, गंडक नदी के किनारे के दलदली क्षेत्र और बूढ़ी गंडक के आसपास के चंवरों में हजारों की संख्या में ये पक्षी दिखाई दिए।

साइबेरिया से लेकर यूरोप तक से आए मेहमानः इस बार रूस, साइबेरिया, यूरोप और मध्य एशिया सहित करीब 15 देशों से प्रवासी पक्षी यहां पहुंचे। इनमें रेड-क्रेस्टेड पोचार्ड, कॉमन क्रेन, नॉर्दर्न पिनटेल, स्पूनबिल, जैक स्निप, ट्रेक सैंडपिपर, डूनलिन, रफ, पलास गुल, विमब्रेल, यूरेसिशन क्रिउ, मर्स सैंडपिपर,फैलकोनाडिया, ब्लैक-नैक्ड स्टॉर्क जैसे दुर्लभ जलपक्षी शामिल हैं। ये पक्षी बर्फ से ढके अत्यधिक ठंडे इलाकों को छोड़कर हजारों किमी की कठिन उड़ान भरते हुए यहां पहुंचे। कई पक्षियों ने उत्तरी तुंड्रा और आर्कटिक सर्कल जैसे क्षेत्रों से लगभग 8-10 हजार किमी की दूरी तय की। इन झीलों में उन्हें पर्याप्त भोजन, सुरक्षित वातावरण और शांत पानी मिला। यही कारण रहा कि इन पक्षियों ने यहां अपने घोंसले बनाए और अंडे देकर अपने बच्चों को जन्म दिया।

भास्कर इनसाइट

पांच बार हुआ सर्वे, विशेषज्ञों ने किया अध्ययन

वन एवं पर्यावरण विभाग ने नवंबर से फरवरी के बीच पांच बार सर्वे कराया। इस में मुंबई स्थित बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी के पक्षी वैज्ञानिक, शोधकर्ता और स्वयंसेवक भी शामिल हुए। विशेषज्ञों की टीम ने करीब 10-10 दिनों तक जिले की झीलों और चंवरों का अध्ययन किया। टीम ने सरोतर, बासमनपुर, गंडक नदी, सोनबरसा और चिलरांव समेत कई आर्द्रभूमि क्षेत्रों में जाकर पक्षियों की संख्या, उनकी प्रजाति और प्रवास के पैटर्न का अध्ययन किया। पक्षी विशेषज्ञों ने आधुनिक दूरबीन, कैमरा, जीपीएस और पहचान पुस्तकों की मदद से सर्वे किया। झीलों और नदी किनारों पर जाकर प्रत्येक प्रजाति की गिनती की गई और तस्वीरें व वीडियो बनाए गए। जिला वन अधिकारी राजकुमार शर्मा का कहना है कि जिले की आर्द्रभूमि प्रवासी पक्षियों के लिए बेहद अनुकूल साबित हो रही है। झीलों और चंवरों का संरक्षण सही ढंग से किया जाए, तो आने वाले वर्षों में यह क्षेत्र पक्षी पर्यटन का बड़ा केंद्र बन सकता है।

रिक्शा चालक के नाम 38.50 करोड़ का कारोबार, नोटिस

एजेंसी | हरदोई

हरदोई के भरावन क्षेत्र में एक ई-रिक्शा चालक को आयकर विभाग से नोटिस मिलने के बाद हड़कंप मच गया है। इस नोटिस में उसके नाम पर 38.50 करोड़ रुपये के लेन-देन का उल्लेख है। संबंधित व्यक्ति दिल्ली में ई-रिक्शा चलाकर अपने परिवार का भरण-पोषण करता है। भरावन निवासी रामपाल पिछले लगभग 15 वर्षों से दिल्ली में ई-रिक्शा चलाकर अपनी आजीविका कमाते हैं। उनकी पत्नी भी घरों में काम करके परिवार की आर्थिक मदद करती हैं। रामपाल के अनुसार, करीब तीन साल पहले कुछ अज्ञात लोगों ने उनका मोबाइल फोन, पैन कार्ड और आधार कार्ड छीन लिया था।

सीआईआई की बैठक • निवेशकों को बिहार आने का दिया न्योता

शराबबंदी से सालाना 30 हजार करोड़ घाटा, पर निर्णय ऐतिहासिक : सम्राट

भास्कर न्यूज | पटना

उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने कहा कि शराबबंदी से बिहार को हर

साल करीब 28 से 30 हजार करोड़ रुपए का नुकसान हो रहा है। इसके बावजूद यह मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के जीवन का सबसे ऐतिहासिक निर्णय है उन्होंने कहा कि नीतीश कुमार ने करीब 50 साल तक बिहार को समय दिया है। अब वह बिहार से बाहर जा रहे हैं। यह बिहार के लोगों के लिए चिंता का विषय है, जो स्वाभाविक है।

सम्राट ने कहा कि बिहार के लोग निश्चिंत रहें। नीतीश कुमार की देखरेख में राज्य का विकास आगे भी जारी रहेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और नीतीश कुमार का सपना जरूर पूरा होगा। पटना में भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) के बिहार चैप्टर की वार्षिक बैठक में शनिवार को उन्होंने निवेशकों को बिहार आने का न्योता दिया। उन्होंने कहा कि बिहार अब बदल चुका है। पहले का बिहार और आज का बिहार अलग है। एक समय था जब राज्य में किडनैपिंग उद्योग चल रहा था। लोग पैसा कमाने के लिए अपहरण करते थे। सुशासन की सरकार ने उस उद्योग को पूरी तरह बंद कर दिया है। उन्होंने बताया कि उद्योग को बढ़ावा देने के लिए राज्य में चार नए हवाई अड्डे बनाए जा रहे हैं।

भास्कर नॉलेज... शराबबंदी से कई परिवारों की स्थिति सुधरी

1. बिहार में अप्रैल 2016 में पूर्ण शराबबंदी लागू की गई थी। फैसला नीतीश की सरकार ने लिया था। उद्देश्य समाज शराब के दुष्प्रभाव को कम करना व परिवारों को सुरक्षित बनाना था।
2. शराबबंदी लागू होने से पहले बिहार सरकार को शराब बिक्री से बड़ा राजस्व मिलता था। राज्य के उत्पाद विभाग को हर साल हजारों करोड़ रुपए की आय होती थी।
3. शराबबंदी लागू होने के बाद यह आय पूरी तरह बंद हो गई। सरकार को हर साल करीब 28 से 30 हजार करोड़ रुपए के राजस्व का नुकसान होने की बात कही जाती है।
4. सरकार का कहना है कि शराबबंदी से सामाजिक स्तर पर सकारात्मक असर पड़ा है। घरेलू हिंसा के मामलों में कमी आई है और कई परिवारों की आर्थिक स्थिति सुधरी है।

शराबबंदी पर सख्ती भी... जनवरी से नवंबर 2025 : बड़ी कार्रवाई के आंकड़े

33.30 लाख ली. शराब जब्त

मद्य निषेध इकाई ने जनवरी से नवंबर 2025 के बीच पूरे बिहार में बड़े पैमाने पर कार्रवाई की। इस दौरान कुल 33 लाख 30 हजार 727 लीटर देसी और विदेशी शराब जब्त की गई। इसमें 16 लाख 79 हजार 703 लीटर देसी और 16 लाख 5 हजार 24 लीटर विदेशी शराब शामिल है। औसतन हर महीने करीब 3 लाख 2 हजार 793 लीटर शराब पकड़ी गई। शराबबंदी को सख्ती से लागू करने के लिए लगातार छापेमारी अभियान चलाए जा रहे हैं।

169 ट्रक-कंटेनर जब्त

शराब तस्करी पर रोक के लिए बिहार पुलिस और मद्य निषेध इकाई ने वाहनों पर भी बड़ी कार्रवाई की है। नवंबर 2025 तक शराब से लदे 169 ट्रक और कंटेनर पकड़े गए। इसके अलावा 474 छोटी गाड़ियां और बाइक भी जब्त की गईं। अधिकतर मामले सीमावर्ती इलाकों से जुड़े हैं। बिहार की सीमाएं झारखंड, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल से लगती हैं। इन राज्यों में शराबबंदी नहीं होने के कारण वहां से शराब लाने की कोशिशें होती रहती हैं। सीमा पर लगातार निगरानी है।

48,955 तस्कर गिरफ्तार

राज्य के सभी जिलों में एंटी लीकर टास्क फोर्स ने लगातार अभियान चलाया। इस दौरान 16 लाख 16 हजार 920 लीटर शराब बरामद की गई। साथ ही 48,955 तस्करों, सप्लायरों और शराब के अवैध कारोबार से जुड़े लोगों को गिरफ्तार किया गया। तस्करी के नेटवर्क को तोड़ने के लिए पुलिस ने राज्य से बाहर भी कार्रवाई की। बिहार पुलिस ने अन्य राज्यों में 36 ऑपरेशन चलाए। इन अभियानों में 2 लाख 15 हजार 237 लीटर शराब जब्त की गई।

निवेशकों से बोले- बिहार अब बदल चुका

सम्राट चौधरी ने निवेशकों से कहा कि बिहार अब तेजी से बदल रहा है। राज्य में उद्योग और निवेश के लिए माहौल बेहतर हुआ है। उन्होंने कहा कि पहले बिहार की पहचान अपराध और अपहरण से जुड़ी थी। लेकिन अब स्थिति बदल चुकी है। कानून व्यवस्था में सुधार हुआ है। सरकार उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए लगातार कदम उठा रही है। उन्होंने निवेशकों से बिहार में निवेश करने का आग्रह किया।

चार नए हवाई अड्डे बनाए जा रहे

उपमुख्यमंत्री ने कहा कि उद्योग और निवेश को बढ़ावा देने के लिए राज्य में बुनियादी ढांचे को मजबूत किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि बिहार में चार नए हवाई अड्डों का निर्माण किया जा रहा है। इससे राज्य की कनेक्टिविटी बेहतर होगी। निवेशकों और उद्योगों को भी फायदा मिलेगा। उन्होंने कहा कि बेहतर सड़क, रेल और हवाई संपर्क से उद्योगों को बढ़ावा मिलता है।

प्रयागराज में दादा के सामने एलकेजी के छात्र का अपहरण

प्रयागराज| प्रयागराज में शनिवार को दिनदहाड़े एलकेजी में पढ़ने वाले बच्चे का अपहरण हो गया। छात्र स्कूल से घर लौट रहा था। जैसे ही वह स्कूल वैन से नीचे उतरा, दो बदमाशों ने उसे कार के भीतर खींच लिया और भाग निकले। ये किडनैपिंग बच्चे के दादा के सामने हुई। वे उसे रिसीव करने पहुंचे थे। वह कुछ ही दूरी पर खड़े थे। परिवार की आर्थिक हालत अच्छी नहीं है। बच्चे के पिता मुंबई में सिक्योरिटी गार्ड हैं। मां का रो-रोकर बुरा हाल है।

अभी तक फिरौती का फोन नहीं आया है। एडिशनल पुलिस कमिश्नर डॉ. अजय पाल शर्मा और यमुनापार डीसीपी विवेक चंद्र यादव मौके पर पहुंचे। दोनों अफसरों ने मांडा थाने के एसएचओ अनिल कुमार वर्मा को फटकार लगाई। अजय पाल ने 24 घंटे में छात्र की बरामदगी का आश्वासन दिया है। पुलिस की टीमें किडनैपर्स की तलाश में जुटी हैं।

बीडीओ के पास 21 प्लॉट, पटना में फ्लैट व कई बैंकों में निवेश भी

पटना/सुरसंड| सीतामढ़ी के सुरसंड प्रखंड के बीडीओ कृष्णा राम के खिलाफ निगरानी अन्वेषण ब्यूरो ने आय से अधिक संपत्ति का केस दर्ज किया है। उनकी कुल ज्ञात आय से करीब 59.8% अधिक संपत्ति पाई गई है। कृष्णा राम पिछले दो साल से सुरसंड में बीडीओ के पद पर तैनात हैं। निगरानी टीम ने सीतामढ़ी, मोतिहारी और पटना स्थित उनके आवासों व ठिकानों की तलाशी ली। प्रारंभिक जांच में बीडीओ के नाम पर 21 भूखंड, पटना में एक फ्लैट और विभिन्न बैंकों में निवेश के दस्तावेज सामने आए हैं। फिलहाल निगरानी विभाग इन संपत्तियों का उनकी घोषित आय से मिलान कर रहा है। निगरानी डीएसपी नरेंद्र कुमार ने बताया कि जब्त दस्तावेजों और खातों की जांच के बाद संपत्ति का सटीक मूल्यांकन सामने आएगा।

बरियारपुर व खड़गपुर के बीच धपड़ी मोड़ पर हादसा

कार पेड़ से टकराई, यूपी पुलिस दो सबइंस्पेक्टर समेत 4 घायल

किसी मामले की जांच के सिलसिले में बिहार आए थे

भास्कर न्यूज | हवेली खड़गपुर

बरियारपुर-खड़गपुर एनएच-333 पर धपड़ी मोड़ स्थित एक ढाबे के समीप रविवार की अहले सुबह उत्तर प्रदेश पुलिस की कार अनियंत्रित होकर सड़क किनारे स्थित एक पेड़ से टकरा गई। हादसे में वाहन सवार दो सब-इंस्पेक्टर और दो कांस्टेबल गंभीर रूप से घायल हो गए। सभी घायल पुलिसकर्मी उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले के बांसगांव थाना में तैनात हैं।

जानकारी के अनुसार, घायल पुलिसकर्मी पिछले दो दिनों से किसी मामले की जांच के सिलसिले में बिहार आए हुए थे। शनिवार देर रात वे भागलपुर से जमुई की ओर जा रहे थे। रविवार तड़के धपड़ी पुल के पास वाहन चला रहे कांस्टेबल संजीव कुमार सिंह को अचानक झपकी आ गई, जिसके कारण तेज रफ्तार वाहन पर से नियंत्रण खो गया और कार सीधे पेड़ से जा टकराई। घटना में कार भी बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई। सभी को अस्पताल ले जाया गया।

आगे-पीछे कोई बड़ा वाहन नहीं था, चारों मुंगेर रेफरः घायल एसआई नीरज राय ने बताया गनीमत रही कि हादसे के वक्त सड़क पर आगे-पीछे कोई बड़ा वाहन नहीं था, वरना परिणाम और भी भयावह हो सकते थे। टक्कर के बाद घायल पुलिसकर्मियों ने खुद ही डायल 112 पर सूचना दी। खबर मिलते ही शामपुर थाना की पुलिस तुरंत मौके पर पहुंची और स्थानीय लोगों की मदद से सभी को खड़गपुर अनुमंडल अस्पताल पहुंचाया। घायलों की पहचान एसआई अभिजीत उपाध्याय, एसआई नीरज राय, कांस्टेबल संजीव कुमार सिंह (चालक) और कांस्टेबल जय प्रकाश के रूप मे की गई। खड़गपुर अनुमंडल अस्पताल में चिकित्सक डॉ. अजीत कुमार ने सभी का प्राथमिक उपचार किया। हालांकि चोट की गंभीरता को देखते हुए चारों को बेहतर इलाज के लिए मुंगेर सदर अस्पताल रेफर कर दिया गया है, जहां फिलहाल उनका उपचार जारी है। घटना के बाद शामपुर थाना पुलिस दुर्घटनाग्रस्त अर्टिगा वाहन को थाना ले आई। साथ ही मामले की आधिकारिक सूचना संबंधित विभाग व परिजनों को दे दी गई है।

यूपीः सुल्तानपुर में नहर के पास लटका मिला विवाहिता का शव

एजेंसी | सुल्तानपुर (यूपी)

नहर के किनारे पेड़ से लटका हुआ एक 26 वर्षीय महिला का शव मिला है, जिसका आधा हिस्सा पानी में डूबा हुआ था।

यह घटना यहाँ के मुंजेश नगर क्रॉसिंग के पास हुई। शुरुआती जांच में पता चला है कि महिला (जिसकी पहचान अभी उजागर नहीं की गई है) विवाहित थी और एक दिन पहले विवाद के बाद अपने ससुराल से निकली थी। क्षेत्राधिकारी (सीओ) आशुतोष कुमार के अनुसार, कूरेभार थाने के अधिकारियों को रविवार सुबह सूचना मिली कि एक महिला ने कथित तौर पर नहर के किनारे फांसी लगाकर जान दे दी है। मौके पर पहुंची पुलिस टीम ने महिला को अपनी साड़ी के फंदे से पेड़ से लटका हुआ पाया। सीओ कुमार ने बताया, "उसका आधा शरीर नहर के पानी में डूबा हुआ था। शुरुआती जांच में यह भी सामने आया है कि महिला अयोध्या जिले के बीकापुर इलाके की रहने वाली थी और उसकी शादी को लगभग सात साल हो चुके थे। कथित तौर पर परिजनों से झगड़े के बाद वह एक दिन पहले घर से चली गई थी। प्राथमिक जांच में शरीर पर चोट के कोई स्पष्ट निशान नहीं मिले हैं। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। पुलिस मामले की जांच में जुट गई है।

चंदौली में संपत्ति विवाद को लेकर बड़े ने छोटे भाई को गोली मारी, मौत

एजेंसी | चंदौली (यूपी)

उत्तर प्रदेश के चंदौली जिले में संपत्ति विवाद और बढ़ते वित्तीय तनाव के चलते एक व्यक्ति ने कथित तौर पर अपने 27 वर्षीय किसान छोटे भाई की हत्या कर दी। पुलिस ने रविवार को बताया कि यह घटना शुक्रवार को कंदवा क्षेत्र के जमालपुर गांव में हुई। जब विशाल सिंह गांव के बाहर एक फार्महाउस पर आराम कर रहा था, तब उसके बड़े भाई विवेक सिंह (30) ने उसके सिर में गोली मार दी, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस अधीक्षक आदित्य लांघे ने बताया कि क्राइम ब्रांच के साथ संयुक्त जांच के बाद आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है।

पुलिस ने अपराध में इस्तेमाल की गई पिस्टल और फार्महाउस के सीसीटीवी फुटेज बरामद कर लिए हैं। पूछताछ के दौरान विवेक ने खुलासा किया कि चार महीने पहले उन्होंने ₹75 लाख में जमीन का एक टुकड़ा बेचा था। विवेक ने अपने हिस्से के पैसे खर्च कर दिए थे, जिसके बाद वह अक्सर अपने छोटे भाई से आर्थिक मदद मांगता था, जिससे उसे बार-बार अपमानित होना पड़ता था।

एसपी लांघे के अनुसार, विशाल ने हाल ही में जमानिया स्थित एचडीएफसी बैंक में ₹25 लाख की एफडी कराई थी। विवेक को लगा कि भाई की हत्या करने से उसे पूरी संपत्ति और पैसों पर नियंत्रण मिल जाएगा। 5 मार्च को होली के जश्न के दौरान आरोपी ने शराब पी थी और विशाल ने उसे फिर से फटकार लगाई, जिससे वह और भी क्रोधित हो गया। अगले दिन जब विशाल फार्महाउस पर सो रहा था, विवेक ने वहां जाकर उसके सिर में गोली मार दी। क्षेत्राधिकारी (सदर) देवेंद्र कुमार ने बताया कि आरोपी ने कबूल किया है कि हत्या के बाद उसने फार्महाउस में लगे सीसीटीवी का डीवीआर निकाल लिया और उसे 7 मार्च को तालाब के पास फेंक दिया।

वारदात • उत्तर प्रदेश के महाराजगंज में एसएसबी में कार्यरत थी महिला

दो बच्चों की हत्या कर पिता फंदे पर लटका, दीवार पर लिखा- पत्नी और उसका आशिक जिम्मेदार

भास्कर न्यूज | महराजगंज

बच्चे खिड़की और पति पंखे के कुंडे से लटकता मिला

महराजगंज में सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) की महिलाकर्मी के पति ने मासूम बेटा-बेटी की हत्या कर आत्महत्या कर ली। उसने दोनों बच्चों को खिड़की से रस्सी के सहारे लटकाया। फिर छत के कुंडे से फंदा लगाकर सुसाइड कर लिया। मौत से पहले पति ने कमरे की दीवार पर सुसाइड नोट खि- 'हमारी मौत का कारण मेरी पत्नी और उसका आशिक सोनू गौतम है। मेरे साथ रहते हुए भी वह सोनू से बात करती है। बच्चों को अपने से दूर नहीं कर सकता हूं।'

वारदात रविवार सुबह 7 बजे की है। जब पति ने बच्चों की हत्या की, तो उनकी चीख निकली। चीख सुनकर नीचे के फ्लोर में रहने वाले किराएदारों को शक हुआ। उन्होंने आवाज लगाई, तो कोई रिस्पॉन्स नहीं मिला। फिर वो लोग ऊपर देखने आए। दरवाजा खटखटाया, तो नहीं खुला। फिर उन्होंने महिला जवान को फोन किया। वह उस वक्त ड्यूटी पर थी। थोड़ी देर में महिला जवान घर आई। दरवाजा खटखटाया, लेकिन नहीं खुला। इसके बाद दरवाजा तोड़ा गया तो अंदर का सीन देखकर सभी सन्न रह गए।

वंदना ड्यूटी छोड़कर कमरे पर आई। दरवाजा तोड़कर अंदर घुसी, तो नजारा देखकर सन्न रह गई। वह बेटा-बेटी और पति की लाश देखकर बेहोश हो गई। वंदना का पूरा परिवार खत्म हो गया। थोड़ी देर बाद जब होश में आई, तो फर्श पर लेटकर हाथ-पैर मारते हुए रोने लगी। बच्चों के शवों से लिपटकर रोते हुए फिर बेहोश हो गई। मेरे साथ रहकर भी वंदना, सोनू को कॉल करती है। बोलती है कि तुम मेरा कुछ नहीं कर सकते। मैं अपने बच्चों को दूर नहीं कर सकता। हमारी मौत का कारण मेरी पत्नी वंदना कुमारी (एसएसबी), उसका आशिक सोनू गौतम, वंदना के पिता रामअवतार, मां चंदा देवी, भाई नवीन कुमार, उसकी पत्नी सुनीता देवी और अमरनाथ हैं। ये लोग पैसे के लिए मेरी पत्नी को अपने घर बुलाते हैं। पत्नी हर महीने 5000 रुपए देती है। इनका आशिक सोनू गौतम ये भी पैसे लेता है। सोनू की वजह से आज पूरा परिवार खत्म हो गया।

गवाही से बच रहे पुलिसकर्मी, गैरजमानती वारंट जारी

क्राइम रिपोर्टर | मुजफ्फरपुर

सदर थाना में साइबर फ्रॉड और एनडीपीएस एक्ट के केस में गवाही से बच रहे पुलिस अधिकारियों के खिलाफ विशेष एनडीपीएस एक्ट कोर्ट-2 ने सख्त रुख अपनाया है। अदालत ने केस दर्ज कराने वाले दारोगा, आईओ समेत छह पुलिसकर्मियों के विरुद्ध गैरजमानती वारंट जारी किया है। अदालत ने स्पष्ट किया है कि मामले में लगातार सुनवाई चल रही है, लेकिन गवाहों के पेश नहीं होने से न्यायिक प्रक्रिया प्रभावित हो रही है। मामला सदर थाना में 3 अगस्त 2020 को दर्ज किया गया था। केस में सदर थाने के तत्कालीन दारोगा रघुवीर सिंह, आईओ दारोगा राजेश यादव, सिपाही छोटे लाल सिंह, संजीव कुमार तथा होमगार्ड जवान अरविंद कुमार व धनिक कुमार राणा की गवाही होनी है। बताया गया कि इन सभी पुलिसकर्मियों की गवाही मामले में बेहद महत्वपूर्ण है, क्योंकि इन्हीं के बयान और गवाही के आधार पर प्राथमिकी दर्ज की गई थी।

बरियारपुर व खड़गपुर के बीच धपड़ी मोड़ पर हादसा

कार पेड़ से टकराई यूपी पुलिस के दो सब इंस्पेक्टर समेत चार घायल

किसी मामले की जांच के सिलसिले में बिहार आए थे

भास्कर न्यूज | हवेली खड़गपुर

बरियारपुर-खड़गपुर एनएच-333 पर धपड़ी मोड़ स्थित एक ढाबे के समीप रविवार की अहले सुबह उत्तर प्रदेश पुलिस की कार अनियंत्रित होकर सड़क किनारे स्थित एक पेड़ से टकरा गई। हादसे में वाहन सवार दो सब-इंस्पेक्टर और दो कांस्टेबल गंभीर रूप से घायल हो गए। सभी घायल पुलिसकर्मी उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले के बांसगांव थाना में तैनात हैं।

जानकारी के अनुसार, घायल पुलिसकर्मी पिछले दो दिनों से किसी मामले की जांच के सिलसिले में बिहार आए हुए थे। शनिवार देर रात वे भागलपुर से जमुई की ओर जा रहे थे। रविवार तड़के धपड़ी पुल के पास वाहन चला रहे कांस्टेबल संजीव कुमार सिंह को अचानक झपकी आ गई, जिसके कारण तेज रफ्तार वाहन पर से नियंत्रण खो गया और कार सीधे पेड़ से जा टकराई। घटना में कार भी बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई। सभी को अस्पताल ले जाया गया।

आगे-पीछे कोई बड़ा वाहन नहीं था, चारों मुंगेर रेफरः घायल एसआई नीरज राय ने बताया गनीमत रही कि हादसे के वक्त सड़क पर आगे-पीछे कोई बड़ा वाहन नहीं था, वरना परिणाम और भी भयावह हो सकते थे। टक्कर के बाद घायल पुलिसकर्मियों ने खुद ही डायल 112 पर सूचना दी। खबर मिलते ही शामपुर थाना की पुलिस तुरंत मौके पर पहुंची और स्थानीय लोगों की मदद से सभी को खड़गपुर अनुमंडल अस्पताल पहुंचाया। घायलों की पहचान एसआई अभिजीत उपाध्याय, एसआई नीरज राय, कांस्टेबल संजीव कुमार सिंह (चालक) और कांस्टेबल जय प्रकाश के रूप मे की गई।

भास्कर एक्सक्लूसिव मेट्रो स्टेशनों की तरह रेलवे यात्रियों के प्रवेश व निकास सुविधा

अब टिकट पर दर्ज क्यू-आर कोड स्कैन करने के बाद ही यात्री को प्लेटफार्म पर मिलेगा प्रवेश

चंदन चौधरी | मुजफ्फरपुर

अब रेलवे प्लेटफॉर्मों पर टिकट स्कैन करने के बाद ही यात्री प्रवेश कर सकेंगे। मेट्रो स्टेशनों की तरह रेलवे जंक्शनों के प्रवेश व निकास द्वार पर स्कैनर लगाए जाएंगे। टिकट पर दर्ज क्यू-आर कोड स्कैन होने पर यात्रियों को जंक्शन पर प्रवेश व निकास करने की अनुमति दी जाएगी।

बेटिकट यात्रियों के प्रवेश पर अंकुश लगाने की पहलः भारतीय रेलवे बिना टिकट यात्रा पर रोकने के लिए अत्याधुनिक तकनीकों और नए नियमों को लागू कर रहा है। इनमें सबसे प्रमुख मेट्रो स्टेशन आधारित एंट्री और एग्जिट गेट्स विकसित किया जाना है। दिल्ली व अन्य शहरों के मेट्रो की तर्ज पर जंक्शनों पर ऑटोमेटेड गेट बनाया जाएगा। रेलवे के एनएसजी एक व दो श्रेणी वाले बड़े स्टेशनों पर मेट्रो की तरह एंट्री और एग्जिट गेट लगाया जाएगा। इन गेटों पर डिजिटल स्कैनर होंगे। स्कैनर से केवल वैध टिकट वाले यात्री ही प्लेटफॉर्म तक पहुंच सकेंगे।

12 बड़े रेलवे जंक्शनों पर शुरू हो रहाः यह पायलट प्रोजेक्ट देश के 12 बड़े रेलवे जंक्शनों पर शुरू किया जा रहा है। साल के अंत तक पटना, मुजफ्फरपुर, छपरा व दरभंगा आदि अति व्यस्त जंक्शनों पर लागू होने के आसार हैं। फिलहाल सभी यूटीएस टिकट क्यू आर कोड के साथ जारी हो रहा है।

सुधारों के लिए रेलवे चला रही है अभियान

रेलवे ने यात्रियों की शिकायतों को दूर कर यात्रा को सुविधाजनक बनाने के लिए इस महीने की शुरुआत में '52' सप्ताह में 52 सुधार" पहल शुरू की है। इसके तहत कई प्रमुख सुधारों की घोषणा की, जिसमें सामान्य कोचों की निरंतर संपूर्ण सफाई और आरक्षित टिकटों में प्रारंभिक स्टेशन में बदलाव की सुविधा शुरू की गई है। एक साल तक चलने वाले 52 सप्ताह में 52 सुधार अभियान के तहत अधिक से अधिक सुविधाएं यात्रियों को उपलब्ध कराने के लिए पहल की जा रही है।

एटीएम उखाड़ कर डेढ़ लाख कैश लूटे, सीसीटीवी में कैद हुई वारदात

भास्कर न्यूज | मड़वन (मुजफ्फरपुर)

करजा थाना क्षेत्र के रेवा रोड पर स्थित एनएच-722 के मड़वन चौक के समीप एसबीआई की एटीएम काट कर बदमाशों ने डेढ़ लाख रुपए कैश उड़ा लिए। पूरी घटना सीसीटीवी फुटेज में कैद हो गई, जिसमें स्कॉर्पियो से आए टोपी-मास्क वाले बदमाशों ने एटीएम को गैस कटर से काटकर लाद लिया और आराम से फरार हो गए। फुटेज के अनुसार, स्कॉर्पियो सवार बदमाश एटीएम के पास पहुंचे थे। गैस कटर से एटीएम को काटना शुरू किया तो एटीएम के अंदर सायरन बजने लगा। जिस पर बदमाशों ने स्प्रे मारकर सीसीटीवी कैमरा बंद करने की कोशिश की, लेकिन पास की दुकान पर लगे दूसरे कैमरे ने उनकी पूरी हरकत रिकॉर्ड कर ली। बदमाशों ने एटीएम को काटा और शटर उखाड़ दिया। फिर एटीएम मशीन को स्कॉर्पियो पर लादकर भाग निकले। सुबह पहुंचे आसपास के दुकानदारों ने एटीएम का शटर कटा देख मामले की सूचना करजा पुलिस को दी।

उत्तर प्रदेशः इटावा में जीजा ने साली की हत्या की, होली पर भगाकर की थी शादी

इटावा| इटावा में 35 साल के जीजा ने 18 साल की साली की हत्या कर दी। 4 दिन पहले होली के दिन वह साली को घर से भगाकर दिल्ली ले गया था। वहां एक मंदिर में शादी की। शनिवार सुबह वह दिल्ली से अपने घर पहुंचा। रात में उसका साली सुनैना से विवाद हो गया। गुस्से में ईंट मार-मारकर हत्या कर दी। वारदात के बाद खून से सना ईंट लेकर थाने पहुंचा। पुलिसवालों से बोला- मैंने हत्या कर दी। लाश घर पर पड़ी है। उठा लो।

भाखड़ा ब्यास प्रबन्ध बोर्ड

विन्डो विज्ञापन

विज्ञापन संख्या 01/2026

बीबीएमबी में निम्नलिखित अस्थायी पदों को नियमित आधार पर सीधी भर्ती के माध्यम से भरने हेतु पात्र भारतीय नागरिकों से निर्धारित प्रोफार्मा में दिनांक **29.03.2026** तक अथवा इससे पहले ऑनलाईन आवेदन पत्र आमंत्रित किए जाते है। परीविक्षा अवधि 3 वर्ष की होगी और परीविक्षा अवधि के दौरान पंजाब सरकार की सीएसआर/जैसा कि बीबीएमबी द्वारा अधिसूचित किया गया है या डीसी रेट (जो भी ज्यादा होगा) के अनुसार हिन्दी अनुवादक के पद हेतु प्रारंभिक वेतनमान देय होगाः—

हिन्दी अनुवादक (6 नं.)

कृपया पद, वेतनमान, आयु, योग्यता, अनुभव, अनुदेशों, आवेदन पत्र के फार्मेट और शुल्क के विवरण के लिए **https://bbmb.gov.in/job-openings-recruitment.htm** देखें। उम्मीदवारों को सलाह दी जाती है कि वह वेबसाइट में दिए गए आवेदन पत्र के बारे में बताई गई विस्तृत प्रक्रिया के अनुसार ऑनलाइन फार्म भरे और आवेदन पत्र प्रस्तुत करते समय निर्धारित फार्मेट का सख्ती से अनुसरण करें और सुनिश्चित करें।

अन्य प्रारूप में भेजे गए आवेदन पत्रों को रद्द कर दिया जाएगा। कोई भी आवेदन पत्र दस्ती, व्यक्तिगत रूप या डाक द्वारा स्वीकार नहीं किया जाएगा।

सदस्य सचिव
केन्द्रीयकृत स्टाफ चयन समिति, बीबीएमबी, चण्डीगढ़

236-पीआर-बोर्ड सचिवालय-9 कल के बेहतर भविष्य के लिए आज ही ऊर्जा बचाएं

भास्कर बिजनेस गाइड

दैनिक भास्कर, नई दिल्ली
सोमवार, 09 मार्च, 2026

फंड का फंडा

आर्बिट्राज फंड: अस्थिर शेयर बाजार में कारगर

मुंबई | आर्बिट्राज फंड निवेशकों को बाजार की अस्थिरता से सुरक्षा देता है। ये फंड कैश मार्केट में शेयर खरीदकर उसी समय फ्यूचर मार्केट में ऊंचे दाम पर बेच देते हैं। कीमतों का अंतर ही कमाई होता है। जोखिम बेहद कम होता है क्योंकि फंड मैनेजर कीमतों का अंतर पहले ही लॉक कर लेते हैं। 30 दिन के भीतर निकासी पर 0.25% से 0.5% तक एग्जिट लोड है।

3 वर्ष में सालाना 7.2% तक रिटर्न

आर्बिट्राज फंड	रिटर्न
कोटक	7.19%
एसबीआई	7.12%
यूटीआई	7.12%
इन्वेस्को इंडिया	7.09%
ICICI प्रू.	7.05%

निवेश के 5 बड़े फायदे ये...

1. बाजार उतार-चढ़ाव में भी स्थिरता।
2. एफडी के मुकाबले ज्यादा टैक्स लाभ।
3. पूंजी सुरक्षा: बाजार की गिरावट से बचाव।
4. जरूरत पर तुरंत निकासी की सुविधा
5. बैंक एफडी से अधिक रिटर्न

प्राइमरी मार्केट

इस हफ्ते 6,614 करोड़ के 4 आईपीओ की दस्तक

मुंबई| प्राइमरी मार्केट में इस हफ्ते तीन मेनबोर्ड और एक एसएमई आईपीओ खुलेंगे। ये 6,614 करोड़ रुपए जुटाएंगे। मेनबोर्ड में राजपूताना स्टेनलेस, इनोविजन और राजमार्ग इंफ्रा इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट हैं। एसएमई सेगमेंट में एप्सिस एयरोकॉम का इश्यू है। राजमार्ग इंफ्रा इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट (इनविट) का इश्यू सबसे बड़ा है। कंपनी की योजना 6,000 करोड़ जुटाने की है।

राजमार्ग इंफ्रा 6,000 करोड़ रु. और इनोविजन 323 करोड़ जुटा सकती है

आईपीओ	साइज	खुला रहेगा
राजमार्ग इनविट	6,000	11 - 13
राजपुताना स्टेनलेस	255	09 - 11
इनोविजन	323	10 - 12
एप्सिस एयरोकॉम	36	12 - 13

इस हफ्ते इनकी लिस्टिंग

09 मार्च : एसटेक ई-कॉमर्स
11 मार्च : सेडेमैक मेकाट्रॉनिक्स
12 मार्च : एल्फिन एग्रो इंडिया
13 मार्च : श्रीनिवास प्रधान कंस्ट्रक्शंस

मार्केट इनसाइट ईरान-अमेरिका जंग से अस्थिरता बढ़ रही, ऐसे में निवेशकों को क्या करना चाहिए?

जंग रुकने तक इंतजार करें... बड़े निवेशक शेयर न बेचें, छोटे बाजार से हटें, खरीदारी रोकें

अंबरीश बालिगा,
स्वतंत्र बाजार विश्लेषक

मध्य-पूर्व में ईरान और अमेरिका के बीच बढ़ते तनाव ने भारत समेत वैश्विक बाजारों में बड़ी अनिश्चितता पैदा कर दी है। निफ्टी 24,450 के स्तर के आसपास है और बाजार में गिरावट के संकेत गहरे होते जा रहे हैं। सोमवार की सुबह बाजार कैसे खुलता है, वही तय करेगा कि आगे क्या होगा? अगर बाजार नीचे खुलकर उस स्तर को होल्ड नहीं कर पाया, तो बाजार में घबराहट और बढ़ेगी। निफ्टी 23,000 तक आ सकता है।

अगर बाजार बाउंसबैक करता है और ऊपर बंद होता है तो यह स्थिति धीमे-धीमे सामान्य होने का संकेत होगा। अगर आगे चलकर युद्ध और देशों तक फैला (जैसे चीन-रूस की एंट्री) तो गिरावट का अनुमान लगाना मुश्किल होगा। भारतीय निवेशकों को यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि यह तनाव रूस-यूक्रेन युद्ध से कहीं ज्यादा भारत को प्रभावित कर सकती है, क्योंकि यह संघर्ष भारत की सप्लाई चेन और एनर्जी जरूरतों के करीब है। भारत का ऊर्जा आयात, मसलन तेल, गैस, एलएनजी इसी क्षेत्र से होता है। एलएनजी की कमी की खबरें पहले से ही आने लगी हैं।

समुद्री मार्ग बाधित होने से भारतीय निर्यात भी प्रभावित हो रहा है। मोरबी जैसे औद्योगिक शहरों में फैक्ट्रियां पहले ही बंद होने लगी हैं। इस बीच पेट्रोलियम कंपनियों ने रसोई गैस का दूसरा सिलेंडर लेने के लिए 25 दिन की सीमा तय कर दी है। अगर यह स्थिति 3-4 हफ्ते से आगे खिंचती है, तो हर तरफ से परेशानियां शुरू हो जाएंगी। सप्लाई चेन बिगड़ने से कंपनियों का उत्पादन घटेगा, जिसका असर उनके आने वाली तिमाहियों के नतीजों पर पड़ेगा। असल में भारतीय शेयर बाजार अभी ऐसे मोड़ पर खड़ा है जहां फंडामेंटल्स से कहीं ज्यादा 'जियोपॉलिटिकल' तनाव हावी हैं। अभी बाजार की चाल सिर्फ युद्ध की खबरों से तय होगी। ऐसे में समझते हैं कि निवेशकों को क्या करना चाहिए...

अभी गिरते शेयरों को सस्ता समझकर खरीदने की गलती न करें

बड़े निवेशक
(₹2 करोड़ से अधिक का पोर्टफोलियो)
होल्ड करें: घबराहट में शेयर न बेचें। ऐसी बिकवाली सबसे बड़ी गलती हो सकती है।
नया निवेश रोकें: जब तक कुछ स्पष्टता न आए, बाजार में नया पैसा न लगाएं।
कैश होल्ड करें: जो पैसा बचत है उसे सुरक्षित रखें। अगर कभी भी कोई पॉजिटिव न्यूज आती है, मसलन शांति वार्ता की खबर, तो रिकवरी बहुत तेज और शार्प होगी। उस वक्त नए निवेश के लिए कैश हमेशा आपके हाथ में होना चाहिए।

छोटे निवेशक
(₹10-12 लाख का पोर्टफोलियो)
शेयर बेचें: थोड़ी क्लैरिटी आने तक शेयर बेचने पर विचार कर सकते हैं। अगर आपका पोर्टफोलियो छोटा है और आप ज्यादा जोखिम उठाने में असमर्थ हैं, तो आपके लिए कुछ समय के लिए बाजार से बाहर निकलना समझदारी हो सकती है। लेकिन यह निर्णय सोच-समझकर लें, न कि घबराहट में।
ये गलती न करें: मौजूदा दौर में तेजी से चढ़ते डिफेंस, ऑयल जैसे सेंटीमेंटल शेयरों में मौका न तलाशें। जिस दिन युद्ध खत्म होगा, ये तेजी से गिर सकते हैं। इसके अलावा, गिरते शेयर भी सस्ता समझकर खरीदने की भूल न करें।

ट्रेडर्स के लिए...
इन दिनों बेहतर यही होगा कि वायदे में ओवरनाइट पोजीशन बिल्कुल न रखें। बाजार बंद होने के बाद कोई भी बड़ी खबर आ सकती है। ऐसे में बाजार का रुख किसी भी वक्त बिलकुल पलट सकता है। इंट्रा डे में ट्रेडिंग करें, लेकिन पूरी सावधानी बरतें।

डिफेंस सेक्टर में छोटे ट्रेड ही करें...
डिफेंस, चुनिंदा शेयरों में ही दांव लगाएं। मार्केट बंद होने और खुलने के बीच 17-18 घंटे होते हैं। इस दौरान कोई भी बड़ी घटना हो सकती है। इसलिए कोई भी पोजिशन घर ले जाना बेहद जोखिम भरा है। क्लैरिटी आने के बाद ही खुलकर खेलें।

संकट कब दूर होगा, कोई नहीं जानता

यह संकट 2-3 हफ्ते में भी सुलझ सकता है और 5-6 महीने भी खिंच सकता है। किसी को कुछ नहीं पता है। इसीलिए अनिश्चितता गहरी है। अब मार्केट के लिए चार्ट से ज्यादा पॉलिसी न्यूज काम करेगी। जैसे ही कोई शांति समझौता या तनाव कम होने की खबर आएगी, वही बाजार का लो पॉइंट होगा। यही एंट्री का समय बेहतर समय भी हो सकता है।

सेक्टर व्यू: कौन बढ़ेगा, कौन गिरेगा

डिफेंस और ऑयल कंपनियों में सेंटीमेंटल तेजी | युद्ध के दौर में रक्षा कंपनियों के शेयरों में उछाल आता है। ट्रेडर्स के लिए यहां मौका हो सकता है। तेल की कीमतें बढ़ने से ऑयल कंपनियों को अल्पकालिक फायदा मिल सकता है। ये निवेश सेंटीमेंट आधारित होते हैं, किसी वैल्युएशन पर नहीं। जिस दिन युद्ध खत्म होगा, ये सेक्टर तेजी से गिर सकते हैं।

केमिकल, पेट्रोकेमिकल इंडस्ट्री पर दबाव बढ़ेगा | सप्लाई चेन बाधित होने से जो सेक्टर ज्यादा प्रभावित होंगे, उनमें केमिकल, पेट्रोकेमिकल हैं। कच्चे माल की किल्लत से लागत बढ़ेगी।

मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर | एनर्जी और इनपुट की कमी से अगली तिमाही के नतीजे खराब आने की आशंका है। आय के लिए निर्यात पर निर्भर कंपनियां समुद्री मार्ग बाधित होने से ज्यादा प्रभावित होंगी।

दिग्गज निवेशक शंकर शर्मा ने चेताया... अगले दो साल और मुश्किल साबित हो सकते हैं

अनुभवी निवेशक शंकर शर्मा का मानना है कि भारत, अमेरिका के बाजारों में तेजी का दौर खत्म हो चुका है। निफ्टी पहले ही 18 माह से रिटर्न नहीं दे पाया है। अगले दो साल और मुश्किल साबित होंगे। असल में भारतीय बाजार कई साल घरेलू निवेश और वैश्विक लिक्विडिटी की जिस लहर पर चढ़ा वो लहर अब पलट चुकी है।

कच्चे तेल के बढ़ते दाम अभी सबसे बड़ा रिस्क
शर्मा की नजर में सबसे बड़ा खतरा कच्चे तेल की बढ़ती कीमतें है। भारत अपनी जरूरत का 88% कच्चा तेल आयात है। मध्य-पूर्व में बढ़ते तनाव के बीच कच्चा तेल 100-120 डॉलर प्रति बैरल तक जा सकता है। ये शेयर बाजार के लिए सबसे बड़ा रिस्क है।

रुपए की कमजोरी भी अब बढ़ा रही परेशानी
कमजोर रुपए की वजह से तेल की वास्तविक लागत बढ़ गई है। भारत को पहले ही तेल 100 डॉलर प्रति बैरल के बराबर पड़ रही है। ऊपर से वेनेजुएला जैसे विकल्प अपनाने पर 14-15 डॉलर प्रति बैरल अतिरिक्त माल-भाड़ा अलग से जुड़ता है।

कंपनियों की आमदनी पर होगा सीधा असर
2024-25 में भारत का तेल आयात बिल 137 अरब डॉलर का रहा। अगर दाम 110-120 तक गए तो चालू खाते का घाटा बढ़ेगा, राजकोषीय घाटा दबाव में आएगा और कॉरपोरेट मुनाफे सिकुड़ेंगे। इन्हें बाजार ने अब तक पूरी तरह नहीं भांपा है।

बिजनेस आइडिया

किड्स पार्टी प्लानिंग एजेंसी में बड़ा स्कोप

भास्कर न्यूज | मुंबई

बच्चों के जन्मदिन का जश्न अब सिर्फ घर की चारदीवारी तक सीमित नहीं रहा। माता-पिता बच्चों की खास यादें संजोने के लिए थीम पार्टी आयोजित करने लगे हैं। यदि आप इस ट्रेंड से कमाई करना चाहते हैं, तो 'किड्स पार्टी' प्लानिंग एजेंसी शुरू कर सकते हैं। मात्र 5 लाख रुपए के निवेश से आप प्रीमियम सजावट, फोटो-बूथ और थीम बैकड्रॉप जैसे संसाधन जुटाकर यह बिजनेस खड़ा कर सकते हैं। आप सजावट के साथ-साथ जादूगरों और पपेट शो कलाकारों का नेटवर्क बनाकर एजेंसी की सर्विस को खास बना सकते हैं।

अर्निंग्स: मुनाफे का गणित

छोटी इवेंट: एक सामान्य थीम पार्टी से लगभग 20 हजार रुपए का मुनाफा संभव है।
बड़ी इवेंट: कस्टमाइज्ड सजावट और शो वाली पार्टी से 50 हजार रुपए तक बच सकते हैं।
मासिक आय: महीने में 4 छोटी और 2 बड़ी इवेंट्स से 1.80 लाख की कमाई हो सकती है।
ब्रांड वैल्यू: क्वालिटी और अनुभव बढ़ने पर प्रीमियम चार्ज कर मुनाफा बढ़ाया जा सकता है।

क्रिप्टो अपडेट

बिटकॉइन में 11 वर्ष की बड़ी बिकवाली

भास्कर न्यूज | मुंबई

अमेरिका-ईरान युद्ध ने बिटकॉइन की चाल बदल दी। मार्च की शुरुआत से ही इसमें भारी उतार-चढ़ाव देखा जा रहा है। 4 मार्च को बिटकॉइन 74,403 डॉलर पर था, जो 7 मार्च तक घटकर 67,346 डॉलर पर आ गया। टेक्निकल इंडिकेटर 'अल्टिमेट ऑसिलेटर' के मुताबिक, बिटकॉइन 11 साल के रिकॉर्ड ओवरसोल्ड जोन में पहुंच चुका है। ऐसे में सवाल उठता है कि गिरावट और बढ़ेगी या यहां से तेजी शुरू होगी। क्रिप्टो एक्सपर्ट्स का मानना है कि बिटकॉइन ग्लोबल रिस्क के प्रति संवेदनशील है। ईरान युद्ध का दायरा बढ़ने पर कीमतें और नीचे आ सकती हैं। अस्थिरता के कारण ट्रेडर बड़े निर्णय लेने से बच रहे हैं। आगामी दिन-हफ्ते तय करेंगे कि बिटकॉइन का 'डिजिटल गोल्ड' का टैग कायम रहेगा या नहीं। एक्सपर्ट्स निवेशकों को फिलहाल निर्णायक संकेत मिलने तक धैर्य बनाए रखने और मार्केट पर नजर रखने की सलाह दे रहे हैं।

मेरा पैसा

मैनेजमेंट गुरु
एन. रघुरामन

अपने बच्चों को संकट से निपटना सिखाएं...

आज के दौर में 'अर्श से फर्श' तक पहुंचने वाले कई कारोबारी साम्राज्य उन लोगों ने खड़े किए हैं, जिन्होंने जमीन पर उतरकर कड़ी मेहनत की है। लेकिन, उनकी अगली पीढ़ी एक ऐसे दौर में पली-बढ़ी है जहां सुख-सुविधाओं की कोई कमी नहीं रही। उन्होंने कभी किसी बड़े आर्थिक संकट का कड़वा स्वाद नहीं चखा। यही कारण है कि संपत्ति बनाने वाली पीढ़ी और उसे विरासत में पाने वाली पीढ़ी के बीच सोच की बड़ी खाई पैदा हो गई है।

पिछले नौ दिनों से खाड़ी देशों और मिडिल ईस्ट में छिड़े युद्ध ने उन माता-पिता की नींद उड़ा दी है, जिन्होंने शून्य से कारोबार खड़ा किया। जहां वे संपत्ति और गिरते वैल्युएशन को लेकर रात भर जाग रहे हैं, वहीं उनके बच्चे बेफिक्र नजर आते हैं। यह बेफिक्री किसी बहादुरी का नतीजा नहीं, बल्कि जमीनी हकीकत और संकटों के अनुभव की कमी है।

आज कई बड़े कारोबारी माता-पिता ठीक वैसी ही स्थिति में हैं, जैसी 2008 के वैश्विक संकट के दौरान 'लेहमैन ब्रदर्स' की थी। याद कीजिए, बैलेंस शीट पर भारी-भरकम संपत्ति होने के बावजूद वह कंपनी दिवालिया हो गई थी। कारण? जब संकट आया और वे अपनी संपत्तियों को बेचने बाजार निकले, तो उन्हें वो कीमत नहीं मिली जो कागजों पर दर्ज थी। रातोंरात वे कीमती संपत्तियां 'कबाड़' बन गईं, जिनका कोई खरीदार नहीं बचा था।

2008 के संकट के दौरान गोल्डमैन सैक्स का नेतृत्व करने वाले लॉयड ब्लैंकफीन भी इसी बात का समर्थन करते हैं। 71 वर्षीय ब्लैंकफीन का उन चिंतित पिताओं को मशविरा है जो आने वाले आर्थिक संकट से डरे हुए हैं, 'संपत्तियों को लंबे समय तक दबाकर बैठने के बजाय, सही समय पर उन्हें बेच देने में ही समझदारी है। मैं यह नहीं कह रहा कि संकट कल ही आ जाएगा, लेकिन जब युद्ध जैसे हालात बनते हैं, तो आप पाएंगे कि जिन संपत्तियों को आपने ऊंची कीमतों पर रखा था, बाजार में उतनी कीमत नहीं रह गई।'

आज दुनिया के सामने 'स्टैगफ्लेशन' का खतरा मंडरा रहा है। आसान शब्दों में कहें तो आर्थिक विकास की रफ्तार थम जाना, पर महंगाई बढ़ते रहना। ऐसे में बच्चों को यह समझाना जरूरी है कि वे 'स्थायित्व के भ्रम' में न जिएं, बल्कि दुनिया में बदल रहे भू-राजनैतिक समीकरणों के आधार पर अपनी रणनीति बनाएं।

मैनेजमेंट टिप: अपने बच्चों को 'संकट के लिए तैयार' रहना सिखाएं। बदलते दौर में अपनी योजनाओं को लचीला और मजबूत रखने का यही एकमात्र तरीका है। बच्चों को उस दुनिया के लिए तैयार न करें जो अब अस्तित्व में ही नहीं है।

टैक्स सेविंग गाइड | 80सी के तहत ₹3.5 लाख से अधिक की कटौतियां हों तो पुरानी रिजीम बेहतर

30 लाख रुपए पैकेज वाले सैलरी रिस्ट्रक्चरिंग से हर साल 1.30 लाख रुपए बचा सकते हैं

विजय माहेश्वरी
संस्थापक, स्टॉकटिक कैपिटल

वित्त वर्ष 2025-26 इस महीने की 31 तारीख को खत्म हो रहा है। यह समय टैक्स बचाने के सारे विकल्पों को खंगालने का है। साथ ही, नए वित्त वर्ष के लिए टैक्स सेविंग प्लान बनाने का सबसे मुफीद समय है। हम इस आर्टिकल में बता रहे हैं कि वित्त वर्ष 2026-27 के लिए नए टैक्स नियमों का अधिकतम फायदा कैसे उठा सकते हैं। सैलरी रिस्ट्रक्चरिंग से 30 लाख रुपए पैकेज वाले सालाना 1.3 लाख बचा सकते हैं।

पुरानी बनाम नई व्यवस्था: कौन सी है आपके लिए?

सही टैक्स रिजीम का चुनाव आपकी आय और किए गए निवेशों पर निर्भर करता है।
नई रिजीम: यदि आपकी कुल कटौतियां 2.5 लाख रुपए से कम हैं, तो कम दरों वाली नई रिजीम आपके लिए बेहतर है।
पुरानी रिजीम: यदि आपके पास एचआरए, होम लोन और धारा 80सी के तहत 3.5 लाख से अधिक की कटौतियां हैं, तो पुरानी रिजीम अधिक बचत करा सकती है। बजट प्रावधानों के तहत वेतनभोगियों के लिए नई रिजीम में 12.75 लाख रुपए तक की आय (स्टैंडर्ड डिडक्शन सहित) अब पूरी तरह टैक्स-फ्री है।

नए टैक्स रिजीम में एनपीएस टैक्स बचाने का सुपर टूल्स

- नियोक्ता का एनपीएस योगदान (धारा 80सीसीडी 2)। बेसिक वेतन के 14% तक का नियोक्ता योगदान कर-मुक्त होता है। यदि आपकी कंपनी आपकी बेसिक सैलरी का 14% एनपीएस में डालती है, तो आप प्रभावी रूप से 13 लाख से अधिक की सालाना आय पर भी 'जीरो टैक्स' की स्थिति में आ सकते हैं।

निवेश के जरिये टैक्स बचत: धारा 80सी और 80डी

टैक्स बचाने के लिए सही निवेश विकल्पों का चुनाव करना जरूरी है:
धारा 80सी (सीमा 1.5 लाख): ईएलएसएस (इक्विटी फंड): सबसे छोटा लॉक-इन (3 वर्ष) और बेहतर रिटर्न (12-15% रिटर्न)।
- **पीपीएफ:** 15 साल का सुरक्षित निवेश, 7.1% टैक्स-फ्री रिटर्न।
- **सुकन्या समृद्धि:** बेटियों के लिए सर्वश्रेष्ठ (सालाना 8.2% रिटर्न)।
- **एनपीएस (धारा 80सीसीडी 1बी):** 80सी की 1.5 लाख की सीमा के अलावा 50,000 की अतिरिक्त छूट।
- **स्वास्थ्य बीमा (धारा 80डी):** अपने और परिवार के लिए 25,000 रुपए तक और वरिष्ठ नागरिक माता-पिता के लिए 50,000 रुपए तक की अतिरिक्त कटौती।

केस स्टडी : 15 लाख वेतन तो कहां कितना फायदा

विवरण	पुरानी रिजीम	नई रिजीम
सकल वेतन	₹15,00,000	₹15,00,000
स्टैंडर्ड डिडक्शन	₹50,000	₹75,000
80सी (ELSS/PPF/LIC)	₹1,50,000	लागू नहीं
एचआरए छूट	₹1,20,000	लागू नहीं
होम लोन ब्याज (24बी)	₹2,00,000	लागू नहीं
एनपीएस (80सीसीडी 1बी)	₹50,000	लागू नहीं
स्वास्थ्य बीमा (80डी)	₹50,000	लागू नहीं
कुल कटौतियां*	₹7,55,000	₹75,000 (केवल)
कर योग्य आय	₹7,45,000	₹14,25,000
कुल देय टैक्स (सेस सहित)	₹63,960	₹97,500

*अन्य कटौतियां (80ई, 80जी आदि) 1.35 लाख रुपए।

31 मार्च 2026 से पहले की चेकलिस्ट

अंतिम समय की अफरातफरी से बचने के लिए ये काम समय रहते पूरा करें:
☑ 80सी की 1.5 लाख रुपए की सीमा पूरी करें।
☑ एनपीएस में 50,000 निवेश करें।
☑ अपने नियोक्ता के पास निवेश प्रमाण (फॉर्म 12बीबी) जमा कराएं।
☑ होम लोन का ब्याज प्रमाण पत्र और एचआरए के लिए रेंट रसीदें प्राप्त करें।
☑ शिक्षा ऋण का ब्याज भुगतान करें
☑ दान रसीद लें (80जी कटौती हेतु)

सैलरी रिस्ट्रक्चरिंग | नए आयकर नियमों से यह टैक्स सेविंग का कारगर टूल

प्रस्तावित आयकर नियम 2026 के तहत सैलरी रिस्ट्रक्चरिंग और कारगर होने जा रही है। पुरानी रिजीम में सीटीसी ढांचे में बदलाव करवाकर इन-हैंड सैलरी बढ़ा सकते हैं।
फूड वाउचर: यदि नियोक्ता प्रति भोजन 200 की दर से दिन में दो बार और वर्ष में 264 कार्यदिवसों के आधार पर भत्ता देता है, तो यह 1,05,600 प्रति वर्ष टैक्स फ्री।
- बच्चों का शिक्षा भत्ता 100 प्रति माह प्रति बच्चे की दर से (अधिकतम दो बच्चों तक) यानी 2,400 वार्षिक कर-मुक्त रहता है।
- हॉस्टल भत्ता 300 प्रति माह प्रति बच्चे की दर से 7,200 वार्षिक अतिरिक्त छूट दिलाता है।
- वाहन और ड्राइवर के वास्तविक खर्चों के आधार पर 1,80,000 तक की आंशिक छूट का प्रावधान।
- मोबाइल और इंटरनेट रीइम्बर्समेंट वास्तविक बिल के आधार पर 36,000 वार्षिक तक कर-मुक्त।
- टैक्स प्रावधानों के मुताबिक 24 लाख वेतन वाले कर्मचारी के लिए नई रिजीम डिफाल्ट है। इस सेगमेंट में रिस्ट्रक्चरिंग से सीटीसी में बदलाव किए बिना साल में 1.3 लाख रु. से ज्यादा बचा सकते हैं।

आप अपनी वित्तीय आजादी किस्तों पर बेच तो नहीं रहे?

आजकल आईफोन से लेकर घर के राशन तक, सब कुछ ईएमआई या 'बाय नाउ पे लेटर' (बीएनपीएल) पर उपलब्ध है। जो कर्ज कभी मजबूरी में लिया जाता था, वह अब 'लाइफस्टाइल' का हिस्सा बन गया है। यह धीमे-धीमे आपकी वित्तीय आजादी छीन रहा है।

1. क्रेडिट का मकसद बनाम हकीकत

भारत में ग्रांट थॉर्नटन के पार्टनर विवेक अय्यर के मुताबिक, क्रेडिट का असली उद्देश्य सैलरीड क्लास को थोड़ी 'लिक्विडिटी' (नकदी) उपलब्ध कराना था ताकि, वे अपनी जरूरतें पूरी कर सकें। लेकिन अब लोग जरूरत के लिए नहीं, बल्कि बाजार की चकाचौंध में आकर क्षमता से ज्यादा खर्च कर रहे हैं।

2. 'सिस्टेमिक रिस्क' का खतरा

जब लोग अपनी सामर्थ्य से ज्यादा कर्ज लेने लगते हैं और बैंक भी बिना सोचे-समझे कर्ज बांटने लगते हैं, तो यह सिर्फ एक व्यक्ति के लिए नहीं, बल्कि पूरे देश के फाइनेंशियल सिस्टम के लिए खतरा बन जाता है। इसे 'सिस्टेमिक रिस्क' कहा जाता है।

3. बचत और निवेश पर चोट

बीएनपीएल जैसी स्कीम आपको आज खरीदारी करने का लालच देती हैं, लेकिन यह आपकी भविष्य की कमाई को पहले ही ब्लॉक कर देती हैं। अय्यर के मुताबिक तेजी से बढ़ता 'उपभोक्तावाद' अब बचत और निवेश का संतुलन प्रभावित कर रहा है। अब ज्यादातर लोग भविष्य के लिए पैसा बचाने या निवेश करने के बजाय आज की जरूरतों और सुविधाओं को ज्यादा अहमियत देने लगे हैं।

4. 50:30:20 नियम और ईएमआई

वित्तीय आजादी के लिए विवेक अय्यर एक पुराना और असरदार फॉर्मूला अपनाने पर जोर देते हैं। वो ये है...
50%: जरूरी खर्चे (खाना, किराया, कपड़े)।
30%: निवेश (भविष्य के लिए)।
20%: इमरजेंसी फंड (बड़ी मुसीबत से बचाव)।
आपने जो लोन ले रखे हैं, यदि उनकी कुल ईएमआई इतनी ज्यादा है कि वह आपके 30 फीसदी निवेश या 20 फीसदी इमरजेंसी फंड वाले हिस्से को खा रही है, तो समझ लीजिए कि आप धीरे-धीरे कर्ज के जाल में फंस रहे हैं।

जरा सोचें... आप दिखावे की रईसी तो नहीं जी रहे?

अय्यर कहते हैं कि असल अमीरी बैंक बैलेंस और निवेश से बनती है, न कि उन चीजों से जो आपने उधार के पैसों से खरीदी हों। वे कहते हैं कि क्रेडिट एक औजार है; सही इस्तेमाल करेंगे तो तरक्की मिलेगी, गलत तरीके से खर्च करेंगे तो आजादी छिन जाएगी। अगली बार 'चेकआउट' बटन दबाने से पहले खुद से पूछें- क्या यह चीज वाकई जरूरी है या आप इसके बदले अपनी भविष्य की शांति बेच रहे हैं?

सुझाव और प्रतिक्रिया इस पते पर भेज सकते हैं- business.bhaskar@dbcorp.in

भास्कर Q&A

लोन जल्द चुकाया तो बीमा प्रीमियम का रिफंड संभव

▪ 2020 में 10 लाख का एजुकेशन लोन 15 वर्ष के लिए लिया। बैंक ने ₹12,480 का वन-टाइम प्रीमियम काटकर 13.30 लाख का बीमा किया। फरवरी 2026 में पूरा लोन चुका दिया। बैंक ने 2024 व 2025 में बिना जानकारी दिए ₹2,849 और ₹2,065 का अतिरिक्त प्रीमियम ब्याज सहित वसूला। क्या यह पैसा वापस मिलेगा? -सृष्टि जैन

आपने 2030 तक का प्रीमियम एडवांस दिया और लोन 2026 में ही चुका दिया। इस स्थिति में आप प्रो-रेटा रिफंड के हकदार हो सकते हैं। यदि यह 'सिंगल प्रीमियम रिड्यूसिंग टर्म प्लान' है, तो बची हुई अवधि (2026 से 2030) का पैसा रिफंड होता है। यह रिफंड अपने आप नहीं आता। बैंक और बीमा कंपनी को 'पॉलिसी सरेंडर' करने का लिखित आवेदन देना होगा। जैसा आपने बताया कि बैंक ने बीच में अतिरिक्त प्रीमियम वसूला। अगर मूल पॉलिसी 2030 तक वैध थी, तो बैंक द्वारा बीच में अतिरिक्त प्रीमियम जोड़ना गलत हो सकता है। यदि बैंक ने आपकी लिखित सहमति के बिना यह राशि जोड़ी है, तो यह आरबीआई नियमों का उल्लंघन है। आप ब्याज सहित इसकी वापसी की मांग कर सकते हैं। बैंक मैनेजर को पत्र लिखें और 'लोन क्लोजर सर्टिफिकेट' के साथ बचे हुए बीमा वर्षों के प्रीमियम रिफंड की मांग करें। यदि बैंक से 30 दिनों में संतोषजनक जवाब न मिले, तो आरबीआई के रिटेल डायरेक्ट पोर्टल पर शिकायत कर सकते हैं।

▪ मेरे आधार और पैन में जन्म वर्ष अलग-अलग हैं। क्या पैन में सुधार नहीं करवाने पर इनकम टैक्स रिटर्न फाइल करने में परेशानी आ सकती है? -प्रदीप

आधार और पैन कार्ड में जन्मतिथि अलग-अलग होना गंभीर समस्या है, खास तौर पर अब, क्योंकि आधार-पैन लिंकिंग अनिवार्य है। इससे आईटीआर फाइलिंग बाधित हो सकती है। यदि आपका टैक्स रिफंड बनता है, तो डेटा मिसमैच होने के कारण बैंक खाता वेरिफाई नहीं हो पाएगा और रिफंड अटक सकता है। यदि आधार और पैन लिंक नहीं हैं, तो आपका पैन 'निष्क्रिय' घोषित किया जा सकता है, जिससे टीडीएस अधिक कटेगा और बैंकिंग लेनदेन में दिक्कत आएगी।
प्रक्रिया: प्राथमिक पहचान आधार में आपकी जन्मतिथि सही है तो आप पैन कार्ड में सुधार करवाएं, ताकि वह आधार के डेटा से मेल खा सके। आप एनएसडीएल की वेबसाइट से सुधार करवा सकते हैं।

एक्सपर्ट: एसके सेठी, रिया इंश्योरेंस

आपके मन में पर्सनल फाइनेंस से जुड़े कोई भी सवाल हों, तो यह क्यूआर कोड स्कैन करके भेजें। एक्सपर्ट जवाब देंगे।

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्
भगवान इस जग के कण-कण में विद्यमान हैं।

पंजाब केसरी संपादकीय

संस्थापक: शहीद शिरोमणि लाला जगतनारायण जी, अमर शहीद रमेश चन्द्र जी एवं कलम के योद्धा अश्विनी कुमार जी

आदित्य नारायण चोपड़ा
adityachopra@punjabkesari.in

संसद सत्र और भारतीय हित

आज से संसद के बजट सत्र का दूसरा चरण शुरू हो रहा है और देश घरेलू स्तर से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक विभिन्न राजनीतिक झंझावतों से घिरा हुआ लग रहा है। अत: बहुत स्वाभाविक है कि संसद सत्र की बैठकों में विपक्ष व सत्तारूढ़ दलों के बीच जमकर खींचातानी हो। लोकसभा में जहां इसके अध्यक्ष श्री ओम बिरला को पद से हटाने के प्रस्ताव पर आज सदन में लम्बी बहस होने के बाद मतदान हो, वहीं दूसरी तरफ राज्यसभा में विपक्ष पश्चिम एशिया में चल रहे ईरान-इजराइल युद्ध से उपजे भारत को प्रभावित करने वाले सवालों को केन्द्र में लाए और सरकार को कठघरे में खड़ा करने का प्रयास करे। इस सन्दर्भ में सबसे बड़ा सवाल भारत के प्रति अमेरिकी रुख को लेकर उठाया जा सकता है क्योंकि इस युद्ध में अमेरिका खुलकर इजराइल का साथ दे रहा है और जंग में बराबर का सहभागी है।

पिछले कुछ दिनों से पूरे देश में भारतीय संप्रभुता को लेकर खासी बहस इसलिए छिड़ी हुई है क्योंकि अमेरिका की तरफ से आधिकारिक बयान जारी कर कहा गया है कि उसने भारत को रूस से कच्चा पैट्रोलियम तेल खरीदने के लिए 30 दिन की मोहलत दे दी है। यह मोहलत उसने पिछले दिनों भारत के साथ हुए व्यापार समझौते के मोटे मसौदे की शर्तों के अनुरूप दी है परन्तु इसके साथ यह भी हकीकत है कि भारत-अमेरिका के बीच अभी तक तफसील में कारोबार की शर्तों का चयन नहीं हुआ है और इस मोर्चे पर दोनों देशों के बीच बातचीत अभी होनी है। विपक्ष इसे भारत सरकार की कूटनीतिक व व्यापारिक असफलता बता रहा है और कह रहा है कि स्वतन्त्र भारत के इतिहास की यह अभूतपूर्व घटना है क्योंकि भारतीय हितों की नाप-जोख कोई दूसरा देश अमेरिका कर रहा है। दरअसल कूटनीतिक मोर्चे पर भारत बहुत सावधानी के साथ चलते हुए यह सिद्ध करना चाहता है कि वह अपने राष्ट्रीय हितों का स्वयं संरक्षक है और अमेरिका को इस बारे में फैसला लेने का कोई अधिकार नहीं है। इस सन्दर्भ में मोदी सरकार के मौन को विपक्ष कम करके आंकने की गलती कर रहा है, क्योंकि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की आक्रामक कूटनीति को देखते हुए भारत शान्त रहते हुए अपने किये जा रहे कार्यों से उसका जवाब देना चाहता है इसीलिए सरकारी सूत्र बता रहे हैं कि भारत द्वारा रूस से लगातार कच्चा तेल खरीदा जा रहा है।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पहली बार अमेरिका की नीतियों की वजह से पूरी दुनिया में भारी उथल-पुथल हो रही है और ऐसा लग रहा है कि इसके राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प पूरी विश्व व्यवस्था के क्रम को ही बदल कर रख देंगे। इसलिए भारत की संसद में जब बहस हो तो इस नई उभरती तस्वीर को भी सामने रखा जाये। क्योंकि पूरी दुनिया जानती है कि ईरान पर यह युद्ध तब थोपा गया है जबकि वह इस बात पर राजी हो गया था कि परमाणु बम बनाने की गरज से वह यूरेनियम का परिशोधन नहीं करेगा।

विगत 2 फरवरी को भारत व अमेरिका के बीच व्यापार समझौता होने की घोषणा वाशिंगटन से की गई थी जिसमें कहा गया था कि अब से भारत रूस से तेल नहीं खरीदेगा और यदि वह खरीदारी करता है तो अमेरिका उसके आयातित माल पर 25 प्रतिशत अतिरिक्त शुल्क लगाने के लिए स्वतन्त्र होगा। इसमें यह भी कहा गया था कि अमेरिका अपने विभिन्न मन्त्रालयों की एक निगरानी समिति बनाकर देखेगा कि भारत कहीं रूस से तेल तो नहीं खरीद रहा। अमेरिका के इस दावे की तस्दीक हमें इसके बाद भारत सरकार द्वारा किये गये फैसलों से करनी होगी क्योंकि कूटनीति में जरूरी नहीं होता कि ईंट का जवाब पत्थर से ही दिया जाये, बल्कि यह तय करना होता है कि अपने हितों को किस रास्ते से साधा जाये। यह रास्ता बिना आवाज निकाले अपने कामों का भी हो सकता है। अत: मोदी सरकार ने अमेरिका से बिना उलझे रूस से कच्चा तेल खरीदना जारी रखा जिसे इकतरफा की गई अमेरिकी घोषणा के जवाब में देखा जाना चाहिए। इसके साथ दूसरा मसला हिन्द महासागर में ईरानी युद्ध पोत को अमेरिकी नौसैनिक पनडुब्बी द्वारा डुबोये जाने का है। यह युद्ध पोत भारत के निमन्त्रण पर विशाखापत्तनम में आयोजित विभिन्न देशों के संयुक्त नौसैनिक युद्धाभ्यास में भाग लेने आया था जो यह कार्यक्रम पूरा होने के बाद वापस अपने देश ईरान जा रहा था। अमेरिका ने ईरान के विरुद्ध चल रहे युद्ध के दौरान इसे नष्ट किया। यह युद्ध पोत श्रीलंका के पास हिन्द महासागर के अन्तर्राष्ट्रीय जल क्षेत्र में था। बेशक अमेरिका का यह कार्य निश्चित रूप से निन्दनीय था क्योंकि ईरान-इजराइल युद्ध से हिन्द महासागर क्षेत्र अभी तक अछूता है। विपक्ष इस मुद्दे पर भी मोदी सरकार को कठघरे में खड़ा कर रहा है परन्तु भारत ने ईरान के ही एक अन्य युद्धपोत को ही केरल के कोच्चि बन्दरगाह में लंगर डालने की इजाजत देकर अमेरिकी हिमाकत का अपने तरीके से जवाब दे दिया है। इस युद्धपोत में कुछ तकनीकी खराबी आ गई थी जिसकी वजह से ईरान ने भारत से विनय की थी कि वह उसे भारत में ठहरने की इजाजत दे जिससे युद्धपोत की खराबी दूर की जा सके। पश्चिम एशिया में जारी युद्ध के दौरान भारत के इस कदम का भी कमतर आंकलन नहीं किया जाना चाहिए।

दरअसल कूटनीति में यह भी नियम होता है कि अपने हितों को बिना आवाज किये भी साधो। भारत यदि यह रास्ता अपना रहा है तो इस पर क्यों हो-हल्ला किया जाये। हम जानते हैं कि डोनाल्ड ट्रम्प अमेरिका के विश्व के सबसे शक्तिशाली देश होने की वजह से जिस तरह की नीतियां अपना रहे हैं उससे संयुक्त राष्ट्रसंघ से लेकर विश्व की अन्य बहुदेशीय पंचायतें अप्रासंगिक बन चुकी हैं अत: भारत को अपना रास्ता इन्हीं चट्टानी दरारों से होकर बनाना पड़ेगा। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पहली बार अमेरिका की नीतियों की वजह से पूरी दुनिया में भारी उथल- पुथल हो रही है और ऐसा लग रहा है कि इसके राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प पूरी विश्व व्यवस्था के क्रम को ही बदल कर रख देंगे। इसलिए भारत की संसद में जब बहस हो तो इस नई उभरती तस्वीर को भी सामने रखा जाये। क्योंकि पूरी दुनिया जानती है कि ईरान पर यह युद्ध तब थोपा गया है जबकि वह इस बात पर राजी हो गया था कि परमाणु बम बनाने की गरज से वह यूरेनियम का परिशोधन नहीं करेगा।

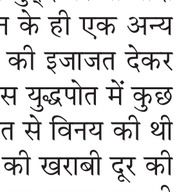

इंसान के भेष में भेड़िए...

गीता पाढा

"कभी-कभी जब अन्याय को न्याय पर हावी पाते हैं,
इंसान के भेष में भेड़िए कितनी कलियों को नोंच खाते हैं,,
सबूतों के अभाव में खूंखार मुजरिम बाइज्जत बरी हो जाते हैं,
और तारीख पर तारीख पीड़ित के ज़ख्मों को नासूर बनाते हैं,,
वैसे तो कानून के समक्ष सभी को एक बताते हैं,
पर धरातल पर दृश्य बेहद अलग नजर आते हैं...।।"

रैडक्लिफ ने तो दे दिया था हमें लाहौर

डा. चन्द्र त्रिखा
chandertrikha@gmail.com

भारत विभाजन की जब-जब चर्चा चलेगी, नए-नए तथ्य सामने आते जाएंगे। प्रख्यात पत्रकार कुलदीप नैयर की एक कृति 'स्कूप' में इस विषय पर रोचक एवं अनूठी जानकारी दी गई है। विभाजन के प्रमुख केंद्र बिन्दु रैडक्लिफ के साथ श्री नैयर की वर्ष 1971 में लंदन में एक विस्तृत चर्चा हुई थी। सीधा व पहला सवाल तब यह पूछा गया था कि 'क्या आप सीमा-निर्धारण से सन्तुष्ट हैं?' तो रैडक्लिफ का तात्कालिक उत्तर था, 'मैंने तो लगभग पूरा लाहौर आपको दे दिया था मगर बाद में मुझे लगा कि यदि लाहौर भी न बचा तो पाकिस्तान के पास कोई भी बड़ा शहर नहीं बचेगा।'

कुलदीप नैयर बताते हैं कि 1971 में यह मुलाकात रैडक्लिफ के आवास पर ही हुई थी। रैडक्लिफ ने स्वयं ही अपने आवास का द्वार खोला और अनौपचारिक रूप में स्वयं ही दोनों के लिए चाय बनाई। मुझे महसूस होने लगा था कि विभाजन के बाद की हिंसा के लिए स्वयं भी गहन पछतावे की मुद्रा में था। उसने यह भी स्वीकार किया कि 'मुझे इसे महत्वपूर्ण व संवेदनशील कार्य के लिए केवल 5-6 सप्ताह ही मिले। मौसम भी गर्मियों का था। मेरे लिए सीमा पर जाकर स्वयं सर्वेक्षण करना भी संभव नहीं था।'

रेडक्लिफ ने बताया कि उसके पास समय बहुत कम था। सिर्फ 5-8 हफ्ते में भारत की परिस्थितियों से अनजान थी। पहली बार भारत आया था, अगर मुझे दो-तीन साल मिलते तो मैं बेहतर काम कर सकता था। मैंने बहुत पुराने नक्शों का इस्तेमाल किया क्योंकि गर्मी के कारण सीमा पर जाकर सर्वेक्षण करना असंभव था। मगर पाकिस्तानियों का यह आरोप गलत है कि मैंने हिंदुओं का पक्ष लिया। मैं मुसलमानों के प्रति अधिक उदार था और लाहौर देकर मैंने उन्हें और भी एहसानमंद बनाया।

मैंने लगभग भारत को लाहौर दे ही दिया था लेकिन फिर मुझे एहसास हुआ कि पाकिस्तान के पास कोई बड़ा शहर नहीं होगा। मैंने पहले ही कोलकाता को भारत के लिए आरक्षित कर रखा था।

मैं यह मान चुका था कि लाहौर में हिंदू और सिख बहुसंख्यक थे और संपत्ति में भी काफी समृद्ध थे। फिर भी पाकिस्तान में बड़े शहरों की कमी के कारण उनके पास कोई विकल्प नहीं था। अभी भी यह अस्पष्ट है कि भारत और पाकिस्तान की सीमा रेखाएं कैसे खींची गईं। हालांकि सीमा आयोग में चार और सदस्य थे - दो भारत से, जस्टिस मेहर चंद महाजन और जस्टिस तेजा सिंह और दो पाकिस्तान से, जस्टिस दीन मोहम्मद और मोहम्मद मुनीर, वे सभी सेवारत न्यायाधीश थे।

यह निर्णय रेडक्लिफ ने लिया था क्योंकि आयोग विभाजित था, एक तरफ भारत के सदस्य थे और दूसरी तरफ पाकिस्तान के। रेडक्लिफ ने यह भी कहा था कि भारत और पाकिस्तान के बीच सीमाएं निर्धारित करते समय मेरे पास कोई निश्चित नियम नहीं थे। सीमांकन करने से पहले ही मैंने वैसे पर्याप्त जानकारी एकत्र कर ली थी।

'मेरे काम का सबसे पेचीदा हिस्सा पंजाब और बंगाल के आखिरी हिस्से का धार्मिक आधार पर विभाजन करना था। इसलिए लाहौर को भारत को देने और फिर उसे पाकिस्तान के पक्ष में बदलने का उनका निर्णय समझ में आता था।' मैंने किसी न किसी तरह का संतुलन बनाए रखने की कोशिश की थी। पाकिस्तान के संस्थापक मोहम्मद अली जिन्ना द्वारा रेडक्लिफ का नाम सुझाने का लाहौर को पाकिस्तान को देने के निर्णय में बदलाव से कोई लेना-देना नहीं था। मैंने पूछा, क्या आप भारत और पाकिस्तान के बीच खींची गई सीमा रेखाओं से संतुष्ट हैं?

'मेरे पास कोई विकल्प नहीं था, मेरे पास समय इतना कम था कि मैं इससे बेहतर काम नहीं कर सकता था। अगर मुझे उतना ही समय दिया जाता, तो मैं वही काम करता। हालांकि, अगर मुझे दो से तीन साल मिलते तो शायद मैं अपने काम में और सुधार कर पाता'। सीमांकन करने से पहले मैंने उत्तरी भारत के कुछ हिस्सों के ऊपर केवल एक बार डकोटा विमान उड़ाया था। उन्होंने कहा, 'यदि कुछ लोगों की आकांक्षाएं पूरी नहीं हुईं तो इसका दोष उन राजनीतिक व्यवस्थाओं में है जिनसे मेरा कोई लेना-देना नहीं है।' कुलपति नैयर ये बताते हैं कि जब वह मिलने गए तो रेडक्लिफ ने टाई के साथ जैकेट पहनी हुई थी, जो एक तरह का औपचारिक पहनावा था। लंबे समय तक न्यायाधीश रह चुके होने के कारण शायद विदेशियों से मिलते समय जैकेट पहनना उनकी आदत थी लेकिन उनके व्यवहार में कोई औपचारिकता नहीं थी। उनसे बातचीत के दौरान मैंने उन्हें एक सरल और स्पष्टवादी व्यक्ति पाया। जब मैंने उनके फ्लैट की घंटी बजाई तो उन्होंने खुद दरवाजा खोला। कमरा पुराने फर्नीचर से भरा हुआ था जिसे उन्होंने शायद वर्षों में इकट्ठा किया होगा। बैठक का कमरा सादा लग रहा था। उनके पास कोई नौकर या नौकरानी नहीं थी क्योंकि वे खुद रसोई में जाते थे, जिसे मैं बैठक में सोफे से देख सकता था, चाय बनाने के लिए केतली को चूल्हे पर रखने के लिए।

रेडक्लिफ ने यह भी बताया था कि वह सीमा आयोग के सदस्यों से खुश नहीं थे। उनका कहना था कि वे सिर्फ अपने देश का पक्ष रख रहे थे। दोनों पक्ष अधिकतम क्षेत्र चाहते थे और उनके तर्क एक-दूसरे के विपरीत थे। रेडक्लिफ ने बताया कि पूर्वी बंगाल के एक मुस्लिम सदस्य ने उनसे निजी तौर पर मिलकर दार्जिलिंग को पाकिस्तान में शामिल करने की गुहार लगाई। उन्होंने कहा, 'मेरा परिवार हर गर्मी में दार्जिलिंग जाता है और अगर यह जगह भारत को मिल गई तो हमारे लिए बहुत मुश्किल होगा।' रेडक्लिफ ने भारतीय सीमा आयोग के सदस्य मेहरचंद महाजन की बहुत प्रशंसा की, जो बाद में भारत के मुख्य न्यायाधीश बने। उन्होंने महाजन की विद्वत्ता और कानूनी ज्ञान से रेडक्लिफ को प्रभावित किया।

'उन्हें मेरा आभारी होना चाहिए क्योंकि मैंने उन्हें लाहौर दिलाने के लिए हर संभव प्रयास किया, जबकि वह वास्तव में भारत का हिस्सा बनने लायक था। वैसे भी, मैंने हिंदुओं की तुलना में मुसलमानों का अधिक पक्ष लिया।'

उन्हें सबसे ज्यादा दुख इस आरोप से हुआ था कि उन्होंने माउंटबेटन के दबाव में अपनी रिपोर्ट बदल दी थी। पाकिस्तानियों का आरोप था कि माउंटबेटन ने रेडक्लिफ पर दबाव डाला था कि वे भारत को फिरोजपुर और जीरा तहसीलें सौंप दें ताकि जम्मू-कश्मीर से संपर्क स्थापित हो सके।

जो कुछ हुआ उस पर रैडक्लिफ को भी खेद था लेकिन वह इस कथन पर अडिग था कि इसने भारत को फिरोजपुर और जीरा इसलिए दिए क्योंकि उन्हें ऐसा महसूस हुआ। उन पर कोई दबाव नहीं था। हालांकि, उनसे रिपोर्ट देने का आग्रह किया गया।

22 जुलाई, 1947 को रेडक्लिफ को लिखे पत्र में माउंटबेटन ने कहा कि लाहौर में उनकी पंजाब विभाजन समिति के साथ चर्चा हुई थी। समिति को दिए गए अपने आश्वासन का जिक्र करते हुए कि वे रेडक्लिफ को पंजाब सीमा निर्धारण पुरस्कार की यथाशीघ्र घोषणा की आवश्यकता के बारे में लिखेंगे, माउंटबेटन ने आगे कहा, 'पंजाब विभाजन समिति में इस बात पर जोर दिया गया कि यदि 15 अगस्त से ठीक पहले अंतिम समय में अवार्ड की घोषणा की गई तो अशांति का खतरा बहुत बढ़ जाएगा।' मुझे पता है कि आप इसे पूरी तरह समझते हैं लेकिन मैंने आपसे वादा किया था कि मैं इस बारे में फिर से बात करूंगा और कहूंगा कि पुरस्कार की घोषणा के लिए आप जितने भी अतिरिक्त दिन का समय निकाल सकें, हम सभी उसके लिए आभारी होंगे। क्या 10 तारीख तक इसे जारी करने की कोई संभावना है?'

अमेरिका की कूटनीति नहीं दादागिरी!

विनीत नारायण
www.vineetnarain.net

आज दुनिया में हर ओर युद्ध, तबाही और अराजकता का दौर है। विकास की गति रुक रही है। अनिश्चितता का वातावरण है। अनेक देशों के नेता ही मवालियों की तरह बर्ताव कर रहे हैं। जबकि विश्व के लोग हमेशा शांति और विकास चाहते हैं। कोई भी युद्ध नहीं चाहता। हर कोई यह चाहता है कि दुनिया के हर मुल्क में स्थिरता का माहौल बना रहे। इसी उठा-पटक में अमरीका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प सबसे आगे हैं। ट्रम्प ही क्यों, अमेरिका की तो फ़ितरत ही रही है कि कोई बहाना ढूंढ कर कमजोर देशों को दबाना और उनके संसाधनों पर क़ब्ज़ा करना। हाल ही में सोशल मीडिया पर वायरल एक पोस्ट ने अमेरिका की कूटनीति और युद्ध रणनीति पर गंभीर सवाल उठाए हैं।

सोशल मीडिया पर @sankofa360 से एक पोस्ट काफ़ी वायरल हुई जिसमें लिखा है कि, "प्रिय दुनिया, क्या तुम अमेरिका और उसके सहयोगियों द्वारा झूठ बोलने से थक नहीं गए हो? क्या तुम उस साम्राज्य से थक नहीं गए हो जो खून और मौत की तलाश में नहीं रुकता? उन्होंने कोरिया (1950–1953) के बारे में झूठ बोला, ग्वाटेमाला (1954) के बारे में, इंडोनेशिया (1958), क्यूबा (1961), वियतनाम (1961–1975), लाओस (1964–1973), कांगो (1964), डोमिनिकन रिपब्लिक (1965), कंबोडिया (1969–1970), ग्रेनाडा (1983), लेबनान (1983–1984), लीबिया (1986), ईरान (1987–1988), पनामा (1989), इराक (1991, 1998, 2003), सोमालिया (1992–1994, 2007–वर्तमान), बोस्निया (1994–1995), सूडान (1998), अफगानिस्तान (1998, 2001), यूगोस्लाविया (1999), यमन (2002–वर्तमान), पाकिस्तान (2004), सीरिया (2014), लीबिया (2011), वेनेजुएला (2026), क्यूबा (2026), ईरान (2026) के बारे में झूठ बोला। अमेरिका या उसके सहयोगी कभी किसी बात पर सच्चे रहे हैं? दुनिया कब इनके झूठ से ऊब जाएगी? अब तो हमें पता होना चाहिए कि वैश्विक अशांति, मौत, अराजकता और विनाश के जिम्मेदार कौन हैं? जो दुनिया की स्थिरता के खिलाफ हैं? जो विश्व शांति के विचार से डरते हैं? तुम्हारी चुप्पी सहयोग है! अमेरिका वैश्विक मुसीबत पैदा करने वाला है। मौत और विनाश की मशीन! अमेरिकी साम्राज्य की तानाशाही के खिलाफ बोलो!!!"

यह पोस्ट न केवल अमेरिका की ऐतिहासिक गलतियों को उजागर करती है बल्कि दुनिया को जगाने का प्रयास भी करती है। आज, जब हम वेनेजुएला, क्यूबा और ईरान जैसे देशों में अमेरिकी हस्तक्षेप की नई लहर देख रहे हैं, यह स्पष्ट हो गया है कि अमेरिका के फैसले गलत साबित हो चुके हैं। इन युद्धों ने न केवल लाखों जानें लीं बल्कि दुनिया को अस्थिरता की ओर धकेला। अमेरिका की इन गलतियों से यह पता चलता है कि वैश्विक समुदाय अब युद्धों से कितना ऊब चुका है?

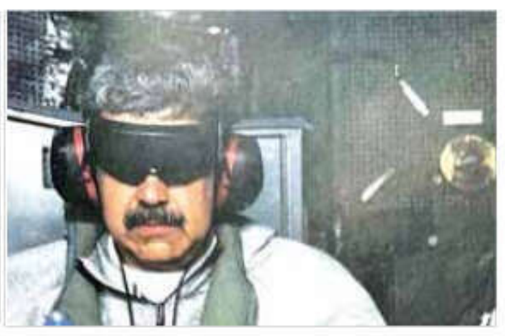

अमेरिका की विदेश नीति का इतिहास झूठ, हस्तक्षेप और युद्धों से भरा पड़ा है। 1950 के दशक से शुरू करें तो कोरियाई युद्ध (1950-1953) में अमेरिका ने उत्तर कोरिया के आक्रमण का बहाना बनाकर हस्तक्षेप किया लेकिन वास्तविकता यह थी कि यह शीत युद्ध की रणनीति का हिस्सा था। लाखों कोरियाई मारे गए लेकिन क्या अमेरिका की जीत हुई? नहीं, यह युद्ध आज भी कोरियाई प्रायद्वीप पर तनाव का कारण बना हुआ है। इसी तरह, 1954 में ग्वाटेमाला में अमेरिका ने लोकतांत्रिक रूप से चुनी गई सरकार को उखाड़ फेंका, क्योंकि वहां की भूमि सुधार नीतियां अमेरिकी कंपनियों को पसंद नहीं आईं। सीआईए के ऑपरेशन ने देश को दशकों की अस्थिरता में डाल दिया। क्या यह फैसला सही साबित हुआ? नहीं, ग्वाटेमाला आज भी गरीबी और हिंसा से जूझ रहा है।

1950-60 के दशक से अमेरिका के झूठ की फेहरिस्त लंबी है। इंडोनेशिया (1958) में सीआईए ने विद्रोहियों को समर्थन दिया लेकिन असफल रहा। क्यूबा (1961) में 'बे ऑफ पिग्स' हमला एक बड़ी असफलता थी, जहां अमेरिका ने फिदेल कास्त्रो को हटाने की कोशिश की लेकिन खुद की किरकिरी हुई।

वियतनाम युद्ध (1961-1975) तो अमेरिकी इतिहास का सबसे काला अध्याय है। अमेरिका ने 'टोंकिन की खाड़ी घटना' को बहाना बनाकर युद्ध शुरू किया, जो बाद में झूठ साबित हुआ। 58,000 अमेरिकी सैनिक और लाखों वियतनामी मारे गए। अमेरिका हारकर लौटा और वियतनाम आज एक मजबूत अर्थव्यवस्था वाला देश है। क्या अमेरिका का फैसला सही था? नहीं, यह युद्ध अमेरिकी समाज को भी बांट गया। लाओस (1964-1973) और कंबोडिया (1969-1970) में गुप्त बमबारी ने लाखों लोगों को मार डाला और खमेर रूज जैसे आतंक को जन्म दिया। कांगो (1964) में अमेरिका ने वहां प्रधानमंत्री पैट्रिस लुमुम्बा की हत्या में भूमिका निभाई, जो अफ्रीका की आजादी के प्रतीक थे। डोमिनिकन रिपब्लिक (1965) में हस्तक्षेप ने लोकतंत्र को कुचला।

1980 के दशक में भी यह सिलसिला जारी रहा। ग्रेनाडा (1983) में अमेरिका ने मेडिकल छात्रों की सुरक्षा का बहाना बनाकर आक्रमण किया लेकिन यह छोटे देश पर साम्राज्यवादी कब्जा था। लेबनान (1983-1984) में अमेरिकी सैनिकों की मौत हुई लेकिन कोई स्थायी शांति नहीं आई। लीबिया (1986) में कद्दाफी पर हमला, ईरान (1987-1988) में नौसेना संघर्ष, पनामा (1989) में नोरिएगा को हटाना – ये सभी फैसले अमेरिका की ताकत दिखाने के लिए थे लेकिन उन्होंने क्षेत्रीय अस्थिरता बढ़ाई। इराक के खिलाफ 1991 का गल्फ वॉर, 1998 की बमबारी और 2003 का आक्रमण 'महाविनाश के हथियारों' के झूठ पर आधारित था। सद्दाम हुसैन को हटाया गया लेकिन इराक आज भी अराजकता में डूबा है, आईएसआईएस जैसे समूह पैदा हुए। सोमालिया (1992-1994, 2007-वर्तमान) में अमेरिकी हस्तक्षेप ने समुद्री डकैती और आतंकवाद बढ़ाया। बोस्निया (1994-1995) में नाटो हमले, सूडान (1998) में दूतावास बमबारी, अफगानिस्तान (1998, 2001) में तालिबान के खिलाफ युद्ध- ये सभी अमेरिका की 'आतंकवाद विरोधी' नीति के नाम पर थे लेकिन अफगानिस्तान से 2021 की शर्मनाक वापसी ने साबित किया कि 20 साल का युद्ध व्यर्थ था।

यूगोस्लाविया (1999) में नाटो बमबारी ने कोसोवो को अलग किया, लेकिन जातीय तनाव आज भी हैं। यमन (2002-वर्तमान) में ड्रोन हमलों ने नागरिकों को मार डाला, पाकिस्तान (2004) में भी यही हुआ। सीरिया (2014) में आईएसआईएस के खिलाफ हस्तक्षेप ने देश को बर्बाद कर दिया। लीबिया (2011) में कद्दाफी को हटाने के बाद देश गृहयुद्ध में फंस गया और अब 2026 में वेनेजुएला, क्यूबा और ईरान पर झूठ। वेनेजुएला में अमेरिका ने आर्थिक प्रतिबंध लगाए और विपक्ष को समर्थन दिया, दावा किया कि मदुरो तानाशाह है, लेकिन यह तेल संसाधनों पर कब्जे की कोशिश है। क्यूबा पर दशकों से प्रतिबंध लेकिन 2026 में नए आरोप लगाकर दबाव बढ़ाया जा रहा है। ईरान पर परमाणु कार्यक्रम के बहाने हमले की धमकी, जबकि ईरान शांति समझौते चाहता है। ये सभी फैसले गलत साबित हो चुके हैं क्योंकि उन्होंने न केवल लक्षित देशों को नुकसान पहुंचाया बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया।

संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट्स बताती हैं कि युद्धों से करोड़ों लोग विस्थापित हुए, अर्थव्यवस्थाएं चरमरा गईं। यूक्रेन-रूस संघर्ष और इजराइल-फिलिस्तीन विवाद में अमेरिका की भूमिका ने दिखाया कि वह शांति दलाल नहीं, बल्कि युद्ध उकसाने वाला है। एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के देश अब चीन और रूस जैसे भागीदारों की ओर मुड़ रहे हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि ये देश शांति और विकास पर जोर देते हैं। ब्रिक्स जैसे संगठन अमेरिकी वर्चस्व को चुनौती दे रहे हैं। सोशल मीडिया पर #NoMoreWars जैसे हैशटैग ट्रेंड कर रहे हैं, लोग प्रदर्शन कर रहे हैं। प्यू रिसर्च के सर्वे बताते हैं कि 70% से ज्यादा वैश्विक नागरिक युद्ध विरोधी हैं। कोरोना महामारी और जलवायु परिवर्तन जैसी चुनौतियों ने साबित किया कि दुनिया को सहयोग चाहिए, न कि संघर्ष। अमेरिका की ये गलतियां साबित करती हैं कि उसकी कूटनीति स्वार्थ पर आधारित है। वह लोकतंत्र और मानवाधिकारों का ढोंग रचता है, लेकिन वास्तव में संसाधनों और वर्चस्व की तलाश करता है। अब समय आ गया है कि दुनिया जागे। जैसे पोस्ट कहती है, चुप्पी सहयोग है। हमें अमेरिकी साम्राज्यवाद के खिलाफ आवाज उठानी चाहिए। संयुक्त राष्ट्र में सुधार, बहुपक्षीय समझौते और शांति वार्ताएं ही रास्ता हैं। भारत जैसे देश जो अहिंसा का संदेश देते हैं, वैश्विक शांति के लिए आगे आएं। दुनिया शांति चाहती है, कोई युद्ध नहीं। अमेरिका को अपनी गलतियों से सीखना चाहिए, अन्यथा इतिहास उसे वैश्विक मुसीबत पैदा करने वाले के रूप में याद रखेगा।

तालिबान के दमन के बावजूद महिलाओं के हक की आवाज बना 'रेडियो बेगम'

पुरुषों की दुनिया में एक महिला की आवाज सुनना एक छोटी सी रोशनी, अंधेरे के समंदर में एक चमक जैसा है। दुनिया में हर साल 8 मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर आज हम उन महिलाओं की चर्चा कर रहे हैं, जिन्हें अपनी पहचान और अस्तित्व के लिए निरंतर संघर्ष करना पड़ रहा है। बात अफगानिस्तान की है, जहां सत्ता परिवर्तन के बाद से महिलाओं और किशोरियों का जीवन अत्यंत चुनौतीपूर्ण और कष्टकारी हो गया है।

तालिबान शासन के अधीन अफगान महिलाओं के लिए जारी किए जा रहे प्रतिबंध और नए-नए फरमान उन्हें हाशिए पर धकेल रहे हैं। हालांकि, इन विषम परिस्थितियों के बीच भी वहां की साहसी महिलाओं ने अपनी आवाज बुलंद करने और अस्तित्व बचाए रखने के नए मार्ग खोज लिए हैं। अफगानिस्तान की महिलाएं 'रेडियो बेगम' के जरिए देश की उन सभी महिलाओं, लड़कियों और बच्चियों की आवाज बन रही हैं, जिन्हें दबाया और कुचला जाता है। अफगानिस्तान की राजधानी काबुल में हर सुबह 'रेडियो बेगम' की टीम को लेने के लिए गाड़ियां सड़कों पर निकलती हैं। वर्तमान प्रतिबंधों और सुरक्षा कारणों से ये युवतियां अकेले यात्रा नहीं कर सकतीं,

क्योंकि सार्वजनिक स्थानों पर महिलाओं का घूमना बहुत मुश्किल हो गया है। रेडियो बेगम रेडियो स्टेशन को संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) का समर्थन मिला हुआ है। इसमें लगभग 30 महिलाओं की टीम साथ में काम करती है और अफगानिस्तान के 34 प्रांतों में से लगभग एक दर्जन को छोड़कर, देश के ज्यादातर हिस्सों में इस स्टेशन से महिलाओं की आवाज पहुंचती है।

अफगानिस्तान की हालत ये है कि यहां तालिबानी अधिकारियों ने मीडिया में महिलाओं की आवाज पर भी बैन लगा दिया है। रेडियो बेगम स्टेशन की फाउंडर हमीदा अनन ने यूएन न्यूज को बताया, "वे खुद बस या टैक्सी से नहीं आतीं क्योंकि एक महिला के लिए शहर में घूमना बहुत मुश्किल होता है, खासकर जवान महिलाओं के लिए।" उन्होंने उन कानूनों के बारे में बताया जो उन्हें ऐसा करने से रोकते हैं।

स्टूडियो पहुंचने के बाद, जर्नलिस्ट अपनी एडिटोरियल मीटिंग करते हैं, अपने शो तैयार करते हैं और लाइव ऑन एयर हो जाते हैं। अनन ने बताया, अभी, जब आप अफगानिस्तान में होते हैं और टेलीविजन पर चैनल बदलते हैं या रेडियो स्टेशन बदलते हैं, तो आपको सिर्फ पुरुषों की आवाजें सुनाई देती हैं या पुरुषों की तस्वीरें दिखाई देती हैं।

दिल्ली आर.एन.आई. नं. 40474/83
पंजाब केसरी
दिल्ली कार्यालय :
फोन आफिस: 011-30712200, 45212200,
प्रसार विभाग: 011-30712224
विज्ञापन विभाग: 011-30712229
सम्पादकीय विभाग: 011-30712292-93
मैगजीन विभाग: 011-30712330
फैक्स : 91-11-30712290, 30712384, 011-45212383, 84
Email: Editorial@punjabkesari.com

स्वत्वाधिकारी दैनिक समाचार लिमिटेड, 2-प्रिंटिंग प्रेस कॉम्पलैक्स, नजदीक वजीरपुर डीटीसी डिपो, दिल्ली-110035 के लिए मुद्रक, प्रकाशक तथा सम्पादक अनिल शारदा द्वारा पंजाब केसरी प्रिंटिंग प्रेस, 2-प्रिंटिंग प्रेस कॉम्पलैक्स, वजीरपुर, दिल्ली से मुद्रित तथा 2, प्रिंटिंग प्रेस कॉम्पलैक्स, वजीरपुर, दिल्ली से प्रकाशित।

रामायण

लक्ष्मण का हाथ पकड़कर राम ने कहा-
चिंता मत करो

आंखों से अश्रुधारा बहने लगी। लक्ष्मण जी का हाथ पकड़ कर राम बोले, भाई चिंता मत कर। अब भरत जी को मार डालूं ऐसा लक्ष्मण जी बोले वह राम जी को पसंद नहीं आया। परंतु लखन को उलाहना देना चाहिए। उलाहना कैसे दें? राम जी का स्वभाव अति कोमल है। उलाहना दिया पर बहुत सुंदर ढंग से कहा तू बहुत बार बोलता है, पर आज तू बहुत अच्छा बोला। इसमें भी तू बोला कि विषयी प्राणी को जरा-सी बड़ी वस्तु मिलने पर अहंकार आ जाता है। यह मुझे बात बहुत अच्छी लगी। उसमें मेरी सम्मति है। लक्ष्मण जी का सारा भार राम ने अपने सिर पर ले लिया। फिर धीरे से कहा, भाई अहंकार आता है पर किसे आये, जिसे सपने में भी संतों का लाभ न मिला हो यह बात भरत को लागू नहीं पड़ती क्योंकि भरत तो स्वयं संत हैं-

भरत न होइ न राजमद बिधि हरिहर पद पाइ।

ब्रह्मा, विष्णु और महेश का सिंहासन भरत को मिले तो लक्ष्मण भरत को अभिमान नहीं आयेगा। ऐसा प्रमाण मैं देता हूं। बुरा न लगे और भूल समझ में आ जाये यह उलाहना देने की रीत है। हमें तो उलाहना देना भी नहीं आता। लड़का विवाह करके आया। सास बहू के साथ खाना खाये। बहू रोज भूखी रहे। अब कोई भूखा नहीं रहता। दुगना खाना है। पहले गांवों में बहू के साथ सास खाना खाती थी तो बेचारी बहू आधी भूखी रहती थी, क्योंकि ज्यादा खाये तो शायद कह दे कि नहीं है क्या? डर ही डर में वह आधी भूखी रहती थी। पुत्रवधू का शरीर सूखने लगता। एक दिन सास ने पूछा, बेटी, शरीर क्यों सूख रहा है? बहु बोली, कुछ नहीं मां, यह तो ऐसे ही है। सास समझदार थी। वह समझ गई कि मेरे साथ खाना खाने बैठती है तो आधी भूखी रहती है। सज्जन सास आजकल कहां होती हैं? एक दिन घटना हुई। गांव में खील में सब अपने लिए तिल और मूंगफली मिलाते थे। एक बार उस बहू का देवर, जो दस बारह साल का था तिल लेकर तेल निकालने गया। तिल का बचा हुआ भाग निकालता है उसमें चीनी-गुड़ डाल कर गांव वाले खाते थे। बहू को यह बहुत अच्छा लगता था। इसे सामी कहते हैं। सामी बहु ने बचपन में बहुत खायी थी। पर अब ससुराल में तो इसका नाम नहीं ले सकती। देवर जा रहा था उसे कहा, भैया एक काम करोगे? मुझे सामी बहुत अच्छी लगती है। आप थोड़ी-सी सामी मेरे लिए लेते आओगे? देवर बोला, हां भाभी लेता आऊंगा। भाभी ने कहा पर किसी को पता नहीं चलना चाहिए इस तरह...देवर बोला, भाभी तो मैं कहां रखूं? बहू ने कहा भैया, किसी को पता न चले चक्की के नीचे रख देना। पहले तो सुबह चक्की में पिसने के लिए घर की स्त्रियां बैठ जाती थीं। बहू ने कहा, सुबह मैं चक्की में पीसने की चीज पीसूंगी तब रखा खा लूंगी। देवर ने कहा, ठीक है भाभी मैं रख दूंगा। देवर सामी लेकर आया और कटोरे में डाल कर चक्की के नीचे रख दी। मां को पता नहीं था। भाभी को इशारा कर दिया। भाभी के मन में आनंद समा नहीं रहा था। वह सोचती कि कब सुबह हो और मैं सामी खाऊं। रात को सब कार्यक्रम समाप्त करके सोने चली गई। ● *(क्रमशः)*

मोरारी बापू जी

शुभ और अशुभ
दोनों ही कर्म हैं

देव भी बंधी है, मनुष्य भी बंधी है और पशु भी बंधी है। सभी समान रूप से बंदी है। बंधी होने की पीड़ा सभी की समान है। बंदी होने का यर्थाथ सभी को समान है। और बंदी बनाने वाले हैं कर्म। कर्म क्या हैं? कर्म वे सूक्ष्मातिसूक्ष्म अरूपी परमाण्ु पुद्गल है जो आत्मा प्रदेशों पर आवृत्त बनाकर आत्मा की ज्ञानदि शक्तियों में ढ़ाप लेते हैं। कर्मों में आवृत आत्मा बोझिल होकर संसार के सागर में डूब जाती है। जब तक ये कर्म आत्मा पर छाय रहते हैं तब तक आत्मा संसार सागर में डूबी रहती है। जैसे-जैसे कर्म आत्मा ये विलग होते हैं वैसे-वैसे आत्मा हल्की होती है। जब संवर निर्जरादि विशेष पराक्रम से आत्मा कर्मों को स्वंय से विलग कर देती है तो आत्मा अपने मूल स्वरूप का उपल्बध बनाकर स्वतंत्र हो जाती है। यही स्वतंत्रता मुक्ति, मोक्ष, और निर्वाण कहलाती है। कर्म दो प्रकर के हैं, शुभकर्म और अशुभ कर्म। शुभ कर्म के फल शुभ और अशुभ कर्म के फल अशुभ होते हैं। शुभ कर्म करन वाला जीव मनुष्य और देवादि गतियों में जाता है और शुभ कर्म करने वाला जीव मनुष्य और देवादि गतियों में जाता है और अशुभ कर्म करने वाला नरकादी गतियों में भटकता है। मनुष्य और देवादि गतियों में जीव को कुछ राहत मिलती है और पशु और नरकादी गतियों में जीव को अपने दुष्कर्मों के फल भोगने के लिए जाते हैं। जहां उन्हें पुनः-पुनः वध, बंधन और प्रताड़ना झेलनी पड़ती है। आध्यात्मिक दृष्टि से शुभ और अशुभ दोनो ही प्रकार के कार्म त्याज्य हैं। क्योंकि ये दोनो ही प्रकार के कर्म परिणामतः बंधन रूप ही हैं। निर्जरा कर्म मुक्ति का सर्वोत्तम उपाय है। निर्जरा का अर्थ है निर्जीण कर देना। नष्ट कर देना। निर्जरा के द्वादश भेद हैं। अनशनादि बारह प्रकार के तप से कर्म निर्जीण होते है। संवर से नवीन कर्मों का आगमन रुकता हैं। संवर और निर्जरा की निरंतर साधना से एक क्षण आता है जब आत्मा पूर्णतः निर्भार और स्वतंत्र बन जाता है। जैन दर्शन में उसी क्षण को कैवल्यसवस्था कहा गया है। हम कर्म को समझें। उससे मुक्त होने के संकल्प को अपने भीतर जगाएं। जब संकल्प प्रखर बन जाता है तो मंजिल दूर नहीं होती है। अप्रमाद भगवान महावीर का सर्वाधिक ध्वनित उपदेश है। भगवान महावीर भगवत्ता को उपलब्ध होने के पश्चात आजीवन अप्रमाद का संदेश जगत को देते हैं। अप्रमाद का अर्थ है जागरण। प्रमाद का अर्थ है निद्रा, बेहोशी। तो क्या इसका यह अभिप्रय हुआ की भगवान निद्रित और मुच्छिर्त लोगों की सभा में उपदेश देते थे? निःसंदेह भगवान निद्रित और मुच्छित लोगों की सभा में उपदेश देते थे। यह भी सच है कि भगवान की सभा में उपस्थित होने वाले श्रोता देह से अनिद्रित और जागृत होते थे। स्मरण रखें, निद्रा और जागरण का संबंध मात्र देह से ही नहीं हैं। देह पर घटने वाली निद्रा और जागृति वास्तविक निद्रा और जागृति है। आप रात्रि में सो जाते हो और प्रभात में जग जोते हो। ● *(क्रमशः)*

मुनि मणिभद्र

घट ज्ञान आत्मा में है

सत्यार्थ प्रकाश

आर्य समाज का महान ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश जिसके रचयिता स्वामी दयानंद सरस्वती जी हैं, में जीवन को सही दिशा में ले जाने के सूत्र हैं और अगर इंसान इसे पढ़े और इसकी शिक्षाओं पर चले तो मानव का कल्याण तो होगा ही बल्कि समाज में भी कुरीतियां दूर होंगी और नैतिक संस्कारों का उजाला होगा। पाठकों की भारी मांग पर इसे प्रस्तुत किया जा रहा है।

दूसरा 'योगाचार' जो बाह्य शून्य मानता है अर्थात पदार्थ भीतर ज्ञान में भासते हैं बाहर नहीं। जैसे घट ज्ञान आत्मा में है तभी मनुष्य कहता है कि 'यह घट है।' जो भीतर ज्ञान न हो तो नहीं कह सकता, ऐसा मानता है। तीसरा 'सौत्रांतिक' जो बाहर अर्थ का अनुमान मानता है, क्योंकि बाहर कोई पदार्थ सांगोपांग प्रत्यक्ष नहीं होता, किंतु एकदेश प्रत्यक्ष होने से शेष में अनुमान किया जाता है, इसका ऐसा मत है। चौथा 'वैभाषिक' है। उसका मत बाहर पदार्थ प्रत्यक्ष होता है भीतर नहीं। जैसे 'अयं नीलो घटः' इस प्रतीति में नीलयुक्त घटाकृति बाहर प्रतीत होती है, यह ऐसा मानता है। यद्यपि इनका आचार्य बुद्ध एक है तथापि शिष्यों के बुद्धि भेद से चार प्रकार की शाखा हो गईं। जैसे सूर्यास्त होने में जार पुरुष परस्त्रीगमन, चोर चोरी और विद्वान सत्य भाषणादि श्रेष्ठ कर्म करते हैं। समय एक परंतु अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार भिन्न-भिन्न चेष्टा करते हैं। अब इन पूर्वोक्त चारों में 'माध्यमिक' सबको क्षणिक मानता है अर्थात क्षण-क्षण में बुद्धि के परिणाम होने से जो पूर्व क्षण में ज्ञात वस्तु था वैसा ही दूसरे क्षण में नहीं रहता, इसलिए सबको क्षणिक मानना चाहिए, ऐसे मानता है। दूसरा 'योगाचार' जो प्रवृत्ति है सो सब दुःख रूप है, क्योंकि प्राप्ति में संतुष्ट कोई भी नहीं रहता। एक की प्राप्ति में दूसरे की इच्छा बनी ही रहती है, इस प्रकार मानता है। तीसरा 'सौत्रांतिक' सब पदार्थ अपने-अपने लक्षणों से लक्षित होते हैं। जैसे गाय के चिह्नों से गाय और घोड़ों के चिह्नों से घोड़ा ज्ञात होता है, वैसे लक्षण लक्ष्य में सदा रहते हैं, ऐसा कहता है। चौथा 'वैभाषिक' शून्य ही को एक पदार्थ मानता है। प्रथम 'माध्यमिक' सबको शून्य मानता था उसी का पक्ष 'वैभाषिक' का भी है इत्यादि बौद्धों में बहुत से विवाद पक्ष हैं। इस प्रकार चार प्रकार की भावना मानते हैं। वर्तमान समय में जीव पाप-पुण्य करता, सुख-दुख भोगता है, वैसे ईश्वर कभी नहीं होता। जो ईश्वर क्रियावान न होता, तो इस जगत को कैसे बना सकता। जो कर्मों को प्रागभाववत् अनादि सांत मानते हो, तो कर्म समवाय संबंध से नहीं रहेगा। जो समवाय संबंध से नहीं वह संयोगज होकर अनित्य होता है। जो मुक्ति में क्रिया ही न मानते हों, तो वे मुक्त जीव ज्ञान वाले होते हैं व नहीं? जो कहो होते हैं, तो अंतः क्रिया वाले हुए। क्या मुक्ति में पाषाणवत् जड़ हो जाते? एक ठिकाने पड़े रहते और कुछ भी चेष्टा नहीं करते? तो मुक्ति क्या हुई? अंधकार और बंधन में पड़ गए। (नास्तिक) जो ईश्वर की रचना से सृष्टि होती, तो माता-पितादि का क्या काम? (आस्तिक) ऐश्वरी सृष्टि का ईश्वर कर्ता है, जैवी सृष्टि का नहीं। जो जीवो के कर्त्तव्य कर्म हैं, उनको ईश्वर नहीं करता, किंतु जीव ही करता है। जैसे वृक्ष, फल, औषधि, अन्नादि ईश्वर ने उत्पन्न किया है। उसको लेकर मनुष्य न पीसे, न कूटे, न रोटी आदि पदार्थ बनाए और न खाए, तो क्या ईश्वर उसके बदले इन कामों को कभी करेगा? और जो न करे तो जीव का जीवन भी न हो सके, इसलिए आदि सृष्टि में जीव के शरीरों और सांचे को बनाना ईश्वराधीन, पश्चात उनसे पुत्रादि की उत्पत्ति करना जीव का कर्त्तव्य काम है। (नास्तिक) जब परमात्मा शाश्वत, अनादि चिदानंद ज्ञानस्वरूप है, तो जगत के प्रपंच और दुख में क्यों पड़ा? आनंद छोड़ दुख का ग्रहण ऐसा काम कोई साधारण मनुष्य भी नहीं करता, ईश्वर ने क्यों किया? (आस्तिक) परमात्मा किसी प्रपंच और दुख में नहीं गिरता, न अपने आनंद को छोड़ता है, क्योंकि प्रपंच और दुख में गिरना जो एकदेशी हो उसका हो सकता है सर्वदेशी का नहीं। जो अनादि चिदानंद ज्ञानस्वरूप परमात्मा जगत को न बनाए, तो अन्य कौन बना सके? जगत बनाने का जीव में सामर्थ्य नहीं और जड़ में स्वयं बनने का भी सामर्थ्य नहीं। इससे यह सिद्ध हुआ कि परमात्मा ही जगत को बनाता और सदा आनंद में रहता है। ● *(क्रमशः)*

चूड़ियों में छिपे हैं अनेक राज

चूड़ियां सिर्फ श्रृंगार का हिस्सा नहीं हैं, बल्कि भारतीय संस्कृति में इन्हें सौभाग्य और सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक माना जाता है। वास्तु शास्त्र के अनुसार, अगर चूड़ियां सही तरीके से और सही नियमों के पालन के साथ पहनी जाएं, तो यह घर में सुख-समृद्धि लाती हैं। वहीं, इनसे जुड़ी छोटी सी चूक भी वास्तु दोष का कारण बन सकती है। अक्सर हम थोड़ी सी चटक गई या दरार वाली चूड़ियों को ठीक है समझकर पहने रहते हैं। वास्तु के अनुसार, यह सबसे बड़ी गलती है। टूटी हुई चूड़ियां नकारात्मक ऊर्जा का संचार करती हैं और पति-पत्नी के रिश्तों में तनाव पैदा कर सकती हैं। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, ऐसी चूड़ियां पहनना सौभाग्य के लिए शुभ नहीं माना जाता।

वास्तु शास्त्र के अनुसार, चूड़ियों की मधुर आवाज घर के वातावरण को शुद्ध करती है। चूड़ियों को हमेशा व्यवस्थित तरीके से रखना चाहिए। इन्हें कभी भी इधर-उधर बिखेर कर न रखें। शास्त्रों के अनुसार, श्रृंगार की सामग्री को हमेशा दक्षिण-पश्चिम या उत्तर-पश्चिम दिशा में रखना सबसे बेहतर होता है। हर रंग की अपनी एक ऊर्जा होती है। विवाहित महिलाओं के लिए लाल और हरी चूड़ियां सबसे शुभ मानी जाती हैं। लाल रंग शक्ति और प्रेम का प्रतीक है, जबकि हरा रंग खुशहाली और प्रगति को दर्शाता है। शनिवार के दिन गहरे नीले या काले रंग की चूड़ियां पहनने से बचना चाहिए। शास्त्रों में बताया गया है कि अपनी पहनी हुई चूड़ियां कभी भी किसी को दान में नहीं देनी चाहिए। इससे आपके जीवन की सकारात्मक ऊर्जा दूसरे के पास चली जाती है। यदि आप किसी को उपहार देना चाहती हैं, तो हमेशा नई चूड़ियां ही दें। स्रोतों के अनुसार, उपहार में मिली चूड़ियां आपसी प्रेम को बढ़ाती हैं, लेकिन उनका टूटा न होना अनिवार्य है। चूड़ियां पहनते समय इस बात का ध्यान रखें कि वो बहुत ज्यादा ढीली या बहुत ज्यादा कसी हुई न हों। वास्तु की दृष्टि से यह आपके आत्मविश्वास और स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं। साथ ही, मंगलवार और शनिवार को नई चूड़ियां खरीदने से बचना चाहिए, इसके बजाय गुरुवार या शुक्रवार का दिन सबसे उत्तम होता है। ●

फजाइले अमाल

जब भी पैगंबर साहब का नाम-नामी आए

बाज उलेमा ने इस पर इज्माअ भी नकल किया है, लेकिन तीसरी फस्ल में जो वइदें इस मज्मून की गुजरी हैं कि पैगंबर साहब के पाक नाम के आने पर दरूद न पढ़ने वाला बखील है, जालिम है, बदबख्त है, इस पर हुजूर सल्ल. की और हजरत जिब्रील अल. की तरफ से हलाकत की बद्दुआएं हैं वगैरह-वगैरह। इनकी बिना पर बाज उलेमा का मजहब यह है कि जब भी पैगंबर साहब का नामे नामी आए, उस वक्त हर मर्तबा दरूद पढ़ना वाजिब है। हाफिज इब्ने हजर रह. ने 'फत्हुल्बारी' में, इसमें दस मजहब नकल किए हैं और 'औजजुल् मसालिक' में ज्यादा बहस तफ्सीली इसपर की गई है। उसमें लिखा है कि बाज उलेमा ने इस पर इज्माअ नकल किया है कि हर मुसलमान पर उम्र भर में कम से कम एक मर्तबा पढ़ना फर्ज है और इसके बाद में इख्तिलाफ है। खुद हनफीया के यहां भी इसमें दो कौल हैं। इमाम तहावी रह. वगैरह की राय यह है कि जब भी पैगंबर साहब का नामे नामी आए, तो दरूद शरीफ पढ़ना वाजिब है। उन रिवायात की बिना पर, जो तीसरी फस्ल में गुजरी। इमाम कर्खी वगैरह की राय यह है कि फर्ज का दर्जा एक ही मर्तबा है और हर मर्तबा इस्तिहबाब का दर्जा है। नीज-ब-रिवायते तिर्मिजी हजरत अबू सईद खुदरी रजि. की हदीस से भी हुजूर सल्ल. का यह इर्शाद नकल किया गया है :'अना सैयिदु वुल्दि आद-म यौमल् कियामति व ला फख्र.' कि 'मैं कियामत के दिन औलादे आदम का सरदार रहूंगा और कोईऍफख्र की बात नहीं।' हुजूर सल्ल. के इस पाक इर्शाद का मतलब, जो अबूदाऊद शरीफ की रिवायत में गुजरा, वह कमाले सियादत मुराद है, जैसा कि बुखारी शरीफ में हजरत अबूहुरैरह रजि. से हुजूर सल्ल. का यह इर्शाद नकल किया गया है कि मिस्कीन वह नहीं है, जिसको एक-एक, दो-दो लुक्मे दर-ब-दर फिराते हों, बल्कि मिस्कीन वह है, जिसके पास न वुस्अत हो, न लोगों से सवाल करे। इसी तरह मुस्लिम शरीफ में हजरत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रजि. की रिवायत से हुजूर सल्ल. का यह इर्शाद नकल किया है कि तुम पछाड़ने वाला किसको समझते हो? (यानी वह पहलवान, जो दूसरों को जेर कर दे) सहाबा रजि. ने अर्ज किया, या रसूलल्लाह! उसको समझते हैं, जिसको कोई दूसरा पछाड़ न सके। ● *(क्रमशः)*

केसरी सूडोकू- 5107

	6			8				
3		7				1		8
4					3			
	2	1	3					9
7								3
5					8	4	2	
			7					5
1		5				6		7
				9			8	

हल करने का तरीका

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं। इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है।
- आड़ी व खड़ी पंक्ति में और 3x3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें।
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।

सूडोकू 5106 का हल

5	3	1	7	8	2	4	6	9
6	2	7	3	9	4	8	5	1
9	8	4	1	5	6	3	2	7
3	1	9	6	4	8	2	7	5
7	4	8	2	2	1	6	9	3
2	5	6	9	7	3	1	4	8
1	9	2	4	3	7	5	8	6
4	6	5	8	1	9	7	3	2
8	7	3	2	6	5	9	1	4

बाइबल की कहानियां

प्रभु यीशु का
परम शिष्य पतरस

मेरे सहकर्मी ने अपना सिर स्वीकृति में हिलाया और आगे कहा-यह सही है। प्रभु यीशु के बारह शिष्यों में से, केवल पतरस को पवित्र आत्मा की प्रबुद्धता प्राप्त हुई और उसने पहचाना कि प्रभु यीशु ही वो मसीह थे जिनकी आने की भविष्यवाणी की गई थी। जब प्रभु यीशु ने कहा कि वे जीवन की रोटी थे और लोगों को अनन्त जीवन पाने के लिए केवल उनके शरीर को खाने और उनका लहू पीने की ज़रूरत है, तो कुछ लोगों ने धारणाएं बना ली और प्रभु का अनुसरण करना छोड़ दिया। केवल पतरस ने कहा- प्रभु, हम किसके पास जाएं अनन्त जीवन की बातें तो तेरे ही पास हैं; और हम ने विश्वास किया और जान गए हैं कि परमेश्वर का पवित्र जन तू ही है (यूहन्ना इन दो घटनाओं से हम देख सकते हैं कि पतरस को प्रभु यीशु के काम और वचनों से उनकी सच्ची समझ थी, कि वह पूरी तरह से निश्चित था कि प्रभु यीशु ही मसीह थे और अनन्त जीवन का मार्ग थे। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि फरीसियों ने कैसे प्रभु यीशु की आलोचना की, निंदा की और हमला किया, वह कभी भ्रमित नहीं हुआ, और दूसरों ने प्रभु यीशु को त्यागा या नहीं, वह कभी भी इससे बाध्य नहीं हुआ और अंत तक परमेश्वर का अनुसरण करते हुए अपनी भक्ति बनाए रखी। और प्रभु के पुनरुत्थान और स्वर्ग में आरोहित होने के बाद, पतरस ने प्रभु के आदेशानुसार कलीसियाओं को चरवाही की। उसने प्रभु के सुसमाचार को फैलाया और अंततः एक शानदार, सुंदर गवाही देते हुए, उनके लिए क्रूस पर उल्टा लटकाया गया। हम इन सब से देख सकते हैं कि पतरस के पास प्रभु की सच्ची समझ थी और उसके पास उनके लिए प्यार भरा सच्चा दिल था। अन्यथा, वह अपने पूरे जीवन को परमेश्वर का अनुसरण करने और उनके सुसमाचार को फैलाने के लिए समर्पित करने में सक्षम नहीं होता, और वह विशेष रूप से मृत्यु की हद तक प्रभु के लिए चरम प्यार और आज्ञाकारिता की गवाही न दे पाता। मैंने स्वीकृति में सर हिलाया और कहा तुम सही हो। बारह शिष्यों में से केवल पतरस ने यह स्वीकार किया कि प्रभु यीशु ही मसीह थे, और केवल पतरस को उनके लिए क्रूस पर उल्टा लटकाया गया था। मैं इन चीजों से देख सकती हूं कि पतरस के पास ऐसे पहलु थे जो प्रभु की स्वीकृति और अनुमोदन को महत्व देते थे। ● *(क्रमशः)*

अब दानियों के अनुरोध पर 'एक मिशन एक सेवा' का प्रकाशन प्रतिदिन किया जा रहा है ताकि दानदाता अपने प्रियजनों के जन्मदिन, पुण्यतिथि, वैवाहिक वर्षगांठ या किसी खास मौके की तिथि विशेष पर अपनी इच्छानुसार दान राशि प्रकाशित करा सकें।

एक मिशन एक सेवा

बुढ़ापा जीवन का अटल सत्य है। गरीबी, बीमारियां, तथा अपनों का मुंह फेर लेना, इसे अभिशाप बना देते हैं। आईये! ऐसे बुजुर्गों का सहारा बनें। सुखी-सम्पन्न लोगों के सहयोग से इनका अकेलापन, दुःख दूर किये जा सकते हैं। ताकि भावी पीढ़ी इनसे प्रेरणा ले सकें।

दानियों के लिए विशेष सूचना

वरिष्ठ नागरिक केसरी क्लब के लिए दान देने वाले सज्जन अब देशभर में **पंजाब नैशनल बैंक** की किसी भी शाखा में जाकर सहायता राशि जमा करवा सकते हैं, इसके लिए ध्यान रखें कि उक्त राशि **वृद्ध केसरी, रोमेश चंद्र ट्रस्ट के अकाऊंट नंबर 3075002102006705** में देय होनी चाहिए। हमारा अनुरोध है कि सहायता राशि जमा करवाने के बाद हमें सूचित जरूर करें, ताकि रसीद भेजी जा सके। यह राशि आयकर छूट प्राप्त है। **जो सज्जन पंजाब नैशनल बैंक की किसी शाखा में नकद राशि जमा कराएं, वे बैंक की रसीद हमें कोरियर करा दें, ताकि आपको हम रसीद भेज सकें। सभी दानकर्ताओं से अनुरोध है कि दान भेजते समय पूरा पता, टेलीफोन नंबर और पैन कार्ड नंबर भी साथ में लिखें।**

दिल्ली के बाहर के दानकर्ता 500/- रुपए से कम की दानराशि कृपया ड्राफ्ट या मनीआर्डर से ही भेजें

कृपया अपना ड्राफ्ट या चैक **वृद्ध केसरी रोमेश चंद्र ट्रस्ट**, के नाम बना कर हमें भेजें। सभी दानी सज्जनों के नाम प्रति दिन प्रकाशित किए जाएंगे। लेकिन फोटो 5100/- या इससे अधिक की दान राशि देने वाले सज्जनों के प्रकाशित किए जाएंगे। दान के लिए पंजाब केसरी कार्यालय में प्रातः 10 से 5.30 बजे तक सम्पर्क करें।

***यह राशि आयकर कानून की धारा 80-जी के अन्तर्गत करमुक्त है!**

पता :- वरिष्ठ नागरिक केसरी क्लब
2, प्रिंटिंग प्रेस काम्प्लेक्स, नियर वजीरपुर डिपो, दिल्ली-35

दान के लिए कृपया 01130712376, 09871598497, 9810107375 पर संपर्क करें। यदि कोई सज्जन या संस्था हमारे नाम से पैसा इकट्ठा करे तो इसका जिम्मेदार वरिष्ठ नागरिक केसरी क्लब नहीं होगा।

किसी के किये गये सम्मान और दूसरों के हाथों हुए अपमान को भुलाना ही सही नीति है।

संपादकीय

वटवट आणि चुप्पी!

अमेरिकेचे अर्थमंत्री स्कॉट बेसेंट यांनी गेल्या आठवड्यात एक विधान केले आणि भारताच्या राजकीय वर्तुळात नवे रणकंदन सुरू झाले. भारतीय तेल कंपन्यांना समुद्रात अडकलेले रशियन खनिज तेल खरेदी करण्याची ३० दिवसांची तात्पुरती परवानगी देण्यात येत आहे, असे बेसेंट यांनी ५ मार्चला जाहीर केले. एका सार्वभौम, जगातील सर्वाधिक लोकसंख्येच्या, पाचव्या सर्वात मोठ्या अर्थव्यवस्थेच्या देशाला परवानगी देण्याचा हा बडबोलेपणा आणि बडेजाव केवळ ट्रम्प प्रशासनच करू शकते! गत काही दिवसांतील अशा सततच्या नाहक विधानांमुळे मजबूत होत असलेल्या भारत-अमेरिका नात्याला तडे गेले आहेत. भारताचे पंतप्रधान नरेंद्र मोदी यांनी रशियाकडून तेल खरेदी बंद करण्याचे वचन दिल्याचे ट्रम्प यांनी ऑक्टोबर २०२५ मध्ये म्हटले होते. वास्तव मात्र वेगळेच दिसते. फेब्रुवारी २०२६ मध्येही भारत दररोज १०.४ लाख पिंपे रशियन तेल आयात करत होता आणि रशियाच भारताचा सर्वात मोठा तेल पुरवठादार होता. म्हणजे, भारताने रशियाकडून तेल आयात कधी बंद केलीच नव्हती. कमी झाली होती, पण ती अमेरिकेनेच लादलेल्या दुय्यम निर्बंधांच्या आर्थिक दबावामुळे! ट्रम्प अनेकदा राजनयिक संवादाचे तपशील सार्वजनिक करतात आणि त्यात अनेकदा अर्धसत्ये असतात. मोदींनी रशियाकडून तेल न घेण्याचे वचन दिल्याचा ट्रम्प यांचा दावा, भारत सरकारने कधीच सार्वजनिकरीत्या मान्य केला नाही. भारताची ऊर्जा धोरणे पूर्णपणे राष्ट्रीय हितावर आधारित आहेत, ऊर्जा स्रोतांचे विविधीकरण हे आमचे धोरण आहे, आमची ऊर्जा खरेदी स्वतंत्र निर्णयांवर आधारित आहे, अशा प्रतिक्रिया व्यक्त करीत, रशियाकडून तेल खरेदी थांबवण्याबाबत भारताने स्पष्ट बांधिलकी कधीच जाहीर केली नाही. ट्रम्प वारंवार स्वत:ला मोदींचे घनिष्ट मित्र म्हणवतात आणि त्यांनाच अडचणीत आणतात! आताही बेसेंट यांच्या विधानावरून विरोधकांनी मोदींना धारेवर धरले आहे. भारताला परवानगी देणारी अमेरिका कोण, हा विरोधकांचा सवाल सार्वभौमत्वाच्या दृष्टिकोनातून नक्कीच रास्त आहे. भारत काही अमेरिकेचा मांडलिक नाही. तो 'जी-२०'चे अध्यक्षपद भूषवलेला आणि 'ग्लोबल साऊथ'चा नैसर्गिक नेता, म्हणून स्वतःला पुढे करत असलेला देश आहे. अशा देशाला परवानगी दिली, असे म्हणणे निश्चितच अपमानास्पद आहे; परंतु काँग्रेसने या मुद्द्यावर संसदेत गदारोळ घालताना हे विसरू नये की, डॉ. मनमोहन सिंग सरकारच्या काळात २०१२-१३ मध्ये हिलरी क्लिंटन यांनीही, भारताने इराणकडून तेल आयात कमी केल्यामुळे अमेरिका सूट देत असल्याचे विधान केले होते. हा मुद्दा कोणत्याही एका पक्षाशी नव्हे, तर भारताच्या संरचनात्मक परावलंबित्वाशी जोडलेला आहे. अमेरिका सातत्याने ज्या निर्बंधांचा धाक दाखवते, त्यांना काही संयुक्त राष्ट्रांची मंजुरी प्राप्त नाही. ते 'जी-७' आणि युरोपीय महासंघ यांनी मिळून लादलेले एकतर्फी निर्बंध आहेत. त्यामुळे भारतावर ते कायदेशीरदृष्ट्या बंधनकारक नाहीत; परंतु अमेरिका ज्या देशांशी व्यापार करते त्यांना दुय्यम निर्बंधांच्या रूपाने अप्रत्यक्ष दबावाखाली आणते. ही जागतिक व्यवस्थेतील एक मूलभूत विषमता आहे. डॉलर हे जगाचे राखीव चलन असल्याने, अमेरिका आपल्या एकतर्फी निर्णयांना 'डी फॅक्टो' जागतिक कायद्यांचे स्वरूप देऊ शकते. हे ट्रम्प यांच्या कार्यकाळातच होत आहे, असे नाही; पण ट्रम्प प्रत्येक राजनयिक देवघेव एखाद्या दूरचित्रवाणी मनोरंजन कार्यक्रमाप्रमाणे जाहीर करतात आणि त्यात त्यांना स्वतःला सौदेबाज म्हणून सिद्ध करायचे असते. त्यामुळे भारतासारखा मित्र देश नाहक अडचणीत सापडतो, याच्याशी त्यांना काही देणेघेणे नसते. ट्रम्प यांची वटवट आणि त्यावरील मोदींच्या चुप्पीमुळे एकीकडे विरोधकांना मोदी अमेरिकेपुढे झुकल्याचे टीकास्त्र डागायला संधी मिळते, दुसरीकडे रशियाला भारत विश्वासू नसल्याचा संदेश जातो आणि तिसरीकडे 'ग्लोबल साऊथ'मधील देशांना भारताच्या धोरणात्मक स्वायत्ततेच्या दाव्याबद्दल शंका येते. त्यामुळे भारत सरकारने याप्रकरणी अधिक पारदर्शकता दाखवण्याची गरज आहे. मोदी-ट्रम्प द्विपक्षीय बैठकांमध्ये नक्की काय बोलणे झाले, कोणते आश्वासन दिले गेले, कोणते नाही, याबाबत संसदेत स्पष्टीकरण देणे हे सरकारचे कर्तव्य आहे. आम्ही स्वतंत्र धोरण राबवतो, असे सांगणेच पुरेसे नसते, तर ते सिद्धही करावे लागते. भारताचे आर्थिक हित आणि सार्वभौमत्वाचे रक्षण हे कोणत्याही सरकारचे प्रथम कर्तव्य आहे. ट्रम्प आज आहेत, आणखी तीन वर्षांनी नसतील! त्यामुळे त्यांच्या वटवटीकडे दुर्लक्ष करून, डॉलरवरील अवलंबित्व कमी करणे, पर्यायी देयक यंत्रणा उभी करणे आणि रुपयात तेल व्यापार वाढवण्याकडे लक्ष केंद्रित करणे गरजेचे आहे. जोपर्यंत जागतिक व्यापार डॉलरमध्ये होतो, तोपर्यंत अमेरिकेच्या परवानगीची भाषा ऐकावी लागणारच!

'राजकारणात विचारांचे काय लोणचे घालायचे का?'

विचारधारा? - ते काय असते? सध्या राजकारणात कोण, कोठे आणि कोणाबरोबर आहे हे सर्वशक्तिमान एआयसुद्धा अचूक सांगू शकणार नाही.

डॉ. विजय दर्डा
चेअरमन, एडिटोरियल बोर्ड, लोकमत समूह

गेल्या आठवड्यात होळी आणि रंगपंचमीच्या दिवशी रंगांनी माखलेले चेहरे पाहून क्षणभर मला वाटले, मी आपल्या वर्तमान राजकारणाचेच 'प्रत्यक्ष रूप' पाहतो आहे! खरा चेहरा ओळखणे मुश्कील व्हावे, असेच तर झाले आहे हल्लीचे राजकारण. पूर्वी गुलाल आणि नैसर्गिक रंग वापरले जात, तेव्हा लोक सहज ओळखू येत. आता रासायनिक रंग, डांबर आणि गटारीतल्या चिखलाने भरलेले चेहरे एकसारखेच बेरंगी दिसतात. तुम्ही म्हणाल, होळी तर होऊन गेली; रंगांची चर्चा आता कशाला? तर राजकारण हेच त्याचे कारण आहे. 'विचारधारा गेली तेल लावत, चला विचारांचे लोणचे घालू या' हा वाक्प्रचार येथे अगदी समर्पक वाटतो.

विचारधारा तेल लावत गेली, याचा अर्थ राजकारणात तिचे काहीही महत्त्व राहिलेले नाही. सत्ता मिळो वा न मिळो; आपण आपल्या विचारधारेवर पक्के राहावे ही गोष्ट खूप जुनीपुरानी झाली. हा नवा जमाना आहे. नेत्यांनीही नवा रस्ता धरला आहे. शिवसेनेच्या एका नेत्यांशी अलीकडेच भेट झाली. मी विचारले, 'पक्ष कसा चालला आहे?' त्यांनी खिसे चाचपत म्हटले 'अहो, मी तर सध्या भाजपत आहे.' राष्ट्रवादी काँग्रेसचे नेते भेटले. विचारले, 'काय चालले आहे?' तर ते म्हणाले, 'खूप छान चाललं आहे. भाजपसारखा दुसरा पक्ष नाही'. आम्ही सत्तेत राहिलो नाही, तर आमच्या मतदारांच्या अपेक्षा कशा पूर्ण करू शकू?, असे त्यांचे म्हणणे होते. माझ्याजवळ बसलेल्या पत्रकार मित्राने विचारधारेचा विषय काढला, तर नेताजी म्हणाले, 'विचार घेऊन बसलो, तर तरुण वय या संघर्षातच निघून जाईल. विचारांचे काय लोणचे घालायचे? आमची गोष्ट सोडून द्या. राहुलजींचे खासमखास त्यांची साथ सोडून गेले.' - ही अशा प्रकारची उत्तरे ऐकून मनात येते, हे काय चालले आहे? आजकाल कुणाची चौकशी करण्याआधी 'सध्या कुठल्या पक्षात आहात?' हे विचारून घेतलेलेच बरे!

- अर्थात, हा असला प्रश्न डाव्या नेत्यांना मात्र विचारू नये! चीन आणि रशिया यांनी डाव्या विचारांवर तुळशीपत्र ठेवले असले, तरी भारतातल्या डाव्या मित्रांनी मात्र आपल्या विचारधारेचा पट्टा गळ्यात पक्का बांधलेला आहे. 'डावे होतो, डावे आहोत, डावे राहू', यावर ते ठाम! एकेकाळी सगळे विरोधी पक्ष मिळून ज्योती बसू यांना पंतप्रधान करायला तयार झाले होते, परंतु डावे नेते प्रकाश करात आणि हरकिशन सिंह सुरजित यांनी नकाराधिकार वापरला. 'विरोधी पक्षाशी आमचे विचार जुळत नाहीत, म्हणून ज्योतीबाबू पंतप्रधान होणार नाहीत', अशी भूमिका त्यांनी घेतली.

विचारधारेच्या बाबतीत ठाम राहण्याकरिता भाजपची मात्र प्रशंसा करावी लागेल. संसदेत केवळ दोन खासदार होते, तेव्हाही भाजपच्या नेत्यांनी विचारधारा बदलली नाही. काँग्रेसचा बोलबाला होता, तेव्हाही राम मनोहर लोहिया, मधू लिमये, मधू दंडवते, मृणाल गोरे यांच्यासारखे नेते आपल्या विचारांसाठी संघर्ष करत होते. त्यांनीही पक्ष बदलला नाही. एन. डी. पाटीलही आठवतात? - ते मोठे शेतकरी नेते आणि नात्याने शरद पवार यांचे मेहुणे. तरीही विचारांच्या बाबतीत सदैव पवारांच्या विरोधात. भारतीय राजकारणात अशी अनेक उदाहरणे सापडतील, परंतु आता काळ बदलला आहे.

अलीकडेच महाराष्ट्रातील स्थानिक स्वराज्य संस्थांच्या निवडणुकीच्या वेळी कुणीतरी मला एक मोठी रोचक गोष्ट सांगितली. कोण कोणाबरोबर आहे आणि कोण कोणाच्या विरुद्ध आहे, हे कळेनासे झाले होते. निवडणुकीच्या वेळी झाले ते तर डोक्याचे दही करणारे प्रकरण होते. बृहन्मुंबई महापालिकेची निवडणूक भाजप आणि शिंदेसेनेने एकत्र लढवली. राष्ट्रवादी काँग्रेसचा अजित पवार गट सरकारच्या बरोबर होता, परंतु त्यांनी मुंबई महापालिकेची निवडणूक वेगळी लढवली. ही सगळी समीकरणे पुण्यात पुन्हा बदलली. तेथे भाजपने स्वतंत्र निवडणूक लढवली. शिंदेसेनाही वेगळी होती. राष्ट्रवादी काँग्रेसचा अजित पवार गट पुण्यात शरद पवारांच्या बरोबर होता, पण नागपूरमध्ये मात्र दोघांनी स्वतंत्र निवडणूक लढवली. मुंबईमध्ये काँग्रेसने ठाकरे बंधूंशी नाते तोडले, परंतु पुण्यात हातमिळवणी केली. मुंबईमध्ये काँग्रेसबरोबर निवडणूक लढणारी वंचित बहुजन आघाडी पुण्यात काँग्रेसच्या विरोधात होती. राज्याच्या सत्तेत भागीदार असलेले भाजप, शिंदेसेना आणि राष्ट्रवादी (अजित पवार) यांनी छत्रपती संभाजी नगरात स्वतंत्र नशीब आजमावले. नाशिकमध्ये भाजप स्वतंत्र होता, तर शिंदे आणि पवार एकत्र होते. महापौरपदासाठी अजब-गजब आघाड्या झाल्या. एका भाजपवाल्याने दुःख प्रकट करताना म्हटले, 'बाहेरून आलेले लोक पक्षात मजा करीत आहेत. आम्ही काय सतरंज्या उचलण्यात आयुष्य घालवावे?'

हल्ली काही लोक रामदास आठवले यांची प्रामाणिकपणाबद्दल प्रशंसा करतात. आठवले उघड सांगतात 'जे सत्तेत आहेत, त्यांच्याबरोबर आम्ही राहतो.' जे खरे ते बोलून टाकतात, लपवाछपवी शून्य. पण, सगळ्यांचे तसे नाही. चेहऱ्यावर लावलेला रंग पापणी लवते न लवते तोच साफ करून टाकतात आणि दुसरा रंग लावतात. दुसरा काढून तिसरा लावतात; वरून मतदारांना सांगतात, 'तुमच्या भल्यासाठीच मी स्वतःला असे रंगबिरंगी केले आहे.'

आपले काम टाळ्या वाजवणे आहे, हे जनतेला कळते. ती टाळ्या वाजवत सुटली आहे.

vijaydarda@lokmat.com
डॉ. विजय दर्डा यांचे समग्र लेखन वाचण्यासाठी स्कॅन करा :

अन्वयार्थ

गरीब कुटुंबे कर्जाच्या सापळ्यातून बाहेर पडू शकतील का?

भारतीय कष्टकरी महिलांच्या 'डीएनए'मध्येच पैशाच्या नियोजनाचे शहाणपण असते. कुटुंबाच्या हितासाठी ते त्यांनी पुन्हा वापरण्याची तातडीची गरज आहे.

संजीव चांदोरकर
आर्थिक विषयांचे अभ्यासक

आपल्या देशातील गरीब/ निम्न मध्यमवर्गीय कुटुंबांचा वाढता कर्जबाजारीपणा रिझर्व्ह बँकेच्या आकडेवारीतून पुढे येत आहे. या समाज घटकांना दिलेली कर्जे थकीत होण्यामुळे, देशाच्या 'मॅक्रो' (स्थूल) अर्थव्यवस्थेवर विपरीत परिणाम होतोच. त्याहीपेक्षा गंभीर आहे या कुटुंबाच्या 'मायक्रो' अर्थव्यवस्थेवर होणारे विपरीत परिणाम.

आहार/ आरोग्य/ मुलांचे शिक्षण यांसारख्या अत्यावश्यक खर्चात कपात करावी लागणे, सततच्या चिंतेमुळे निद्रानाश/ आरोग्यावर परिणाम, कौटुंबिक ताणतणाव वाढणे.. अशी त्यांच्या प्रश्नांची मोठी यादी करता येईल. कोट्यवधी गरीब निम्न मध्यमवर्गीय कुटुंबांचा वाढता कर्जबाजारीपणा हा फक्त वित्तीय प्रश्न कधीच नव्हता. त्याला अनेक गंभीर आयाम आहेत. त्यांच्या कर्जबाजारीपणाची मुळे अर्थातच त्यांची मासिक आमदनी पुरेशी न वाढण्यात आणि शासनाने घरबांधणी, शिक्षण, आरोग्य क्षेत्रातून अंग काढण्यात आहेत. शेतीक्षेत्रातील अरिष्ट, बेरोजगारी, तुटपुंजे वेतन, धंदा/ व्यवसाय धड नीट न चालणे.. अशा अनेक घडामोडींमध्ये आहेत. सद्य:कालीन राजकीय आर्थिक संरचनेत किमान काही जनकेंद्री बदल झाले तरच त्यांच्या प्रश्नांची धार बोथट होऊ शकेल. त्यासाठी राजकीय जन-आंदोलनांमध्ये या बाधित कुटुंबांनी सहभागी व्हायला हवे. कारण तेच त्यांचे प्रत्यक्ष लाभार्थी असणार आहेत; पण हे सर्व बदल होणे नजीकच्या काळात तरी कठीण वाटते.

या प्रश्नाची धार बोथट करण्यासाठी या समाज अर्थ घटकांमधील कुटुंबांना, स्वतःला काहीच करता येणार नाही का? - याचे उत्तर शोधण्यासाठी 'कर्ज कशासाठी काढले जाते आणि कर्ज कसे फेडले जाते' या दोन उपप्रश्नांची उत्तरे तपासण्याची गरज आहे. या दोन्ही आघाड्यांवर काही कृती करणे गरीब कुटुंबांच्या नक्कीच हातात आहे. फक्त आपण ज्या कर्ज सापळ्यात अडकलो आहोत त्यातून बाहेर येण्याचा निर्धार हवा, ज्यात कुटुंबातील सर्व प्रौढ सभासदांचा सहभाग हवा आणि या कुटुंबांनी, विशेषतः त्यातील महिलांनी, त्यांच्याकडे आधीच

असणाऱ्या पैशाचे नियोजन करण्याच्या परंपरागत शहाणपणाचा वापर करावयास हवा.

गरिबांना कर्ज काढण्याशिवाय गत्यंतर नसते हे खरे; पण विशिष्ट कर्ज कशासाठी आणि किती काढले हा महत्त्वाचा मुद्दा. कर्जांमध्ये अत्यावश्यक, काही काळानंतर केले तरी चालतील असे, कमी पैसे खर्च केले तरी चालतील असे किंवा बिलकुल केले नाही तरी चालतील.. असे वर्गीकरण करता येईल. एका टोकाला कुटुंबातील एखाद्या सभासदाला तातडीने इस्पितळात उपचार करण्याची वेळ आहे, जो जीवनमरणाच्या प्रकारात मोडेल; स्मार्टफोन ४०,००० रुपयांच्या ऐवजी २०,००० रुपयांचा घेता येऊ शकतो किंवा घरातील लग्ने कमी खर्चात करता येऊ शकतात. ही झाली काही मोघम उदाहरणे. सर्व कुटुंबांना एकाच प्रकारचे वर्गीकरण लागू देखील होणार नाही. प्रत्येक खर्च करताना कुटुंबातील सभासदांनी एकत्र बसून, कुटुंबाच्या खर्चाचे प्राधान्यक्रम ठरवून सजगपणे निर्णय घेणे महत्त्वाचे. फक्त दारावर येऊन एखाद्या कंपनीचा कोणी एजन्ट कर्ज देऊ करत आहे म्हणून ते घेता कामा नये.

कुटुंबे कर्जाचे हप्ते कसे फेडतात याचा शोध घेतला की लक्षात येते की कर्ज घेतल्यामुळे पैशाच्या तंगीचे प्रश्न तात्पुरते सुटतात, पण कर्जाचे हप्ते ठरलेल्या दिवशी भरण्यासाठी पैशाची जी जमवाजमव करावी लागते ती त्या कुटुंबाने बाजूला काढलेल्या बचतीमधूनच येते. त्यासाठी त्यांना अनेकवेळा अत्यावश्यक खर्चातदेखील कपात करावी लागते. कर्जाचे हप्ते फेडण्याच्या दडपणाखाली जर कुटुंबाना, कसेही करून पैसे बाजूला काढावे लागत असतील तर तशाच बचती कुटुंबे स्वतःहून करू शकतीलच की.

अर्थात, हा विचार काही नवीन नाही. फक्त काही वर्षांपूर्वी गरीब/ निम्न मध्यमवर्गीय कुटुंबांना कर्ज देण्यास कोणी बँका/ वित्तसंस्था तयार नव्हत्या. त्या काळात अशा कुटुंबातील महिला आपल्या कुटुंबाच्या उत्पन्नाप्रमाणे खर्चाचे प्राधान्यक्रम ठरवीत, कितीही तंगी असली तरी काही पैसे बाजूला काढून ठेवत, जमले तर सोन्याची एखादी तार विकत घेऊन ठेवत. महिलांच्या 'डीएनए'मध्ये असणाऱ्या पैशाच्या नियोजनाचे हे शहाणपण त्यांनी पुन्हा एकदा वापरण्याची तातडीची गरज तयार झाली आहे.

chandorkar.sanjeev@gmail.com

जगभर

आता बिनधास्त बसा ड्रायव्हरलेस रोबोटॅक्सीत!

ड्रायव्हरलेस म्हणजेच चालकविरहित कार्स!.. गेली काही वर्षं यासंदर्भात आपण सातत्यानं ऐकत, वाचत असलो तरी आता ही सेवा लवकरच सुरू होण्याची चिन्हं आहेत आणि त्यासाठी लंडन या शहरानं आघाडी घेतली आहे. लंडनच्या रस्त्यांवर आता लवकरच 'रोबोटॅक्सी' पाहायला मिळतील. आपलीच कार सर्वांत आधी रस्त्यावर यावी यासाठी अनेक कंपन्यांनी प्रयत्न सुरू केले आहेत आणि त्यासाठी आपली प्रतिष्ठा पणाला लावली आहे. त्यामुळे येत्या काही महिन्यांत लंडनच्या रस्त्यांवर फिरणाऱ्या चालकविरहित टॅक्सी हे चित्र सामान्य झालेलं दिसू शकेल.

ड्रायव्हर नसलेल्या या कारला 'रोबोटॅक्सी' असं म्हटलं जातं. रोबोटॅक्सी ही चालकरहित, मागणीनुसार उपलब्ध होणारी वाहतूकसेवा आहे. आजूबाजूच्या हालचाली समजून घेण्यासाठी या कारमध्ये कॅमेरे, रडार आणि लिडारसारखे सेन्सर्स वापरले जातात. कलेक्ट केलेली सर्व माहिती सॉफ्टवेअर रिअल-टाइममध्ये रूपांतरित करतं आणि स्टीअरिंग, ब्रेकिंग, वेग इत्यादी गोष्टी नियंत्रित करतं. लंडनमध्ये होणाऱ्या बहुतांश चाचण्या 'लेव्हल फोर' ऑटोनॉमीवर केंद्रित असणार आहेत. याचा अर्थ या कार कोणत्याही मानवी हस्तक्षेपाशिवाय स्वतः चालू शकतात, पण फक्त ठरवलेल्या क्षेत्रांत आणि परिस्थितींमध्येच. सुरुवातीच्या टप्प्यांत, या कारमध्ये ड्रायव्हर उपस्थित असू शकतो.

या रोबोटॅक्सी कृत्रिम बुद्धिमत्ता आणि सॉफ्टवेअरवर अवलंबून असतात. स्वायत्ततेचा सर्वोच्च स्तर म्हणजे 'लेव्हल फाइव्ह'. या टप्प्यावर रोबोटॅक्सी कोणत्याही मानवी हस्तक्षेपाशिवाय चालू शकतात. सुरुवातीला रोबोटॅक्सी 'लेव्हल फोर'

ऑटोनॉमीसह तैनात केल्या जातात, म्हणजे त्यांची देखरेख दुरून केली जाते. सध्या जवळपास सर्व रोबोटॅक्सी टेलिऑपरेशनद्वारे नियंत्रित केल्या जातात. टेलिऑपरेशन म्हणजे वायरलेस नेटवर्कद्वारे या कारवर दूरस्थ नियंत्रण असतं. यामुळे कंपन्यांना स्वायत्त ड्रायव्हिंगवर लक्ष ठेवता येतं, सिस्टीम प्रशिक्षणात मदत करता येते. याशिवाय आता कार पुढे कशी न्यायची, याबाबत अनिश्चितता असेल, तर हस्तक्षेप करता येतो.

अमेरिकेत टेलिऑपरेशनच्या वापरावर सुरक्षा समर्थक आणि नियामकांनी टीका केली आहे. त्यांचा युक्तिवाद आहे की दूरस्थ मानवी हस्तक्षेप कधी, कसा आणि किती वेळा होतो, तसेच त्यावर नियंत्रण ठेवणारे सुरक्षा उपाय काय आहेत, याबाबत ऑपरेटर्सनी पुरेशी पारदर्शकता ठेवलेली नाही. प्रतिसाद देण्याचा वेळ, ऑपरेटरवरचा ताण आणि टेलीऑपरेशनमुळे स्वायत्त व मानव नियंत्रित ड्रायव्हिंगमधली सीमा कितपत धूसर होते, यावरही प्रश्न उपस्थित झाले आहेत.

यापुढचे महत्त्वाचे टप्पे तांत्रिक नसून नियामक असणार आहेत. कंपन्या सार्वजनिक चाचण्या सुरू करण्यासाठी मंजुरीची वाट पाहत आहेत. रोबोटॅक्सी संदर्भात लंडन शहार केवळ ब्रिटनसाठीच नाही तर संपूर्ण युरोपसाठी जणू एक चाचणी केंद्र बनण्यास सज्ज आहे. कारण लंडनमधली प्रचंड गर्दी, तिथलं अनिश्चित हवामान, रस्त्यांचं दाट जाळं आणि गुंतागुंतीची रचना.. यामुळे या रोबोटॅक्सी जर लंडनमध्ये यशस्वी झाल्या, तर संपूर्ण युरोपमध्ये आणि नंतर जगात त्याचा विस्तार होईल असं मानलं जात आहे.

करनीती

राज्याच्या अर्थसंकल्पातील कळीचे ९ मुद्दे

अर्जुन (काल्पनिक पात्र) : कृष्णा, राज्याच्या अर्थसंकल्पातील महत्त्वाचे मुद्दे काय आहेत?

कृष्णा (काल्पनिक पात्र) : १. मुख्यमंत्री लाडकी बहीण योजना सुरू ठेवण्याचा निर्णय सरकारने घेतला आहे.

२. ७.५ एच.पी. मोटर पंप वापरणाऱ्या शेतकऱ्यांच्या वीजबिलांमध्ये सूट देण्यासाठी सरकारने २०,००० कोटी रुपयांची तरतूद केली आहे.

३. कल्याणकारी खर्च महत्त्वाचा असला तरी आर्थिक शिस्तदेखील पाहिली पाहिजे. महाराष्ट्राचे एकूण कर्ज ९.३ लाख कोटी रुपयांवर पोहोचले आहे, जे आतापर्यंतचे सर्वाधिक आहे.

४. मुंबई मेट्रोचा विस्तार, उपनगरीय रेल्वे जाळे, रस्ते आणि महामार्गांची उभारणी, मुंबई किनारपट्टीवरील रस्त्यांच्या प्रकल्पाची प्रगती आदी पायाभूत सुविधा प्रकल्पांसाठी ₹२०,००० कोटींची तरतूद करण्यात आली आहे.

५. शैक्षणिक गुणवत्ता वाढीसाठी शिष्यवृत्ती योजना, डिजिटल शाळा आणि आधुनिक क्लासरूम यांच्यावर अधिक भर दिला जाणार आहे.

६. जीएसटी प्रणालीचे एकत्रीकरण आणि कर आधाराचे विस्तारीकरण करण्यात येणार आहे.

७. राज्यात विद्युत वाहन चार्जिंगची सुविधा विकसित केली जाणार आहे.

८. ग्रामीण रस्ते, पाणीपुरवठा, कृषी साहाय्य कार्यक्रमासाठी ₹ ३०,००० कोटींची, आरोग्यसेवेसाठी ₹ १०,००० कोटींची तरतूद करण्यात आली आहे.

९. सिंचन प्रकल्प, पावसाचे पाणी साठवण आणि जलसंवर्धन उपक्रमांसाठी ₹ ५,००० कोटींची तरतूद केली आहे.

- उमेश शर्मा, सीए

समकालीन महत्त्वाचे मुद्दे मांडणारी, नवी चर्चा सुरू करणारी वाचक-पत्रे या स्तंभामध्ये प्रसिद्ध केली जातील. आपली पत्रे येथे पाठवा : **janman@lokmat.com**

जेन झी

जनरेशन झेड बाजारहाट कसा करते, याची रंजक 'सिक्रेट्स'

भारतात निम्म्याच्या वर लोकसंख्या ३० वर्षांपेक्षा लहान आहे आणि चौदा ते अठ्ठावीस वर्षांचे जेन-झी या बाजारपेठेसाठी महत्त्वाचा ग्राहकवर्ग आहेत.

राही श्रु. ग.
सीनिअर रिसर्च फेलो जवाहरलाल नेहरू विद्यापीठ

स्विगी, झोमॅटो, मिंत्रा, ॲमेझॉन, ब्लिंकिट, झेप्टो... जेन झींचा बाजारहाट म्हटल्यावर मोबाइल ॲप्सवरून फटाफट ऑर्डर करणारी तरुण मुलंमुली डोळ्यासमोर येत असली तरी या ऑर्डर घरोघर पोचवणारे 'डिलिव्हरी पार्टनर'सुद्धा बहुतेक वेळा जेन झीच आहेत. भारतात निम्म्याच्या वर लोकसंख्या ३० वर्षांपेक्षा लहान आहे आणि त्यामुळे आज १४ ते २८ वर्षांचे असलेले जेन-झी हे या बाजारपेठेसाठी महत्त्वाचा ग्राहकवर्ग आहेत.

जगभरात लोकसंख्येच्या सर्व गटांच्या स्वभावाचा, मूल्यांचा आणि वागणुकीचा अभ्यास बाजारपेठ मोठ्या उत्साहाने सातत्याने करत असते. विशिष्ट वयोगटातल्या लोकांपर्यंत ग्राहक म्हणून कसं पोचायचं हे ठरवताना हा अभ्यास तत्त्वाचा ठरतो. त्या दृष्टीने उपभोक्ते म्हणून जेन झी कसे आहेत याचा अभ्यास सतत होतो. जेन झीमधले सर्वांत लहान सदस्य अजून शाळेत असले तरी या पिढीतले सर्वांत मोठे सदस्य आज महत्त्वाचे आर्थिक निर्णय घेत आहेत.

एकीकडे मोठ्या प्रमाणातली बेरोजगारी, अस्थिर नोकऱ्या आणि गरिबीला तोंड देणारी ही पिढी असली तरी याच पिढीतला एक छोटा हिस्सा महागडे कपडे, टेक्नॉलॉजी आणि खाणंपिणं यांचा उपभोक्ता आहे. साधारणपणे खर्च करताना मालमत्ता, वस्तूंच्या मालकीपेक्षा ही पिढी 'अनुभवां'ना अधिक प्राधान्य देते. प्रवास, पर्यटन, नाचगाण्याचे जलसे, थरारक खेळ, नवनवे खाद्यपदार्थ यावर खर्च करायला या पिढीला आवडतं. कर्जाचं ओझं ते शक्यतो टाळू पाहतात. पाश्चात्त्य जगात 'जेन झी मालमत्ता खरेदी करायला तयार नाही, त्यामुळे अर्थव्यवस्थेचं नुकसान होतं आहे', अशी तक्रार सुरू झालीय. गंमत म्हणजे

पाश्चात्त्य जगात जेन-झीने दारू खरेदी करण्यात मोठी घट केल्यामुळे तिथल्या अर्थव्यवस्थेवर परिणाम झाला आहे. अर्थात यातल्या प्रत्येक बदलाला अनेक सामाजिक आर्थिक पदर असतात.

खरेदीच्या बाबतीत सोशल मीडिया हा जेन - झीच्या माहितीचा प्रमुख स्रोत आहे. मिळकत असलेले जेन-झी गुंतवणुकींबाबतचे निर्णय घेतानाही सोशल मीडिया आणि यू-ट्यूबचा सल्ला घेतात. जेन- झी एसआयपीच्या माध्यमातून गुंतवणूक करतात. ग्राहकांची मतं, बाजारात उपलब्ध असलेल्या इतर उत्पादनांसोबत तुलना आणि तज्ज्ञांचे सल्ले विचारात घेऊन जेन- झी खरेदी करतात. आयुष्यातल्या इतर निर्णयांप्रमाणेच खरेदीच्या बाबतीतही आपल्या जवळच्या मित्रमैत्रिणींना ते आपल्यासोबत घेतात. 'ओरिजनल', खरं, अस्सल आणि

नवं शोधण्याचा त्यांना ध्यास असतो. त्याचवेळी परंपरांचाही हात त्यांनी घट्ट धरून ठेवला आहे. आकर्षक दृश्यप्रतिमा त्यांना खेचून घेतात. त्यांना महत्त्वाच्या वाटणाऱ्या सामाजिक समस्यांवर उत्तरं शोधण्यासाठी वेळ आणि पैसा खर्च करायला ते तयार असतात.

वरवर विरोधाभासी वाटणारे असे हे जेन-झीचे ग्राहक म्हणून गुणधर्म आहेत. चंगळवादाला मोकळं रान असणाऱ्या जगात वाढणारे जेन-झी नवउदार जगातल्या भांडवली बाजारपेठेचे उपभोक्तेही आहेत आणि बळीही. बहुसंख्य जेन-झीवर त्यांच्या मोबाइलच्या स्क्रीनवरून अखंड रंगीबेरंगी जाहिरातींचा मारा तर होत असतो; पण त्याला तोंड द्यायला हातात पुरेसे पैसे नसतात. स्क्रीनवर दिसणारं मोहवणारं, भ्रमित करणारं जग आणि वास्तवातले अभाव यांचा भागाकार शोकात्म असतो. या विषम ओढाताणीमध्ये जेन-झी बाजारपेठेत उभे आहेत, तिला घडवत आहेत आणि स्वतः घडत-बिघडत आहेत.

raheeshrutiganesh@gmail.com

तिरकस आणि चौकस — गजानन घोंगडे

हे पत्र लोकमत मीडिया प्रा. लिमिटेडच्या वतीने मुद्रक व प्रकाशक **बालाजी मुळे** यांनी प्लॉट नं. ए - ८१८ इंडस्ट्रियल एरिया, एम.आय.डी.सी., महापे, नवी मुंबई येथे मुद्रित करून 'लोकमत', पृथ्वी पार्क, सेक्टर ३०, सानपाडा, नवी मुंबई कार्यालय - ४००७०५ येथून प्रसिद्ध केले. ● दूरध्वनी क्र : ०२२ ४६०४१७८४
● **मुंबई कार्यालय :** लोकमत मीडिया प्रा. लिमिटेड, तिसरा मजला, पारिजात हाउस, प्लॉट नं. १०७६, आपटे इंडस्ट्रियल इस्टेट, लक्ष्मीनरसिंग पपन मार्ग, डॉ. ई मोझेस रोडसमोर, गांधीनगर, वरळी, मुंबई, ४०००१८. ● दूरध्वनी क्र : ०२२- ४६०३५९३०, ०२२- ४७५०७९४६ ● **ठाणे कार्यालय :** वेस्टर्न व्ह्यू, श्री गजानन महाराज चौक, वारकरी भवनाजवळ, ठाणे, फोन : २५४४१९०५, २५३८१७७४ ● **नवी मुंबई कार्यालय :** पृथ्वी पार्क, सेक्टर ३०, सानपाडा, नवी मुंबई ४००७०५. फोन : ०२२ ४६०४१७८४ ● संस्थापक संपादक : **स्व. जवाहरलाल दर्डा** ● मानद संपादिका : **श्रीमती उषाताई दर्डा** ● चेअरमन, एडिटोरियल बोर्ड : **डॉ. विजय दर्डा** ● एडिटर इन चिफ : **राजेंद्र दर्डा** ● समूह संपादक : **विजय बाविस्कर**
● संपादक : **अतुल कुलकर्णी*** (*पी. आर. बी. कायद्यानुसार संपादकीय जबाबदारी यांची आहे.) 'लोकमत'मधील लेखांचे हक्क राखून ठेवले आहेत. लोकमत ® हे चिन्ह लोकमत मीडिया प्रायव्हेट लि. चे. व्यापारचिन्ह आहे.

नाशिकचा रंगपंचमी उत्सव म्हटला म्हणजे येथील वैशिष्ट्यपूर्ण पेशवेकालीन राहडीचा वापर केला जातो. ही राहडी म्हणजे एक प्रकारचा हौद असतो. यामध्ये मोठ्या जल्लोषात तरुणाईने रंगोत्सव साजरा केला. एकूण आठ राहडी उघडण्यात आल्या होत्या. छाया : प्रशांत खरोटे

#क्विक Update

बनावट नियुक्तिपत्र देऊन फसवणूक

सांगली : सार्वजनिक बांधकाम विभागातील नोकरीचे बनावटनियुक्तीपत्र देऊन तरुणाची तब्बल ११ लाख ५९ हजार रुपयांची फसवणूक केल्याचा प्रकार उघडकीस आला. या प्रकरणी स्वप्निल उद्धव कांबळे (३८, रा. शास्त्रीनगर, सांगली) यांनी सांगली पोलिस ठाण्यात फिर्याद दिली असून महापुरे (रा. कोडोली, ता. वारणा, जि. कोल्हापूर), राजाराम होळंबे आणि ज्ञानेश्वर चौधरी (रा. पुणे) यांच्यावर गुन्हा दाखल केला आहे.

शिवी दिल्यास ५०० रुपयांचा दंड

श्रीगोंदा (जि. अहिल्यानगर) : जागतिक महिला दिनाचे औचित्य साधून कोळगाव येथे विशेष ग्रामसभा झाली. त्यात गाव शिवीमुक्त करण्याचा निर्णय घेण्यात आला. त्यानुसार, यापुढे गावात कोणी शिवी दिल्यास संबंधित व्यक्तीला ५०० रुपये दंड आकारण्याचा निर्णय घेण्यात आला. तसेच ज्याच्या घराजवळ, दुकानाजवळ कचरा दिसेल त्या कुटुंबावर १०० रुपये दंड आकारण्याचा ठराव सर्वानुमते करण्यात आला.

विठ्ठल-रुक्मिणीवर रंगांची उधळण

पंढरपूर : महाराष्ट्राचे आराध्य दैवत असलेल्या श्री विठ्ठल-रुक्मिणी मंदिरात रंगपंचमी मोठ्या उत्साहात आणि पारंपरिक पद्धतीने साजरी करण्यात आली. विठुरायावर केशर आणि गुलालाची उधळण केल्यावर 'अवघा रंग एक झाला, रंगी रंगला श्रीरंग' या अभंगाची प्रचिती आली. वसंत पंचमीपासून रंगपंचमीपर्यंत दररोज विठुरायाला पांढऱ्या पोशाखावर गुलाल टाकून पूजा केली जाते. सलग महिनाभर हा दिनक्रम सुरू असतो. या उत्सवाची सांगता रंगपंचमीला होते.

दुबईत अडकलेल्या मराठी पर्यटकांना राज्य सरकारची 'महा-हेल्पलाइन'

१,२०० हून अधिक प्रभावित प्रवाशांना अखेर दिलासा, ५०० जण सुखरूप मायदेशी परतले

लोकमत न्यूज नेटवर्क

मुंबई : दुबईमध्ये वास्तव्यास असून, मराठी जणांना, तसेच पर्यटकांना व समुदायाला मदत करण्यासाठी राज्य सरकारच्या मान्यतेने आयपीएफ महा-हेल्पलाइन ही सेवा सुरू केली असून, त्या माध्यमातून आतापर्यंत ५०० जण सुखरूप मायदेशी परतले आहेत.

सध्या इराण-अमेरिका संघर्षामुळे निर्माण झालेल्या अडचणींमुळे दुबईमध्ये महाराष्ट्रातील अडकलेल्या पर्यटकांसाठी ही विशेष हेल्पलाइन सक्रिय करण्यात आली आहे.

ही हेल्पलाइन सुरू झाल्यानंतर अवघ्या एका दिवसात १,२०० हून अधिक प्रभावित प्रवाशांकडून मदतीची विनंती प्राप्त झाली असल्याची माहिती दुबई येथून या उपक्रमाचे नेतृत्व करणारे राहुल तुळपुळे यांनी दिली.

या मदतीमुळे दुबईमध्ये अडकलेल्या अनेक प्रवाशांना दिलासा मिळाला असून त्यांनी राज्य सरकारचे आभार मानले आहेत.

एक स्वतंत्र वैद्यकीय पथक तैनात

१ याशिवाय, स्थानिक डॉक्टरांचा सल्ला आणि आवश्यक प्रिस्क्रिप्शन मिळवून अत्यावश्यक औषधी उपलब्ध करून देण्यासाठी एक स्वतंत्र वैद्यकीय साहाय्य पथकही कार्यरत आहे.

२ हेल्पलाइनचे पथक दुबईतील भारतीय दूतावासाशीही सातत्याने समन्वय साधून आहे. २ ते ६ मार्च या कालावधीत दुबईतील विविध विमानतळांवरून, तसेच ओमानमधील मस्कत येथून उपलब्ध उड्डाणांद्वारे ५०० हून अधिक प्रवासी सुखरूप भारतात परतले आहेत.

३ मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस आणि भाजपचे प्रदेशाध्यक्ष रवींद्र चव्हाण हे दुबई येथील भारतीय काउन्सिल जनरलशी सातत्याने संपर्कात आहे.

हेल्पलाइन २४ तास सुरू

ही हेल्पलाइन सेवा ९७१५०३६५४३५७ या क्रमांकावर उपलब्ध असून, दुबईमधील पाच शहरांमध्ये कार्यरत असलेल्या २० हून अधिक स्वयंसेवकांच्या पथकाद्वारे २४ तास चालवली जात आहे.

अडकलेल्या प्रवाशांना अन्न व औषधी उपलब्ध करून देणे, तात्पुरती निवासव्यवस्था, वाहतूक सुविधा, तसेच दूतावासाशी समन्वय अशा विविध प्रकारची मदत केली जात आहे.

चोख वाहतूक व्यवस्था

हेल्पलाइनचे वाहतूक समन्वयक प्रसाद पाटील यांच्या नेतृत्वाखाली फुजैराह आणि मस्कतसारख्या पर्यायी प्रस्थान केंद्रांकडे प्रवास करणाऱ्या प्रवाशांसाठी वाहतुकीची व्यवस्था करण्यात येत आहे, तसेच नीलम नांदेडकर आणि श्वेता करंदीकर यांच्या नेतृत्वाखालील सहायक पथक लहान मुले, अर्भक आणि ज्येष्ठ नागरिक असलेल्या कुटुंबांना विशेष मदत पुरवत आहे.

दरम्यान, भूषण चौधरी आणि प्रसाद दातार हे डेटा व्यवस्थापन, हेल्पलाइनचे दैनंदिन कामकाज आणि व्हॉट्सॲप ग्रुपसचे व्यवस्थापन पाहत असून, अडकलेले प्रवासी आणि स्वयंसेवकांच्या नेटवर्कमध्ये सुरळीत समन्वय राखण्याचे काम करत आहेत.

स्त्री भ्रूणहत्येविरुद्ध आता थेट 'मकोका' लागणार?

बीड, छत्रपती संभाजीनगर, जालनामध्ये रॅकेट सक्रिय

लोकमत विशेष

सोमनाथ खताळ
लोकमत न्यूज नेटवर्क

बीड : राज्यातील स्त्री भ्रूणहत्येचा कलंक पुसण्यासाठी राज्य सरकार आता अत्यंत कठोर पावले उचलत आहे. बीड, छत्रपती संभाजीनगर आणि जालना या जिल्ह्यांमध्ये वारंवार समोर येणारे धक्कादायक प्रकार पाहता, दोषी डॉक्टरांविरुद्ध आता थेट 'मकोका' कायद्यांतर्गत कारवाई करण्याबाबत चाचपणी सुरू झाली आहे. आरोग्यमंत्री प्रकाश आबिटकर यांनी मंत्रालयात पार पडलेल्या बैठकीत यासंदर्भात विधी व न्याय विभागाला कायदेशीर पडताळणीचे आदेश दिले आहेत.

महाराष्ट्रासारख्या पुरोगामी राज्यात स्त्री भ्रूणहत्या होणे, ही शरमेची बाब आहे. जे डॉक्टर यात सामील आहेत, त्यांची गय केली जाणार नाही. संघटित गुन्हेगारी करणाऱ्यांवर कठोर प्रहार केला जाईल, असा स्पष्ट इशारा आरोग्यमंत्री आबिटकरांनी दिला आहे. या बैठकीला उच्चस्तरीय अधिकारी उपस्थित होते.

पीसीपीएनडीटीनुसार दहा वर्षांपर्यंत शिक्षेची तरतूद?

सध्याच्या पीसीपीएनडीटी कायद्यानुसार लिंग निवडीस प्रतिबंध करणाऱ्या दोषींना ३ ते ५ वर्षांच्या शिक्षेची तरतूद आहे. मात्र, गुन्ह्यांचे गांभीर्य लक्षात घेता ही शिक्षा ७ ते १० वर्षांपर्यंत वाढवता येईल का, याबाबत राज्य सरकार विचार करत आहे.

बीड, जालना जिल्ह्यांत डॉ. सतीश गवारे आणि मनीषा सानप यांसारखे मास्टरमाइंड असल्याचे उघड झाले.

३४ डॉक्टरांवर कारवाई

राज्यात सध्या १९३ वैद्यकीय व्यावसायिकांवर कारवाईची प्रक्रिया सुरू आहे. यापैकी ३४ डॉक्टरांची वैद्यकीय सनद येत्या आठवडाभरात रद्द करण्याचे सक्त आदेश देण्यात आले आहेत.

हळदीच्या कार्यक्रमात मधमाश्यांचा हल्ला

मलकापूर (जि. बुलढाणा) : शुभकार्यात कधी अडथळा येईल हे सांगता येत नाही. मधमाश्यांच्या हल्ल्याने चक्क हळद समारंभ उधळला असून, सहा जण गंभीर जखमी झाल्याची घटना ८ मार्च रोजी अनुराबाद येथील सोमेश्वर मंदिरात घडली. रूपेश आणि कामिनी यांचा हळदीचा समारंभ सुरू असताना चिंचेच्या झाडावरून मोहळातील मधमाश्यांनी वऱ्हाडी मंडळीवर अचानक हल्ला केला. या हल्ल्यामुळे हळदीचा कार्यक्रम अर्ध्यावर सोडावा लागला. यात सहा जण गंभीर जखमी झाले. मलकापूर तालुक्यातील धरणगाव येथील अर्जुन चौधरी यांचे चिरंजीव रूपेश यांचा विवाह दाभाडी येथील राजेंद्र चोपडे यांची कन्या कामिनी हिच्यासोबत ठरला होता.

अमरावतीत ३ कोटींचे अमली पदार्थ जप्त

अमरावती : अमरावती शहरात रविवारी सायंकाळी गुन्हे शाखेच्या पथकाने नागपुरी गेट पोलिस स्टेशनच्या हद्दीत धडक कारवाई करत ३ कोटी १ लाख २० हजार रुपये किमतीचे २ किलो ८० ग्रॅम 'मेफेड्रोन' अर्थात एमडी ड्रग्स जप्त केले. रविवारी सायंकाळी ६:१५ वाजण्याच्या सुमारास लालखडी ते सुकळी वनारसी रोडवर सापळा रचून ही कारवाई करण्यात आली असून दोघांना ताब्यात घेतले आहे.

एसटी अधिकाऱ्यांचे अधिकार गोठविले

यवतमाळ : महाराष्ट्र राज्य मार्ग परिवहन महामंडळाने भ्रष्टाचाराचा ठपका ठेवत १७ अधिकाऱ्यांचे अधिकार गोठविले. मात्र, यातील काही अधिकारी त्यांना हवी तशी कामे करून घेत आहेत. वरिष्ठांच्या आदेशाची अंमलबजावणी त्यांच्या हाताखाली काम करणाऱ्या अधिकारी, कर्मचाऱ्यांना करावी लागत असल्याने अधिकार गोठवणे हा केवळ पोरखेळ ठरत आहे.

बनावट कागदपत्राने म्हाडा योजनेत घोटाळा

बनावट सही, शिक्क्यांचा वापर करून खोटी मोजणी

लोकमत एक्स्क्लूझिव्ह

दिनेश पाठक
लोकमत न्यूज नेटवर्क

नाशिक : 'म्हाडा'मार्फत राबविण्यात येणाऱ्या सर्वसमावेशक गृहनिर्माण योजनेत मोठ्या स्वरूपातील घोटाळा नाशिकमध्ये उघडकीस आला असून, ४९ जमीन मालक, विकासकांवर सरकारवाडा पोलिस ठाण्यात शनिवारी रात्री गुन्हा दाखल करण्यात आला. योजनेद्वारे परवडणाऱ्या दरात घरे उपलब्ध करून देण्याचा शासनाचा उद्देश विकासकांनी गुंडाळून ठेवून खऱ्या लाभार्थ्यांना वंचित ठेवल्याचा धक्कादायक प्रकार उघड झाला आहे.

महाराष्ट्र शासनाने २०१३ मध्ये जाहीर केलेल्या सर्वसमावेशक गृहनिर्माण धोरणानुसार ४००० चौ.मी.पेक्षा जास्त क्षेत्र असलेल्या जमिनीवर बांधकाम प्रकल्प राबविताना २० टक्के क्षेत्र आर्थिकदृष्ट्या दुर्बल घटक (ईडब्ल्यूएस) व अल्प उत्पन्न गट (एलआयसी) यांच्यासाठी राखीव ठेवणे बंधनकारक आहे; परंतु या प्रकरणात शासनाची फसवणूक केल्याची फिर्याद दाखल आहे. संबंधित विकासकांची नावे पोलिस डायरीत नोंद नाहीत.

एकाच वेळी तीन विभागांची फसवणूक झाल्याचा आरोप

१ या प्रकारामुळे म्हाडा, महसूल विभाग, भूमी अभिलेख विभाग, तसेच महाराष्ट्र शासनाची फसवणूक झाल्याचा आरोप आहे.

२ **जमीन मालक, विकासक आणि त्यांच्या अज्ञात सहकाऱ्यांवर कारवाईची प्रक्रिया सुरू करण्यात आली आहे. पुढील तपास वरिष्ठ पोलिस निरीक्षक सुरेश आव्हाड यांच्या मार्गदर्शनाखाली सुरू आहे.**

३ भूमी अभिलेख कार्यालयाच्या बनावट सही व शिक्क्यांचा वापर करून खोटे मोजणी नकाशे व आकारफोड पत्रके (फॉर्म क्रमांक १२) तयार करण्यात आल्याची फिर्याद भूमी अभिलेख कार्यालयातील अधिकारी बिपिन काजळे यांनी दिली.

मस्ट READ

आरटीई प्रवेशासाठी पोर्टलवर शाळेऐवजी मंदिर; पालकांची शिक्षणाधिकाऱ्यांकडे तक्रार

लोकमत न्यूज नेटवर्क

कोपरगाव (जि. अहिल्यानगर) : आरटीई अंतर्गत इयत्ता पहिलीची प्रवेश प्रक्रिया सुरू आहे. यात कोपरगाव येथील शाळेऐवजी थेट मंदिराचे लोकेशन पोर्टलवर नमूद आहे. त्यामुळे ऑनलाइन अर्ज भरण्यास अडचण निर्माण होत आहे.

सोपान उत्तमराव लोंढे हे पुणतांबा रोड, कोपरगाव येथे राहतात. त्यांच्या पाल्याला संत जनार्दन स्वामी (मौनगिरी) महाराज महर्षी स्कूल, कोकमठाण येथे इयत्ता पहिलीत प्रवेश हवा असल्याने, त्यांनी आरटीई ॲडमिशन पोर्टलवर अर्ज करण्यास सुरुवात केली. मात्र पोर्टलवर महर्षी शाळेऐवजी कोपरगाव बेट भागातील गुरू शुक्राचार्य मंदिराचे लोकेशन झाल्याचे दिसून आले. त्यानंतर लोंढे व इतर विद्यार्थ्यांच्या पालकांनी महर्षी स्कूलमध्ये धाव घेतली.

पालकांमध्ये तणाव, तरी प्रशासनाशी संपर्क

या समस्येमुळे पालकांमध्ये तणाव निर्माण झाला असला तरी त्यांनी संयम ठेवला असून, शाळेतील योग्य प्रवेशासाठी पालकांनी तत्परतेने प्रशासनाशी संपर्क साधला आहे. पालकांच्या सूचना आणि पोर्टलवरील तांत्रिक दुरुस्त्या यावरून पुढील काही दिवसांत समस्या सुटेल, अशी अपेक्षा आहे. दरम्यान शाळा प्रशासन आणि शिक्षण अधिकाऱ्यांनी योग्य सहकार्य केले तर मुलांचे प्रवेशकार्य सुरळीत पार पडण्याची शक्यता वर्तवण्यात येत आहे.

१० मार्चपर्यंत मुदत, सर्व्हर डाउन होण्याची शक्यता

पहिलीच्या प्रवेशासाठी अर्ज करण्याची अंतीम मुदत १० मार्च पर्यंत आहे. वेबसाइटवरील सूचनेनुसार आरटीईच्या ऑनलाइन प्रवेश अर्जांची स्थिती पाहता, सर्व्हरच्या क्षमतेपलीकडे जाऊन, पोर्टल स्लो होण्याची शक्यता आहे. त्यामुळे पालकांमध्ये चिंतेचे वातावरण आहे. अर्ज भरण्याच्या शेवटच्या दोन दिवसांत महर्षी शाळेसाठी ऑनलाइन अर्ज पात्र असूनही भरता येणार नाही. त्यामुळे आरटीई ॲडमिशन पोर्टलवर शाळेचे लोकेशन बदलून घ्यावे, अशी मागणी पालकांनी केली आहे.

अमर उजाला

प्रवाह

7 साल बेमिसाल

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक

स्थापना : 18 अप्रैल 1948 • आगरा

नई दिल्ली ■ सोमवार, 9 मार्च 2026

अच्छा शासन बुद्धिमान विचारों को विवेकपूर्ण कार्यों में बदलने की कला है।
-डायने कालेन-सुकरा

विधानसभा चुनाव से ठीक पहले पश्चिम बंगाल में राष्ट्रपति मुर्मू के दौरे के दौरान प्रोटोकॉल का पालन न होने और कार्यक्रम स्थल में ऐन मौके पर बदलाव से उपजी सियासी गरमाहट उस राजनीतिक माहौल का परिचायक है, जो काफी अरसे से मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की कार्यशैली की पहचान बना हुआ है।

संघीय मर्यादा का सवाल

विधानसभा चुनाव से ठीक पहले पश्चिम बंगाल में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के दौरे के दौरान प्रोटोकॉल का पालन न होने और आखिरी समय पर कार्यक्रम स्थल में बदलाव ने एक नया राजनीतिक तूफान खड़ा कर दिया है। अमूमन शांत रहने वाली राष्ट्रपति मुर्मू ने भी इस मामले में सार्वजनिक रूप से अपनी नाराजगी जाहिर की, तो प्रधानमंत्री मोदी ने भी तीखी प्रतिक्रिया दी है। केंद्र सरकार ने इस मामले में राज्य सरकार से विस्तृत रिपोर्ट भी मांगी है। दरअसल, यह सिर्फ प्रशासनिक चूक का मामला नहीं है, बल्कि इससे उस राजनीतिक माहौल की झलक भी मिलती है, जो पिछले कुछ वर्षों से पश्चिम बंगाल की पहचान बन गया है। राज्यपालों के साथ ममता के व्यवहार, जांच के लिए राज्य में आए केंद्रीय एजेंसियों के अधिकारियों के साथ रवैया और एसआईआर को लेकर उनके आक्रामक रुख से यही मालूम होता है, मानो वह राज्य में अलग देश बनाना चाह रही हों, जिसे उचित नहीं कहा जा सकता। अपने राज्य में राष्ट्रपति का स्वागत करना मुख्यमंत्री के लिए अनिवार्य नहीं है, लेकिन परंपरा और शिष्टाचार के अनुसार, यदि मुख्यमंत्री स्वयं उपस्थित न हों, तो उन्हें राष्ट्रपति के स्वागत के लिए किसी मंत्री को नामित करना चाहिए। उल्लेखनीय है कि मई, 2021 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पश्चिम बंगाल यात्रा के दौरान, जो काफी विवादित रही थी, ममता बनर्जी ने प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में चक्रवात पर आयोजित बैठक में भाग नहीं लिया था, लेकिन हवाई अड्डे पर उनका स्वागत जरूर किया था। राष्ट्रपति का पद देश की सांविधानिक गरिमा का प्रतीक है। ऐसे में, उनके कार्यक्रमों के आयोजन में प्रोटोकॉल का पालन महज औपचारिकता नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक संस्थाओं के प्रति सम्मान का संकेत भी है। एक सवाल यह भी है कि जब पूरा कार्यक्रम पहले से तय था, तब आखिरी क्षण में स्थान बदलने की क्या वजह रही? राष्ट्रपति मुर्मू का यह कहना राज्य सरकार के इरादों को लेकर शंका पैदा करता है कि पहले कार्यक्रम सिलीगुड़ी के पास बिधाननगर में होना था, जहां अधिक लोग आ सकते थे, लेकिन बाद में इसे गोसाईंपुर कर दिया गया, जहां पहुंचना मुश्किल था। केंद्र और राज्य के बीच मतभेद होना असामान्य नहीं है, लेकिन पिछले कुछ वर्षों से पश्चिम बंगाल की राजनीति में मतभेद लगातार टकराव और अविश्वास में बदलते दिखे हैं, जो अच्छा नहीं है। बेहतर हो कि यह विवाद सिर्फ राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप तक सीमित न रहे, बल्कि राज्य सरकार इस पूरे मामले की गंभीरता से समीक्षा करे और सुनिश्चित करे कि ऐसे विवादों की पुनरावृत्ति न हो।

नेपाल की राजनीति में नया अध्याय

2026 के चुनावों ने नेपाल के लोकतांत्रिक विकास में एक नया अध्याय खोल दिया है। अब देखना होगा कि यह राजनीतिक परिवर्तन किस दिशा में जाता है। चीन के पहलू को देखते हुए भारत उचित ही नेपाल के राजनीतिक घटनाक्रमों पर सतर्कतापूर्वक नजर रखे हुए है।

नेपाल एक बार फिर अपने लोकतांत्रिक इतिहास के एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ा है। विगत पांच मार्च को हुए आम चुनावों ने देश की राजनीति में एक बड़े परिवर्तन का संकेत दिया है। इन चुनावों में राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी (आरएसपी) की भारी जीत और इसके नेता बालेंद्र (बालेन) शाह का संभावित प्रधानमंत्री के रूप में उभरना सिर्फ एक चुनावी सफलता नहीं, बल्कि नेपाली राजनीति में पीढ़ीगत बदलाव का प्रतीक माना जा रहा है। ये चुनाव उस पृष्ठभूमि में हुए, जब 2025 में हुए जनरेशन-जेड (जेन-जी) के विरोध प्रदर्शनों ने तत्कालीन प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली को सत्ता छोड़ने पर मजबूर कर दिया था और देश में पारंपरिक राजनीतिक नेतृत्व के प्रति गहरे असंतोष की भावना सामने आई थी।

आनंद कुमार
एसोसिएट फेलो
एमपीआईडीएसए

पिछले दो दशकों से नेपाल लगातार राजनीतिक अस्थिरता का सामना कर रहा है। पिछले अठारह वर्षों में देश में लगभग चौदह सरकारें बदल चुकी हैं। गठबंधन की राजनीति, दलों के बीच वैचारिक मतभेद और नेतृत्व की प्रतिस्पर्धा ने शासन व्यवस्था को कमजोर किया है। 2026 का चुनाव पुराने दलों के प्रदर्शन पर एक तरह से जनमत संग्रह भी था, जिन्होंने वर्षों तक नेपाल की राजनीति पर प्रभुत्व बनाए रखा।

जेन-जी आंदोलन ने देश की राजनीति को झकझोर दिया था। शुरुआत में ये विरोध प्रदर्शन सोशल मीडिया पर लगाए गए अस्थायी प्रतिबंध के खिलाफ हुए थे, लेकिन जल्द ही यह भ्रष्टाचार, कुशासन और राजनीतिक संरक्षणवाद के खिलाफ व्यापक जनआंदोलन में बदल गया। बड़ी संख्या में युवा सड़कों पर उतर आए और उन्होंने व्यवस्था परिवर्तन की मांग की। अंततः प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली के इस्तीफा देने के बाद राजनीतिक स्थिरता बनाए रखने और नए चुनाव कराने की जिम्मेदारी पूर्व मुख्य न्यायाधीश सुशीला कार्की के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार को सौंपी गई। इस बार लगभग 1.89 करोड़ मतदाता 275 सदस्यीय प्रतिनिधि सभा के लिए मतदान करने योग्य थे। चुनाव में लगभग 60 प्रतिशत मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया। इन चुनावों में कुछ वर्ष पहले स्थापित आरएसपी ने अप्रत्याशित रूप से बड़ी सफलता हासिल की है। इस परिवर्तन के केंद्र में पैंतीस वर्षीय बालेन शाह हैं, जो नेपाली राजनीति में नई पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं। एक समय वह रैपर और सोशल मीडिया से जुड़े व्यक्तित्व के रूप में जाने जाते थे। उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर पहचान तब मिली, जब उन्होंने 2022 में स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में काठमांडो के मेयर का चुनाव जीता। तब भी उनकी जीत को पारंपरिक राजनीति के खिलाफ जनता की नाराजगी का संकेत माना गया था।

इस बार चुनाव में उन्होंने झापा-5 संसदीय क्षेत्र में पूर्व प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली को भारी अंतर से हराया। उनके चुनाव अभियान का मुख्य केंद्र भ्रष्टाचार के खिलाफ कठोर कार्रवाई, प्रशासनिक पारदर्शिता और राजनीतिक नेतृत्व में पीढ़ीगत परिवर्तन का वादा रहा। आरएसपी का उभार मुख्य रूप से नेपाल के युवाओं की आकांक्षाओं से जुड़ा हुआ है। जेन-जी आंदोलन ने ऐसा राजनीतिक माहौल बनाया, जिसमें नई राजनीतिक शक्तियों को उभरने का अवसर मिला। बड़ी संख्या में युवा मतदाताओं ने चुनाव परिणामों को निर्णायक रूप से प्रभावित किया। आरएसपी ने सोशल मीडिया, डिजिटल प्रचार और जमीनी संपर्क के जरिये युवाओं तक प्रभावी ढंग से पहुंच बनाई।

काठमांडो घाटी जैसे शहरी क्षेत्रों और युवा वर्ग में आरएसपी को मजबूत समर्थन मिला। साफ है कि तेजी से बदलते शहरी समाज की अपेक्षाएं पारंपरिक राजनीतिक संरचनाओं से अलग हो चुकी हैं। कई शहरी मतदाताओं को लगता है कि पुराने दल भ्रष्टाचार, अक्षमता और वंशवादी राजनीति के प्रतीक बन गए हैं, जबकि नई पीढ़ी का नेतृत्व पारदर्शिता और जवाबदेही का संदेश देता है। इन चुनावों ने पारंपरिक दलों की कमजोरी को भी उजागर किया है। कई वरिष्ठ नेताओं को हार का सामना करना पड़ा है। हालांकि नेपाली कांग्रेस और कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ नेपाल (यूएमएल) अब भी देश की राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहेंगे, लेकिन उनकी घटती लोकप्रियता इस बात का संकेत है कि उन्हें अपने संगठन और नेतृत्व में सुधार करना होगा।

भारत विशेष रूप से नेपाल के राजनीतिक घटनाक्रमों पर ध्यान दे रहा है। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नेपाल की जनता को शांतिपूर्ण और सफल चुनावों के लिए बधाई दी और आशा व्यक्त की कि नई सरकार दोनों देशों के बीच सहयोग को और मजबूत करेगी। भारत और नेपाल के बीच ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संबंध बेहद गहरे हैं, इसलिए काठमांडो में स्थिर सरकार का गठन क्षेत्रीय स्थिरता के लिए भी अहम माना जाता है। भारत और चीन के बीच स्थित नेपाल को हमेशा संतुलित विदेश नीति अपनानी पड़ती है। नए नेतृत्व के सामने यह चुनौती होगी कि वह दोनों प्रमुख पड़ोसियों के साथ संतुलित संबंध बनाए रखे।

घरेलू स्तर पर भी नई सरकार से अपेक्षाएं बहुत अधिक हैं। युवा भ्रष्टाचार, बेरोजगारी और कमजोर प्रशासनिक व्यवस्था के खिलाफ हैं। इसलिए सिर्फ राजनीतिक इच्छाशक्ति नहीं, बल्कि व्यापक संस्थागत सुधार जरूरी है। नई सरकार को यह साबित करना होगा कि उसके वादे केवल चुनावी नारे नहीं, बल्कि व्यावहारिक नीतियों में बदल सकते हैं। आर्थिक क्षेत्र में भी नेपाल को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। सीमित औद्योगिक विकास, विदेशों में काम करने वाले नेपाली श्रमिकों से आने वाली रेमिटेंस पर अत्यधिक निर्भरता और युवाओं के लिए रोजगार के सीमित अवसर जैसी समस्याएं लंबे समय से बनी हुई हैं। यदि नई सरकार इन मुद्दों पर ठोस कदम नहीं उठाती, तो जनता की उम्मीदें जल्द ही निराशा में बदल सकती हैं।

राजनीतिक स्थिरता बनाए रखना भी एक बड़ी चुनौती होगी। नेपाल में गठबंधन सरकारों और बार-बार सत्ता परिवर्तन का इतिहास रहा है। भले ही आरएसपी को मजबूत जनसमर्थन मिला हो, लेकिन शासन की जटिलताओं को संभालना एक बड़ी परीक्षा होगी। अब उसे एक परिपक्व शासक दल के रूप में स्वयं को साबित करना होगा।

फिर भी 2026 के चुनावों ने नेपाल के लोकतांत्रिक विकास में एक नया अध्याय खोल दिया है। अब देखना होगा कि यह राजनीतिक परिवर्तन किस दिशा में जाता है। नेपाल की जनता चाहती है कि यह परिवर्तन बेहतर शासन, मजबूत संस्थाओं और अधिक समावेशी राजनीतिक भविष्य के रूप में सामने आए। edit@amarujala.com

जीवन धारा

अल्बैर कामू

यदि मैं इस 'स्व' को, जिसके बारे में मैं आश्वस्त हूं, पकड़ने या परिभाषित करने कोशिश करता हूं, तो पाता हूं कि यह उंगलियों से फिसलती रेत के सिवा कुछ भी नहीं है।

मनुष्य स्वयं अपने लिए एक रहस्य है

मेरे भीतर धड़कता हुआ यह हृदय, जिसे मैं महसूस कर सकता हूं, मेरे अस्तित्व की सबसे पहली सच्चाई है। यह संसार, जिसे मैं छू सकता हूं और अनुभव कर सकता हूं, दूसरी सच्चाई है। इन दो निश्चितताओं के आगे पहुंचते ही मेरा सारा ज्ञान मानो रुक जाता है और बाकी सब कुछ कल्पना, व्याख्या या मन की रचना जैसा प्रतीत होने लगता है। जब मैं उस 'स्व' को पकड़ने की कोशिश करता हूं, जिसके होने का मुझे भरोसा है, तो वह मुट्ठी में थामे रेत की तरह फिसल जाता है। मैं उसके गुण गिना सकता हूं-जैसे परवरिश, संस्कार, उत्साह, मौन, महानता या दुर्बलता-पर इन्हें जोड़कर कोई अंतिम परिभाषा नहीं बना सकता। मेरा अपना हृदय मेरे लिए सदैव आंशिक रूप से अनजाना ही रहता है।

इसी तरह, मनुष्य स्वयं अपने लिए एक रहस्य है। वह अपने ही भीतर एक अजनबी की तरह निवास करता है। हम अपने बारे में निश्चितता चाहते हैं-एक स्थिर पहचान, एक स्पष्ट परिभाषा-लेकिन जीवन हमें निरंतर बदलता रहता है। अनुभव हमें आकार देते हैं, पीड़ा हमें गहराई देती है; प्रेम हमें विस्तार देता है; असफलताएं हमें परखती हैं और आशा हमें आगे बढ़ाती है। ये सब मिलकर हमें गढ़ते हैं, पर हमें पूर्णतः स्पष्ट नहीं करते। यहीं से जीवन का असली प्रश्न जन्म लेता है कि क्या अर्थ की खोज अनिवार्य है, या अनुभव ही पर्याप्त हैं? ज्ञान की भी अपनी सीमाएं हैं। तर्क मार्ग दिखाता है, परंतु अंतिम सत्य तक नहीं पहुंचाता। मनोविज्ञान और दर्शन हमें अनेक दृष्टियां देते हैं, पर वे अंतिम निष्कर्ष नहीं देते। 'स्वयं को जानो' एक आकर्षक आह्वान है, पर यह एक अंतहीन यात्रा का निमंत्रण भी है। स्वयं को जानना किसी अंतिम मंजिल पर पहुंच जाना नहीं, बल्कि निरंतर जागरूक बने रहने की प्रक्रिया है। शायद मनुष्य की महानता इसी में है कि वह प्रश्न पूछता रहता है, भले ही उसे अंतिम उत्तर न मिले। जीवन का संघर्ष इसी विरोधाभास में है-अस्तित्व की निश्चितता और अर्थ की अनिश्चितता के बीच। पर यह स्थिति निराशा नहीं, जागृति का संकेत है। जब हम स्वीकार करते हैं कि सब कुछ स्पष्ट नहीं है, तब हम अधिक ईमानदारी से जीना शुरू करते हैं। तब हम बनावटी सांत्वनाओं से दूर होकर वास्तविक अनुभवों को अपनाते हैं। जीवन का अर्थ बाहर से थोपे गए सिद्धांतों में नहीं, बल्कि हमारे जीवित अनुभव में निहित है। मनुष्य की गरिमा इस स्वीकार में है कि वह अनिश्चितता के साथ भी जी सकता है। वह जानता है कि अंतिम समाधान नहीं है, फिर भी वह प्रेम करता है, सृजन करता है, संघर्ष करता है। यही अर्थहीनता के विरुद्ध उसका मौन विद्रोह है। यही अधूरे ज्ञान के साथ भी आगे बढ़ने का साहस है। अनिश्चित भविष्य के बावजूद, अधूरे ज्ञान के साथ पूरी तीव्रता के साथ जीना ही मनुष्य की वास्तविक जीत है। सिसिफस की तरह, अपने पत्थर को बार-बार ऊपर ले जाना व्यर्थता नहीं, बल्कि उस थकान और संघर्ष में अपने अस्तित्व को चुनना है। -द मिथ ऑफ सिसिफस के अनूदित अंश

निरंतर सीखते रहें

सूत्र

जब हम यह स्वीकार कर लेते हैं कि स्वयं को पूरी तरह समझ पाना संभव नहीं, फिर भी निरंतर आत्मखोज में लगे रहते हैं, अनुभवों से सीखते हैं, अनिश्चितताओं को साहस से अपनाते हैं और अधूरे ज्ञान के साथ भी आगे बढ़ते हैं, तभी हम सच्चे अर्थों में जागरूक, विनम्र, दृढ़ और जीवन के प्रति ईमानदार बनते हैं।

दूसरा पहलू

तमिलनाडु के एक महिला संगठन ने हाशिये पर रहने वाली महिलाओं को सशक्त बनाया है। इससे समाज में परिवर्तन की एक लहर आई है।

सामाजिक बदलाव के लिए प्रतिबद्ध एक महिला संगठन

तमिलनाडु के एक महिला संगठन ने छोटी-छोटी बचतों से न केवल हाशिये पर रहने वाली महिलाओं को सशक्त व आत्मनिर्भर बनाया है, बल्कि समाज के कई सामाजिक मुद्दों पर संघर्ष भी किया है। इससे समाज में परिवर्तन की एक नई लहर आई है। इस पहल का नाम है महालिर एसोसिएशन फॉर लिटरेसी अवेयरनेस एंड राइट्स, जिसे संक्षेप में मलार कहा जाता है। मलार की शुरुआत 90 के दशक में हुई। जब देश में साक्षरता अभियान समाप्त होने लगा, तो उससे जुड़े लोगों ने समाज की बेहतरी के लिए इसे आगे बढ़ाने का निर्णय लिया। इसी से नवसाक्षर व गरीब महिलाओं को संगठित कर स्वयं सहायता समूह बनाने का विचार सामने आया। इन समूहों के जरिये महिलाओं को एक-दूसरे से सीखने, बचत करने व आर्थिक रूप से मजबूत बनने का अवसर मिला। वर्ष 1994 में पंजीकृत मलार के लक्ष्यों में महिलाओं को सामाजिक नेटवर्क से जोड़ना और नेतृत्व क्षमता विकसित करना भी है। आज इस संगठन से लगभग 1,771 स्वयं सहायता समूह जुड़े हैं, जिनमें करीब 30,000 महिलाएं सदस्य हैं।

बाबा मायाराम

मलार की शुरुआत 90 के दशक में हुई। जब देश में साक्षरता अभियान समाप्त होने लगा, तब लोगों ने इसे आगे बढ़ाने का निर्णय लिया।

जिन महिलाओं की दुनिया कभी घर तक सीमित थी, वे आज सार्वजनिक मंचों पर आत्मविश्वास के साथ अपनी बात रखती हैं और समाज के विकास में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं।

संगठन की उपाध्यक्ष जे. जानसिली बाई ने बताया कि मलार ने समय-समय पर कई विकास और जनकल्याण योजनाएं भी शुरू की हैं। इनमें पेंशन कल्याण निधि, मृत्यु सहायता योजना, सदस्य कल्याण योजना व विभिन्न सहकारी उद्यम शामिल हैं।

इन पहलों का उद्देश्य महिलाओं को आर्थिक सुरक्षा देना और छोटे-छोटे व्यवसायों को बढ़ावा देना है। मलार से जुड़े समूहों में महिलाएं हर सप्ताह थोड़ी-थोड़ी बचत जमा करती हैं। यही राशि बाद में जरूरतमंद सदस्यों को ऋण के रूप में दी जाती है। इन ऋणों का उपयोग महिलाएं सब्जी बिक्री, डेयरी, सिलाई-कढ़ाई, मुर्गीपालन और मत्स्य पालन जैसे छोटे व्यवसाय शुरू करने के लिए करती हैं। कई महिलाओं ने इससे अपने परिवार की आय बढ़ाई है और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनी हैं।

आर्थिक सशक्तीकरण के साथ-साथ संगठन स्वास्थ्य, शिक्षा, ग्राम विकास और सामाजिक समरसता पर भी ध्यान देता है। समूह नियमित बैठकों में सामूहिक निर्णय लेता है और जरूरतमंदों की सहायता भी करता है। कुल मिलाकर, मलार ने महिलाओं के जीवन में महत्वपूर्ण बदलाव लाया है। जिन महिलाओं की दुनिया कभी घर तक सीमित थी, वे आज सार्वजनिक मंचों पर आत्मविश्वास के साथ अपनी बात रखती हैं और समाज के विकास में सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। यह पहल महिला सशक्तीकरण का भी अच्छा उदाहरण है, जो सराहनीय होने के साथ प्रेरणास्पद भी है।

आंकड़े

बाजारों में चीन

दुनिया भर के बाजारों में चीन के उत्पादों की बड़ी हिस्सेदारी है। भारत के कुल आयात का 18.2 फीसदी चीन से होता है।

ईरान	26.5
पाकिस्तान	28.3
इंडोनेशिया	31.4
वियतनाम	34.0
कंबोडिया	46.8

आंकड़े चीन से सर्वाधिक आयात करने वाले देशों के, प्रतिशत में। | स्रोत : संयुक्त राष्ट्र कॉमट्रेड, विश्व बैंक

अर्जुन के प्रश्न पर भगवान श्रीकृष्ण वन पहुंचे, साधु और लकड़हारे को संदेश देकर उन्होंने भक्ति का रहस्य समझाया।

श्रीकृष्ण का संदेश

एक दिन अर्जुन के मन में गहरी जिज्ञासा उत्पन्न हुई। उन्होंने सोचा कि संसार में अनगिनत जीव भगवान से प्रार्थना करते हैं, फिर भगवान सबकी पुकार कैसे सुनते होंगे। अंततः उन्होंने यह प्रश्न भगवान श्रीकृष्ण से पूछ ही लिया।

श्रीकृष्ण बोले, 'आओ अर्जुन, आज तुम्हें इसका उत्तर अनुभव के माध्यम से देता हूं।' वह अर्जुन को साथ लेकर एक वन में पहुंचे। वहां एक साधु गहन तपस्या में लीन था। वह दिन-रात भगवान से प्रार्थना करता और बार-बार उनसे दर्शन की याचना करता था। थोड़ी दूरी पर एक साधारण लकड़हारा भी था। वह जंगल से लकड़ियां काटकर अपना जीवन चलाता था। काम करते-करते वह भगवान का नाम ले लेता। श्रीकृष्ण अर्जुन से बोले, 'तुम दोनों को मेरा संदेश दे आओ।' अर्जुन पहले साधु के पास गए और बोले, 'भगवान ने कहा है कि तुम्हें अभी कई जन्मों के बाद उनके दर्शन होंगे।' यह सुनते ही साधु क्रोधित हो उठा। उसने कहा, 'इतनी कठोर तपस्या के बाद भी मुझे इतने जन्म प्रतीक्षा करनी पड़ेगी!' फिर अर्जुन लकड़हारे के पास पहुंचे और वही संदेश सुनाया। यह सुनकर लकड़हारा प्रसन्नता से झूम उठा। उसने कहा, 'यदि इतने जन्मों बाद भी भगवान मुझे दर्शन देंगे, तो यह मेरे लिए महान सौभाग्य है।' उसी क्षण श्रीकृष्ण ने लकड़हारे को तुरंत दर्शन दे दिए। अर्जुन यह देखकर चकित रह गए। श्रीकृष्ण बोले, 'अर्जुन, सच्ची भक्ति में अधीरता नहीं, बल्कि प्रेम, धैर्य और संतोष होता है।'

अंतर्यात्रा

संकलित

अमर उजाला

पुराने पन्नों से — 9 मार्च, 1956

संघ का मुख्य कार्य व्यक्तित्व का निर्माण

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ मुख्य कार्य व्यक्ति का निम — श्री अटल बिहारी वाजपेयी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक एम. एस. गोलवलकर के जन्मदिवस पर अटल बिहारी वाजपेयी बोले कि गुरुजी हिंदू राष्ट्र के निर्माण के लिए व्यक्तित्व गढ़ने के कार्य में लगे हुए हैं। लोग संघ का विरोध करते रहें। हम उस विरोध को द्वेष व घृणा रूप में प्रकट नहीं होने देते।

दुनिया भारत की तरफ देख रही है

भारत का विशाल बाजार दुनिया भर के एआई खिलाड़ियों के लिए नई चुनौतियां और अवसर प्रदान कर रहा है।

गायत्री सभरवाल

मुद्दा

पिछले दिनों नई दिल्ली में आयोजित इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट के अवसर पर मैं भी न्यूयॉर्क सिटी से दिल्ली पहुंची थी। एआई और इन्सानी क्षमता पर केंद्रित एक सत्र में, एक शीर्ष एआई एग्जीक्यूटिव ने दर्शकों, जिनमें अधिकांश स्थानीय भारतीय थे, से पूछा कि उनका चैटजीपीटी का पसंदीदा उपयोग क्या है। दर्शकों का जवाब सुनकर वह खुद हैरान रह गए-उच्च स्तरीय कोडिंग से लेकर ज्योतिष, जीवन सलाह और स्वास्थ्य से जुड़े सवालों तक।

हम सबने सुना है कि चैटजीपीटी हम सबको एक जैसा दिखाता है, और एआई से बना कंटेंट आसानी से पहचाना जा रहा है। लेकिन अगर भारत में चैटजीपीटी के 10 करोड़ साप्ताहिक सक्रिय उपयोगकर्ता एक ऐसे सांस्कृतिक माहौल में हैं, जो पश्चिम से काफी अलग है, तो एआई समय के साथ उस माहौल में कैसे ढलेगा? मेरा अंदाजा है कि मॉडल सुधार करने के लिए खुद को स्थानीय संस्कृति के अनुसार ढाल लेगा और लोग असल में मॉडल का इस्तेमाल कैसे कर रहे हैं, इसके फीडबैक लूप के जरिये उपयोगकर्ताओं की पसंद को समझेगा। एआई और स्थानीय परंपरा का एक शानदार उदाहरण रिलायंस के जियो इंटेलिजेंस पैवेलियन में देखने को मिला, जिसमें पुराने भारतीय महाकाव्य *'महाभारत'* के पौराणिक किरदारों के एआई-संचालित होलोग्राम दिखाए गए थे। इसमें एआई का इस्तेमाल किया गया था, लेकिन इसे 2,500 साल पुराने इतिहास से जोड़ा गया था। भारत में एआई बाजार को जीतने की होड़ जारी है। एआई बनाने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए, भारत एक बहुत बड़ा मौका है। अभी दुनिया की सबसे ज्यादा आबादी वाला देश और चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था, यहां क्लाउड का 5.8 फीसदी इस्तेमाल होता है, जो अमेरिका के बाद दूसरे नंबर पर है। भारत चैटजीपीटी के लिए दूसरा सबसे बड़ा बाजार भी है, जहां देश में 18-24 साल के लोग इस प्लेटफॉर्म के लगभग आधे उपयोगकर्ता आधार हैं। एआई प्रयोगशालाएं पहले से ही इस मौके का फायदा उठाने के लिए काम कर रही हैं। ओपनएआई ने ओपनएआई फॉर इंडिया लॉन्च किया है, जो देश में एआई को बढ़ाने के लिए बड़ी भारतीय कंपनियों के साथ भागीदारी करने की एक पहल है। इसकी शुरुआत भारतीय बहुराष्ट्रीय कंपनी टाटा ग्रुप के साथ भागीदारी से हुई है, ताकि 100 मेगावाट की सॉवरेन, एआई-रेडी कंप्यूट क्षमता लगाई जा सके, जिसे एक गीगावाट तक बढ़ाया जा सकता है। ओपनएआई ने इस साल मुंबई और बंगलूरू में नए ऑफिस खोलने की भी घोषणा की। एंथ्रोपिक ने इंफोसिस के भारतीय मुख्यालय के साथ भागीदारी की और अपना पहला बंगलूरू ऑफिस खोला।

बहुभाषी और वॉइस-फर्स्ट मॉडल्स (बोली जाने वाली भाषा को प्रमुखता) में रुझान, स्थानीय कंपनियों के साथ वितरण साझेदारी, कम देरी और उद्यम अनुमति के लिए भारत के हिसाब से मूल्य निर्धारण और स्थानीय कंप्यूट पर नजर रखें। क्योंकि इसे कुछ ही शहरों में अपनाया गया है और 1.46 अरब की आबादी में अब भी बहुत सारे उपयोगकर्ता बाकी हैं, इसलिए अभी तक कोई विजेता तय नहीं हुआ है। भारत 'संप्रभु एआई' बनाना चाहता है, यानी विदेशी प्रदाताओं पर निर्भर रहने के बजाय देश में ही अपनी एआई टेक्नोलॉजी को विकसित और संचालित करने की क्षमता। एआई इंफ्रास्ट्रक्चर को बढ़ावा देने के लिए अदाणी समूह ने अगले दस वर्षों में 250 अरब डॉलर का एआई इंफ्रास्ट्रक्चर इकोसिस्टम बनाने का वादा किया है। अदाणी ने 2035 तक नवीकरणीय ऊर्जा से चलने वाले डाटा सेंटरों के लिए 100 अरब डॉलर देने का वादा किया है, और उम्मीद है कि विनिर्माण, सर्वर्स और सॉवरेन क्लाउड सेवाओं में और 150 अरब डॉलर मिलेंगे।

भारत सरकार ने डीप टेक, मैन्युफैक्चरिंग और प्रारंभिक चरण के स्टार्टअप्स के लिए 10,000 करोड़ रुपये (लगभग 1.1 अरब डॉलर) का स्टार्टअप इंडिया फंड ऑफ फंड्स 2.0 बनाया है। इस बीच, घरेलू स्टार्टअप ने मॉडल शिप किया और बड़ी घोषणाएं कीं। सॉफ्टबैंक समर्थित वाइब-कोडिंग स्टार्टअप इमजेंट ने लॉन्च के आठ महीने बाद अनुमानित सालाना राजस्व के मामले में 10 करोड़ डॉलर तक पहुंच गया और चलते-फिरते सॉफ्टवेयर बनाने के लिए एक मोबाइल एप शिप किया। एआई स्टार्टअप सर्वम ने दो ओपन-सोर्स मॉडल जारी किए, एक चैट एप लॉन्च किया और स्मार्ट ग्लास के बारे में बताया। सरकार द्वारा समर्थित एआई कंसोर्टियम भारतजेन ने एक मॉडल जारी किया, जो 22 भारतीय भाषाओं को समर्थन देता है।

सवाल उठता है कि कैसे स्थानीयकरण और सॉवरेन एआई एक साथ आएंगे। जैसे-जैसे मॉडल भारत के हिसाब से बदलेंगे, भारत को जीतने की होड़ में लगे खिलाड़ियों को भी भारत की शर्तों पर खेलना पड़ सकता है: स्थानीय कंप्यूट, स्थानीय भागीदारी, और एआई क्षमता को भारत के अंदर रखने के लिए मुकाबला करना पड़ सकता है। (लेखिका न्यूयॉर्क में रैंप हेडक्वार्टर में मार्केटिंग और कंटेंट में काम करती हैं।)

म्यूचुअल फंड में निवेश करने वालों के लिए एक नया दौर शुरू हो गया है। सेबी ने म्यूचुअल फंड की श्रेणियों में जो बदलाव किए हैं, वे सतही नहीं, बल्कि बुनियादी हैं। सेबी ने 'मिस-सेलिंग' और भ्रम को खत्म करने के लिए बड़ी सर्जरी को अंजाम दिया है।

अब नाम से नहीं काम से बिकेंगे फंड

SEBI ने 'सॉल्यूशन ओरिएंटेड' कैटेगरी को खत्म किया, रिटायरमेंट और चिल्ड्रन प्लान की जगह होगी 'लाइफ साइकिल फंड' की शुरुआत।

मान लीजिए, आप लखनऊ से दिल्ली जाने के लिए बस स्टैंड पर खड़े हैं। वहां दो बसें खड़ी हैं, एक पर लिखा है 'सुपरफास्ट एक्सप्रेस' और दूसरी पर लिखा है 'पैसेंजर'। आप जल्दी पहुंचने के चक्कर में 'सुपरफास्ट' का टिकट कटाकर बैठ जाते हैं। लेकिन जैसे ही सफर शुरू होता है, आप देखते हैं कि वो बस हर छोटे-बड़े गांव में रुक रही है और पैसेंजर बस से भी धीरे चल रही है। आपको गुस्सा आता है, क्योंकि आपने पैसे तो 'रफ्तार' के दिए थे, लेकिन मिल रही है 'रुकावट'।

म्यूचुअल फंड की दुनिया में भी अब तक कुछ ऐसा ही हो रहा था। कई फंड्स के नाम पर लिखा था 'रिटायरमेंट' या 'चिल्ड्रन फंड', लेकिन उनके अंदर का निवेश किसी आम फंड जैसा ही था, जिसमें जोखिम और सुरक्षा का सही तालमेल नहीं था। सेबी ने इसी मिससेलिंग को खत्म करने की कोशिश की है। 2026 की यह सबसे बड़ी 'सर्जरी' है, जहां अब फंड का नाम वही होगा, जो उसके अंदर का काम होगा।

स्वागत करिए 'लाइफ साइकिल फंड' का... सबसे बड़ा बदलाव यह है कि अब 'सॉल्यूशन ओरिएंटेड' नाम की कोई कैटेगरी नहीं रहेगी। इसमें आने वाले पुराने रिटायरमेंट और चिल्ड्रन फंड्स अब नए सब्सक्रिप्शन नहीं लेंगे। नियामक मंजूरी के बाद इन्हें या तो बंद कर दिया जाएगा या फिर वैसी ही दूसरी स्कीमों में विलय कर दिया जाएगा।

उनकी जगह ली है 'लाइफ साइकिल फंड' ने। इसे लक्ष्य-आधारित निवेश को अधिक स्पष्ट, अनुशासित और निवेशक की समय सीमा के अनुरूप बनाने के लिए डिजाइन किया गया है।

'ग्लाइड पाथ' का जादू देखिए...इसमें खास बात इसका ग्लाइड पाथ है, जिसमें एसेट क्लासेस का मिश्रण समय के साथ ऑटोमैटिक तरीके से बदलता रहता है।

मैच्योरिटी के वर्षों के आधार पर सामान्य एलोकेशन:

मैच्योरिटी में बचे वर्ष	इक्विटी एलोकेशन	डेट एलोकेशन	अन्य संपत्तियां*
30 से 15 वर्ष	65-95%	5-25%	10% तक
15 से 10 वर्ष	65-80%	5-25%	10% तक
10 से 5 वर्ष	50-65%	5-25%	10% तक
5 से 3 वर्ष	35- 50%	25-50%	10% तक
3 से 1 वर्ष	20-35%	25-65%	10% तक
अंतिम 1 वर्ष	5-20%	25-65%	10% तक

यह क्या बला है?

इसे ऐसे समझिए, जैसे-जैसे आपकी उम्र बढ़ती है, आपकी जोखिम लेने की क्षमता कम होती जाती है। लाइफ साइकिल फंड इसी सिद्धांत पर काम करता है। इसमें एक टारगेट डेट (जैसे 2045 या 2055) होती है।

यह इक्विटी, डेट, इंफ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट (InvITs), एक्सचेंज-ट्रेडेड कमोडिटी डेरिवेटिव्स (ETCDs), और गोल्ड व सिल्वर ईटीएफ सहित कई एसेट क्लासेस में निवेश करता है।

एग्जिट लोड से अनुशासन

लाइफ साइकिल फंड्स में सेबी ने एक खास 'पनिशमेंट' या यूं कहें कि 'अनुशासन शुल्क' लगाया है। चूंकि ये फंड लंबी अवधि के लिए हैं, इसलिए समय से पहले निकलने पर हर्जाना (एग्जिट लोड) देना होगा:

- 1 साल के भीतर : 3%
- 2 साल के भीतर: 2%
- 3 साल के भीतर: 1%

यह इसलिए है ताकि आप अपने लक्ष्य से भटकें नहीं। म्यूचुअल फंड अब ट्रेडिंग का अड्डा नहीं, बल्कि वेल्थ क्रिएशन का जरिया बनेगा।

किसके लिए उपयुक्त?

लाइफ साइकिल फंड उन निवेशकों के लिए सबसे उपयुक्त हैं, जिनके पास स्पष्ट, समय-बद्ध वित्तीय लक्ष्य हैं, जैसे:

- रिटायरमेंट प्लानिंग (25-30 साल का नजरिया)
- बच्चे की उच्च शिक्षा (15-20 साल)
- शादी या संपत्ति की खरीद (5-15 साल)

ओवरलैप फंड्स पर चली कैंची

एक ही फंड हाउस की दो स्कीमें अब एक जैसी नहीं दिख सकतीं। सेबी ने नियम बनाया है कि सेक्टोरल या थीमैटिक फंड्स में 50% से ज्यादा पोर्टफोलियो ओवरलैप (एक जैसे शेयर) नहीं होना चाहिए। अक्सर फंड हाउसेस एक ही जैसे कई फंड्स लॉन्च कर देते थे, जिससे निवेशक कंफ्यूज हो जाता था। अब हर फंड की अपनी अलग पहचान और रणनीति होनी जरूरी है।

गोल प्लानिंग में मिलेगी मदद

विकास पुरी
सीनियर पार्टनर, कंप्लीट सर्कल

लाइफ साइकिल फंड लंबी अवधि की वित्तीय प्लानिंग को आसान बनाने के लिए डिजाइन किए गए हैं। चूंकि प्रत्येक फंड एक 'टारगेट मैच्योरिटी वर्ष' दर्शाता है, इसलिए निवेशक अपनी जरूरत के हिसाब से सही लाइफ साइकिल फंड चुन सकते हैं। इसका ग्लाइड पाथ गलत समय पर इक्विटी बेचने जैसी भावनाओं में बहकर लिए गए फैसलों को रोकने में मदद करता है। इसमें केवल इक्विटी और डेट ही नहीं, बल्कि कई एसेट क्लासेस होते हैं, जो निवेश का एक संतुलित और चौतरफा मिश्रण प्रदान करते हैं।

निवेशकों और कंपनियों पर क्या होगा असर?

इस बदलाव का सबसे बड़ा फायदा आपको यानी निवेशक को होगा:

- **बेहतर तुलना:** अब आप दो स्कीमों की तुलना बेहतर तरीके से कर पाएंगे, क्योंकि उनके नियम एक जैसे होंगे।
- **कम मिस-सेलिंग:** एजेंट अब आपको 'रिटायरमेंट' के नाम पर कोई भी औसत फंड नहीं चिपका पाएंगे।
- **स्पष्ट विकल्प:** अगर आपका बच्चा आज 5 साल का है और आपको 15 साल बाद पैसे चाहिए, तो आप सीधे '2041 लाइफ साइकिल फंड' चुन सकते हैं।
- **फंड हाउसेस (AMCs) के लिए चुनौती बढ़ गई है...**उन्हें अगले 6 महीने में अपने सारे दस्तावेज और पोर्टफोलियो अपडेट करने होंगे। जो स्कीमें कमजोर हैं या जिनका कोई स्पष्ट आधार नहीं है, उन्हें बड़ी स्कीमों में विलय करना होगा।

समझ-बूझ

कर्ज का जाल: जेन-जी के लिए चेतावनी

क्रेडिट तक आसान पहुंच कई युवाओं को संभावित कर्ज के जाल की ओर धकेल रही है।

1. अगर नियमित रूप से केवल न्यूनतम बिल का भुगतान करते हैं, तो बकाया मूल राशि पर चक्रवृद्धि ब्याज लगता है। बकाया बैलेंस कहीं अधिक तेजी से बढ़ सकता है।
2. मासिक आय का आधे से अधिक हिस्सा EMI में जा रहा है, तो दैनिक खर्चों के लिए बहुत कम पैसा बचेगा। यह और अधिक कर्ज लेने पर मजबूर करेगा।
3. EMI चूकने पर न केवल जुर्माना लगता है, बल्कि क्रेडिट स्कोर भी खराब होता है। ऊंचे ब्याज वाले लोन के लिए मजबूर करेगा।
4. पुराने कर्ज को चुकाने के लिए नया लोन लेना खतरनाक चक्र की शुरुआत है। हर नया लोन अधिक लागत पर आता है।
5. फिक्स्ड ऑब्लिगेशन टू इनकम रेशियो (FOIR) का 70% से ऊपर होना वित्तीय तनाव व डिफॉल्ट का जोखिम बढ़ाता है।
6. किराया, राशन या बिजली-पानी बिलों के लिए क्रेडिट कार्ड, BNPL या इंस्टेंट फिनटेक लोन का इस्तेमाल न करें।
7. लगातार क्रेडिट सीमा का 80-90% उपयोग करने से ब्याज की लागत बढ़ती है और क्रेडिट प्रोफाइल भी बिगड़ती है।

खबरों के आर-पार

फ्रॉड से बचाएगा स्पैम प्रोटेक्शन टूल

एयरटेल का AI स्पैम प्रोटेक्शन अब गूगल के RCS (मैसेजिंग प्लेटफॉर्म) के साथ मिलकर फ्रॉड व स्पैम मैसेज रोकेगा।

- **सुरक्षा का नया घेरा:** इंटरनेट बेस्ड एप्स में सुरक्षा की कमी का फायदा उठाने वाले ठगों पर लगाम लगेगी। एयरटेल का नेटवर्क इंटेलिजेंस और गूगल के फिल्टर्स मिलकर काम करेंगे।
- **बड़ा असर:** पिछले 1.5 साल में एयरटेल ने 7,100 करोड़ स्पैम कॉल्स और 290 करोड़ SMS ब्लॉक किए हैं, जिससे वित्तीय नुकसान में 68.7% की कमी आई है।
- **भरोसा:** इससे यूजर्स असली बिजनेस मैसेज और फ्रॉड में फर्क कर पाएंगे।

ताकि सनद रहे

टैक्स सेविंग : पुरानी आदतें छोड़कर नए नियम समझिए

एक जमाना था जब टैक्स बचाने का मतलब होता था, LIC पॉलिसी, PF और ELSS। लेकिन अब नियम बदल गए हैं। सरकार का जोर है कि आप निवेश टैक्स बचाने के लिए नहीं, बल्कि रिटर्न कमाने के लिए करें।

2026 में आपकी कमाई पर टैक्स कैसे लगेगा, इसका पूरा गणित समझ लीजिए।

ULIP: अब यह सिर्फ बीमा नहीं

यूनिट लिंक्ड इंश्योरेंस प्लान (ULIP) सालों तक टैक्स छूट का पसंदीदा जरिया रहा है। 1 फरवरी, 2021 के बाद खरीदी गई पॉलिसियों के लिए एक 'लक्ष्मण रेखा' खींची गई है।

- अगर आपका सालाना प्रीमियम 2.5 लाख रुपये से ज्यादा है, तो मैच्योरिटी पर मिलने वाला पैसा पूरी तरह टैक्स-फ्री नहीं होगा।
- इस सीमा के ऊपर जो भी मुनाफा होगा, उस पर म्यूचुअल फंड जैसा टैक्स लगेगा। यानी 1 साल बाद मुनाफा 1.25 लाख रुपये से ऊपर हुआ, तो ऊपर की रकम पर 12.5% टैक्स देना होगा।

EPF: अमीरों के लिए मुश्किल

PF को सबसे सुरक्षित और टैक्स-फ्री माना जाता है। आज भी 5 साल की नौकरी के बाद पैसा निकाला, तो कोई टैक्स नहीं। लेकिन, यहां एक पेंच है:

- अगर आप साल भर में अपने हिस्से का 2.5 लाख रुपये से ज्यादा योगदान PF में करते हैं, तो उस एक्स्ट्रा पैसे पर मिलने वाला ब्याज टैक्स के दायरे में आएगा।
- यदि आपने नई टैक्स व्यवस्था चुनी है, तो भूल जाइए कि आपको PF के निवेश पर 80C की छूट मिलेगी। यहां EPF सिर्फ एक रिटायरमेंट फंड है, टैक्स सेविंग टूल नहीं।

म्यूचुअल फंड और ELSS: इंडेक्सेशन का दौर खत्म

- यहां 3 साल (ELSS के लिए) या 1 साल (इक्विटी के लिए) के बाद 1.25 लाख रुपये तक का मुनाफा टैक्स-फ्री है। इसके ऊपर 12.5% टैक्स लगेगा।
- डेट फंड में सबसे बड़ा बदलाव हुआ है। 1 अप्रैल, 2023 के बाद खरीदे गए डेट फंड पर अब कोई लॉन्ग टर्म बेनिफिट नहीं मिलता। आपका मुनाफा सीधे आपकी इनकम में जुड़ेगा और आपके टैक्स स्लैब के हिसाब से टैक्स लगेगा। यानी अब डेट फंड और बैंक FD, टैक्स के मामले में एक ही पायदान पर खड़े हैं।

2026 के लिए 3 गोल्डन टिप्स

1. **मैच्योरिटी पर नजर:** निवेश करते समय यह मत देखिये कि आज कितना बच रहा है, यह देखिये कि जब 10 साल बाद पैसा हाथ में आएगा, तब सरकार उसमें से कितना काटेगी।
2. **घाटे की भरपाई :** किसी शेयर या म्यूचुअल फंड में घाटा हुआ है, तो उसे मुनाफे के सामने सेट-ऑफ करें। शॉर्ट टर्म घाटे से लॉन्ग टर्म टैक्स भी बचा सकते हैं।
3. **रिजीम का चुनाव:** आपकी आय ज्यादा है और निवेश कम तो न्यू रिजीम आपके लिए बेहतर। अगर होम लोन और इंश्योरेंस के साथ भारी निवेश है, तो ही ओल्ड रिजीम का गणित काम करेगा।

तारीख पता है?

आईपीओ लिस्टिंग

- 11 मार्च: SEDEMAC Mechatronics Ltd (1087 करोड़ रुपये)
- 16 मार्च: Rajputana Stainless Ltd (255 करोड़ रुपये)

घोषणाएं

- 12 मार्च: उपभोक्ता महंगाई
- 16 मार्च: थोक महंगाई

■ डिस्क्लेमर : अपना पैसा में छपे विचार, राय और निवेश संबंधी सुझाव अलग-अलग विशेषज्ञों, ब्रोकर फर्मों या रिसर्च संस्थानों के हैं। इनसे अखबार या उसके प्रबंधन की सहमति जरूरी नहीं है। कृपया किसी भी तरह का निवेश फैसला लेने से पहले अपने पंजीकृत वित्तीय सलाहकार से सलाह जरूर लें। इस जानकारी के आधार पर होने वाले किसी भी नुकसान की जिम्मेदारी अखबार या उसके प्रबंधन की नहीं होगी।

पूछताछ

मैंने कुछ शेयर बेचकर लाभ कमाया है। टैक्स देनदारी क्या होगी? पिछले साल मेरी कोई अन्य आय नहीं थी।

12 महीने से कम समय के लिए रखे गए लिस्टेड इक्विटी शेयरों की बिक्री से होने वाले लाभ को शॉर्ट-टर्म कैपिटल गेन माना जाता है। लिस्टेड इक्विटी शेयरों पर STCG 20% की फ्लैट टैक्स दर के साथ लागू सरचार्ज और 4% स्वास्थ्य एवं शिक्षा उपकर लगता है।

आयकर कानून के तहत 60 वर्ष से कम आयु के व्यक्तियों के लिए पुरानी व्यवस्था के तहत 2,50,000 रुपये और नई व्यवस्था के तहत 4,00,000 रुपये तक की आय टैक्स के दायरे में नहीं आती। इक्विटी और इससे जुड़े विकल्पों से नफा-नुकसान को बेसिक छूट सीमा के साथ समायोजित नहीं किया जाता। इस तरह अगर आपकी इक्विटी की होल्डिंग एक साल से ज्यादा है, तो एक वित्त वर्ष में 1.25 लाख रुपए तक का मुनाफा टैक्स फ्री होगा। इस सीमा से ऊपर के लाभ पर 12.5 फीसदी की दर से टैक्स चुकाना पड़ेगा। अगर इक्विटी निवेश को 1 साल से पहले बेचते हैं तो एकमुश्त 20 फीसदी टैक्स लगेगा।

फंड की फिटनेस

फंड का प्रदर्शन

अवधि	रिटर्न %
1 साल	3.29%
2 साल	5.48%
3 साल	6.98%
5 साल	5.63%
7 साल	7.41%

source: valueresearch #Mar 5, 2026

लक्ष्य आधारित निवेश का बढ़िया विकल्प

सीमित जोखिम के साथ एफडी से बेहतर रिटर्न की संभावना

शेयर बाजार की तेज उठापटक और ब्याज दरों में लगातार बदलाव के दौर में निवेशक ऐसे विकल्पों की तलाश कर रहे हैं, जहां जोखिम अपेक्षाकृत सीमित हो और निवेश का लक्ष्य स्पष्ट हो। इसी जरूरत को ध्यान में रखते हुए निप्पॉन इंडिया निवेश लक्ष्य फंड जैसे टारगेट मैच्योरिटी डेट फंड सामने आए हैं। यह फंड निवेशकों को तय अवधि में अपेक्षाकृत स्थिर रिटर्न देने की रणनीति पर काम करता है और लक्ष्य आधारित निवेश का विकल्प प्रदान करता है।

Nippon India Nivesh Lakshya Fund

निप्पॉन इंडिया निवेश लक्ष्य फंड एक ओपन-एंडेड डेट स्कीम है, जो मुख्य रूप से सरकारी प्रतिभूतियों, पीएसयू बॉन्ड और उच्च क्रेडिट रेटिंग वाले कॉरपोरेट बॉन्ड में निवेश करती है। इसमें ब्याज दर जोखिम अपेक्षाकृत अधिक हो सकता है, लेकिन क्रेडिट रिस्क अपेक्षाकृत कम रहता है। निप्पॉन इंडिया का यह फंड 6 जुलाई, 2018 को लॉन्च हुआ था।

■ काम करने का तरीका

टारगेट मैच्योरिटी फंड आमतौर पर किसी विशेष बॉन्ड इंडेक्स को ट्रैक करते हैं। शुरुआत में जिन बॉन्ड में निवेश किया जाता है, उन्हें प्रायः उनकी मैच्योरिटी तक होल्ड किया जाता है। जैसे-जैसे फंड अपनी मैच्योरिटी तिथि के करीब पहुंचता है, पोर्टफोलियो की औसत अवधि कम होती जाती है, जिससे ब्याज दरों में उतार-चढ़ाव का असर धीरे-धीरे घटने लगता है। हालांकि निवेश अवधि के दौरान ब्याज दरों में बढ़ोतरी से फंड की एनएवी पर अस्थायी दबाव दिख सकता है।

■ स्पष्ट लक्ष्य वालों के लिए बेहतर

मिडास फिनसर्व के डायरेक्टर पंकज रस्तोगी कहते हैं, यह फंड उनके लिए अच्छा है जिनका तीन से पांच साल का स्पष्ट लक्ष्य है और जो निवेश को तय अवधि तक बनाए रख सकें। कम या मध्यम जोखिम वालों के लिए यह एफडी की तुलना में बेहतर संभावित रिटर्न दे सकता है।

SIP या लंपसम: निवेश के लिए कौन बेहतर?

बाजार में उतार-चढ़ाव अब भी बना हुआ है, ऐसे में SIP और लंपसम के बीच चुनाव करना जरूरी है

सिद्धार्थ दमानी
हेड-इन्वेस्टर एजुकेशन एंड डिस्ट्रीब्यूशन डेवलपमेंट, आदित्य बिड़ला सन लाइफ एएमसी

भारतीयों के लिए निवेश करने के सबसे पसंदीदा साधनों में म्यूचुअल फंड पहले स्थान पर हैं। एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया (एम्फी) के मुताबिक ओपन-एंडेड म्यूचुअल फंड स्कीमों में जनवरी 2026 में कुल 1.56 लाख करोड़ रुपये का शुद्ध निवेश हुआ है। इसके साथ ही उद्योग की कुल प्रबंधन अधीन संपत्ति (AUM) 81.01 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच गई।

म्यूचुअल फंड्स में निवेश दो रणनीतियों SIP और लंपसम के जरिये होता है। लेकिन अब बहस इस बात को लेकर है कि, 2026 में आगे बढ़ रहे हैं, निवेश का कौन-सा तरीका अधिक फायदेमंद होगा?

■ आइए समझते हैं SIP और लंपसम क्या हैं?

■ **SIP:** एक केंद्रित रणनीति, जहां एक पूर्व-निर्धारित राशि नियमित रूप से (मासिक/तिमाही) निवेश की जाती है। यह योजना 'अनुशासित खरीद' से लाभ कमाती है, क्योंकि यह बाजार के उतार-चढ़ाव को संतुलित करती है। इसलिए, SIP उस व्यक्ति के लिए सही है जिसके पास एक बार में बड़ी रकम नहीं है या जो 'टाइमिंग रिस्क' (बाजार के उतार-चढ़ाव का जोखिम) को कम करना चाहता है।

■ **लंपसम:** म्यूचुअल फंड में एक बार में बड़ी राशि निवेश करना। यदि आपके निवेश के बाद बाजार ऊपर जाता है, तो आप अधिक कमा सकते हैं, क्योंकि आपकी पूरी राशि पहले दिन से ही कंपाउंड होती है। हालांकि, आपका मुनाफा काफी हद तक निवेश के 'समय' पर निर्भर करता है।

■ SIP कब बेहतर है?

■ **वेतनभोगी निवेशक:** जब निवेश को मासिक आय से जोड़ना हो।

■ **शुरुआती निवेशक:** मानसिक तनाव कम करता है और गलत समय पर बड़ी राशि लगाने का डर दूर करता है।

■ **टाइमिंग की चिंता:** जब आप बाजार के हर स्तर पर निवेश फैलाकर लागत औसत करना चाहते हों।

■ **अस्थिर बाजार:** शॉर्ट-टर्म के उतार-चढ़ाव को संभालने के लिए।

■ एकमुश्त निवेश कब बेहतर है?

■ **अतिरिक्त नकदी:** जब पैसा खाली पड़ा हो और आप अपॉर्चुनिटी लॉस से बचना चाहते हों।

■ **लंबी अवधि (10+ साल):** जब छोटी अवधि के उतार-चढ़ाव से फर्क न पड़ता हो।

■ **अधिक समय:** जब आप चाहते हों कि पूरी राशि पहले दिन से ही कंपाउंडिंग का लाभ ले।

■ **उचित मूल्यांकन:** जब बाजार बहुत महंगा न हो।

बाजार में किसका कैसा प्रदर्शन?

लंबी अवधि के प्रदर्शन के लिए, NIFTY 50 TRI के डेटा का विश्लेषण किया गया और एक ही अवधि में किए गए लम्पसम और मासिक SIP के रिटर्न की तुलना की गई।

समय अवधि	कब से कब तक	मासिक SIP रिटर्न (XIRR)	एकमुश्त रिटर्न (CAGR)
7 साल	31 दिस. 2015-30 दिस. 2022	14.82%	13.92%
8 साल	31 दिस. 2014-30 दिस. 2022	14.07%	11.65%
10 साल	31 दिस. 2012-30 दिस. 2022	13.75%	13.24%
12 साल	31 दिस. 2010-30 दिस. 2022	13.44%	10.79%
15 साल	31 दिस. 2007-30 दिस. 2022	12.92%	8.77%
20 साल	31 दिस. 2002-30 दिस. 2022	14.03%	16.64%

नोट: यह विश्लेषण दिसंबर 2022 तक के इंडेक्स डाटा पर आधारित है। source: ET Money

यह डाटा क्या दिखाता है

■ **गिरते या उतार-चढ़ाव वाला बाजार:** यहां SIP बेहतर प्रदर्शन करती है, क्योंकि कम कीमतों पर अधिक यूनिट्स खरीदी जाती हैं, जिससे औसत लागत कम हो जाती है।

■ **बढ़ता बाजार:** यहां एकमुश्त निवेश बेहतर प्रदर्शन करता है, क्योंकि पूरी पूंजी पहले दिन से ही बाजार की तेजी का हिस्सा बन जाती है।

जानना जरूरी है

क्या दोनों को मिलाना एक अच्छी रणनीति है?

लंबी अवधि में बेहतर रिटर्न पाने के लिए SIP और एकमुश्त निवेश को मिलाना एक बेहतरीन रणनीति है। आप एक हिस्सा एकमुश्त निवेश कर सकते हैं ताकि कंपाउंडिंग तुरंत शुरू हो जाए और बाकी हिस्सा SIP या STP के जरिये फैला सकते हैं। यह तत्काल बाजार एक्सपोजर और अनुशासित निवेश के बीच संतुलन बनाता है।

टैक्स का नियम

- **इक्विटी फंड:** एक साल के बाद होने वाले मुनाफे पर 12.5% टैक्स (₹1.25 लाख से अधिक मुनाफे पर) और एक साल से पहले 20%
- **डेट फंड:** मुनाफे पर आयकर स्लैब दर से टैक्स
- **ध्यान दें:** टैक्स गणना के लिए SIP की हर किस्त को एक अलग निवेश माना जाता है

अस्वीकरण: SIP गिरते बाजार में मुनाफे का आश्वासन या नुकसान के खिलाफ सुरक्षा की गारंटी नहीं देता है। पिछला प्रदर्शन भविष्य में बरकरार रह भी सकता है और नहीं भी। ऊपर दी गई गणना रिटर्न की काल्पनिक दर पर आधारित है और यह केवल उदाहरण के उद्देश्यों के लिए है।

- आदित्य बिड़ला सन लाइफ म्यूचुअल फंड की एक निवेशक शिक्षा और जागरूकता पहल। सभी निवेशकों को एक बार की केवाईसी प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। निवेशक केवल सेबी पंजीकृत म्यूचुअल फंड में ही निवेश करें। केवाईसी, सेबी पंजीकृत म्यूचुअल फंड की सूची और सेबी स्कोर्स पोर्टल सहित शिकायतों के निवारण के बारे में अधिक जानकारी के लिए इस लिंक पर जाएं: https://mutualfund.adityabirlacapital.com/Investor-Education/education/kyc-and-redressal
- म्यूचुअल फंड निवेश बाजार के जोखिमों के अधीन है, योजना से संबंधित सभी दस्तावेजों को ध्यान से पढ़ें।

इन्फोग्राफिक्स

चमक रहा है कागजी सोना

जब बाजार में अनिश्चितता बढ़ती है, तब निवेशक सोने में सुरक्षित निवेश करते हैं। वर्ल्ड गोल्ड काउंसिल के फरवरी 2026 के आंकड़े गवाह हैं कि भारतीय निवेशकों का भरोसा Gold ETFs पर लगातार बढ़ रहा है।

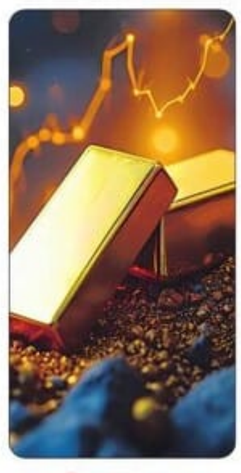

फरवरी 2026 में भारतीय Gold ETFs की गोल्ड होल्डिंग बढ़कर 113.9 टन हो गई। एक माह में 3.3 टन का इजाफा हुआ है।

26 टन
की शुद्ध खरीद हुई पीली धातु की वैश्विक स्तर पर

भारतीय Gold ETFs की शुद्ध मासिक खरीद

महीना	खरीद
फरवरी, 26	3.3 टन
जनवरी, 26	15.5 टन
दिसंबर, 25	8.6 टन
नवंबर, 25	2.7 टन

Source: WGC

वैश्विक Gold ETFs की शुद्ध मासिक खरीद

महीना	खरीद
फरवरी, 26	26 टन
जनवरी, 26	120 टन
दिसंबर, 25	76 टन
नवंबर, 25	41 टन
अक्तूबर, 25	57 टन
सितंबर, 25	149 टन
अगस्त, 25	54 टन
जुलाई, 25	22 टन

Source: WGC

कंटेंट : अमर उजाला बोनस टीम

एजुकेशन & कॅरिअर

हमेशा अपने काम में आनंद लीजिए, क्योंकि तभी आप अधिक सफल होते हैं।

अमर उजाला Job Alert

Real-time job alerts
amarujala.com/jobs

मध्य प्रदेश कर्मचारी चयन मंडल, भोपाल

वन रक्षक, जेल प्रहरी व अन्य पदों पर नौकरी के अवसर

1679 पद

आवेदन की अंतिम तिथि : 14 मार्च, 2026
योग्यताएं : दसवीं, बारहवीं व अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें : esb.mp.gov.in

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया में रिक्तियां ■ 275 पद

सॉफ्टवेयर डेवलपर, मोबाइल डेवलपर आदि के पद रिक्त
आवेदन की अंतिम तिथि
23 मार्च, 2026
योग्यताएं
बीई, बीटेक व अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें
centralbank.bank.in

राष्ट्रीय भवन निर्माण निगम ■ 59 पद

जूनियर इंजीनियर, असिस्टेंट मैनेजर व अन्य पद रिक्त
आवेदन की अंतिम तिथि
05 अप्रैल, 2026
पात्रताएं
इंजीनियरिंग, मास्टर डिग्री व अन्य निर्धारित योग्यताएं
यहां आवेदन करें
nbccindia.in

बिहार लोक सेवा आयोग ■ 300 पद

सहायक अभियोजन अधिकारी के पदों पर मौके
आवेदन की अंतिम तिथि : 20 मार्च, 2026
आयु-सीमा : न्यूनतम आयु 21 वर्ष व अधिकतम आयु 37 वर्ष
यहां आवेदन करें : bpsc.bihar.gov.in

राष्ट्रीय जैविक संस्थान (एनआईबी) ■ 44 पद

साइंटिस्ट, असिस्टेंट आदि पदों पर रिक्तियां
आवेदन की अंतिम तिथि
08 अप्रैल, 2026
वेतनमान
रुपये 19,900 से लेकर रुपये 2,09,200 तक निर्धारित
यहां आवेदन करें
nib.gov.in

इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अवसर ■ 20 पद

शोध सहायक, क्षेत्र अन्वेषक व अन्य पद खाली
आवेदन की अंतिम तिथि
15 मार्च, 2026
वेतनमान
रुपये 22,000 से लेकर रुपये 37,000 प्रतिमाह
यहां आवेदन करें
allduniv.ac.in

यहां भी रोजगार के अवसर ...

- यूको बैंक नई दिल्ली : सूचना प्रौद्योगिकी सलाहकार का पद रिक्त।
  आवेदन की अंतिम तिथि : 27 मार्च, 2026
- uco.bank.in
- अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, देवघर : फार्मासिस्ट, तकनीशियन व अन्य पदों पर करें आवेदन।
  आवेदन की अंतिम तिथि : 23 मार्च, 2026
- aiimsdeoghar.edu.in

अपनी प्रतिक्रियाओं और सुझावों के लिए हमें udaan@amarujala.com पर ई-मेल करें।

ऐसी प्रतिक्रिया दें, जो सीखने का अवसर बने

अधिकांश कर्मचारी ऐसी प्रतिक्रिया चाहते हैं, जो उन्हें अपनी गलतियों को समझने और बेहतर प्रदर्शन करने में मदद करे

जूडिथ क्लेयर
हार्वर्ड बिजनेस रिव्यू

Harvard Business Review

नकारात्मक प्रतिक्रिया अगर अपमानजनक या किसी को नीचा दिखाने वाली हो, तो उसका परिणाम अक्सर उल्टा होता है। ऐसे में कर्मचारी अपने काम में सुधार करने के बजाय उस कठोर व्यवहार और बुरे अनुभव को ज्यादा समय तक याद रखते हैं। वहीं अधिकांश कर्मचारी ऐसी प्रतिक्रिया चाहते हैं, जो उन्हें अपनी गलतियों को समझने और बेहतर प्रदर्शन करने में मदद करे। लेकिन जब प्रतिक्रिया बहुत कठोर या अपमानजनक होती है, तो इससे व्यक्ति को शर्मिंदगी महसूस होती है, उसका आत्मविश्वास कम हो जाता है और उसके काम की उत्पादकता भी प्रभावित होती है।

■ भावनात्मक प्रभाव
अगर किसी कर्मचारी को प्रतिक्रिया देते समय उस पर व्यक्तिगत टिप्पणी की जाए या कठोर शब्दों का इस्तेमाल किया जाए, तो वह सुधार करने के बजाय निराश हो सकता है और काम में उसकी रुचि कम हो जाती है। इससे उसके प्रदर्शन और कार्यस्थल के माहौल पर भी बुरा असर पड़ता है। इसलिए प्रतिक्रिया हमेशा सम्मान और समझदारी के साथ देनी चाहिए, ताकि कर्मचारी अपनी गलती समझकर सुधार कर सके और बेहतर काम करने के लिए प्रेरित हो।

■ व्यक्तिगत टिप्पणी करने से बचें
प्रतिक्रिया देते समय व्यक्ति के स्वभाव पर नहीं, बल्कि उसके काम या व्यवहार पर ध्यान देना चाहिए। जैसे 'तुम लापरवाह हो' कहने के बजाय यह कहना बेहतर है कि 'इस काम में कुछ गलतियां रह गई हैं, जिन्हें सुधारने की जरूरत है।' इससे व्यक्ति प्रतिक्रिया को आसानी से स्वीकार करता है और सुधार के लिए प्रेरित होता है।

■ प्रतिक्रिया पेशेवर तरीके से दें
प्रतिक्रिया देते समय केवल शब्द ही नहीं, बल्कि बोलने का तरीका, स्वर और समय भी महत्वपूर्ण होता है। यदि किसी को गलत समय पर या कठोर लहजे में प्रतिक्रिया दी जाए, तो वह नकारात्मक लग सकती है। इसलिए प्रतिक्रिया शांत, सम्मानजनक और पेशेवर तरीके से देनी चाहिए, साथ ही ऐसा समय चुनना चाहिए जब सामने वाला व्यक्ति उसे समझने और स्वीकार करने के लिए तैयार हो। इससे संदेश स्पष्ट रूप से पहुंचता है और सुधार की संभावना बढ़ती है।

■ प्रयासों की भी सराहना करें
प्रतिक्रिया में गलतियों या कमियों पर ही ध्यान नहीं देना चाहिए, बल्कि व्यक्ति के अच्छे काम और प्रयासों की भी सराहना करनी चाहिए। जब सुधार की जरूरत वाले बिंदुओं के साथ-साथ सकारात्मक और प्रोत्साहन देने वाली बातें भी कही जाती हैं, तो कर्मचारी को आलोचना कम कठोर लगती है। इससे उसका आत्मविश्वास बना रहता है और वह अपनी कमियों को सुधारने के लिए अधिक प्रेरित होता है।

खुद को परखें

1. शिटल मिसाइल किस देश द्वारा विकसित की गई है?
(a) रूस
(b) इस्राइल
(c) चीन
(d) भारत

2. छत्तीसगढ़ का कौन-सा जिला 'जल संचय जन भागीदारी' पहल के माध्यम से सामुदायिक नेतृत्व वाले जल संरक्षण का आदर्श बन गया है?
(a) बस्तर
(b) कोरिया
(c) दुर्ग
(d) रायपुर

3. मानव-वन्यजीव संघर्ष से निपटने के लिए किस राज्य सरकार ने हनुमान परियोजना शुरू की?
(a) आंध्र प्रदेश
(b) ओडिशा
(c) गुजरात
(d) झारखंड

उत्तर-1.a, 2.b, 3.a

अंतरराष्ट्रीय पहल

आइंस्टीन फेलोशिप प्रोग्राम-2026

आइंस्टीन फेलोशिप-2026 के लिए आवेदन आमंत्रित किए जा रहे हैं। यह जर्मनी में पांच से छह महीने की अवधि के लिए प्रदान की जाने वाली पूर्णतः वित्तपोषित फेलोशिप है। इस फेलोशिप का उद्देश्य उत्कृष्ट युवा विचारकों को उनके पूर्व शोध क्षेत्र से भिन्न किसी नए क्षेत्र में एक परियोजना पर काम करने का अवसर देना है। आवेदन करने के लिए अभ्यर्थी की आयु 35 वर्ष से कम होनी चाहिए। साथ ही आवेदकों के पास मानविकी, सामाजिक विज्ञान या प्राकृतिक विज्ञान में किसी विश्वविद्यालय की डिग्री होना आवश्यक है। चयनित अभ्यर्थियों को रहने के खर्च के लिए 10,000 यूरो का वजीफा, आने-जाने का हवाई किराया तथा अन्य वित्तीय सुविधाएं प्रदान की जाएंगी। आवेदक आधिकारिक लिंक tinyurl.com/ypzr79pu पर जाकर 15 मई, 2026 तक ऑनलाइन माध्यम से आवेदन कर सकते हैं।

आवेदन आमंत्रित

डीपीआईआईटी जीआई प्रमोशन एंथम कॉन्टेस्ट

उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (डीपीआईआईटी) और माईजीओवी के सहयोग से 'जीआई प्रमोशन एंथम कॉन्टेस्ट' का आयोजन किया जा रहा है। इस प्रतियोगिता का विषय 'अतुल्य भारत के अमूल्य खजाने' रखा गया है, जिसका उद्देश्य भारत के जीआई उत्पादों, उनके सांस्कृतिक महत्व और उनसे जुड़े संदेश को उजागर करना है।

■ तकनीकी मापदंड
जमा की जाने वाली रचना मौलिक होनी चाहिए। राष्ट्रगान को उच्च गुणवत्ता वाले ऑडियो प्रारूप (एमपी3/डब्ल्यूएवी) में किसी सुलभ लिंक (जैसे गूगल ड्राइव) के माध्यम से प्रस्तुत करना होगा। इसके अलावा, गीत के बोल अलग पीडीएफ फाइल में (हिंदी या अंग्रेजी में) जमा करने होंगे।

■ पुरस्कार
इस कॉन्टेस्ट में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पाने वाले विजेताओं को क्रमशः 10,000 रुपये, 7,000 रुपये और 5,000 रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा। इसके अलावा 25 सांत्वना पुरस्कार विजेताओं को ई-प्रमाणपत्र दिए जाएंगे।

■ यहां आवेदन करें
इस कॉन्टेस्ट में भाग लेने के लिए आवेदन करने की अंतिम तिथि 29 मार्च, 2026 निर्धारित की गई है। प्रतिभागी आधिकारिक लिंक tinyurl.com/4d5t5cec पर जाकर शामिल हो सकते हैं।

एग्जाम अलर्ट हफ्ते की परीक्षाएं

यूपी पुलिस एसआई परीक्षा

- **परीक्षा की तिथि :**
  14 व 15 मार्च, 2026
- इस परीक्षा में सामान्य हिंदी, समसामयिक मामले, बुनियादी कानून/संविधान/सामान्य ज्ञान, गणितीय व मानसिक क्षमता और मानसिक योग्यता/आईक्यू/तर्क क्षमता से 400 अंकों के 160 प्रश्न पूछे जाएंगे। परीक्षा की अवधि दो घंटे निर्धारित की गई है।
- **यहां से प्रवेश-पत्र डाउनलोड करें**
  uppbpb.gov.in

बिहार सिविल कोर्ट चपरासी परीक्षा-2026

- **परीक्षा की तिथि :**
  15 मार्च, 2026
- इस परीक्षा में हिंदी, अंग्रेजी और गणित विषयों से 85 अंकों के 85 बहुविकल्पीय प्रश्न पूछे जाएंगे। यह परीक्षा दो शिफ्ट में आयोजित की जाएगी। परीक्षा की अवधि दो घंटे निर्धारित की गई है।
- **यहां से प्रवेश-पत्र डाउनलोड करें**
  patna.dcourts.gov.in

सामान्य ज्ञान

डार्क ऑक्सीजन

■ क्या है
यह वह ऑक्सीजन है, जो गहरे समुद्र में बिना सूर्य के प्रकाश के, समुद्र तल पर मौजूद धातु के पिंडों से बनती है। इस घटना को पहली बार 2013 में प्रशांत महासागर के मेक्सिको और हवाई के बीच स्थित क्लेरियन-क्लिपरटन जोन में देखा गया था।

■ चर्चा में क्यों
प्रशांत महासागर के तल का अध्ययन कर रहे वैज्ञानिकों ने ऐसे वातावरण में 'डार्क ऑक्सीजन' की उपस्थिति की जानकारी दी है।

■ समुद्र में बनती प्राकृतिक बिजली
समुद्र में पाए जाने वाले प्राकृतिक धात्विक पिंड बैटरी की तरह थोड़ी-सी बिजली उत्पन्न करते हैं। इस बिजली के कारण समुद्री जल (H_2O) टूटकर हाइड्रोजन और ऑक्सीजन में बदल जाता है।

■ आगे की संभावनाएं
शोधकर्ताओं ने बताया कि अगर ऐसी ही प्रक्रिया अन्य ग्रहों या चंद्रमाओं पर भी होती है, तो वहां जीवन के विकसित होने की संभावना हो सकती है।

रोशनी यहां है

इस बार : गिरीश मातृभूतम
क्यों : समस्या में अवसर पहचानकर सफलता की मिसाल बने

फ्रेशवर्क्स के संस्थापक और सीईओ गिरीश मातृभूतम ने साबित किया है कि यदि किसी में सीखने की ललक, मेहनत करने का जज्बा और अवसर पहचानने की क्षमता हो, तो एक असफल छात्र भी सफल उद्यमी बन सकता है।

कस्टमर कंपनी की अनदेखी से उपजा बिजनेस आइडिया, बनाई अरबों की कंपनी

एक दिन की बात है। एक युवक अमेरिका से भारत लौटता है। वह उत्साह से एक नया टेलीविजन खरीदता है, लेकिन कुछ ही दिनों में वह खराब हो जाता है। युवक कई बार सर्विस सेंटर से संपर्क करता है। ईमेल करता है, कॉल करता है, विनती करता है, पर उसकी आवाज अनसुनी कर दी जाती है। आखिरकार वह अपनी निराशा ट्विटर पर लिखता है। तभी कंपनी हरकत में आती है और तुरंत जवाब देती है। उस समय शायद किसी ने नहीं सोचा था कि ग्राहक सेवा की इस अनदेखी से एक नया बिजनेस आइडिया जन्म लेगा। पर वही युवक आगे चलकर दुनिया को बेहतर कस्टमर सर्विस का समाधान देने वाला बना। हम बात कर रहे हैं गिरीश मातृभूतम की, जो फ्रेशवर्क्स के संस्थापक हैं। उन्होंने एक साधारण समस्या में असाधारण अवसर देखा और शून्य से शुरुआत कर हजारों करोड़ की कंपनी खड़ी कर दी। आपदा में अवसर एक खराब टेलीविजन से शुरू हुई कहानी आज वैश्विक सफलता की मिसाल है।

बारहवीं कक्षा में असफलता

गिरीश का जन्म तमिलनाडु के त्रिची शहर में एक साधारण परिवार में हुआ। उनके पिता एक सरकारी बैंक में कर्मचारी थे। बचपन आसान नहीं था। जब वे मात्र सात वर्ष के थे, तब उनके माता-पिता अलग हो गए। इस घटना ने उनके मन पर गहरा प्रभाव डाला। पढ़ाई में वे औसत छात्र थे। बारहवीं की बोर्ड परीक्षा में वे असफल हो गए। परिवार और समाज की आलोचनाएं झेलनी पड़ीं। कुछ लोगों ने तो उनका भविष्य रिक्शा चालक तक बता दिया। यह किसी भी किशोर के आत्मविश्वास को तोड़ देने के लिए काफी था। लेकिन गिरीश ने हार नहीं मानी। उन्होंने तय किया कि असफलता उनके भविष्य का फैसला नहीं करेगी। उन्होंने दोबारा प्रयास किया, पढ़ाई पूरी की और इंजीनियरिंग के लिए चेन्नई चले गए। एक औसत छात्र होने के बावजूद उन्होंने सीखने का अपना अलग तरीका विकसित किया। वे किताबों से ज्यादा अनुभव और प्रयोग से सीखते थे।

पहला कारोबार नहीं चला

इंजीनियरिंग के बाद गिरीश एमबीए करना चाहते थे। पर आर्थिक स्थिति कमजोर थी। इतने पैसे नहीं थे कि आगे की पढ़ाई कर सकें। ऐसे समय में उनके पिता ने रिश्तेदारों से कर्ज लेकर उनका एडमिशन कराया। यह घटना गिरीश के जीवन का टर्निंग पॉइंट बनी। उन्होंने पैसों का मूल्य समझा। उन्हें एहसास हुआ कि अब उन्हें परिवार के भरोसे को सार्थक करना है। उन्होंने छोटे-मोटे काम किए, जावा भाषा सीखी और दोस्तों को प्रशिक्षण देना शुरू किया। उन्होंने जावा प्रशिक्षण का एक संस्थान भी खोला, लेकिन वह ज्यादा समय तक नहीं चला। उद्यम असफल रहा। फिर वे अमेरिका गए और एचसीएल में नौकरी की। वहां काम करते हुए उन्होंने कंपनियों की कार्यप्रणाली और कस्टमर सर्विस सिस्टम को करीब से समझा। यही अनुभव आगे चलकर उनके काम आया।

घाटे से मिली सीख

2001 में भारत लौटकर उन्होंने एक प्रशिक्षण कंपनी शुरू की, लेकिन घाटे के कारण उसे बंद करना पड़ा। इसके बाद 2001 से 2010 तक उन्होंने जोहो कॉरपोरेशन में काम कर सॉफ्टवेयर उद्योग का अनुभव हासिल किया। वर्ष 2010 में अपने मित्र शान कृष्णासामी के साथ चेन्नई में फ्रेशवर्क्स की स्थापना की, जिसका उद्देश्य सरल और किफायती कस्टमर सपोर्ट सॉफ्टवेयर बनाना था। निवेशकों को मनाना पड़ा। लगातार प्रयासों के बाद 2011 में एक्सेल ने कंपनी में 10 लाख डॉलर का निवेश किया। आगे चलकर फ्रेशवर्क्स ने दुनिया भर में अपनी पहचान बनाई। यह कंपनी क्लाउड-बेस्ड कस्टमर सपोर्ट सॉफ्टवेयर बनाने लगी, जिसने हजारों कंपनियों की ग्राहक सेवा को आसान बना दिया।

बड़ी कंपनियों का भरोसा

गिरीश की सोच सिर्फ खुद तक सीमित नहीं थी। उन्होंने कर्मचारियों को भी कंपनी की सफलता में भागीदार बनाया। जब 2021 में फ्रेशवर्क्स अमेरिकी स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध हुई, तो कंपनी के लगभग 500 कर्मचारी रातों-रात करोड़पति बन गए। आज फ्रेशवर्क्स के ऑफिस भारत, पेरिस, नीदरलैंड, अमेरिका सहित कई देशों में हैं। कंपनी की ग्राहक सूची में होंडा, सिस्को, तोशिबा जैसी बड़ी कंपनियां शामिल हैं। लेटेस्ट फाइनेंशियल रिपोर्ट्स के मुताबिक सितंबर, 2025 तक कंपनी के नेट एसेट्स लगभग रुपये 7,800 करोड़ हैं।

युवाओं को सीख

- असफलता स्थायी नहीं होती।
- परिस्थितियां चाहे जितनी कठिन हो, दृढ़ निश्चय सब बदल सकता है।
- अवसर हमारे आसपास ही होते हैं, बस उन्हें पहचानने की जरूरत है।
- नजरिया सकारात्मक हो और लक्ष्य स्पष्ट, तो साधारण पृष्ठभूमि भी असाधारण उपलब्धियों का आधार बन सकती है।

आज का दिन

9 मार्च, 1862

अमेरिकी गृह युद्ध के दौरान आयरनक्लेड्स मॉनिटर और वर्जीनिया (पूर्व में मेरिमैक) के बीच हैंपटन रोड्स के बंदरगाह पर लड़ाई हुई थी। इसने नौसैनिक युद्ध के एक नए युग की शुरुआत की थी।

- **1943 :** अमेरिकी शतरंज मास्टर बॉबी फिशर का जन्म शिकागो में हुआ था।
- **1945 :** अमेरिकी वायुसेना ने टोक्यो पर बम बरसाए थे।
- **1959 :** बार्बी (खिलौना गुड़िया) को मैटल इंक ने पहली बार अमेरिकी खिलौना मेले में प्रदर्शित किया था।
- **1996 :** अमेरिकी हास्य अभिनेता जॉर्ज बर्न्स का निधन हुआ था।

व्रत त्योहार

आज : चैत्र कृष्ण पक्ष षष्ठी।
कल : शीतला पूजन, वसंत ऋतु, सूर्य उत्तरायणे, दक्षिण गोले।
राहुकाल : दिन में 15.00 से 16.30 तक।

कल का पंचांग

विक्रमी संवत 2082, 19 फाल्गुन मास शक 1947, फाल्गुन मास 27 प्रविष्टे, 20 रमजान हिजरी 1447, चैत्र कृष्ण पक्ष सप्तमी 25.54 तक उपरांत अष्टमी, अनुराधा नक्षत्र 19.04 तक उपरांत ज्येष्ठा नक्षत्र, हर्षण योग 08.20 तक उपरांत वज्र योग, विष्टि (भद्रा) करण 12.40 तक उपरांत बव करण, चंद्रमा वृश्चिक राशि में दिन-रात।

■ सूर्योदय : 06.40
■ सूर्यास्त : 18.22
(भारतीय मानक समयानुसार)

amarujala.com/astrology

राशिफल

■ पं. विनोद त्यागी

मेष : पूर्व नियोजित कार्य पूर्ण होंगे। नौकरी प्राप्ति का अवसर मिल सकता है। व्यवसाय में लाभ होगा।

वृष : शासन-सत्ता का सहयोग मिलेगा। आर्थिक क्षेत्र में सावधानी बरतें। नौकरी में उन्नति हो सकती है।

मिथुन : नौकरी में उन्नति के संकेत मिलेंगे। भू-संपत्ति का सौदा करने से बचें। व्यवसाय में सामान्य लाभ होगा।

कर्क : धैर्य बनाए रखें। सहोदरों से निराशा होगी। कार्य क्षेत्र में दौड़-भाग रहेगी। बनता कार्य अटक सकता है।

सिंह : महत्वपूर्ण कार्य में सफलता मिल सकती है। अटके धन की प्राप्ति संभव है। व्यवसाय में धन लाभ होगा।

कन्या : सकारात्मक सोच बनाए रखें। नौकरी में स्थिति यथावत रहेगी। व्यवसाय में लाभ के अवसर मिलेंगे।

तुला : शुभ सूचना मिल सकती है। नौकरी में नूतन पद भार संभव है। व्यावसायिक निर्णय सोच-समझकर लें।

वृश्चिक : दिनमान प्रतिकूल रहेगा। नौकरी में नई परेशानी आ सकती है। विरोधी से बचें। व्यय अधिक होगा।

धनु : राजनीतिक क्षेत्र में प्रभाव बढ़ेगा। विकास के नए अवसर मिलेंगे। व्यवसाय में विस्तार और लाभ होगा।

मकर : मानसिक उलझन बनी रहेगी। परिवार के सदस्य के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी। नौकरी में सम्मान बना रहेगा।

कुंभ : दिनमान अनुकूल रहेगा। किसी परेशानी का समाधान संभव है। व्यवसाय में लाभ के अवसर मिलेंगे।

मीन : मानसिक तनाव से बचें। योजना में सफलता मिलेगी। व्यावसायिक लेन-देन में विशेष सावधानी बरतें।

जन्मदिन

दर्शील सफारी, अभिनेता

इस वर्ष परिश्रम करने पर योजनाओं में सफलता मिलेगी। आर्थिक दृष्टि से वर्ष अनुकूल रहेगा। आय वृद्धि का नया स्रोत बन सकता है। मकान या प्लॉट क्रय संभव है। परिवार में शुभ कार्य संपन्न होंगे। रोजगारपरक परीक्षाओं में अनुकूल सफलता मिलेगी। धैर्य बनाए रखें। आरोग्य सुख सामान्य रहेगा।

सुडोकू

						3		1
	5	2			6			
	3			7				
			5				2	3
1	8		2		9		5	7
5	2				7			
				4			9	
			7			8	3	
8		6						

सुडोकू 81 वर्गों का ग्रिड है, जो 9 वर्गों के ब्लॉक में बंटा हुआ होता है। कुछ वर्गों के अंक लिखे हैं और खाली वर्गों में 1 से लेकर 9 तक के अंक लिखने होते हैं। कोई नंबर 1 पंक्ति, कॉलम या 9 वर्ग वाले छोटे ब्लॉक में दोबारा नहीं आ सकता है।

उत्तर

7	6	8	9	5	2	3	4	1
4	5	2	3	1	6	7	8	9
9	3	1	8	7	4	2	6	5
6	4	7	5	8	1	9	2	3
1	8	3	2	6	9	4	5	7
5	2	9	4	3	7	6	1	8
3	7	5	6	4	8	1	9	2
2	1	4	7	9	5	8	3	6
8	9	6	1	2	3	5	7	4

डेली हेल्थ कैप्सूल

लौकी के साथ क्या खाएं, क्या नहीं?

आयुर्वेद और स्वास्थ्य विशेषज्ञों के अनुसार, लौकी के साथ कुछ चीजों का मेल सेहत के लिए हानिकारक हो सकता है।

लौकी एक स्वास्थ्यवर्धक सब्जी है। इसमें विटामिन ए, कैल्शियम, प्रोटीन, आयरन, फाइबर और एंटीऑक्सिडेंट्स होते हैं, जो हाई बीपी, डायबिटीज और पेट संबंधी रोगों में लाभ देते हैं। लौकी के साथ कुछ सब्जियों का सेवन पाचन क्रिया को खराब कर सकता है। फूलगोभी को पचने में ज्यादा समय लगता है और इससे गैस की समस्या हो सकती है। जिन लोगों को पहले से पेट की समस्याएं हैं, उन्हें लौकी के साथ फूलगोभी, बंदगोभी और ब्रोकली का सेवन नहीं करना चाहिए। जब आप करेले के साथ लौकी का सेवन करते हैं तो इसके कड़वेपन का पता नहीं चल पाता है। कड़वी लौकी सेहत के लिए नुकसानदायक हो सकती है। इसलिए लौकी का सेवन कर रहे हैं तो करेले से परहेज करें। लौकी के साथ खट्टे खाद्य पदार्थ (नींबू और खट्टे फल) नहीं खाने चाहिए। इससे पेट में दर्द और मरोड़ हो सकती है। लौकी के साथ डेयरी उत्पाद (दही और दूध) का सेवन भी नहीं करना चाहिए। इससे पेट की बीमारियां होने का खतरा बढ़ जाता है। इसके अलावा लौकी के साथ चुकंदर नहीं खाना चाहिए। इससे शरीर और चेहरे पर दाने हो सकते हैं।

क्या कहते हैं विशेषज्ञ

करेला, चुकंदर, दूध, खट्टी चीजें जैसे- नींबू, खट्टे फल और दही के साथ लौकी का सेवन करने से यह हानिकारक विरुद्ध आहार बन सकता है। इसलिए इनका लौकी के साथ सेवन करने से बचना चाहिए।
-नेहा पठानिया, आहार विशेषज्ञ

अशोभनीय विवाद

भारतीय राजनीति नए-नए विद्रूप रचने की अभ्यस्त हो चली है। शनिवार को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने पश्चिम बंगाल में अपने कार्यक्रम से जुड़ी जो टिप्पणी की, उसमें उनकी पीड़ा की अभिव्यक्ति देखने के बजाय राजनीति के बिंदु खोजने की चेष्टा हो रही है और इसकी जितनी भी निंदा की जाए, वह कम है। देश में अब कुछ ही सांविधानिक पद ऐसे हैं, जिनका सम्मान बचा हुआ है और इसे हर हाल में अक्षुण्ण रखा जाना चाहिए। हाशिये के समाज से आने वाली राष्ट्रपति जब पश्चिम बंगाल के बागडोगरा में आयोजित नौवें अंतरराष्ट्रीय संथाल सम्मेलन को संबोधित करने पहुंचीं, तब वहां की अव्यवस्था देखकर उनका निराशा व्यक्त करना लाजिमी था। राज्य की ममता बनर्जी सरकार को इसका तत्काल संज्ञान लेते हुए शालीन व्यवहार का परिचय देना चाहिए था, मगर दोषियों की पहचान और कार्रवाई करने के बजाय मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने महामहिम के उद्गार पर ही प्रश्न खड़े कर दिए? अपनी सोशल मीडिया पोस्ट में उन्होंने लिखा कि कार्यक्रम की आयोजक एक निजी संस्था थी और जिला सुरक्षा अधिकारियों ने मौके का मुआयना करने के बाद राज्य सरकार को जो सूचना दी थी, उसके बिना पर उनकी सरकार ने राष्ट्रपति सचिवालय को बाकायदा पत्र और टेलीफोन के जरिये अपर्याप्त तैयारी की सूचना दी थी, इसके बावजूद नियत समय पर कार्यक्रम किया गया।

ममता बनर्जी ने यह भी दावा किया है कि चूंकि मुख्यमंत्री उस कार्यक्रम की मंच योजना का हिस्सा नहीं थीं, इसलिए महामहिम के स्वागत के लिए उनका हैलीपैड पर उपस्थित न रहना प्रोटोकॉल का उल्लंघन नहीं है। मुख्यमंत्री के अपने तर्क हो सकते हैं, मगर राष्ट्रपति देश की प्रथम नागरिक हैं, किसी सियासी पार्टी से अब उनका कोई ताल्लुकात नहीं है, तो क्या यह शिष्टाचार का तकाजा नहीं था कि उनकी अगवानी के लिए प्रदेश के किसी वरिष्ठ मंत्री को अधिकृत किया जाता? ममता मंत्रिमंडल में 50 से भी अधिक मंत्री हैं। बहरहाल, यह अफसोसनाक बात है कि राष्ट्रपति की नाखुशी को अपने-अपने हक में भुनाने में भाजपा और तृणमूल कांग्रेस ने कोई वक्त नहीं गंवाया। भाजपा जहां इसे महामहिम के साथ-साथ देश-प्रदेश के आदिवासियों के अपमान का मुद्दा बनाने में जुट गई, तो वहीं तृणमूल ने उस पर पश्चिम बंगाल को बदनाम करने के लिए देश के सर्वोच्च पद को भी न बख्शने का आरोप जड़ दिया। जाहिर है, ममता अब इसे पश्चिम बंगाल की अस्मिता पर हमले से जोड़ने की कोशिश करेंगी।

देश में अब कुछ ही सांविधानिक पद ऐसे हैं, जिनका सम्मान बचा हुआ है और इसे हर हाल में अक्षुण्ण रखा जाना चाहिए। यह जिम्मेदारी पदधारकों पर भी आयद है।

बंगाल में आगामी दो महीने के भीतर विधानसभा चुनाव होने वाले हैं। यह चुनाव ममता बनर्जी के लिए तो 'करो या मरो' वाला है ही, भाजपा के लिए भी बेहद महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसके नतीजे का असर पूर्वोत्तर के अन्य राज्यों पर भी पड़ेगा। इसलिए पार्टी की पूरी कोशिश है कि वह अपने पिछले प्रदर्शन से बेहतर नतीजे लेकर आए। इधर देश के राजनीतिक दलों में जिस तरह से कटुता बढ़ी है, उसमें मर्यादित बयानों व शिष्ट व्यवहार की गुंजाइश लगातार कम होती जा रही है और यह बेहद चिंता की बात है। ऐसे में, शीर्ष सांविधानिक पदों पर बैठे लोगों से भी अपेक्षा की जाएगी कि उन्हें सार्वजनिक टिप्पणी करते हुए विशेष सावधानी बरतने की दरकार है, क्योंकि उसका राजनीतिक इस्तेमाल न सिर्फ उनकी छवि को प्रभावित करता है, बल्कि इससे पद की गरिमा को भी ठेस पहुंचती है। राष्ट्रपति, न्यायाधीशों और सैन्य अधिकारियों की प्रतिष्ठा हमारे लोकतंत्र की सबसे बड़ी थाती है। कम से कम इनको हमें बचाकर रखना होगा। यह जिम्मेदारी पदधारकों पर भी आयद है।

ईरान से बढ़ती हमदर्दी का इम्तिहान

यहां स्कैन करें

सुहेल वहीद | वरिष्ठ पत्रकार

जैसे-जैसे जंग बढ़ रही है, ज्यादातर इस्लामी देशों में अमेरिका और इजरायल का विरोध गहराता जा रहा है, क्योंकि जब-तब गैरजरूरी अमेरिकी दखलंदाजी से कई देश परेशान हैं।

ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजेशकियान ने पड़ोसी मुल्कों पर हमले के लिए खेद जताने के साथ-साथ यह भी कहा कि हमने सिर्फ अमेरिकी अड्डों को निशाना बनाया और हम उन पर तब तक हमले नहीं करेंगे, जब तक उनकी जमीन से हम पर हमला नहीं होता। ऐसे बयानों के जरिये पैगाम दिया जाता है। पड़ोसी मुल्कों में मौजूद अमेरिकी फौजियों के ठिकाने पर हमले बदस्तूर जारी हैं।

अमेरिका से ईरान की दुश्मनी का इतिहास पुराना है। पिछली सदी के पचास के दशक में भी ईरान के सत्ता-परिवर्तन में अमेरिका की बड़ी भूमिका थी। फिर, 1979 में इस्लामी क्रांति के दौरान तेहरान में अमेरिकी दूतावास के 52 लोगों को 444 दिनों तक बंधक बनाकर रखा गया था। इराक से जंग में सद्दाम हुसैन को ठिकाने लगाने के लिए अमेरिका ने भले ईरान का साथ दिया हो, पर ईरान हमेशा अमेरिका-विरोधी रहा है। ईरान के अलावा शायद ही कोई मुस्लिम देश हो, जो अमेरिका से इस तरह मोर्चा लेता रहा हो। तुर्की तो अपने यहां अमेरिकी परमाणु हथियार तक रखने देता है। पाकिस्तान को अमेरिका का पिट्ठू कहने में किसी को कोई झिझक नहीं। जाहिर है, अमेरिका से लोहा लेने का कलेजा मुस्लिम देशों में सिर्फ ईरान के पास है।

हाल ही में शहीद हुए ईरान के सर्वोच्च धार्मिक नेता अयातुल्ला खामेनेई ने एक बार कहा था, 'हमारे यहां बच्चों को सोने से पहले रात में लोरी नहीं, कर्बला सुनाई जाती है'। कर्बला वही जगह है, जहां यजीद की सेना ने इमाम हुसैन को उनके 72 निहत्थे साथियों के साथ मार दिया था। कर्बला अब इराक में है। इसी की याद में हर साल मोहर्रम मनाया जाता है। शिया मुसलमान इमाम हुसैन की शहादत पर मातम करते हैं, अंगारों पर चलकर, अपने को लहूलुहान करके इमाम हुसैन के साथ हुई नाइंसाफी और अपने दुख-दर्द का इजहार करते हैं।

मशहूर हिंदी उपन्यास *आधा गांव* में राही मासूम रजा लिखते हैं, 'मौला के लिए तो वे अपना सिर कटा सकती थीं। वे भी शिया औरतों की तरह यह अरमान किया करती थीं कि न हुई वे कर्बला में, वरना वे भी हम्माद को मौला पर निसार कर देतीं। ये शिया औरतें अपने बच्चों को निसार (न्योछावर) करने के ख्वाब जरूर देखती हैं।' शिया मुसलमान अपने मजहबी अनुष्ठानों और परंपराओं में अधिक कट्टर माने जाते हैं। उनके अंदर अपनी मजहबी मान्यताओं के लिए कुर्बानी देने का जज्बा कुछ ज्यादा होता है, जैसा राही मासूम रजा *आधा गांव* में बयान कर रहे हैं।

अयातुल्ला अली खामेनेई का एक वीडियो सोशल मीडिया पर इन दिनों वायरल है, जिसमें एक नन्हा ईरानी बच्चा उनसे कहता है कि वह शहीद होना चाहता है। खामेनेई उससे कहते हैं, 'पहले बड़े हो जाओ, खूब पढ़ो, वैज्ञानिक बनो, इस्लाम के लिए उपयोगी हो जाओ, अस्सी-नब्बे के हो जाओ, फिर शहीद हो जाना।' ईरान की फौजी ताकत, तेवर और तकनीक का शायद यही पसमंजर है। ईरान जितना मजहबी मामलों में कट्टर है, उतना ही विज्ञान और तकनीक में भी आगे है। शिया मुसलमानों की छवि वैसी 'आधुनिकता-विरोधी' की नहीं है, जैसी सुन्नी मुसलमानों की बनी हुई है। सऊदी अरब में क्राउन प्रिंस ने आधुनिकता की राह पकड़ी है, तो देवबंदी, बरेलवी, अहले हदीस फिरकों के मौलवी उन्हें कोई बहुत सराह नहीं रहे हैं।

अयातुल्ला खामेनेई की मौत पर शिया मुसलमानों के जैसे प्रदर्शन कश्मीर, लखनऊ, हैदराबाद में नजर आए; जैसे पिछले साल ईरान के इजरायल पर हमले के बाद खामेनेई के पोस्टर समेत दिख रहे थे; जैसे अक्सर मोहर्रम में नजर आते हैं, वैसे किसी सामाजिक मुद्दे पर शायद ही कभी नजर आए हों। आम तौर पर शिया मुसलमान किसी भी सामाजिक मुद्दे पर सुन्नियों के साथ सड़कों पर कम ही आते हैं। कुलीन गर्व-भाव से भरे शिया मुसलमान सिर्फ अपने मजहबी मामलों में सक्रियता दिखाने के लिए जाने जाते हैं।

ईरान शिया मुसलमानों का धुरी देश है। यह पूरी दुनिया का इकलौता मुस्लिम देश है, जो सैन्य, रक्षा, तकनीक, परमाणु कार्यक्रम से लेकर असलहों तक के मामले में अमेरिका पर कतई निर्भर नहीं है। हिज्बुल्लाह, हमास, यमन और हूती विद्रोहियों को वह असलहों और सैन्य तकनीक सप्लाई करता है। हिज्बुल्लाह को ईरान की संपत्ति कहा जाता है। ईरान के अलावा शिया बहुल देश इराक, अजरबैजान, कुवैत, बहरीन, जॉर्डन और अफगानिस्तान तक में 'शिया मिलिशिया' जैसे तेज-तर्रार मजहबी संगठन उभरकर सामने आए हैं, जो कथित रूप से ईरान के हाथों पाले-पोसे गए हैं।

पिछले वर्षों में हमास के इजरायल पर हमले, गाजा की दर्दनाक तबाही, हिज्बुल्लाह की लड़ाई, सीरिया के संकट, ईरान के परमाणु कार्यक्रम जैसे मुद्दों पर शिया मुसलमान आगे नजर आए हैं। तालिबान के उभरने, फिर वापस काबुल की सत्ता हासिल करने, ओसामा बिन लादेन व आईएसआईएस की परवरिश आदि में अमेरिका का हाथ रहा है। यह 'इस्लामिक आतंकवाद' के नाम से हिट हुआ, यह सुन्नी मुसलमानों का कारनामा था। बाकी मामलों में शिया मुस्लिम आगे रहे हैं।

जिस कालखंड में अरबों की रईसी ने आसमान छुआ, उसी दौर में ईरान कड़े आर्थिक प्रतिबंधों के कारण जूझता रहा है। स्वाभाविक रूप से उसे पड़ोस की खुशहाली अखर रही थी, जो उसी अमेरिका की बदौलत हासिल हुई थी, जिसने उसे तरसने पर मजबूर कर रखा था। पहले 1979, फिर 2018 और फिर 2023 में ईरान पर लगे कड़े आर्थिक प्रतिबंधों के खिलाफ मुस्लिम देशों में बेचैनी न के बराबर रही है। तब पड़ोसी अरब उसके लिए आगे नहीं आए, तो अब अरबों के बीच अमेरिकी चौधराहट के अड्डों पर चोट करने में उसे मुश्किल नहीं हो रही।

ज्यादातर मुस्लिम देशों समेत दुनिया के अधिकांश हिस्सों में अमेरिका और इजरायल का विरोध बढ़ता जा रहा है, क्योंकि जब-तब गैर-जरूरी दखलंदाजी से कई देश परेशान नजर आ रहे हैं। इस तरह ईरान को बिन मांगा वैचारिक सहयोग मिल रहा है। दरअसल, पश्चिम एशिया के देशों में आई खुशहाली, संचार व आधुनिक सुविधाओं के कारण मजहबी संकीर्ण विचारों की उपेक्षा बढ़ रही है। मशहूर शिया धर्मगुरु मौलाना कल्बे सादिक ने बीस बरस पहले लखनऊ की ईदगाह में सुन्नी इमाम के पीछे ईद की नमाज पढ़कर एक नई शुरुआत की थी, खाड़ी देशों में अब यह लगभग सामान्य हो चुका है। दुबई, कुवैत, अबू धाबी, रियाद, मनामा वगैरह में आधुनिकता की यूरोपीय शैली परवान चढ़ चुकी है, उसमें मजहबी विभाजन अब उनको मंजूर नहीं।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

विमान दुर्घटनाओं से सीखें उड़ान प्रशिक्षण संस्थान

यहां स्कैन करें

अंजुली भार्गव | नीति-विशेषज्ञ

हाल के दिनों में एक के बाद एक कई हवाई दुर्घटनाओं ने देश का ध्यान बरबस खींचा है। अभी-अभी असम में हुई सुखोई विमान दुर्घटना में वायु सेना के दो पायलटों की मौत हो गई। इससे पहले रांची के पास एक एयर एंबुलेंस के दुर्घटनाग्रस्त होने में मरीज समेत सात लोगों की मौत के मुंह में समा गए। इसके कुछ ही हफ्ते पहले बारामती (महाराष्ट्र) में चार्टर विमान के दुर्घटनाग्रस्त होने से राज्य के उप-मुख्यमंत्री अजित पवार समेत पांच लोगों की मौत हो गई थी। इससे पहले पिछले साल जून में अहमदाबाद में एअर इंडिया का विमान एक मेडिकल कॉलेज के भवन पर गिर गया था, जिसमें गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री विजय रूपाणी समेत 241 लोग मारे गए थे।

पिछले कुछ हफ्तों में भारत के उड़ान प्रशिक्षण संस्थानों (एफटीओ) व छोटे ट्रेनर-एयरक्राफ्ट से जुड़ी कई घटनाएं हुई हैं। इन पर लोगों का ध्यान नहीं गया, क्योंकि इनमें कोई मौत नहीं हुई थी। इसी साल जनवरी में इंडियावन एयर के सेसना ग्रैंड सी208बी एयरक्राफ्ट ने ओडिशा के राउरकेला में आपातकालीन लैंडिंग की थी। इसके अगले महीने रेडबर्ड फ्लाइट ट्रेनिंग एकेडमी द्वारा संचालित 50 साल से ज्यादा पुराना सेसना 172 ट्रेनर एयरक्राफ्ट कम फ्यूल के कारण कर्नाटक में अचानक लैंड कर गया। नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (डीजीसीए) ने चार दिनों के अंदर दो क्रैश रिपोर्ट के बाद साल 2023 में अकादेमी के सभी केंद्रों पर उड़ान प्रशिक्षण गतिविधियों को अनिश्चित काल के लिए निलंबित कर दिया था।

एक के बाद एक हवाई दुर्घटनाओं ने देश भर के लोगों को चिंतित किया है। हमारे एफटीओ लंबे समय से नियम तोड़ने के लिए कुख्यात रहे हैं।

कमांडर व पुराने इंस्ट्रक्टर का कहना है कि 1980 के दशक में उड़ान प्रशिक्षण के लिए भारत पसंदीदा जगह हुआ करता था। मद्रास, दिल्ली और देश के दूसरे फ्लाइंग क्लबों में श्रीलंका, ईरान, भूटान, जॉर्डन, मलेशिया समेत कई देशों के प्रशिक्षु आते रहते थे, पर 2000 के दशक की शुरुआत से यह प्रवृत्ति उलट गई है। अब भारतीय प्रशिक्षु श्रीलंका, फिलीपींस और यहां तक कि दूर के मोंटेनीग्रो में प्रशिक्षण लेने जा रहे हैं। असल में, देश में हर साल जारी हो रहे प्रति 1,000 वाणिज्यिक पायलट लाइसेंस में से 700 उन लोगों को मिल रहे हैं, जिन्होंने भारत के बाहर अपना प्रशिक्षण पूरा किया है।

मई 2025 में एफटीओ एयरक्राफ्ट दुर्घटना को लेकर जांच बोर्ड की रिपोर्ट में बताया गया कि पिछले 13 सालों में एफटीओ विमानों की 38 दुर्घटनाएं हुईं, जिनमें से 14 में प्रशिक्षुओं की मौत हुई। 2013 से 2016 तक पांच और 2017 में पांच दुर्घटनाएं हुईं। 2020 में कोरोना में उड़ानें बंद होने के बावजूद चार दुर्घटनाएं हुईं, जिनमें कई लोगों की जान गईं। 2022 में सात दुर्घटनाएं हुईं। विमानन उद्योग, डीजीसीए व नागरिक उड्डयन मंत्रालय के सूत्र मानते हैं कि ज्यादातर दुर्घटनाएं अनुशासन की कमी और तय मानक प्रक्रिया का पालन न करने की वजह से हुईं।

प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षुओं को परेशान करने और गलत बर्ताव करने के कई आरोप लगे हैं। एकल उड़ान या सॉर्टी के दौरान कॉकपिट में गैर-कानूनी लोगों के रहने की भी रिपोर्ट मिली हैं, जिसमें प्रशिक्षक और प्रशिक्षु बिना इजाजत के दोस्तों व परिवार के सदस्यों को हवाई सैर कराते हैं। साल 2022 में एक सुझाव आया था कि अनियमित एयरफील्ड में सीसीटीवी कैमरे लगाए जाएं। डीजीसीए ने जनवरी में सभी प्रशिक्षण विमानों के कॉकपिट में ऑन-बोर्ड ऑडियो और वीडियो रिकॉर्डिंग उपकरण लगाने को कहा है। डीजीसीए ने ऑपरेटरों को सही तरीके से फ्लाइट डाटा रिकॉर्ड करने की सलाह दी है, जिसमें कॉकपिट व एयर कंट्रोल टावर के बीच के संवाद रिकॉर्ड करना भी शामिल है। अक्तूबर 2025 से एफटीओ को अलर्ट रखने के लिए साल में दो बार उनकी रैंकिंग शुरू की गई है।

इतना सब कुछ कर लेने के बाद भी देखना बाकी है कि भारत में 60 केंद्रों पर पंजीकृत 380 एयरक्राफ्ट में से कितने नियामकों द्वारा तय 120 दिन की डेडलाइन के अंदर इसका पालन करेंगे। भारत के एफटीओ लंबे समय से नियम तोड़ने के लिए कुख्यात रहे हैं और ऑपरेटरों-अधिकारियों के बीच मजबूत गठजोड़ है। इस गठजोड़ को तोड़ने के लिए केवल परिपत्र जारी करने से कुछ होने वाला नहीं है, बल्कि इससे आगे बढ़कर और कड़े कदम उठाने की जरूरत है।

(ये लेखिका के अपने विचार हैं)

मनसा वाचा कर्मणा

पुरुष मुक्ति में नारी मुक्ति

शीर्षक पढ़कर थोड़ा आश्चर्य होगा। जिस नारी के संरक्षण के लिए इतने सारे कानून, संस्कृति और नैतिकता जैसी जंजीरें बनाई गई हैं, जिसकी रक्षा के लिए सरकार, समाज-रक्षक और धर्मगुरु दिन-रात चिंतित रहते हैं, वह तो मुक्त ही है। सच तो यह है कि पुरुष उससे बंधा हुआ है। यह जरा ज्यादती मालूम होगी, लेकिन नारी मुक्ति की ओर थोड़ी नई दृष्टि से देखते हैं।

नारी की रक्षा करनी है, तो किससे? क्या कोई जानवर उस पर आक्रमण कर रहे है? नहीं, उसे खतरा है मनुष्य के आधे हिस्से, यानी पुरुष से। पुरुष, यानी स्त्री का ही आधा अंग। प्रत्येक मनुष्य आधा पुरुष और आधी स्त्री है। ये दो प्रजातियां कैसे बन गईं? जब लड़की पैदा होती है, तो मानो कोई समस्या पैदा होती है। ध्यान रहे, समस्या स्त्री नहीं है, पुरुष की हवस या उसका अहंकार समस्या है। चिंता करनी है, तो इस बात की करनी चाहिए कि पुरुष स्त्री के शरीर से इतना बंधा हुआ क्यों है? कितना ही विद्वान हो, कितना ही सम्मानित हो, स्त्री उसके लिए एक ही मायने रखती है, एक भोग्य वस्तु। दरअसल, पुरुष अपनी ही कामुकता से पराजित है। वह उसके ऊपर नहीं उठ पाता और इसके लिए स्त्री को दोषी ठहराता है।

पुरुष की कामुकता यदि रचनात्मक दिशा में विकसित हो, उसमें प्रेम, हार्दिकता और संवेदनशीलता विकसित हो, तो वह जाने कि स्त्री केवल शरीर नहीं है, उसमें और कई आयाम हैं। स्त्री के व्यक्तित्व के और तल भी हैं, जिनसे जुड़कर वह स्त्री से मित्रवत व्यवहार कर सकता है, लेकिन वह चाहता है कि स्त्री हर तल पर उससे छोटी रहे। यह अहंकार पुरुष को विकसित नहीं होने देता। स्त्री को इनकार करने के चक्कर में उसने अपने भीतर की स्त्री को भी नकार रखा है। अपने स्त्रैण गुणों को कमजोर मानकर दबा दिया है। अपने आंसू, अपनी कोमलता, भावुकता, श्रद्धा, सहजता, प्रेम भाव, बहुत कुछ वह खो बैठा है, इसीलिए कठोर हो गया है।

ओशो की बात कड़वी लगेगी, लेकिन सच है। उनके देखे पुरुष कितना ही बाहुबली हो, एक काम नहीं कर सकता, जिसके लिए वह स्त्री के सामने हीन अनुभव करता है: वह बच्चे को जन्म नहीं दे सकता। कल्पना करें, जब पहली बार आदि मानव ने स्त्री के शरीर से एक नया जीवन पैदा होते देखा होगा, तब वह किस आश्चर्य और भय से गुजरा होगा। एक जादू-सा लगा होगा। यह जादू वह नहीं कर सकता, सो उसने इस जादूगरनी को दबाना शुरू कर दिया। मनोवैज्ञानिक इसे हीनता-ग्रंथि कहते हैं, जो एक मानसिक रोग है। अगर इस रोग से पुरुष मुक्त हुआ, तो ही वह शरीर से ऊपर उठ पाएगा और स्त्री को एक व्यक्ति की तरह देख पाएगा। स्त्री और पुरुष, दोनों एक साथ मुक्त हो सकेंगे।

स्त्री को इनकार करने के चक्कर में पुरुष ने अपने स्त्रैण गुणों को दबा दिया है। अपने आंसू, अपनी कोमलता, भावुकता, श्रद्धा, सहजता, प्रेम भाव, बहुत कुछ वह खो बैठा है।

अमृत साधना

द्रौपदी मुर्मु | राष्ट्रपति

एकता और विश्वास वे आधारशिलाएं हैं, जिन पर एक शक्तिशाली राष्ट्र खड़ा होता है। जब समाज में आपसी भरोसा बढ़ता है, तब लोग व्यक्तिगत लाभ से ऊपर उठकर साझा लक्ष्य की प्राप्ति के लिए मिल-जुलकर काम करते हैं।

हिन्दुस्तान Hindustan | 75 साल पहले 09 मार्च, 1951

जफरुल्ला की वकालत

पाकिस्तान के विदेश मंत्री श्री जफरुल्ला खां एक कुशल वकील हैं। वह न्यायाधीश भी रह चुके हैं, किन्तु न्यायाधीश की मनोवृति को उन्होंने उठाकर ताक में रख दिया है। वकील भी वह ऐसे हैं, जो स्याह को सफेद और सफेद को स्याह बनाने का हौसला रखते हैं। यह दूसरी बात है कि ऐसी कोशिश कम ही सफल होती है।

कश्मीर के बारे में उन्होंने सुरक्षा परिषद के सामने एक बार फिर लम्बा चौड़ा भाषण दिया है और लेकसक्सेस में लम्बे भाषणों का रिकॉर्ड तोड़ दिया है। उन्होंने सदा की भांति घटनाओं को तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत किया है और उनके आधार पर मनमाने नतीजे निकाले हैं। एंग्लो-अमरीकी प्रस्ताव को वह काफी नहीं समझते और यह जानते हुए भी कि भारत उसे ठुकरा चुका है, वह चाहते हैं कि सुरक्षा परिषद एक सर्वसत्ताधारी संयुक्त राष्ट्रीय प्रतिनिधि नियुक्त करे, जिसे सभी संबंधित पक्षों की फौजों को हटाने अथवा भंग करने, राज्य की हुकूमतों पर पूरा अंकुश रखने, संबंधित पार्टियों के मतभेद संबंधी तमाम मुद्दों पर पंच फैसला देने और जनमत संग्रह कराने के लिए तमाम आवश्यक कार्रवाई करने का अधिकार हो। श्री जफरुल्ला यह भी चाहते हैं कि काश्मीर में संविधान सभा नहीं बुलाई जाये। पाकिस्तान के एंग्लो-अमरीकी मित्रों ने उसे खुश करने के लिए बहुत कुछ किया है, किन्तु वे यह अच्छी तरह से जानते हैं कि समस्या का कोई भी हल जबर्दस्ती नहीं थोपा जा सकता।

अमरीकी प्रतिनिधि ने सुरक्षा परिषद में इस तथ्य को स्वीकार भी किया, जब उसने कहा कि हम दोनों पक्षों की सहमति से समस्या का हल खोजने की कोशिश कर रहे हैं।... अब जबकि भारत उसे अस्वीकार कर चुका है, सुरक्षा परिषद को या तो इस प्रस्ताव से उन अंशों को निकाल देना होगा, जिन्हें भारत आपत्तिजनक समझता है या यह मान लेना होगा कि वह ऐसा कोई हल पेश नहीं कर सकती, जो दोनों पक्षों को स्वीकार्य हो। वर्तमान परिस्थिति में सुरक्षा परिषद के लिए और कोई श्रेयस्कर मार्ग नहीं हो सकता कि वह इस समस्या को हल करने का भार दोनों पक्षों पर छोड़ दे। समस्या का खूब अध्ययन करने के बाद और समझौते की तमाम कोशिशें कर चुकने के बाद संयुक्त राष्ट्रीय प्रतिनिधि सर ओवन डिक्सन भी इसी नतीजे पर पहुंचे थे।

बिहार में एक युग का अंत होने जा रहा

अनुलोम-विलोम

नीतीश कुमार

नीतीश कुमार ने बिहार में अपने नेतृत्व के अंत की पटकथा लिख दी! इससे बड़ा सच यह है कि उनके नेतृत्व की पटकथा पूरी हुई। इसका लेखक अनाम भी नहीं है। बिहार विधानसभा चुनाव के कुछ महीने पहले मुजफ्फरपुर में मोहन भागवत ने कहा था, 'दुर्भाग्य लंबे समय तक नहीं रहता।' तभी मैंने इसे चिह्नित किया था। सवाल था, जब सत्ता में नीतीश व भगवा दल साथ थे, 20 वर्षों में लगभग 15 साल साथ रहे, तब मोहन भागवत आखिर किस दुर्भाग्य की बात कह रहे थे? वह दुर्भाग्य था, लालू-नीतीश का नेतृत्व। सवर्णों की सत्ता का कमजोर या दोयम होना, इसीलिए मोहन भागवत ने बिहार चुनाव का एजेंडा दिया था और उस पर संघ-भाजपा के नेता काम कर रहे थे।

तो अब लालू-नीतीश युग का अंत हुआ? क्या अंत की ओर एक प्रस्थान शुरू हो गया? हां, बिल्कुल। 2022 की सर्दियों में कुछ भाजपा विधायकों के बीच तत्कालीन प्रदेश अध्यक्ष के मुंह से मैंने सुना था कि नीतीश कुमार 'अस्वस्थ' हैं। तब से इसे लगातार प्रचारित-प्रसारित किया जाता रहा। नीतीश कुमार की सेहत ठीक नहीं है, लेकिन अभी उनकी सेहत वजह नहीं है। 'हुआ क्या' का विवरण तो राजनीति में कुछ महीनों, सालों के बाद आता है, मगर अभी का सच यही है कि नीतीश विदा ले रहे हैं।

तो कैसे याद किया जाएगा उनको? अभी तो वह राज्यसभा जा रहे हैं, यानी पारी जारी है, लेकिन बिहार में 20 से 21 वर्षों के अपने मुख्यमंत्री काल और उसके पहले के समय में वह कैसे दर्ज होंगे, इसे समझने के लिए पूरी किताब की जरूरत होगी। विश्लेषण के पैमाने कई होंगे- राज्य में संरचनात्मक विकास, समावेशी विकास, कानून-व्यवस्था, सांप्रदायिकता, स्त्री पक्षधरता- उसका रूप, सामाजिक न्याय का कालचक्र आदि। क्या वह एक परास्त योद्धा की तरह होंगे, घनानंद होंगे या फिर मौर्य होंगे? नीतीश कुमार के राजनीतिक फैसलों के मूल्यांकन के लिए कुछ काल-बिंदु हैं- दिल्ली का बिहार भवन कांड, 2005 में सत्ता हस्तांतरण, 2010 में भाजपा से टकराव, 2017 में भाजपा के साथ साझेदारी, 2022 में भाजपा से पुनः मुकाबला, 2023-24 में 'इंडिया' ब्लॉक के घटनाक्रम और पुनः भाजपा के साथ शरणागत होना। कहने का अर्थ यह है कि नीतीश कुमार के हिस्से में और भी स्टेटमेंट बाकी हैं। हालांकि, एक कथन मैं आपको दे रहा हूं। विपक्ष की एक विधायक ने मुझसे कहा, 'नीतीश जी यदि अस्वस्थ हैं भी, तो हम महिलाओं के लिए काम करते हुए ही वह बीमार हुए न?' स्पष्ट है, यह कथन किसी लाभ की उम्मीद से नहीं कहा गया था।

संजीव चंदन, पत्रकार

राज्यसभा में काम आएगा उनका अनुभव

नीतीश कुमार के राज्यसभा में आने से उनके लंबे प्रशासनिक और राजनीतिक अनुभव का लाभ राष्ट्रीय स्तर पर मिल सकता है। संसद के उच्च सदन में उनकी उपस्थिति नीति-निर्माण और महत्वपूर्ण राष्ट्रीय मुद्दों पर सार्थक चर्चा को दिशा दे सकती है। कई बार मुख्यमंत्री और केंद्रीय मंत्री के रूप में काम करने के कारण उन्हें शासन-प्रशासन, विकास नीतियों और संघीय ढांचे की गहरी समझ है। इसलिए, राज्यसभा में उनकी भागीदारी राष्ट्रीय मुद्दों पर संतुलित और व्यावहारिक दृष्टिकोण पेश करने में सहायक हो सकती है। साथ ही, वह यदि राज्य की सक्रिय राजनीति से थोड़ा पीछे हटते हैं, तो बिहार में नए नेतृत्व को उभरने का अवसर मिल सकता है। इससे पार्टी संगठन में नई पीढ़ी के नेताओं को आगे आने और जिम्मेदारी संभालने का मौका मिलेगा। राज्यसभा के मंच से वह बिहार के विकास, बुनियादी ढांचे, निवेश, शिक्षा और रोजगार से जुड़े मुद्दों को राष्ट्रीय स्तर पर प्रभावी ढंग से उठा सकते हैं। उनके अनुभव और राजनीतिक समझ से केंद्र और राज्यों के बीच बेहतर समन्वय बनाने में भी सहायता मिल सकती है।

राज्यसभा जैसे सदन में अनुभवी नेताओं की उपस्थिति सदन की गरिमा और गुणवत्ता बढ़ाती है। संसद में होने वाली बहसें केवल राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप तक सीमित न रहकर नीति और शासन के व्यावहारिक पहलुओं पर भी केंद्रित हो सकती हैं। नीतीश कुमार कई महत्वपूर्ण विषयों- जैसे ग्रामीण विकास, सामाजिक न्याय, शिक्षा सुधार और बुनियादी ढांचे के विस्तार पर अपने विचार रख सकते हैं, जिससे नीति-निर्माण की प्रक्रिया अधिक समृद्ध हो सकती है। एक और सकारात्मक पहलू यह है कि वह लंबे समय तक राज्य और केंद्र, दोनों स्तरों पर काम कर चुके हैं, इसलिए उन्हें भारतीय राजनीति की जटिलताओं की गहरी समझ है। राज्यसभा में उनका यह अनुभव कई राष्ट्रीय मुद्दों पर संतुलन और व्यावहारिक समाधान खोजने में सहायक हो सकता है। आज के समय में जब राजनीतिक मतभेद तीखे हो चले हैं, तब ऐसे नेताओं की आवश्यकता महसूस होती है, जो संवाद और सहमति की राजनीति को बढ़ावा दे सकें।

साफ है, किसी अनुभवी और लंबे समय तक शासन का अनुभव रखने वाले नेता का राज्यसभा में होना लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए लाभकारी हो सकता है। इससे संसद में अनुभव व व्यावहारिक समझ का संतुलन बना रहता है और नीति-निर्माण की प्रक्रिया अधिक परिपक्व और दूरदर्शी बन सकती है। इसलिए, नीतीश कुमार का राज्यसभा आना राष्ट्रीय राजनीति के लिए एक सकारात्मक कदम साबित हो सकता है।

मुनीष भाटिया, टिप्पणीकार

अपनी प्रतिभा दुनिया से न छिपाएं

अक्सर हम चाहकर भी कुछ नया रच नहीं पाते। कदम उठाने की कोशिश करते ही कई तरह के डर सिर उठाने लगते हैं। दुनिया क्या कहेगी? क्या हम सफल होंगे? ऐसी ही कई बातें सोचकर हम अपनी कला को सीमित कर लेते हैं। डर हमेशा इस बात का संकेत नहीं होता कि हमें रुकने की जरूरत है। डर वह कीमत है, जो कुछ नया रचने जा रहे हर रचनाकार को चुकानी पड़ती है। यहां जानते हैं अपने डर को जीतने के कुछ मंत्र-

जेम्स क्लियर
अमेरिकी लेखक और वक्ता। निरंतर सुधार पर जोर। 'एटॉमिक हैबिट्स' उनकी चर्चित किताब है।

दुनिया के सामने अपने लिखे हुए को लाने से पहले, मैं एक साल से अधिक समय तक उन्हें निजी फोल्डर में रखता था। मेरे पास इसके पीछे कई कारण और बहाने थे, जिनसे मैं खुद को यह समझाया करता था कि अभी लेख दूसरों से साझा करने का सही समय नहीं है। असल में, उसकी केवल एक वजह थी, वो है मेरा- डर। उस समय मुझे यह एहसास नहीं था कि डर का मतलब यह नहीं कि हम कुछ गलत काम कर रहे हैं या हमें रुक जाने की जरूरत है। दरअसल, डर वह 'कीमत' है, जो हर कलाकार को सार्थक काम करने की राह में चुकानी ही पड़ती है।

यह ठीक है कि हम जो भी सोचते हैं, लिखते हैं या बनाते हैं, उस हरेक चीज को साझा करने की जरूरत नहीं होती। आज अपनी बात कहने के लिए हर किसी के पास ढेर सारे मंच हैं, बहुत सारा व्यर्थ का शोर और सूचनाएं हमारे चारों ओर हैं। इसके बावजूद, अगर आपके भीतर कोई ऐसी कहानी है, जो कही जानी चाहिए, तो मेरा मानना है कि आपको उसे साझा करना चाहिए। यदि आपके पास कोई ऐसा विचार है, जिसे आप आकार देना चाहते हैं, तो आपको उसके लिए कोशिश करनी चाहिए। यदि आपका कोई ऐसा सपना है, जो दुनिया को थोड़ा भी बेहतर बना सकता है, तो यह आपकी जिम्मेदारी है कि आप उसे सभी तक पहुंचाएं।

हर कलाकार को डर, आत्म-संदेह, अनगिनत सवालों और भावनाओं के उतार-चढ़ाव भरे 'रोलर कोस्टर' से गुजरना पड़ता है। यहां दुनिया के कुछ महान कलाकारों और विचारकों के नजरिये से समझते हैं कि भीतर के डर को कैसे जीता जा सकता है-

डर को एक संकेत समझें

'क्या आप डर के मारे सुन्न पड़ गए हैं? तो यह एक अच्छा संकेत है। आत्म-संदेह की तरह, डर भी एक सूचक है। यह बताता है कि हमें वास्तव में क्या करना चाहिए, वो बात हमारे लिए कितना मायने रखती हैं। एक बुनियादी नियम याद रखें- हम किसी काम से जितना अधिक डरते हैं, हम उतने ही अधिक निश्चित हो सकते हैं कि हमें वह काम करना ही है। हम जिसे 'प्रतिरोध' कहते हैं, उसका अनुभव डर के रूप में ही होता है। हमारे डर की तीव्रता ही हमारे प्रतिरोध की ताकत को दर्शाती है। किसी विशिष्ट कार्य को लेकर हम जितना प्रतिरोध महसूस करते हैं, वह कार्य हमारे विकास के लिए उतना ही जरूरी है।'

- स्टीवन प्रेसफील्ड, अमेरिकी लेखक, द वॉर ऑफ आर्ट

> सफलता से अधिक जरूरी है काम की शुरुआत कर देना। एक कदम उठाने के बाद तरक्की के दूसरे अवसर भी नजर आने लगते हैं।

छोटी शुरुआत से बढ़ाएं हौसला

'हमें खुद से यह पूछना चाहिए कि छोटे-बड़े कौन से काम हैं, जिनमें हम महारत हासिल कर सकते हैं? ऐसे कौन से काम हैं, जो आप करने से डरते हैं, पर कुछ लोगों के सामने उसे करते हुए अपने डर के साथ तालमेल बिठाना सीख सकते हैं? एक बार जब ऐसा करने में कामयाब हो जाते हैं, तो हमें एहसास होता है कि यह इतना भी डरावना नहीं है। यही विचार सबसे महत्वपूर्ण है। इसके बाद आप धीरे-धीरे आगे कदम बढ़ा सकते हैं।'

-सेठ गोडिन, लेखक, एक इंटरव्यू में

मानसिक मजबूती एक कौशल है। किसी भी अन्य कौशल की तरह इसे सीखा जा सकता है। अपने डर पर विजय पाना, एक नई आदत विकसित करने जैसा है। छोटी शुरुआत करें और आगे बढ़ते रहें।

> खुद को खारिज करना आपका काम नहीं है। आपका काम है- निर्माण करना, उसे दूसरों से साझा करना। अपने डर पर विजय पाते हुए आगे बढ़ना।

दहाड़ की ओर दौड़ें

'जब आप कुछ करने के बारे में सोच रहे हों और वह डरावना लगे, ऐसा महसूस हो कि उस पार सीमा पर एक खूंखार शेर आपका इंतजार करते हुए दहाड़ रहा है, तब आपको बिना झिझके उस शेर की तरफ, उस दहाड़ की ओर दौड़ना चाहिए।'

-टीना एसमेकर, लेखिका, सर्टिफाइड कोच

यह संभव है कि जो काम आप करें, वे लोगों को कम पसंद आए। पर, खुद को खारिज करते हुए काम ही न करना, ज्यादा बड़ा अपराध है। अपने हुनर को भीतर दबाए रखने से बेहतर है, लोगों की आलोचना सहते हुए अपना काम करना।

सही समय का इंतजार छोड़ें

'मुझे लगता है कि जीवन में पूरी तरह माहिर होने का इंतजार करना एक भयानक बात है। वास्तव में कोई भी कभी भी किसी काम के लिए पूरी तरह तैयार नहीं होता। जो है वर्तमान है। बेहतर है कि कदम उठाएं और खुद में सुधार करते हुए आगे बढ़ते रहें। मैं यहां बिना सोचे-समझे जोखिम लेने की बात नहीं कर रहा। बस इतना कह रहा हूं कि किसी भी काम के लिए 'वर्तमान' समय किसी भी दूसरे समय जितना ही अच्छा है।'

- ह्यू लॉरी, मशहूर अभिनेता व कॉमेडियन

हम पूरी तरह परफेक्ट शायद ही कभी हो पाते हैं। किसी काम को शुरू करने के लिए किसी की अनुमति का इंतजार न करें। कोई भी आपको थपथपाने, नियुक्त करने या चुनने नहीं आएगा और न ही यह कहेगा कि 'अब, तुम तैयार हो।' आप स्वयं को अनुमति दें।

संघर्ष ही पुरस्कार

'जिन मनुष्यों से मुझे जरा भी सरोकार है, उनके लिए मैं दुख, वीरानी, बीमारी और अपमान की कामना करता हूं। मैं चाहता हूं कि वे गहरे आत्म-तिरस्कार, आत्म-संदेह की यातना और पराजित होने की दयनीयता से अपरिचित न रहें। मुझे उन पर दया नहीं आती, क्योंकि मैं उनके लिए वही एक चीज चाहता हूं, जो आज यह सिद्ध कर सकती है कि किसी मनुष्य में वह असल मूल्य है या नहीं, यानी कठिनाई सहते हुए टिके रहने की क्षमता।'

-नीत्शे, दार्शनिक व लेखक, द विल टू पावर

आत्म-संदेह, भय और टालमटोल के बावजूद आगे बढ़ते रहने का अवसर हमारे लिए आत्म-खोज के सबसे बड़े अवसरों में से एक है। सृजन की प्रक्रिया में ही हम यह जान पाते हैं कि हम वास्तव में कौन हैं। भीड में खड़े होकर निर्णय देने के बजाय अखाड़े में उतरिए। आप जीतें या हारें- संघर्ष ही सबसे बड़ा पुरस्कार है।

jamesclear.com

काम की बात

तनाव के पलों में खुद को कैसे संभालें

अक्सर मुसीबत और तनाव के पलों में हमारी अच्छी आदतें भी साथ छोड़ने लगती हैं। हम खुद को कोसते रहते हैं। ऐसे पलों में हमें खुद को स्वीकारने की जरूरत होती है। हम जहां हैं, जैसे हैं, वहां सहज होना ही हमें आगे बढ़ाता है।

1 वक्त की जरूरत समझें

हम अक्सर अपनी छोटी-मोटी भूलों, जैसे- मोटर बंद करना भूल जाना या चाबियां खो देना आदि के लिए खुद को कोसते रहते हैं। साइकोलॉजी टुडे के लेख में लेखिका एलिस बॉयस कहती हैं, 'ये गलतियां हमेशा आपकी लापरवाही या आलस का नतीजा नहीं होतीं। ऐसा मानसिक थकान के कारण भी हो सकता है। तनाव के पलों में ऐसी गलतियां और बढ़ जाती हैं।

■ **क्या करें:** यह स्वीकार करें कि आप कुछ कारणों से पहले से बहुत थके हुए हैं। रोज के अनुशासन को बनाए रखने की जिद न करें। खुद के प्रति सख्त न बनें। अपने मानसिक बोझ को कम करने पर ध्यान दें।

2 इच्छाशक्ति की सीमा स्वीकारें

व्यवहार मनोविज्ञान में 'हैबिट स्टैकिंग' (एक पुरानी आदत के साथ नई आदत जोड़ना) बहुत लोकप्रिय है, लेकिन जब आपकी मानसिक ऊर्जा कम होती है, तो यह तकनीक भी फेल हो जाती है। एक काम के साथ दूसरा काम जोड़ना आपके बोझ को और बढ़ा देता है।

■ **क्या करें:** कठिन समय में बड़े जोखिम उठाने के बजाय 'नुकसान कम' करने पर ध्यान दें।

3 खुद से नरमी से पेश आएं

मनोवैज्ञानिक क्रिस्टिन नेफ कहती हैं, 'खुद की कमियां जानना अच्छी बात है, पर हर समय खुद को कोसते रहना हमें पंगु बना देता है। अगर आपकी बनाई हुई व्यवस्था या योजना फेल हो रही है, तो खुद को कोसने के बजाय एक दयालु 'मेंटोर' की तरह सोचें।'

■ **क्या करें:** सुधार को एक घटना नहीं, बल्कि एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया मानें। हर चीज को अपनी व्यक्तिगत हार न बनाएं।

4 सब परफेक्ट हो, जरूरी नहीं

अक्सर हम छोटी-छोटी समस्याओं पर बहुत सारी ऊर्जा और संसाधन खपा देते हैं। मामूली समस्याओं को जटिल ढंग से सुलझाते हैं या फिर एक परफेक्ट समाधान ढूंढने के चक्कर में कुछ करते ही नहीं। ऐसे में वे काम जो हम कर सकते थे, वे भी अधूरे रह जाते हैं। जब आप किसी निर्णय को लेकर दुविधा में हों और 'सर्वश्रेष्ठ' नहीं चुन पा रहे हों, तो सोचने का तरीका बदलना जरूरी हो जाता है। किसी काम को टालते रहना सबसे बुरा विकल्प है। इससे बेहतर है कि आप एक औसत दर्जे का कदम उठा लें।

■ **क्या करें:** तनाव के पलों में अपने जरूरी काम पर ध्यान दें। चीजों को सुलझाने पर अपना फोकस बनाएं। सबसे खराब विकल्पों को सूची से हटाते हुए जो सबसे बेहतर समझ आए, उसके साथ काम को निपटाते हुए आगे बढ़ें।

दिमाग को तरोताजा बनाए रखने के आसान तरीके

जिस तरह व्यायाम हमारे शरीर को मजबूत बनाता है, उसी तरह नई चुनौतियां हमारे दिमाग को धार देती हैं। हमारा मस्तिष्क जितना सक्रिय रहता है, उतना ही बेहतर ढंग से काम करता है। रोज के कामों को दिमागी कसरत में कैसे बदला जा सकता है, आइए जानें...

हाथों के इशारों का जादू

हमारे हाथों की मुद्राएं बहुत कुछ कहती हैं। विशेषज्ञों के अनुसार, हाथों का इस्तेमाल महज बॉडी लैंग्वेज नहीं है। ऐसा करना दिमाग के ब्रोका क्षेत्र को सक्रिय करता है। यह दिमाग का वह हिस्सा है, जो बोलने और विचारों को शब्दों में ढालने में मदद करता है। इसके अलावा मोटर कॉर्टेक्स क्षेत्र पर भी इसका असर पड़ता है। वह क्षेत्र, जो हमारे चलने, मुस्कराने व हाथ हिलाने जैसी गतिविधियों से जुड़ा है।

■ **लाभ:** बात करते समय हाथों को सक्रिय रखना, मस्तिष्क के व्यायाम का मौका बन सकता है। याददाश्त बेहतर होती है, जटिल विचारों को व्यक्त करना आसान हो जाता है।

पीछे की ओर चलें, मगर संभलकर

चलना दिमाग समेत पूरे शरीर का अच्छा व्यायाम है। विशेषज्ञ इन दिनों बैकवर्ड वॉकिंग पर भी जोर दे रहे हैं। सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए कुछ कदम पीछे चलना, एक चुनौतीपूर्ण व्यायाम की तरह है। ऐसा करते हुए हमारे दिमाग का सेरिबैलम और प्री फंटल कॉर्टिक्स सक्रिय रहता है। इन दोनों हिस्सों का हमारे शरीर के संतुलन को बनाए रखने में योगदान होता है।

■ **लाभ:** कुछ कदम पीछे की ओर चलने से शारीरिक संतुलन बेहतर होता है और एकाग्रता बढ़ती है। यह अभ्यास हमेशा सुरक्षित और समतल जगह पर ही करें।

कम सक्रिय अंगों का भी इस्तेमाल करें

अगर आप दाएं हाथ से काम करते हैं, तो कभी-कभी कुछ आसान काम बाएं हाथ से करें। अगर आप हमेशा सीधा पैर पहले आगे बढ़ाते हैं, तो पहले बायां पैर आगे बढ़ाएं। इसी तरह, दूसरे हाथ से ब्रश करें। इससे शरीर के कम सक्रिय रहने वाले हिस्से से जुड़े दिमाग के हिस्से सक्रिय होंगे।

■ **लाभ:** मनुष्य के तंत्रिका तंत्र की विशेषता है कि हमारे मस्तिष्क का दायां हिस्सा, शरीर के बाएं हिस्से की गतिविधियां नियंत्रित करता है और बायां हिस्सा शरीर के दाएं हिस्से को। कम सक्रिय अंगों से काम करना, दिमाग के दोनों तरफ के हिस्सों को सक्रिय रखता है।

नई भाषा में गुनगुनाएं

किसी विदेशी भाषा का गाना सीखना केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि 'होल-ब्रेन वर्कआउट' है। विदेशी शब्द और धुन मिलकर हमारे सुनने, बोलने और भावनात्मक केंद्रों को एक साथ 'सिंक्रोनाइज' करते हैं। इसी तरह, कोई नया काम सीखना, नए शब्दों का अभ्यास करना, दिमाग में नए न्यूरॉन्स बनाता है।

■ **फायदा:** यह संज्ञानात्मक कार्यों को बढ़ावा देता है और मूड को बेहतर बनाकर तनाव कम करने में मदद करता है। नए न्यूरॉन्स दिमाग को उत्पादक बनाए रखते हैं। दिमाग एक मांसपेशी की तरह है, हम उसका जितना इस्तेमाल करते हैं, वह उतना मजबूत बनता है।

परिवेश को विस्तार से बताएं

अपने आसपास की चीजों को केवल देखें नहीं, बल्कि बारीकी से उन्हें देखें। मन ही मन या उनके बारे में दूसरों को बताते समय उस चीज के बारे में, विस्तार से बताएं। उस चीज के आसपास क्या था, यह भी बताएं। यह प्रक्रिया आपके 'विजुअल कॉर्टेक्स' (देखने की क्षमता) और 'भाषा नेटवर्क' (वर्णन करने की क्षमता) को सक्रिय रखती है।

■ **फायदा:** इस बात के नियमित अभ्यास से आपकी अवलोकन शक्ति बेहतर होती है। किसी भी घटना को लंबे समय तक याद रखने की क्षमता बढ़ती है। यह एक तरह से सजगता का अभ्यास भी है।

रोजनामचा

पं. राघवेन्द्र शर्मा
ज्योतिषाचार्य

स्कैन करें
भविष्यफल और व्रत-त्योहार जानने के लिए

मेष: मन में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। पिता की सेहत का ध्यान रखें। परिवार का साथ मिलेगा। कारोबार के लिए विदेश यात्रा लाभप्रद रहेगी।

वृष: मन परेशान हो सकता है। नौकरी में कार्यक्षेत्र में बदलाव हो सकता है। परिश्रम अधिक रहेगा। किसी मित्र के सहयोग से कारोबार में लाभ के अवसर मिलेंगे।

मिथुन: मन प्रसन्न रहेगा। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। कारोबार में वृद्धि होगी। भागदौड़ अधिक रहेगी। मित्रों का सहयोग भी मिल सकता है।

कर्क: आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। घर में धार्मिक कार्य हो सकते हैं। भवन के रख-रखाव तथा साज-सज्जा के कार्यों पर खर्च बढ़ेंगे। शैक्षिक कार्यों में व्यवधान आ सकता है।

सिंह: आत्मविश्वास भरपूर रहेगा, परंतु संयत रहें। क्रोध के अतिरेक से बचें। नौकरी में बदलाव के साथ तरक्की के अवसर मिल सकते हैं।

कन्या: मन परेशान रहेगा। आत्मसंयत रहें। बेकार के क्रोध से बचें। कारोबार में बदलाव के योग बन रहे हैं। परिवार व मित्रों का सहयोग मिलेगा। लाभ के अवसर मिलेंगे।

तुला: आत्मविश्वास में कमी रहेगी। मन में उतार-चढ़ाव भी हो सकते हैं। माता की सेहत का ध्यान रखें। पिता का सान्निध्य मिलेगा। खर्चों में वृद्धि होगी।

वृश्चिक: आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। परिवार के साथ किसी धार्मिक स्थान पर जा सकते हैं। भागदौड़ अधिक रहेगी।

धनु: मन प्रसन्न रहेगा। आत्मविश्वास भी भरपूर रहेगा। नौकरी में बदलाव के योग बन रहे हैं। तरक्की के अवसर मिलेंगे। आय में वृद्धि होगी। कार्यभार भी बढ़ेगा।

मकर: आत्मसंयत रहें। क्रोध से बचें। बातचीत में संयत रहें। नौकरी में अफसरों का सहयोग तो मिलेगा, परंतु कार्यक्षेत्र में बदलाव होगा। परिश्रम अधिक रहेगा।

कुंभ: मन परेशान रहेगा। संयत रहें। धैर्यशीलता बनाए रखने का प्रयास करें। कारोबार का विस्तार होगा। परिवार का साथ मिलेगा। लाभ के अवसर मिलेंगे।

मीन: कला व संगीत के प्रति रुझान बढ़ेगा। नौकरी में बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। सेहत का ध्यान रखें। खर्चों की अधिकता भी हो सकती है।

व्रत और त्योहार | पंचांग | पं. ऋषभुकांत गोस्वामी

9 मार्च, सोमवार, **शक संवत्** : 18 फाल्गुन (सौर) 1947, **पंजाब पंचांग** : 26 फाल्गुन मास प्रविष्टे 2082, **इस्लाम** : 19 रमजान, 1447, **विक्रमी संवत्**: चैत्र कृष्ण षष्ठी तिथि रात्रि 11.28 बजे तक, विशाखा नक्षत्र सायं 04.12 मिनट तक पश्चात अनुराधा नक्षत्र, गर करण, चंद्रमा तुला राशि में प्रातः 09.30 बजे तक उपरांत वृश्चिक राशि में।

सूर्य उत्तरायण। सूर्य दक्षिण गोल। शिशिर ऋतु। प्रातः 07.30 बजे से प्रातः 09 बजे तक राहुकालम्। भद्रा रात्रि 11.28 मिनट से। एकनाथ षष्ठी।

वास्तु सलाह | आचार्य मुकुल रस्तोगी

हमारे घर में बहुत क्लेश रहता है, कृपया कोई हल बताएं? -सोनम कुमारी, देहरादून

- रात में सोने से पहले किसी पीतल के बर्तन में कपूर लेकर उसे गाय के शुद्ध घी में डुबोकर जलाएं। इस उपाय से घर का क्लेश दूर होता है और घर में शांति आती है।
- मंगलवार के दिन हनुमानजी के सामने पंचमुखी दीपक प्रज्जवलित करें और अष्टगंध जलाकर उसकी सुगंध पूरे घर में फैलाएं।
- चुटकी भर केसर को पानी में मिलाकर स्नान करें। स्नान के बाद पूजा-पाठ करें और फिर केसर का तिलक लगाएं। घर में पोछा लगाने वाले पानी में थोड़ा नमक मिला दें और इसी से पूरे घर में पोछा लगाएं।

वर्ग पहेली: 8262

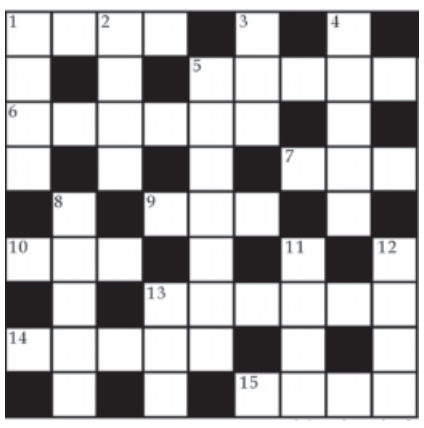

बाएं से दाएं
1. आत्मविश्वास; आत्मिक बल; मन की शक्ति; मनोबल (4)
5. नीच व्यक्ति; प्रेम प्रतिद्वंद्वी; विश्वासघाती (5)
6. चमक दमक; ठसक; नाज नखरा, हावभाव (3,3)
7. जिसने विजय प्राप्त की हो; जीतने वाला (3)
9. नीचे स्थान को भरना; समतल करना; छत बनाना (3)
10. जिसकी थाह न हो; बहुत गहरा; अपरिमित; अपार (3)
13. मरने के बाद (6)
14. यादगार रहना; स्मृति बची रहना; संसार में याद बनी रहना (2,3)
15. माल बनाने का स्थान; निर्माण स्थल (4)

ऊपर से नीचे
1. गुण दोष का निरूपण; समीक्षा (4)
2. भटकना; पथभ्रष्ट होना; चूकना; आपे में न रहना (4)
3. प्रबल अभिलाषा; गहरी चाह (3)
4. अश्रु; आंसू, नयन नीर (5)
5. खटखटाना, ठक-ठक करना; दस्तक देना (4,3)
8. उपयुक्त समय पर; जैसा समय हो वैसे; समयानुसार (5)
11. भेंट; नजराना (4)
12. इठलाना; घमंड दिखाना; सफलता पाकर फूला न समाना (4)
13. घिसना; धीरे धीरे रगड़ना; मालिश करना (3)

हरीश चन्द्र सन्सी, विविधा विधा, दिल्ली
(उत्तर अगले अंक में)

वर्ग पहेली: 8261

सुडोकू: 8244

*मध्यम

6				1	7	4		3
	4		6				8	
3					4			
1		3					6	
4								2
	9					5		1
			1					8
	7				5		9	
2		9	7	8				4

खेलने का तरीका: दिमागी खेल और नंबरों की पहेली है यह। ऊपर नौ-नौ खानों के नौ खाने दिए गए हैं। आपको 1 से 9 की संख्याएं इस तरह लिखनी हैं कि खड़ी और पड़ी लाइनों के हरेक खाने में 1 से 9 की सभी संख्याएं आएं। साथ ही 3×3 के हरेक बक्से में भी 1 से 9 तक की संख्याएं हों। पहेली का हल हम कल देंगे।

सुडोकू: 8243

5	1	6	7	3	4	8	2	9
9	7	2	6	1	8	3	4	5
3	4	8	5	2	9	6	7	1
2	6	9	4	7	1	5	3	8
4	5	1	3	8	6	2	9	7
8	3	7	2	9	5	1	6	4
1	8	3	9	6	7	4	5	2
7	2	4	1	5	3	9	8	6
6	9	5	8	4	2	7	1	3

एकदा

अहं का त्याग

एक नदी पहाड़ों से बहते हुए जंगलों, गांवों और शहरों को पार करती हुई एक विशाल रेगिस्तान के किनारे तक पहुंची। उसने अब तक हर बाधा को पार किया था, इसलिए उसे लगा कि वह रेगिस्तान को भी पार कर लेगी।

जैसे ही उसने रेत पर कदम रखा, उसने महसूस किया कि उसका पानी गायब होता जा रहा है। रेत उसका पानी सोख रही थी। नदी इस बात से परेशान हो गई। उसे लगा कि उसका अस्तित्व अब समाप्त होने वाला है। तभी रेगिस्तान ने उसे कहा, 'आगे बढ़ो नदी, हवा रेगिस्तान पार कर सकती है तो तुम भी।'

नदी ने चिल्लाकर कहा, 'लेकिन मैं जब भी आगे बढ़ती हूं, रेत मुझे निगल जाती है। हवा तो उड़ सकती है, मैं तो जमीन पर बहती हूं।'

रेगिस्तान ने कहा, 'तुम अपनी पुरानी जिद और पुराने स्वरूप को पकड़े हुए हो। इस तरह तुम कभी पार नहीं कर पाओगी।'

नदी ने पूछा, 'क्या भाप बनने के बाद मैं वही 'मैं' रहूंगी? क्या मेरा स्वरूप खो नहीं जाएगा?'

रेगिस्तान ने कहा, 'तुम्हारा स्वरूप बदल जाएगा, पर तुम्हारी असलियत खत्म नहीं होगी। तुम आज भी पानी हो और भाप बनने के बाद भी पानी ही रहोगी। अगर तुम 'नदी' होने के अहं को नहीं छोड़ोगी, तो तुम यहीं सूखकर कीचड़ बन जाओगी और हमेशा के लिए खत्म हो जाओगी।'

नदी ने बहुत सोच-विचार किया। अंततः उसने अपना डर छोड़ दिया। वह भाप बनकर ऊपर उठ गई। हवा उसे धीरे से उठाकर कोसों दूर पहाड़ों के पार ले गई। वहां, वह फिर से बरसी और पहले से भी अधिक विशाल नदी के रूप में बहने लगी।

राष्ट्रपति की गरिमा सर्वोपरि इस पर राजनीति ठीक नहीं

मुद्दा
उज्ज्वल दीपक

भारत के लोकतंत्र में राष्ट्रपति का पद केवल एक संवैधानिक औपचारिकता नहीं, बल्कि राष्ट्र की सर्वोच्च गरिमा, संवैधानिक मर्यादा और लोकतांत्रिक मूल्यों का प्रतीक है। यही कारण है कि इस पद को सदैव राजनीति से ऊपर रखा गया है, लेकिन पश्चिम बंगाल में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के हालिया दौरे के दौरान जो घटनाक्रम सामने आया है, उसने न केवल प्रोटोकॉल की गंभीर अनदेखी को उजागर किया है, बल्कि यह भी दिखाया है कि राजनीतिक कटुता किस तरह संवैधानिक मर्यादाओं पर भारी पड़ सकती है। राष्ट्रपति 7 मार्च को सिलीगुड़ी के फांसीदेवा क्षेत्र में आयोजित 9वें अंतरराष्ट्रीय संथाल कॉन्फ्रेंस में भाग लेने पहुंची थीं। यह कार्यक्रम आदिवासी समाज की सांस्कृतिक अस्मिता और परंपराओं से जुड़ा एक महत्वपूर्ण आयोजन था। देश की पहली आदिवासी महिला राष्ट्रपति का इस कार्यक्रम में शामिल होना स्वयं में एक ऐतिहासिक और प्रेरक क्षण था। यह न केवल आदिवासी समाज के सम्मान का विषय था, बल्कि यह भी संदेश देता था कि भारतीय लोकतंत्र अपने हाशिए पर खड़े समाजों की संस्कृति और पहचान को महत्व देता है, लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण यह रहा कि इस अवसर की गरिमा को वह सम्मान नहीं मिल सका, जिसकी अपेक्षा की जाती है। राष्ट्रपति के राज्य आगमन पर सामान्य प्रोटोकॉल यह कहता है कि मुख्यमंत्री या राज्य सरकार का कोई वरिष्ठ मंत्री स्वागत के लिए उपस्थित हो। यह परंपरा केवल औपचारिकता नहीं, बल्कि संवैधानिक शिष्टाचार और लोकतांत्रिक संस्कार का हिस्सा है। इसके बावजूद पश्चिम बंगाल में न तो मुख्यमंत्री ममता बनर्जी राष्ट्रपति को रिसीव करने पहुंचीं और न ही राज्य सरकार का कोई मंत्री वहां मौजूद रहा। यही नहीं, कार्यक्रम स्थल को अंतिम समय में बदल दिया गया और नया स्थान इतना छोटा था कि अनेक लोग आयोजन में शामिल ही नहीं हो सके। राष्ट्रपति ने भी इस पर नाराजगी जताते हुए कहा कि उन्हें ऐसा लगता है कि बंगाल सरकार आदिवासियों के हितों को लेकर गंभीर नहीं है। वहीं,ममता बनर्जी की प्रतिक्रिया ने विवाद को और बढ़ा दिया। उन्होंने कहा कि वह राष्ट्रपति का सम्मान करती हैं, लेकिन वे यहां 50 बार आएं तो हर कार्यक्रम में शामिल होना संभव नहीं है। एक तो गलती करना और ऊपर से अनर्गल बयानबाजी और कुतर्क देकर खुद का बचाव करना एक मुख्यमंत्री की गरिमा के खिलाफ है। असल में यह मामला केवल एक कार्यक्रम या प्रोटोकॉल की चूक का नहीं है। यह उस राजनीतिक मानसिकता का दर्पण है, जिसमें कभी-कभी संवैधानिक संस्थाओं के सम्मान को भी दलगत चश्मे से देखा जाने लगता है। यह प्रवृत्ति लोकतंत्र के लिए शुभ संकेत नहीं है। राष्ट्रपति का पद दलों और सरकारों से ऊपर होता है। यह पूरे राष्ट्र की एकता और संविधान की सर्वोच्चता का प्रतिनिधित्व करता है। ऐसे अवसर पर यदि राज्य सरकार की ओर से संवेदनशीलता और गरिमा का अभाव दिखाई देता है, तो यह केवल प्रोटोकॉल की चूक नहीं बल्कि एक गलत संदेश भी देता है। कुल मिलाकर यह स्पष्ट होना चाहिए कि राष्ट्रपति का पद किसी व्यक्ति विशेष का नहीं, बल्कि राष्ट्र की गरिमा और संविधान की सर्वोच्चता का प्रतीक है। इस पद की मर्यादा से किसी भी प्रकार का खिलवाड़ लोकतांत्रिक संस्कृति के लिए उचित नहीं कहा जा सकता। यदि हम अपने सर्वोच्च संवैधानिक पद के प्रति भी संवेदनशील नहीं रहेंगे, तो लोकतंत्र की मर्यादा और परंपरा दोनों ही कमजोर पड़ने लगेंगी।

दुनिया को 'नई दिल्ली कांफ्रेंस' की जरूरत

द्वितीय विश्व युद्ध (1944) जब खत्म भी नहीं हुआ था, तब अमेरिका के न्यू हैम्पशायर राज्य के माउंट वाशिंगटन होटल, ब्रेटन वुड्स में एक ऐतिहासिक बैठक की गई, जिसे 'ब्रेटन वुड्स कांफ्रेंस' कहा जाता है। इस कांफ्रेंस में 44 मित्र देशों के प्रतिनिधियों ने साथ बैठकर यह समझने की कोशिश की कि युद्ध समाप्त होने के बाद वैश्विक अर्थव्यवस्था और राजनीतिक व्यवस्था को कैसे स्थिर बनाया जाए। प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध के बीच के दौर में दुनिया ने कई गंभीर आर्थिक संकट देखे थे। देशों के बीच मुद्राओं का लगातार अवमूल्यन हो रहा था, कई देशों ने संरक्षणवादी व्यापार नीतियां अपनाईं, जिससे अंतरराष्ट्रीय व्यापार कमजोर हुआ और महामंदी जैसी अभूतपूर्व आर्थिक तबाही देखी गई।

कई इतिहासकारों का मानना है कि इस आर्थिक अव्यवस्था से उत्पन्न परिस्थितियां द्वितीय विश्व युद्ध की पृष्ठभूमि तैयार करने में महत्वपूर्ण कारण बनीं। इस कांफ्रेंस में ब्रिटेन का प्रतिनिधित्व किया प्रसिद्ध अर्थशास्त्री जॉन मेनार्ड कीन्स ने, अमेरिका का प्रतिनिधित्व किया अमेरिकी ट्रेजरी के अधिकारी हैरी डेक्सटर व्हाइट ने और दो महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की स्थापना का मार्ग प्रशस्त हुआ, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) और विश्व बैंक। इनके माध्यम से वैश्विक वित्तीय व्यवस्था को स्थिर करने और युद्धग्रस्त देशों के पुनर्निर्माण की योजना बनाई गई। इसी दौर में संयुक्त राष्ट्र की स्थापना भी हुई, जिसका उद्देश्य था देशों के बीच संवाद बनाए रखना और भविष्य के युद्धों को रोकना। यहां गौर करने वाली बात यह है कि तीनों संस्थाओं का मुख्य कार्यालय अमेरिका में ही स्थापित किया गया, जिससे अमेरिका की प्रभुता स्थापित हुई और आज शायद इसी वजह से बाकी सारे देश कहीं ना कहीं अमेरिका पर निर्भर हैं। अमेरिका के पूरे विश्व पर आर्थिक वर्चस्व की भूमिका भी यहीं तैयार की गई। जब एक अमेरिकी ट्रेजरी अधिकारी के सामने ब्रिटेन के महान अर्थशास्त्री कमजोर पड़े और यह तय किया गया कि वैश्विक मुद्रा व्यवस्था को स्थिर रखने के लिए दुनिया की अधिकांश मुद्राओं को अमेरिकी डॉलर से जोड़ा जाए, और अमेरिकी डॉलर को सोने से जोड़ा जाए, जिसकी कीमत उस समय 35 डॉलर प्रति औंस तय की गई। तीन सप्ताह के कांफ्रेंस ने तीन दशकों (1945 से 1971) तक दुनिया को कई महत्वपूर्ण स्थिरताएं दीं। वैश्विक स्तर पर विनिमय दरों में स्थिरता बनी रही, अंतरराष्ट्रीय व्यापार का तेजी से विस्तार हुआ, द्वितीय विश्व युद्ध से तबाह हुए यूरोप और जापान के पुनर्निर्माण में मदद मिली और दुनिया ने कई दशकों तक लगातार आर्थिक विकास का दौर देखा। सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि इस व्यवस्था ने अंतरराष्ट्रीय सहयोग को संस्थागत रूप दिया। पहले जहां देश आर्थिक प्रतिस्पर्धा और मुद्रा युद्ध में उलझे रहते थे, वहीं अब विवादों को बातचीत और तय नियमों के माध्यम से सुलझाने की कोशिश होने लगी। हालांकि यह व्यवस्था हमेशा के लिए नहीं टिक सकी। 1971 में अमेरिकी राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन ने डॉलर को सोने में बदलने की व्यवस्था समाप्त कर दी। इसके साथ ही स्थिर विनिमय दरों पर आधारित ब्रेटन वुड्स प्रणाली धीरे-धीरे समाप्त हो गई। इसके बाद दुनिया ने फ्लोटिंग करेंसी सिस्टम यानी बाजार आधारित विनिमय दरों को अपनाया। इसके बावजूद अमेरिकी डॉलर की वैश्विक

वर्चस्व वाली भूमिका बनी रही और वह आज भी दुनिया की प्रमुख आरक्षित मुद्रा के रूप में कायम है। इससे वैश्विक वित्तीय प्रणाली को एक तरह की स्थिरता तो मिलती है, लेकिन साथ ही इससे अमेरिका को असामान्य रूप से अधिक आर्थिक और रणनीतिक शक्ति भी मिल जाती है। आज, लगभग अस्सी साल बाद, वही ढांचा कई जगह कमजोर पड़ता दिखाई देता है।

दुनिया इस समय एक ऐसे मोड़ पर खड़ी है, जहां अनिश्चितता और तनाव, युद्ध, आर्थिक अस्थिरता, महामारी की आशंका और कमजोर पड़ती वैश्विक संस्थाएं एक साथ दिखाई दे रही हैं। मध्य पूर्व में बढ़ते संघर्ष ने चिंता को और गहरा कर दिया है। अमेरिका, इजराइल और ईरान के बीच बढ़ते तनाव ने पूरे क्षेत्र को अस्थिर बना दिया है। यह संकट केवल सैन्य टकराव तक सीमित नहीं है। आज के दौर में युद्ध कई रूपों में लड़ा जा रहा है। ट्रेड वॉर और टैरिफ की राजनीति, आर्थिक प्रतिबंध, वित्तीय दबाव, बैंकिंग व्यवस्था से बाहर करना और व्यापारिक प्रतिबंध भी अब कूटनीति के प्रमुख हथियार बन चुके हैं। अगर यह प्रवृत्ति बढ़ती है तो दुनिया धीरे-धीरे अलग-अलग आर्थिक खेमों में बंट सकती है। इतिहास बताता है कि जब आर्थिक व्यवस्था टूटती है तो राजनीतिक टकराव और भी गहरा हो जाता है। इसी बीच एक और महत्वपूर्ण सवाल वैश्विक संस्थाओं की भूमिका को लेकर उठ रहा है। संयुक्त राष्ट्र की स्थापना शांति बनाए रखने के उद्देश्य से हुई थी, लेकिन आज कई अंतरराष्ट्रीय संकटों में वह प्रभावी हस्तक्षेप करने में असमर्थ दिखाई देता है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की संरचना भी 1945 की भू-राजनीतिक वास्तविकताओं को दर्शाती है, न कि 2026 की दुनिया को। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक जैसी संस्थाओं में मताधिकार और निर्णय शक्ति का ढांचा अभी भी द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की परिस्थितियों को दर्शाता है। यही वह संदर्भ है जिसमें कई विशेषज्ञ अब 'नए ब्रेटन वुड्स' की बात कर रहे हैं। उनका मानना है कि जिस तरह 1944 में दुनिया ने मिलकर नई वैश्विक आर्थिक व्यवस्था बनाई थी, उसी तरह आज भी वैश्विक संस्थाओं और नियमों की व्यापक समीक्षा की जरूरत है। एक नया वैश्विक सम्मेलन कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा का मंच बन सकता है।

प्रसिद्ध इतालवी चिंतक निकोलो माकियावेली ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'द प्रिंस' में एक दिलचस्प बात कही थी। उनका मानना था कि जब दो शक्तिशाली मित्र राष्ट्र आपस में संघर्ष में उतर जाएं, तो किसी तीसरे देश के लिए लंबे समय तक तटस्थ बने रहना कठिन होता है। पाँच सौ साल पहले लिखी गई यह बात आज की वैश्विक राजनीति में एक नए संदर्भ के साथ सामने आती है। वर्तमान समय में भारत भी कुछ हद तक ऐसी ही कूटनीतिक दुविधा का सामना कर रहा है। सवाल यह नहीं है कि दुनिया को बदलाव की जरूरत है या नहीं ? असली सवाल यह है कि क्या वैश्विक नेतृत्व समय रहते उस बदलाव के लिए तैयार होगा ? क्योंकि इतिहास का एक सबक बहुत स्पष्ट है, जब संस्थाएं कमजोर पड़ती हैं, तब संघर्ष मजबूत हो जाता है। शायद अब वो वक्त आ चुका है, जब सारे देश संयुक्त राष्ट्र से परे समानों में एक की भूमिका निभाते हुए विचार-विमर्श करें और दुनिया को एक 'नई वैश्विक अव्यवस्था और अनिश्चितता' से बाहर निकालकर एक 'नई वैश्विक व्यवस्था' की ओर ले जाएं। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत सक्षम है, इस बैठक का नेतृत्व करे। प्रधानमंत्री मोदी ने अपनी मित्रता और विभिन्न देशों के प्रवास में यह विश्वास अर्जित किया है और पूरा विश्व उनके बुलावे पर विश्व शान्ति के लिए 2026 में नई दिल्ली में 1945 का 'नया ब्रेटन वुड्स' कांफ्रेंस करने को सहर्ष तैयार हो जाएगा, जिसे 'नई दिल्ली कांफ्रेंस' के रूप में पुकारा जा सकता है।

शायद अब वो वक्त आ चुका है, जब सारे देश संयुक्त राष्ट्र से परे समानों में एक की भूमिका निभाते हुए विचार-विमर्श करें और दुनिया को एक 'नई वैश्विक अव्यवस्था और अनिश्चितता' से बाहर निकालकर एक 'नई वैश्विक व्यवस्था' की ओर ले जाएं। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत सक्षम है, इस बैठक का नेतृत्व करे। प्रधानमंत्री मोदी ने अपनी मित्रता और विभिन्न देशों के प्रवास में यह विश्वास अर्जित किया है और पूरा विश्व उनके बुलावे पर विश्व शान्ति के लिए 2026 में नई दिल्ली में 1945 का 'नया ब्रेटन वुड्स' कांफ्रेंस करने को सहर्ष तैयार हो जाएगा, जिसे 'नई दिल्ली कांफ्रेंस' के रूप में पुकारा जा सकता है।

(लेखक भारतीय जनता पार्टी से जुड़े हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

लेख पर अपनी प्रतिक्रिया haribhoomi@gmail.com पर दे सकते हैं।

आर्थिकी
डॉ. जयंतीलाल भंडारी

पश्चिमी एशिया में युद्ध से निर्मित निर्यात चुनौतियां

हाल ही में वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि सरकार पश्चिमी एशिया में चल रहे युद्ध से प्रभावित भारतीय निर्यातकों को राहत देने के लिए काम कर रही है। इन दिनों निर्यातक रसद संबंधी चुनौतियों के अलावा घरेलू बंदरगाहों पर पश्चिम एशिया जाने वाले कार्गो के अटकने से खड़े होने वाले संकट के प्रति आगाह कर रहे हैं। 7 मार्च को थिंक टेक ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनीशिएटिव (जीटीआरआई) के द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट के मुताबिक पश्चिम एशिया में जारी युद्ध के कारण भारत के करीब 11.8 अरब डालर मूल्य के कृषि निर्यात पर खतरा मंडरा रहा है, यह भारत के द्वारा पिछले वर्ष किए गए कुल कृषि निर्यात का करीब 21.8 प्रतिशत है। ऐसे में सरकार अपने निर्यातकों को राहत देने के कुछ ठोस तरीके अपनाने की डगर पर आगे बढ़ी है। सरकार ने तत्परतापूर्वक युद्ध से निर्मित हालात से भारतीय निर्यात पर पड़ने वाले प्रभाव पर निर्यात से संबंधित सरकारी मंत्रालयों, निर्यातकों के संगठन, लॉजिस्टिक संचालकों और शिपिंग कंपनियों के प्रतिनिधियों की विशेष बैठक में विचार मंथन के बाद बहुमंत्रालयी सहायता डेस्क सहित निर्यातकों को हरसंभव सहयोग-प्रोत्साहन दिया जाना सुनिश्चित किया है। उल्लेखनीय है कि ईरान और इजराइल-अमेरिका के युद्ध के बीच ईरान के द्वारा वैश्विक शिपिंग रूट होर्मुज स्ट्रेट बंद कर दिया गया है। दुनिया को मिलने वाला करीब एक तिहाई तेल, करीब 20 फीसदी लिक्विफाइड नेचुरल गैस (एलएनजी) और खाद्य उत्पादों का अधिकांश यातायात इसी मार्ग से होता है। ऐसे में इस जलमार्ग के बंद हो जाने से कच्चे तेल की ग्लोबल सप्लाई चैन प्रभावित होने लगी है। चूंकि कच्चे तेल के लिहाज से भारत का करीब 40 प्रतिशत कच्चा तेल इसी रास्ते से होकर आता है, ऐसे में यह युद्ध भारत के लिए कच्चे तेल संबंधी चिंता के साथ निर्यात चुनौती निर्मित करते हुए दिखाई दे रहा है। भारत अपनी कच्चे तेल की जरूरतों के करीब 85 फीसदी तक आयात पर निर्भर है, अतएव कच्चे तेल के दाम में बढ़ोतरी भारत के आयात बिल की चिंता बढ़ाते हुए दिखाई दे रही है। स्थिति यह है कि 7 मार्च को कच्चे तेल की कीमत करीब 91 डॉलर प्रति बैरल के मूल्य स्तर पर पहुंच गई है। युद्ध के लंबा खींचने पर कच्चे तेल की कीमत 150 डॉलर प्रति बैरल के पार जा सकती है और इससे पेट्रोल, डीजल और अन्य पेट्रोलियम उत्पाद महंगे होने लगेंगे और इससे भारत से निर्यात घटने और व्यापार घाटा बढ़ने की चुनौती गहराते हुए दिखाई देगी।च इस युद्ध से सीधे तौर पर जुड़े हुए अमेरिका, इजराइल और ईरान सहित युद्ध से प्रभावित पश्चिम एशियाई और यूरोपीय देश भी भारत के लिए निर्यात के प्रमुख बाजार हैं, ऐसे में भारत के निर्यातकों की चिंताएं बढ़ गई हैं। पश्चिम एशिया जाने वाला माल भारत के घरेलू बंदरगाहों पर जमा होने लगा है। शिपिंग कंपनियां चालक दल, कार्गो और जहाजों की सुरक्षा को देखते नए निर्यात आदेश नहीं ले रही हैं। ऐसे में खासतौर से पश्चिम एशिया के देशों में निर्यात घटने की आशंका है। भारत ने इस वित्तीय वर्ष 2025- 26 में अप्रैल से दिसंबर की अवधि में पश्चिम एशिया के 13 देशों को करीब 50 अरब डालर मूल्य की वस्तुओं का निर्यात किया, जो भारत के कुल निर्यात का करीब 15 फ़ीसदी है। इन विभिन्न देशों में भारत से होने वाले खाद्य उत्पाद, टेक्सटाइल, इंजीनियरिंग सामान, बासमती चावल, चाय, मशीनरी, फार्मास्युटिकल्स, रत्न-आभूषण,प्लास्टिक और रबर जैसे क्षेत्रों में निर्यात प्रभावित होते हुए दिखाई दे रहे हैं। ऐसे में भारत को द्वपिक्षीय और मुक्त व्यापार समझौतों (एफटीए) का पूरा लाभ लेते हुए निर्यात को हरसंभव तरीके से बढ़ाने की रणनीति के साथ आगे बढ़ना होगा। अब घरेलू ढांचागत सुधारों के प्रति नए सिरे से प्रतिबद्धता आवश्यक होगी। इस हेतु देश में नियमों और नियामक संस्थाओं के कामकाज में मूलभूत बदलाव की जरूरत है। कर सुधारों को और गहराई देने के साथ जीएसटी प्रणाली को प्रभावी बनाना जरूरी है। उम्मीद करें कि सरकार ईरान और इजराइल-अमेरिका के विस्तारित होते हुए युद्ध की वजह से भारत के समक्ष दिखाई दे रही निर्यात चुनौतियों से निपटने और निर्यात बढ़ाने के मद्देनजर विभिन्न देशों के साथ भारत के व्यापार समझौतों के अधिकतम लाभ हेतु गुणवत्तापूर्ण उत्पादन और नए सुधारों की राह पर आगे बढ़ेगी। सरकार केंद्रीय बजट 2026-27 में घोषित नए निर्यात प्रोत्साहनों से दृढ़ता के साथ नए निर्यात बाजारों में कदम आगे बढ़ाते हुए दिखाई देगी। सरकार के द्वारा हाल ही में निर्यातकों के लिए जो बहुमंत्रालयी सहायता डेस्क बनाई गई है, वह डेस्क निर्यातकों, लॉजिस्टिक संचालकों और शिपिंग कंपनियों के लिए हरसंभव सहयोग और सहायता के लिए अहम भूमिका निभाते हुए दिखाई देगी।

(लेखक प्रसिद्ध अर्थशास्त्री हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

मन की कड़वाहट मिटाने से समरसता आएगी

संकलित
दर्शन

हम अपने सोच व विचारों से अपना ऊर्जा क्षेत्र बनाते हैं। हमारे संकल्पों की गुणवत्ता ऊर्जा क्षेत्र की गुणवत्ता निर्धारित करती है। उस ऊर्जा क्षेत्र से हम अपने आपको अलग नहीं कर सकते। उसके सकारात्मक व नकारात्मक प्रकंपन को हम हमेशा साथ लेकर चलते हैं, चाहें घर में प्रवेश करते हुए अथवा घर से बाहर निकलते हुए। जब किसी के बारे में हम अच्छा सोचते हैं और उसके प्रति हमारे विचारों को शुद्ध, सुंदर व सकारात्मक रखते हैं, तो स्वाभाविक है कि हम उसे एक प्रकार से आशीर्वाद देते हैं। आशीर्वाद देने का यह मतलब नहीं कि हम केवल औपचारिक रूप में शुभकामनाएं देते हैं। अगर हमारे पास किसी के लिए उपहार लेने के लिए पैसे नहीं हैं, तो हमारी ओर से उनके लिए सबसे बड़ा उपहार यही होगा कि हम उनके घर-परिवार को आशीर्वाद दें। सामान्यतः दूसरों के लिए हम अपने सोच के साथ बोल को ध्यान में रखते हैं। भले ही हम उस व्यक्ति के लिए मन में नकारात्मक भावनाएं रखते हों, पर एक पल के लिए उसे बधाई भी देते हैं। इसका मतलब है, हम उसके लिए मन में अच्छा सोच भी पैदा कर सकते हैं। संबंधों का अर्थ ही है संकल्प रूपी ऊर्जा का आदान-प्रदान करना। मैं आपके बारे में जो सोचती हूं, वह आप तक पहुंचता है। आप मेरे बारे में जो सोचते हैं, वह मुझ तक पहुंचता है-यही हमारे संबंधों का आधार बनता है। यदि मैं आपके बारे में अच्छा सोच नहीं रखती और आपके लिए अच्छे काम करती हूं, तो मैं कितनी भी कोशिश क्यों न करूं, हमारे संबंध का नींव कभी मजबूत नहीं होगी।

ऐसे काम न करें, जिससे लोगों की ताकत बढ़े

संकलित
प्रेरणा

बाल कृष्ण माखन चोरी की लीला कर रहे थे। गोकुल के लोग इस वजह से काफी परेशान थे। एक दिन गांव के नंद बाबा और यशोदा के पास पहुंचे और कान्हा की शिकायत करने लगे। नंद बाबा ने कृष्ण से पूछा कि तुम माखन चोरी क्यों करते हो, जबकि हमारे घर में तो बहुत माखन है। कृष्ण ने कहा कि आप लोग मेहनत से दूध, दही, घी, माखन तैयार करते हैं और फिर ये चीजें कर के रूप में दुष्ट कंस को दे देते हैं और इस वजह से गांव के बच्चों को माखन नहीं मिलता है। आपके इस काम से कंस की ताकत लगातार बढ़ रही है। अगर आप कंस को कर देना नहीं रोकेंगे तो मैं तोड़-फोड़ करता रहूंगा। ताकि ये माखन कंस के पास न पहुंचे और गांव के बच्चों को मिल सके। कंस गांव के लोगों से कर के रूप में दुध, मक्खन वसूला करता था। कृष्ण ने देखा की लोग अपने बच्चों को न देकर कर के रूप में मक्खन कंस को देते हैं। कृष्ण ने इस बात का विरोध किया। ताकि लोग अपनी ताकत समझ सके और मिलकर कंस का विरोध कर सके। इस कथा में श्रीकृष्ण ने संदेश दिया है कि हमें ऐसे काम नहीं करना चाहिए, जिनकी वजह से गलत लोगों की ताकत बढ़ती है। और व हम पर हावी हो जाए।

अंतर्मन

आज की पाती

भारत सिर्फ शांति चाहता है

भारत सिर्फ और सिर्फ शांति चाहता है और हर समस्या का समाधान सदैव बातचीत से ही करने का पक्षधर रहा है। इसी तारतम्य में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रूस-यूक्रेन व इजराइल-अमरीका बनाम ईरान युद्ध को रोकने और समस्यात्मक मुद्दों को बातचीत के जरिए हल करने का संदेश दुनिया को दिया है। हमारा देश आतंकवाद के खिलाफ भी सदा रहा है और सभी देशों से मिलकर दुनिया में फैले आतंकवाद को जड़ से मिटाने के लिए कटिबद्ध भी है। बात सही है, हर मुद्दे के लिए आर्मी का उपयोग सूझबूझ व समझदारी नहीं है। इससे मानव संसाधन-सैनिक संसाधन के साथ ही विकास को भी गहरा नुकसान पहुंचता है। इसलिए हर तरह के युद्ध और आतंकवाद का बातचीत से समाधान होना चाहिए।

- जयेश साहू, धमतरी

ट्रेंड

नारी शक्ति की उपलब्धियां

भारत की नारी शक्ति की उपलब्धियां गौरव का स्रोत है और राष्ट्र निर्माण में उनकी परिवर्तनकारी भूमिका का सशक्त प्रमाण है। भारत की प्रगति के साथ-साथ महिलाओं की आकांक्षाएं और योगदान एक सशक्त और समृद्ध राष्ट्र की ओर हमारी सामूहिक यात्रा का मार्गदर्शन करते रहेंगे।

- नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

लोकतंत्र पर सीधा हमला

आज हम जो देख रहे हैं वह इस गणतंत्र की लोकतांत्रिक नींव पर सीधा हमला है। भाजपा ने अपने "एक राष्ट्र, एक नेता, एक पार्टी" के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए हर लोकतांत्रिक संस्था और हर संवैधानिक पद का व्यवस्थित रूप से दुरुपयोग किया है।

- ममता बनर्जी, सीएम, प. बंगाल

हमारी विदेश नीति

हमारी विदेश नीति पहली बार विदेशी तय कर रहे हैं। भाजपा ने हमारी परंपरागत 'गुट निरपेक्षता' की विदेश नीति की जगह 'गुट सापेक्षता' की विदेशी नीति अपनाकर संप्रभुता की नीति पराये हाथों में सौंप दी है।

- अखिलेश यादव, सांसद, सपा

हवाई किराए में वृद्धि

मिडिल ईस्ट में जारी युद्ध और अस्थिरता के कारण अंतरराष्ट्रीय उड़ानों के किरायों में बेतहाशा बढ़ोतरी बेहद चिंताजनक है। इससे विदेशों में फंसे भारतीयों, विशेषकर छात्रों और कामगारों के लिए वतन वापसी, या भारत आए प्रवासियों की अपने काम और शिक्षण संस्थानों तक वापसी कठिन हो गई है।

-अशोक गहलोत, पूर्व सीएम, राजस्थान

करंट अफेयर

भारत एवं चीन एक-दूसरे को साझेदार की तरह देखे

चीन के विदेश मंत्री वांग यी ने रविवार को बीजिंग में कहा कि भारत और चीन को एक-दूसरे को 'प्रतिद्वंद्वियों के बजाय साझेदार' और 'खतरे के बजाय अवसर' के रूप में देखना चाहिए। वांग ने कहा कि दोनों देशों को बिना किसी हस्तक्षेप के संबंधों को बेहतर बनाने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और राष्ट्रपति शी चिनफिंग द्वारा निर्धारित मार्ग का पालन करना चाहिए। वांग ने कहा कि मोदी और शी की पिछले साल अगस्त में तियानजिन में सफल बैठक हुई थी। उन्होंने कहा, '2024 में कजान में हुई उनकी बैठक से मिली नयी शुरुआत को आगे बढ़ाते हुए तियानजिन शिखर सम्मेलन ने चीन-भारत संबंधों में और सुधार किया।' उन्होंने कहा, 'सभी स्तरों पर नए सिरे से सक्रिय हुई बातचीत, द्विपक्षीय व्यापार में एक नया रिकॉर्ड और लोगों के बीच निकट आदान-प्रदान देखकर हमें बेहद खुशी हो रही है। इन सभी से दोनों देशों की जनता को ठोस लाभ हुए हैं।' वांग ने संबंधों के भविष्य के स्वरूप पर कहा कि दोनों देशों को एक-दूसरे के प्रति प्रतिद्वंद्वी के बजाय भागीदार के रूप में और खतरे के बजाय अवसर के रूप में' सही रणनीतिक दृष्टिकोण बनाए रखना चाहिए। उन्होंने कहा, 'दोनों पक्षों को अच्छे पड़ोसी के संबंधों और मित्रता को बनाए रखना चाहिए तथा सीमावर्ती क्षेत्रों में शांति एवं स्थिरता की संयुक्त रूप से रक्षा करनी चाहिए।

ऑफ बीट

होता कुछ है, देखते कुछ हैं दृश्य भ्रम में

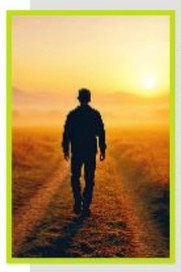

कई प्रजातियों द्वारा समझा जाने वाला भ्रम दृश्य भ्रम का अध्ययन मस्तिष्क कैसे काम करता है इसकी दिलचस्प जानकारी प्रदान करता है। दृश्य भ्रम अवधारणात्मक त्रुटियां हैं, जो संभवतः हमें जटिल प्राकृतिक जानकारी को कुशलतापूर्वक संसाधित करने में सक्षम बनाती हैं। एकल भ्रम एक छवि में बिंदुओं के विन्यास के आधार पर मात्रा की गलत धारणा का कारण बनता है। जो लोग भ्रम का अनुभव करते हैं वे एक साथ गुच्छित होने पर बिंदुओं की संख्या का अधिक अनुमान लगाएंगे और/या बिखरे होने पर बिंदुओं की संख्या को कम आंकेंगे। हम जानते हैं कि एकल भ्रम मनुष्यों, कैपुचिन बंदरों, गप्पियों और भौंरों द्वारा महसूस किया जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि चिंपैंजी, रीसस बंदर और घरेलू कुत्तों को भ्रम का एहसास नहीं होता है। दिलचस्प बात यह है कि इंसानों में उम्र एकल भ्रम की धारणा को प्रभावित करती है - छोटे बच्चे बड़ों की तुलना में कम संवेदनशील होते हैं। मनुष्यों और अन्य प्रजातियों द्वारा मात्राओं की इस गलत धारणा का अनुभव करने का एक संभावित विकासवादी कारण यह है कि यह हमें बड़ी संख्या में वस्तुओं को अधिक कुशलतापूर्वक और तेज़ी से संसाधित करने और तुलना करने में मदद दे सकता है।

अपने विचार
हरिभूमि कार्यालय
टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फैक्स : 0771-4242222, 23 पर या सीधे मेल से **hbcgpati@gmail.com** पर भेज सकते हैं।

खबर संक्षेप

मेटा ने सोशल मीडिया पाबंदी पर चेताया

नई दिल्ली। कर्नाटक में 16 वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए सोशल मीडिया पर प्रतिबंध की घोषणा के बीच कंपनी मेटा ने कहा कि ऐसे प्रतिबंध लागू करने वाली सरकारों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि नाबालिग उपयोगकर्ता असुरक्षित और अनियंत्रित मंचों का रुख न कर लें। अमेरिकी कंपनी ने कहा कि सोशल मीडिया पर इस तरह के 'प्रतिबंध समान रूप से लागू होने चाहिए।

अब म्यूचुअल फंड फोलियो को लॉक कर सकेंगे निवेशक

नई दिल्ली। बाजार नियामक सेबी ने म्यूचुअल फंड निवेशकों की डिजिटल सुरक्षा बढ़ाने के लिए 'स्वैच्छिक डेबिट फ्रीज सुविधा' शुरू करने की घोषणा की। भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) ने एक परिपत्र में कहा कि यह सुविधा डीमैट वाले और बिना डीमैट वाले दोनों तरह के फोलियो के लिए उपलब्ध होगी।

भर्ती विज्ञापनों में महिलाओं की भागीदारी 19 फीसदी बढ़ी

मुंबई। भारत में भर्ती विज्ञापनों में महिलाओं की हिस्सेदारी सालाना आधार पर 19 प्रतिशत बढ़ गई है, जिसमें वरिष्ठ पदों, उच्च वेतन वर्गों, उभरती प्रौद्योगिकी भूमिकाओं और दूसरी श्रेणी के बाजारों में भर्ती का विस्तार प्रमुख रहा। फरवरी, 2025 से फरवरी, 2026 के बीच भर्ती विज्ञापनों के रुझानों के से यह निष्कर्ष सामने आया है।

ऊपर वाले से मिला वरदान
मेरे पास है हर समाधान
करो प्रेमिका / पति मुट्ठी में
जो व्यक्ति वास्तव में परेशान है, वो ही फ़ोन करें।
गुरू कबीर जी रजि.
की जुबान पत्थर की लकीर है।
आपकी हर समस्या का समाधान
जैसे:- शादी, कारोबार, पढ़ाई में रुकावट, सास बहु, मिया बीवी में अनबन, सौतन, दुश्मन नाश, ग्रह क्लेश, बेटा / बेटी / पति - पत्नी किसी के वश में कहना न मानता हो, पशु, फसल में नुकसान, कोर्ट-कचहरी मुकदमा जैसी सभी समस्याओं का गारन्टीड समाधान। पाँच मिनट में समाधान
एक फोन करो समाधान पाओ
9711428545
स्पेशलिस्ट : वशीकरण, मनचाहा प्यार

सूचना
सभी पाठकों से अनुरोध है कि हरिभूमि समाचार-पत्र में प्रकाशित विज्ञापनों (डिस्प्ले/क्लासीफाईड) में दिए गए तथ्यों/दावों के बारे में अपने विवेक से निर्णय लें और विज्ञापन के दावों की विश्वसनीयता को परखें। हरिभूमि समूह के मुद्रक, प्रकाशक या सम्पादक की विज्ञापनों के तथ्यों से सम्बन्धित कोई जिम्मेवारी नहीं होगी।

तांबा महंगा व रुपया कमजोर पड़ने से एसी की कीमतों में वृद्धि

एजेंसी ▶▶| नई दिल्ली

कमरे को ठंडा रखने वाले एयर कंडीशनर बनाने वाली प्रमुख कंपनियां कच्चे माल की लागत और आपूर्ति श्रृंखला के खर्चों में निरंतर वृद्धि की भरपाई के लिए कीमतों में 5-15 प्रतिशत तक बढ़ोतरी कर रही हैं।

- कीमतों में बढ़ोतरी ऐसे समय की गई जब मांग बढ़ने वाली है

फरवरी से अप्रैल के बीच लागू की जा रही यह बढ़ोतरी ठीक उस समय हो रही है, जब गर्मी का मौसम शुरू होने के साथ एयर कंडीशनर (एसी) की मांग बढ़ने वाली है। डाइकिन, वोल्टास, ब्लू स्टार, एलजी, हायर और मित्सुबिशी हैवी इंडस्ट्रीज सहित प्रमुख कंपनियों ने विभिन्न मॉडलों की कीमतों में वृद्धि की घोषणा की है।यह वृद्धि तांबे जैसे प्रमुख कच्चे माल की लागत बढ़ने, रुपये की कमजोरी, नए ऊर्जा-दक्षता मानकों और माल ढुलाई लागत में वृद्धि के कारण की गई है।

लागत की भरपाई के लिए एसी हुआ 5 से 15 फीसदी महंगा

इस साल बिक्री की गति मजबूत रहेगी

हालांकि, उद्योग के अधिकारियों का कहना है कि भीषण गर्मी के पूर्वानुमान और नए स्टार-रेटेड मॉडलों से बिजली की बचत के कारण इस साल बिक्री की गति मजबूत रहने की उम्मीद है। डाइकिन इंडिया के चेयरमैन एवं प्रबंध निदेशक कंवलजीत जावा ने बताया कि कंपनी अप्रैल से कीमतों में 12 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी करने जा रही है।

नए ऊर्जा मानक से उत्पाद अधिक कुशल : जावा ने कहा, *''नए ऊर्जा मानक आ गए हैं, जिससे उत्पाद अधिक कुशल हो गए हैं। साथ ही तांबे जैसी सामग्री की कीमतें बढ़ गई हैं और अमेरिकी डॉलर रिकॉर्ड ऊंचाई पर है। वैश्विक उथल-पुथल के कारण माल ढुलाई लागत भी बढ़ गई है, जिससे आयात महंगा हो गया है। ऐसे में कोई विकल्प नहीं बचा है।''*

ग्राहकों को तुरंत बड़ा असर महसूस नहीं होगा

जावा ने उम्मीद जताई कि इस साल बिक्री 2024 के रिकॉर्ड स्तर को छुएगी और कम से कम 15 प्रतिशत की वृद्धि देखी जाएगी। ब्लू स्टार के प्रबंध निदेशक बी त्यागराजन ने कहा कि कंपनी फरवरी के मध्य में ही 8-10 प्रतिशत की वृद्धि कर चुकी है। हालांकि, बाजार में अभी पुराना स्टॉक मौजूद है, इसलिए ग्राहकों को तुरंत बड़ा अंतर महसूस नहीं होगा।

मूल्य समायोजन किया जा रहा

टाटा समूह की कंपनी वोल्टास भी कीमतों में 5-15 प्रतिशत की बढ़ोतरी कर रही है। वोल्टास के प्रबंध निदेशक मुकुंदन मेनन ने कहा कि पिछले कुछ महीनों में कच्चे माल की लागत लगातार बढ़ी है, जिसे देखते हुए यह मूल्य समायोजन किया जा रहा है।

डाइकिन उत्पादों के दाम 7-12 प्रतिशत बढ़ाएगी

डाइकिन इंडिया अप्रैल से कीमतों में 12 प्रतिशत तक बढ़ोतरी करने वाली है। डाइकिन इंडिया ने एक बयान में कहा, 'अप्रैल 2026 से, डाइकिन इंडिया कच्चे माल की लागत और आपूर्ति श्रृंखला के खर्च में लगातार बढ़ोतरी को कम करने के लिए अपनी सभी उत्पाद श्रृंखला में कीमतों में 7-12 प्रतिशत की वृद्धि करेगी। साल 2025 रूम एयर-कंडीशनर उद्योग के लिए अच्छा नहीं था, क्योंकि बेमौसम बारिश और दूसरे कारणों से बिक्री पर असर पड़ा था।

प्रसिद्ध अर्थशास्त्री भानुमूर्ति ने कहा, कच्चे तेल में हुई तेजी से वृद्धि

पश्चिम एशिया संकट से अर्थव्यवस्था पर पड़ सकता प्रतिकूल असर

एजेंसी ▶▶| नई दिल्ली

पश्चिम एशिया में जारी संकट के बीच कच्चे तेल और गैस के दाम में तेज वृद्धि से देश में महंगाई बढ़ने, रुपये की विनिमय दर में गिरावट के साथ कुल मिलाकर अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल असर पड़ने की आशंका है। अर्थशास्त्री और मद्रास स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स के निदेशक एन आर भानुमूर्ति ने यह कहा।

अमेरिका और इजराइल का ईरान पर हमले के बाद से कच्चे तेल की कीमत में तेज वृद्धि हुई है और यह 2023 के बाद उच्चतम स्तर पर पहुंच गया है। वैश्विक तेल मानक ब्रेंट क्रूड का भाव बीते शुक्रवार को लगभग 8.5 प्रतिशत चढ़कर 92.69 डॉलर प्रति बैरल पहुंच गया जो एक सप्ताह पहले 70 डॉलर के आसपास था। वहीं अमेरिकी मानक न्यूयॉर्क में वेस्ट टेक्सस इंटरमीडिएट कच्चा तेल 12.2 प्रतिशत बढ़कर 90.9 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया।

एलएनजी की कीमतें 50 फीसदी तक बढ़ी

28 फरवरी को समाप्त सप्ताह की तुलना में ब्रेंट क्रूड के भाव में लगभग 32 प्रतिशत की वृद्धि हो चुकी है। एलएनजी की कीमतें भी लगभग 50 प्रतिशत तक बढ़ गई हैं। अमेरिका और इजराइल के ईरान पर हमले और पश्चिम एशिया में जारी अनिश्चितता का भारतीय अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में पूछे जाने पर भानुमूर्ति ने कहा, ''भारतीय अर्थव्यवस्था पर तत्काल प्रभाव व्यापार और वित्त चैनलों के माध्यम से होगा।''

व्यापार और चालू खाता घाटा होगा प्रभावित

अर्थशास्त्री ने कहा, ''तेल बाजारों में कीमतों में तेज वृद्धि हमारे व्यापार घाटे और चालू खाता घाटे को भी प्रभावित करेगी। अगर वैश्विक स्तर पर तेल के दाम में वृद्धि को देखते हुए, घरेलू खुदरा कीमतें बढ़ाई जाती हैं, तो देश में तेल की कीमतों में और वृद्धि हो सकती है। खुदरा बाजारों में गैस की कीमतें पहले ही बढ़ चुकी हैं।''

तेल 10 डॉलर बढ़ने से मुद्रास्फीति 0.7 फीसदी बढ़ती है

ऊर्जा (कच्चा तेल, गैस) की कीमतें में और वृद्धि तथा कच्चा तेल के 100 डॉलर या उससे अधिक होने से मुद्रास्फीति पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में पूछे जाने पर भानुमूर्ति ने कहा, ''घरेलू मुद्रास्फीति पर वैश्विक तेल कीमतों के प्रभाव का अनुमान हम इस बात से लगा सकते हैं कि तेल की कीमतों में 10 डॉलर की वृद्धि से मुद्रास्फीति में 0.7 प्रतिशत का इजाफा हो सकता है।

कतर ने पहले ही गैस उत्पादन किया बंद

भानुमूर्ति ने कहा, ''कतर ने पहले ही गैस उत्पादन बंद कर दिया है। हालांकि, भारत के रूस से तेल आयात करने से विश्व तेल की कीमतों में नरमी आ सकती है। लेकिन गैस चिंता का विषय बनी रहेगी। खुदरा स्तर पर, चूंकि कई क्षेत्रों में गैस और तेल एक दूसरे के पूर्ण विकल्प हैं, इसलिए तेल पर गैस की कीमतों का व्यापक प्रभाव पड़ेगा।''

- मिडिल ईस्ट में जारी संकट से गैस के दाम में तेजी आई
- रुपए के विनिमय दर में भी गिरावट दर्ज की जा रही
- ब्रेंट क्रूड का भाव 8 .5% चढ़कर 92 .69 डॉलर प्रति बैरल पहुंचा

होर्मुज फारस की खाड़ी को अरब सागर से जोड़ता है

उल्लेखनीय है कि होर्मुज जलडमरूमध्य ईरान और ओमान के बीच स्थित एक संकरा जलमार्ग है जो फारस की खाड़ी को अरब सागर से जोड़ता है। अपने सबसे संकरे बिंदु पर लगभग 55 किलोमीटर चौड़ा यह जलडमरूमध्य वैश्विक स्तर पर, विशेष रूप से ऊर्जा व्यापार के लिए,सबसे महत्वपूर्ण और अत्यधिक उपयोग किए जाने वाले समुद्री मार्गों में से एक माना जाता है।

तेल कंपनियों के पास बोझ सहने पर्याप्त वित्तीय क्षमता

उल्लेखनीय है कि वैश्विक ऊर्जा कीमतों में उछाल के बीच शनिवार को घरेलू रसोई गैस (एलपीजी) की कीमत में 60 रुपये और वाणिज्यिक सिलेंडर की कीमत में 114.5 रुपये की भारी वृद्धि की गई है। हालांकि, सरकारी सूत्रों ने साफ कहा है कि पेट्रोल और डीजल की कीमतों में बढ़ोतरी की कोई योजना नहीं है, क्योंकि सार्वजनिक क्षेत्र की तेल कंपनियों के पास इस बोझ को सहने के लिए पर्याप्त वित्तीय क्षमता है।

जोधपुर में बनेगा वंदे भारत कोच मेंटेनेंस डिपो का अत्याधुनिक विस्तार

ब्यूरो ▶▶| जोधपुर/चंडीगढ़

- बहुद्देश्यीय वर्कशॉप और विश्वस्तरीय ट्रेनिंग सेंटर
- पत्रकारों का प्रतिनिधिमंडल 14 मार्च तक राजस्थान के दौरे पर

पत्र सूचना कार्यालय (पीआईबी), चंड़ीगढ़ द्वारा पंजाब, हरियाणा एवं चंडीगढ़ के विभिन्न मीडिया संस्थानों के वरिष्ठ पत्रकारों का पत्रकार दल 08 से 14 मार्च 2026 के दौरान राजस्थान के दौरे पर है। पत्रकारों का प्रदेश में दौरे का उद्देश्य केंद्र सरकार द्वारा संचालित प्रमुख विकास परियोजनाओं की प्रगति तथा विभिन्न विभागों की बेस्ट प्रेक्टिसेस का अवलोकन एवं प्रचार प्रसार करना है। पीआईबी चंड़ीगढ़ के पत्रकार प्रतिनिधिमंडल ने जोधपुर में रेलवे द्वारा संचालित महत्वपूर्ण रेल परियोजनाओं के अंतर्गत भगत की कोठी वंदे भारत मेंटेनेंस डिपो की प्रगति का अवलोकन किया। उत्तर पश्चिम रेलवे के जोधपुर मंडल में भगत की कोठी रेलवे स्टेशन क्षेत्र में विकसित किए जा रहे वंदे भारत स्लीपर कोच मेंटेनेंस डिपो के विस्तार के लिए रेलमंत्री श्री अश्विनी वैष्णव द्वारा 195 करोड़ रुपये की महत्वपूर्ण परियोजना को मंजूरी प्रदान की गई है। इस स्वीकृति से यहां अत्याधुनिक बहुद्देश्यीय वर्कशॉप और विश्वस्तरीय ट्रेनिंग सेंटर की स्थापना का मार्ग प्रशस्त हो गया है।

एक भावनात्मक फिल्म प्रस्तुत की है, जो हमारे जीवन को शक्ति प्रदान करती है

द मुथूट ग्रुप की महिला दिवस फिल्म करवाती है एक सशक्त एहसास

एजेंसी ▶▶| नई दिल्ली

महिला दिवस के अवसर पर द मुथूट ग्रुप ने उन असाधारण महिलाओं को समर्पित एक भावनात्मक फिल्म प्रस्तुत की है, जो चुपचाप हमारे दैनिक जीवन को शक्ति प्रदान करती हैं। इस फिल्म के माध्यम से मुथूट ग्रुप ने परिवार और कार्यस्थल दोनों को समान रूप से संवारने में महिलाओं की अमूल्य भूमिका को स्वीकार किया है।

यह फिल्म उन महिलाओं के अक्सर अनदेखे और निरंतर प्रयासों को उजागर करती है, जो घर, परिवार की देखभाल और पेशेवर जिम्मेदारियों के बीच संतुलन बनाते हुए हर दिन जीवन को सुचारु रूप से आगे बढ़ाती हैं। रोचक और विचारोत्तेजक कहानी के माध्यम से प्रस्तुत इस फिल्म में एक प्रभावशाली भूमिका परिवर्तन दिखाया गया है। इसमें एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है जो अचानक खुद को उन दैनिक जिम्मेदारियों का अनुभव करते हुए पाता है, जिन्हें सामान्यतः उसके जीवन की महिला निभाती है।

ई-कॉमर्स निर्यातकों को ऋण सहायता के दिशानिर्देश जारी

नई दिल्ली। डाक या कूरियर के जरिये कम से कम छह महीने से निर्यात करने वाले और ई-कॉमर्स के माध्यम से बिक्री के लिए विदेशों के गोदामों में अपना माल रखने वाले सूक्ष्म, लघु और मझोले उद्यमों (एमएसएमई) को अब 25,060 करोड़ रुपये के ''निर्यात प्रोत्साहन मिशन'' के तहत ऋण सहायता मिल सकेगी।

भारत का कच्चे तेल की आपूर्ति के लिए वैकल्पिक स्त्रोतों की ओर रुख

नई दिल्ली (एजेंसी)। पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष के लंबा खिंचने की आशंका के बीच भारतीय खुदरा ईंधन कंपनियों ने अमेरिका, रूस और पश्चिम अफ्रीका से अतिरिक्त कच्चे तेल के लिए बातचीत शुरू कर दी है। उद्योग अधिकारियों और विश्लेषकों ने यह जानकारी दी। कच्चे तेल को पेट्रोल और डीजल जैसे ईंधनों में परिशोधित करने वाली रिफाइनरियों ने फिलहाल अपनी प्रस्तावित मरम्मत बंदी को टाल दिया है और सामान्य परिचालन दर बनाए रखी है ताकि देश की तात्कालिक जरूरतों के लिए पर्याप्त बफर स्टॉक बना रहे। भारत अपनी कच्चे तेल की जरूरतों का लगभग 88 प्रतिशत आयात करता है। फरवरी में इस आपूर्ति का लगभग आधा हिस्सा 'होर्मुज जलडमरूमध्य' से होकर आया था, जो ईरान और ओमान के बीच एक महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग है।

राशिफल

मेष दाम्पत्य सुख में वृद्धि होगी। घर-परिवार में धार्मिक कार्य हो सकते हैं। परिवार की सुख-सुविधाओं के लिए खर्च बढ़ेंगे। रहन-सहन अव्यवस्थित रहेगा।

वृष मन प्रसन्न तो रहेगा। परन्तु बातचीत में संयत रहें। जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। सुस्वादु खानपान में रुचि बढ़ सकती है।

मिथुन व्यर्थ के क्रोध से बचें। माता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। कारोबार में वृद्धि होगी। परिश्रम अधिक रहेगा। लाभ के अवसर मिलेंगे। सेहत का ध्यान रखें।

कर्क परिवार के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। नौकरी में कार्यक्षेत्र में बदलाव हो सकता है। भाइयों से मतभेद हो सकते हैं। क्रोध पर नियंत्रण रखें।

सिंह संयत रहें। व्यर्थ के क्रोध एवं वाद-विवाद से बचें। किसी मित्र के सहयोग से सम्पत्ति में किया गया निवेश लाभप्रद रहेगा। मीठे खानपान में रुचि रहेगी।

कन्या संयत रहें। व्यर्थ के क्रोध से बचें। दाम्पत्य सुख में वृद्धि होगी। कुटुम्ब की किसी बुजुर्ग महिला से धन मिल सकता है। लंबे समय से रुके हुए कार्य पूरे होंगे।

तुला वाणी में मधुरता रहेगी। वस्त्रों के प्रति रुझान बढ़ सकता है। कुटुम्ब-परिवार में धार्मिक कार्य होंगे। मान-सम्मान की प्राप्ति होगी। आय में वृद्धि होगी।

वृश्चिक मन परेशान रहेगा। आत्मविश्वास में कमी आयेगी। बातचीत में संयत रहें। जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। भागदौड़ अधिक रहेगी।

धनु क्रोध के अतिरेक से बचें। परिवार के साथ किसी धार्मिक स्थान पर जा सकते हैं। कारोबार में किसी मित्र के सहयोग से लाभ में वृद्धि होगी।

मकर व्यर्थ के क्रोध से बचें। माता के स्वास्थ्य का ध्यान रखें। पिता का साथ मिलेगा। बौद्धिक कार्यों में सम्मान की प्राप्ति होगी। सेहत का ध्यान रखें।

कुंभ आत्मविश्वास तो भरपूर रहेगा। परन्तु आत्मसंयत रहें। क्रोध के अतिरेक से बचें। धार्मिक संगीत में रुचि बढ़ सकती है। धार्मिक आयोजनों में हिस्सा लेंगे।

मीन मन प्रसन्न रहेगा। कर्मक्षेत्र में परिवर्तन हो सकता है। परिश्रम अधिक रहेगा। स्थान परिवर्तन भी हो सकता है। शैक्षिक कार्यों में सफलता मिलेगी।

मेरे जीवन को संवारने में महिलाओं की अहम भूमिका : अदाणी

एजेंसी ▶▶| नई दिल्ली

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर अदाणी समूह के चेयरमैन गौतम अदाणी ने रविवार को उन महिलाओं के प्रति आभार व्यक्त किया, जिन्होंने उनके जीवन और सफर को संवारा है। उन्होंने कहा कि उनकी सफलता की नींव उन मूल्यों और समर्थन पर टिकी है, जो उन्हें अपने परिवार से मिला। लिंकडइन पर लिखे एक लेख में अदाणी ने अपनी मां शांताबेन अदाणी के प्रभाव को याद किया। उन्होंने बताया कि कैसे बचपन में मां द्वारा सुनाई गई रामायण जैसे महाकाव्यों की कहानियों ने उनमें साहस, त्याग और कर्तव्य के मूल्यों को स्थापित किया।

बहुओं की प्रशंसा : अदाणी ने अपनी बहुओं, परिधि अदाणी (करण अदाणी की पत्नी) और दीवा अदाणी (जीत अदाणी की पत्नी) की प्रशंसा करते हुए कहा कि वे परिवार में /''नया दृष्टिकोण और नयी ऊर्जा/'' लेकर आई हैं। साथ ही उन्होंने अपनी पोतियों से मिलने वाली खुशी का भी उल्लेख किया।

अदाणी ने परिवार को दिया धन्यवाद

अदाणी ने कहा कि जीवन की सबसे मजबूत नींव कंक्रीट या स्टील से नहीं, बल्कि उन लोगों से बनती है जो हमें एक व्यक्तित्व प्रदान करते हैं। अदाणी ने अपनी मां को संस्कार देने के लिए, पत्नी प्रीति को उनका पथ-प्रदर्शक (विवेक) बनने के लिए, अपनी दोनों बहुओं परिधि और दीवा को परिवार में शक्ति, प्रतिभा और नया दृष्टिकोण लाने के लिए धन्यवाद दिया।

पत्नी की भूमिका की सराहना

अदाणी ने अपनी पत्नी प्रीति अदाणी की भूमिका की भी सराहना की, जिन्होंने दंत चिकित्सा का करियर छोड़कर 'अदाणी फाउंडेशन' का नेतृत्व संभाला। चेयरमैन ने बताया कि 'अदानी फाउंडेशन' आज देश के 22 राज्यों में शिक्षा, स्वास्थ्य और आजीविका जैसे क्षेत्रों में सक्रिय है और अब तक एक करोड़ से अधिक लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव ला चुका है।

अभियुक्त की हाजिरी की अपेक्षा करने वाली उद्घोषणा

धारा 82 Cr.P.C. देखिए

मेरे समक्ष परिवाद किया गया है कि अभियुक्त **राजेश, पुत्रः** जग राम, **पताः** बाल्मीकि मोहल्ला, ग्राम रानीखेड़ा, दिल्ली, ने **FIR No.: 288/2005 U/s 506(2)/34 IPC थानाः कंझावला, दिल्ली** के अधीन दण्डनीय अपराध किया है (या संदेह है कि उसने किया है), और उस पर जारी किए गए गिरफ्तारी के वारण्ट को यह लिख कर लौटा दिया गया है कि उक्त अभियुक्त **राजेश,** मिल नहीं रहा हैं और मुझे समाधानप्रद रूप में दर्शित कर दिया गया है कि उक्त अभियुक्त **राजेश,** फरार हो गया है (या उक्त वारण्ट की तामील से बचने के लिए अपने आप को छिपा रहा हैं)।

इसलिए इसके द्वारा उद्घोषणा की जाती है कि **FIR No.: 288/2005 U/s 506(2)/34 IPC थानाः कंझावला, दिल्ली** के उक्त अभियुक्त **राजेश,** से अपेक्षा की जाती है कि वे इस न्यायालय के समक्ष (या मेरे समक्ष) उक्त परिवाद का उत्तर देने के लिए दिनांक **08.04.2026** को या इससे पहले हाजिर हो।

आदेशानुसार
श्री अपूर्व भारद्वाज
जेएमएफसी–02, कमरा नंबर 113
रोहिणी कोर्ट, दिल्ली

DP/3010/RD/2026
(Court Matter)

शब्द पहेली - 6159

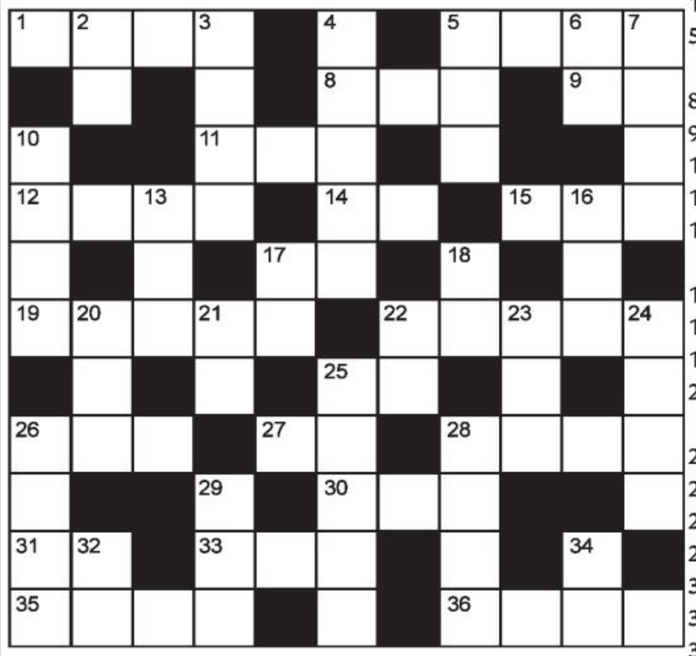

बाएँ से दाएँ
1.आदत से मजबूर–4
5.एक वाद्य यंत्र (अंग्रेजी–4)
8.हवा,समीर–3
9.रुष्ट,गुस्सा होना–2
11.सफेद,श्वेत–3
12.हमेशा,सदैव–4
14.मस्तूल, नाव पर बांधा जाने वाला कपड़ा–2
15.सिर्फ,महज–3
17.अनाज का कण–2
19.आधुनिक,नया–5
22.एक प्रकार का मसाला, अजमोदा–5
25.सदैव–2
26.ध्वजा–3
27.अधिकार–2
28.असमकक्ष–4
30.चिलमन,नकाब–3
31.वायु रोग–2
33.नल,टोंटी–3
35.आवश्यकता–4
36.शमशीर–4

ऊपर से नीचे
2.राजनीतिक पार्टी–2
3.नीच,अपराधी–4
4.बिजली कौंधना–5
5.बंदर,मर्कट–3
6.जूं का अंडा–2
7.दक्षता,होशियारी–4
10.उपकार,दया भार–4
13.कुचलना,दबाना–3
16.आमदनी–3
17.मूल्य,कीमत–2
18.वाद्य यंत्र–2
20.बहादुरी–3
21.इस पर रोटी सेंकते हैं–2
22.नाज,नखरा–2
23.उत्तराधिकारी–3
24.आधुनिकता–4
25.झिझकना–5
26.हौसला, ताकत–4
28.शत्रुता,दुश्मनी–4
29.हूर,परी,अप्सरा (उर्दू–3)
32.पेड़,दरख्त–2
34.औषधि–2

शब्द पहेली- 6158 का हल

	सो	नि	या	गां	धी		म	हा	न	ता
खा	ना		प		र	क्ष	क		म	ल
ना		म	न	सि	ज		र	ग		भे
ब	ला	त			वा	दा		म	ह	ल
दो		दा		क	ला		आ		व	
श	य	न	क	क्ष		दि	शा	ही	न	ता
	म		प		ह	ल		न		क
का	ज	ल		शा	म			त	ह	त
म		त	य		व	फा	दा	र		व
चो	र		की	म	त		म		का	र
र	म	जा	न		न	य	न	ज	ल	

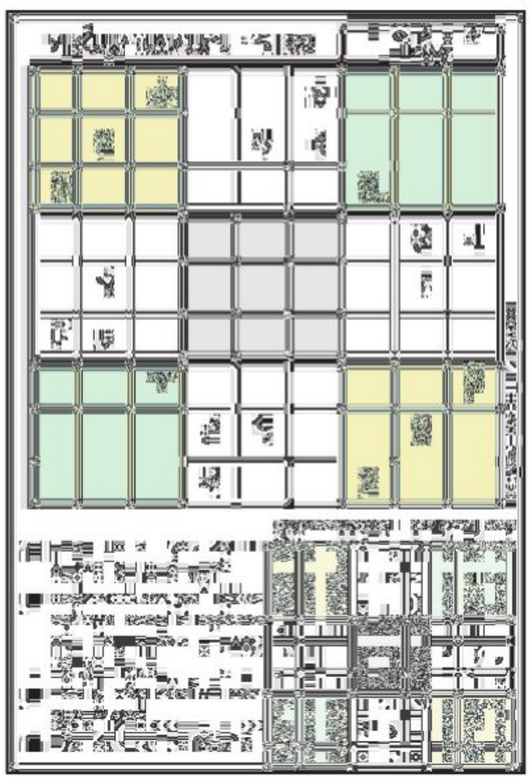

जंग के मोर्चे

जब दो या अधिक देशों के बीच युद्ध का मोर्चा खुलता है, तो उसका असर सिर्फ इस रूप में सामने नहीं आता कि एक-दूसरे पर किए गए हमले के नतीजे में जानमाल की व्यापक क्षति होती है। बल्कि जंग के लंबा खिंचने पर कई स्तरों पर जरूरी सामग्री की आपूर्ति बाधित होती है और नतीजतन बाजार में लगभग सभी चीजों की कीमतें तेजी से बढ़ने लगती हैं। ईरान पर इजराइल और अमेरिका के साझा हमले के बाद जिस बात का डर था, उसकी शुरुआत अब हो चुकी है। यानी जो देश इस जंग में शामिल नहीं हैं, उन तक भी इसकी आंच पहुंचनी शुरू हो चुकी है। हाल ही में भारत के शेयर बाजार पर भी इसका असर देखा गया, जहां बड़ी गिरावट की वजह से निवेशकों को लगभग उन्नीस लाख करोड़ रुपए का नुकसान हुआ। चूंकि युद्ध की तीव्रता में फिलहाल कोई नरमी नहीं देखी जा रही है, इसलिए यह स्थिति अभी कायम रहने की आशंका है। मगर इससे इतर अब युद्ध का असर देश के आम लोगों के घर के दरवाजे तक पहुंचना शुरू हो चुका है। मसलन, रसोई गैस की कीमत में साठ रुपए की बढ़ोतरी कर दी गई है। कच्चे तेल की आपूर्ति बाधित होने की वजह से भारत सहित अन्य कई देशों को नए रास्तों की ओर देखना पड़ रहा है। इस बीच कच्चे तेल की कीमतों के सौ डालर प्रति बैरल तक पहुंचने की आशंका जताई जा रही है।

अंदाजा लगाया जा सकता है कि बाजार के इस रुख का असर कहां तक जा सकता है और अगर युद्ध लंबा खिंचा, तो वैसे देशों में कैसी मुश्किल पैदा होगी, जहां की अर्थव्यवस्था और जीवनयापन का एक बड़ा हिस्सा बाहर से आपूर्ति पर निर्भर है। इजराइली हमले के बाद प्रतिक्रिया में ईरान ने जो रुख अख्तियार किया है, उससे पहले ही कई मुख्य तेल उत्पादक देशों में असुरक्षा का माहौल है। फिर होर्मुज जलडमरूमध्य से गुजरने वाले जहाजों के रास्ते को ईरान ने जिस तरह बाधित कर दिया है, उससे दुनिया के एक बड़े हिस्से में तेल की आपूर्ति प्रभावित होगी। होर्मुज की नाकाबंदी की वजह से उस इलाके में फंसे जहाजों को लंबा रास्ता तय करना होगा। भारत के सामने ही स्थिति यह है कि इसके पास अगले छह से आठ हफ्ते का तेल भंडार है। स्वाभाविक ही भारत को अब तेल के लिए अन्य वैकल्पिक स्रोतों की ओर देखना होगा।

राहत की बात यह है कि एक ओर रूस ने भारत को तेल बेचने की पेशकश की, तो दूसरी ओर अमेरिका ने भी इस मसले पर नरम रुख अपनाया है। इसके बावजूद पश्चिम एशिया में चल रहे इस युद्ध का असर केवल वैश्विक स्तर पर तेल और गैस के बाजारों पर ही नहीं पड़ा है, बल्कि तनाव में बढ़ोतरी कई बड़े उद्योगों के लिए भी चिंता का कारण बन रहा है, क्योंकि इस क्षेत्र के लिए कच्चे माल की आपूर्ति भी बाधित हो रही है। खासतौर पर तेल की कीमतों में भारी उछाल आना और इसका असर बाजार में अन्य लगभग सभी सामान पर पड़ना तय माना जा रहा है। दरअसल, इसके समांतर माल ढुलाई के महंगा होने की वजह से सब्जियों से लेकर दूसरी कई जरूरी चीजों के दाम भी बढ़ेंगे। निश्चित रूप से इससे प्रभावित देशों को अपने स्तर पर विकल्प और समाधान निकालने की जरूरत है। मगर सवाल है कि क्या युद्ध में शामिल देशों को इस बात की फिक्र है कि उनकी वजह से दुनिया भर में आम लोगों के सामने अपनी अनिवार्य जरूरतें पूरी करने के लिए जद्दोजहद के कितने मोर्चे खुल गए हैं।

ताक पर नियम

अस्पताल सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं का महत्त्वपूर्ण केंद्र होते हैं। इसी आधार पर निजी अस्पतालों के निर्माण के लिए सरकार की ओर से रियायती दर पर जमीन उपलब्ध कराई जाती है। मगर इसमें कुछ नियम-शर्तें भी लागू होती हैं, जिनमें आर्थिक रूप से कमजोर तबके के लोगों के लिए तयशुदा सीमा में मुफ्त इलाज की सुविधा भी शामिल है। मगर इन नियमों का पूरी तरह पालन हो रहा है या नहीं, इसकी चिंता शायद ही सरकार या अस्पताल प्रबंधन को होती है। यही वजह है कि सर्वोच्च न्यायालय ने हाल ही में देश की राजधानी दिल्ली के 51 अस्पतालों को नोटिस भेजकर नियमों का पालन नहीं करने पर कारण स्पष्ट करने को कहा है। साथ ही पूछा है कि क्यों न उनके खिलाफ अवमानना की कार्रवाई शुरू की जाए। ऐसे में सवाल है कि जो जिम्मेदारी सरकार की है, वह कार्य शीर्ष अदालत को क्यों करना पड़ रहा है? आखिर क्या वजह है कि नियमों की अनदेखी को सरकारी तंत्र में गंभीरता से नहीं लिया जा रहा है?

दरअसल, केंद्र सरकार ने वर्ष 2012 में एक नीति लागू की थी, जिसके तहत दिल्ली में गरीब लोगों के लिए निजी अस्पतालों में मुफ्त इलाज की सुविधा का प्रावधान था। इसके मुताबिक, निजी अस्पतालों के निर्माण के लिए इस आधार पर रियायती दर पर जमीन उपलब्ध कराई जाएगी कि उनके आंतरिक रोगी विभाग में कम-से-कम दस फीसद और बाह्य रोगी विभाग में पच्चीस फीसद गरीबों का निशुल्क उपचार किया जाएगा। वर्ष 2018 में सर्वोच्च न्यायालय ने रियायत पर जमीन लिए दिल्ली के सभी निजी अस्पतालों को सरकार के इन नियमों का सख्ती से पालन करने का निर्देश दिया था। इसके बावजूद अगर कोताही बरती जा रही है, तो इसके लिए कौन जिम्मेदार है? जाहिर है, निजी अस्पतालों में नियमों के अनुसार गरीबों को स्वास्थ्य सुविधाएं मिलें, यह सुनिश्चित करने की प्राथमिक जिम्मेदारी सरकार की है। और अगर अदालती निर्देश के बाद भी सरकारी तंत्र तथा निजी अस्पताल इस मसले को गंभीरता से नहीं लेते हैं, तो इसे किस रूप में देखा जाएगा? ऐसे में जरूरी है कि लापरवाही बरतने वाले अधिकारियों की जवाबदेही तय कर उनके खिलाफ उचित कार्रवाई की जाए, ताकि व्यवस्था पर आम लोगों का भरोसा बना रहे।

विकास के सफर में सूक्ष्मजीवों का साथ

देश में आज भी सड़कें, पुल, उद्योग और निवेश के आंकड़े मुख्य रूप से प्रगति के पैमाने माने जाते हैं। ऐसे समय में केरल ने एक जीवाणु को आधिकारिक रूप से 'राज्य सूक्ष्मजीव' घोषित किया है, जिसे विज्ञान को नीति और समाज के बीच सेतु बनाने की कोशिश के रूप में देखा जा रहा है।

मणिमाला शर्मा

देश में विकास की परिभाषा अब भी बड़े ढांचों के इर्द-गिर्द घूमती है। सड़कें, पुल, उद्योग और निवेश के आंकड़े प्रगति के पैमाने माने जाते हैं। ऐसे समय में केरल ने एक ऐसा कदम उठाया है, जो इस प्रचलित समझ से अलग और नई संभावनाओं की राह दिखाता है। हाल ही में केरल देश का पहला राज्य बन गया है, जिसने किसी जीवाणु को आधिकारिक रूप से 'राज्य सूक्ष्मजीव' घोषित किया है। एक ऐसा सुक्ष्म जीव, जिसे नंगी आंखों से नहीं देखा जा सकता है, वह अब राज्य की पहचान का हिस्सा बन गया है। यह कदम केवल एक औपचारिक घोषणा भर नहीं है, बल्कि इसे विज्ञान को नीति और समाज के बीच सेतु बनाने की कोशिश के रूप में देखा जा रहा है।

इसमें दोराय नहीं कि भारतीय समाज में 'जीवाणु' शब्द आज भी लोगों के भीतर डर पैदा करता है। स्वच्छता अभियानों और स्वास्थ्य चेतावनियों ने इसे बीमारी फैलाने वाले तत्त्व के रूप में स्थापित कर दिया है। नतीजा यह हुआ कि सूक्ष्म जीवों की पूरी दुनिया हमारे लिए संदेह, भय और घृणा का सूचक बन गई। जबकि सच्चाई इससे कहीं अलग है। विकासवाद के सिद्धांत पर गौर करें, तो धरती पर जीवन की शुरुआत ही सूक्ष्मजीवों से हुई। मिट्टी की उर्वरता, पौधों का पोषण, जल शुद्धिकरण, मानव पाचन तंत्र और प्रतिरक्षा प्रणाली, सब कहीं न कहीं जीवाणुओं पर निर्भर हैं। सभी तरह के जीवाणु समस्या पैदा नहीं करते, बल्कि समस्या हमारी अधूरी और एकांगी समझ है। केरल सरकार का यह कदम इसी मानसिकता को बदलने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण प्रयास माना जा रहा है। यह सूक्ष्म जीवों को समाज में व्याप्त भय के दायरे से बाहर निकालकर समझ के दायरे में लाने की कोशिश है।

दरअसल, केरल सरकार ने आधिकारिक तौर पर 'बैसिलस सबटिलिस' नामक जीवाणु को 'राज्य सूक्ष्मजीव' घोषित किया है। यह छड़ के आकार का एक लाभकारी जीवाणु है, जो मिट्टी में पाया जाता है और कृषि तथा जैव-प्रौद्योगिकी अनुसंधान में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। राज्यों की ओर से समय-समय पर राज्य का पशु, पक्षी या वृक्ष घोषित किया जाता है, जो केवल सांस्कृतिक औपचारिकता मात्र नहीं होता है, बल्कि इसके जरिए समाज को यह बताया जाता है कि प्रकृति तथा पारिस्थितिकी तंत्र के किन हिस्सों, तत्त्वों और संसाधनों की पहचान एवं संरक्षण जरूरी है। ये प्रतीक शिक्षा और चेतना के माध्यम बनते हैं। केरल में 'राज्य सूक्ष्मजीव' की अवधारणा इसी परंपरा का विस्तार है। फर्क बस इतना है कि यह प्रतीक नंगी आंखों से दिखाई नहीं देता। यह कदम बताता है कि अब संरक्षण और सम्मान की परिभाषा को केवल दृश्य जगत तक सीमित नहीं रखा जा सकता। यह विज्ञान को सार्वजनिक विमर्श का हिस्सा बनाने का प्रयास है।

इसी तरह देखा जाए, तो देश की खेती लंबे समय से रासायनिक खादों और कीटनाशकों पर निर्भर होती जा रही है। शुरुआत में उत्पादन बढ़ा, लेकिन धीरे-धीरे मिट्टी की सेहत बिगड़ती चली गई। लागत बढ़ी, उपज की गुणवत्ता घटी और किसान आर्थिक दबाव में फंसता गया। ऐसे में लाभकारी जीवाणु आधारित खेती एक वैकल्पिक रास्ता दिखाती है।

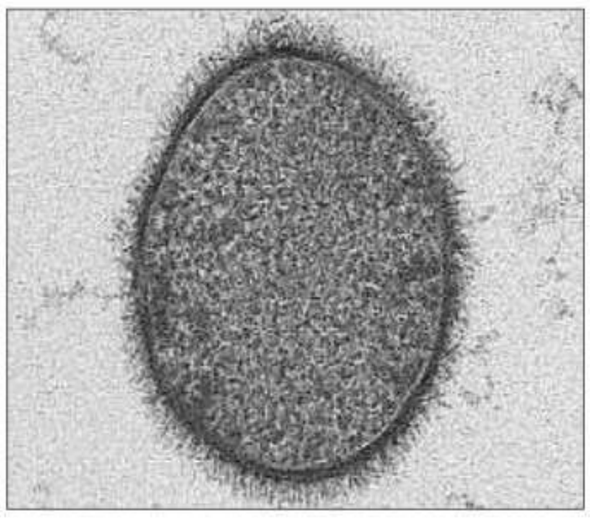

कुछ जीवाणु मिट्टी में नाइट्रोजन स्थिर करते हैं, कुछ पौधों की जड़ों को मजबूत बनाते हैं और कुछ रोगों से लड़ने में मदद करते हैं। यदि केरल इस पहल के जरिए ऐसे सूक्ष्म जीवों की पहचान को बढ़ावा देता है, तो यह खेती को रसायन-निर्भरता से बाहर निकालने की दिशा में ठोस कदम हो सकता है। केरल का यह कदम कृषि को प्रकृति और विज्ञान के साझा रास्ते पर वापस लाने की संभावना पैदा करता है।

> आत्मनिर्भर भारत की चर्चा अक्सर उद्योग और तकनीक तक सीमित रह जाती है। मगर असली आत्मनिर्भरता तब आएगी, जब भोजन, स्वास्थ्य और तकनीक जैसी जरूरतों को पूरा करने के लिए देश की बाहरी निर्भरता घटेगी। ऐसे में लाभकारी जीवाणु आधारित समाधान सस्ते, स्थानीय और टिकाऊ हो सकते हैं। केरल का यह कदम आत्मनिर्भरता की उसी जैविक व्याख्या की ओर इशारा करता है, जिसमें ज्ञान और प्रकृति सबसे बड़े संसाधन हैं। हो सकता है कि आम नागरिक के लिए इसका असर तुरंत महसूस न हो, लेकिन लंबे समय में इसके परिणाम आम जीवन से जुड़ने की पूरी संभावना है।

आधुनिक चिकित्सा अब यह मानने लगी है कि शरीर को केवल दवाओं से स्वस्थ नहीं रखा जा सकता। मानव शरीर खुद एक जटिल सूक्ष्मजीव तंत्र है। पाचन, प्रतिरक्षा और यहां तक कि मानसिक स्वास्थ्य में भी जीवाणुओं की भूमिका पर लगातार शोध हो रहे हैं। केरल, जो पहले ही सार्वजनिक स्वास्थ्य माडल के लिए जाना जाता है, वह इस पहल के जरिए स्वास्थ्य को अस्पताल और दवा-केंद्रित सोच से आगे ले जाने का संकेत देता है। यह पहल त्वरित नतीजे नहीं दे सकती, लेकिन लंबे समय में समाज को अधिक संतुलित और आत्मनिर्भर बना सकती है।

प्रदूषण, कचरा और जल संकट आज विकास की सबसे बड़ी कीमत बन चुके हैं। इनके समाधान अक्सर महंगे और तकनीक-निर्भर होते हैं। लेकिन प्रकृति के भीतर ही कुछ ऐसे सूक्ष्म समाधान मौजूद हैं, जिन पर हम ध्यान कम ही देते हैं। कुछ जीवाणु गंदे पानी को साफ करने, जैविक कचरे को विघटित करने और प्रदूषकों को निष्क्रिय करने में सक्षम होते हैं। केरल जैसे राज्य में, जहां जल संसाधन और जैव विविधता दोनों अहम हैं, ऐसे समाधान पर्यावरण नीति का हिस्सा बन सकते हैं। यह पहल पर्यावरण संरक्षण को नारे से निकालकर व्यावहारिक धरातल पर लाने की संभावना से भरी है। मगर यहां एक सवाल यह भी उठ रहा है कि कहीं यह पहल केवल कागजों पर प्रतीक बनकर न रह जाए, क्योंकि भारत में प्रतीकों की कमी नहीं है, लेकिन उन्हें जमीन पर उतारने की इच्छाशक्ति अक्सर कमजोर पड़ जाती है। यदि 'राज्य सूक्ष्मजीव' की घोषणा भी केवल अधिसूचना और समारोह तक सीमित रह गई, तो यह हमारे लिए अवसर चूकने जैसा होगा। इस पहल की असली परीक्षा तब होगी, जब इसे शिक्षा, शोध और नीति से जोड़ा जाएगा। स्कूलों के पाठ्यक्रम, विश्वविद्यालयों के शोध और किसानों एवं पर्यावरण से संबंधित योजनाओं में इसका उपयोग तय करेगा कि यह प्रयोग कितना असरदार साबित हो सकता है।

आत्मनिर्भर भारत की चर्चा अक्सर उद्योग और तकनीक तक सीमित रह जाती है। मगर असली आत्मनिर्भरता तब आएगी, जब भोजन, स्वास्थ्य और तकनीक जैसी जरूरतों को पूरा करने के लिए देश की बाहरी निर्भरता घटेगी। ऐसे में लाभकारी जीवाणु आधारित समाधान सस्ते, स्थानीय और टिकाऊ हो सकते हैं। केरल का यह कदम आत्मनिर्भरता की उसी जैविक व्याख्या की ओर इशारा करता है, जिसमें ज्ञान और प्रकृति सबसे बड़े संसाधन हैं। हो सकता है कि आम नागरिक के लिए इसका असर तुरंत महसूस न हो, लेकिन लंबे समय में इसके परिणाम आम जीवन से जुड़ने की पूरी संभावना है। इस योजना का उद्देश्य लोगों को यह संदेश देना होना चाहिए कि बेहतर मिट्टी, सुरक्षित भोजन, स्वच्छ जल और संतुलित स्वास्थ्य के साथ-साथ एक ऐसे समाज का निर्माण करना है, जो विज्ञान से डरता नहीं, बल्कि उसे समझने की कोशिश करता है। इस तरह यह पहल नई पीढ़ी को सिखा सकती है कि जीवन केवल दिखाई देने वाली चीजों से ही नहीं चलता, बल्कि उन सूक्ष्म तंत्रों से भी चलता है, जिन्हें हम अक्सर नजरअंदाज कर देते हैं। केरल सरकार की ओर से एक जीवाणु को 'राज्य सूक्ष्मजीव' घोषित करने का फैसला आज नया लग सकता है, लेकिन यह भविष्य के लिए नई संभावनाओं को बल देता है। यह याद दिलाता है कि कभी-कभी सबसे बड़े बदलाव वहीं से शुरू होते हैं, जहां हमारी नजर कम जाती है। अगर यह पहल गंभीरता से आगे बढ़ती है, तो देश में वैज्ञानिक चेतना और पर्यावरणीय समझ के विस्तार का मार्ग प्रशस्त हो सकता है।

अहं का दुश्चक्र

अशोक कुमार

मानवीय वृत्तियों के अनेक स्वरूप हैं, जिसके नेपथ्य में अच्छाई और बुराई के बीच हमारे दैनिक आचरण संचालित होते हैं। मानव जीवन में सबसे बड़ी जंग बाहरी दुनिया की कठिनाइयों से नहीं, बल्कि हमारे अंतर्मन में उठने वाले तूफानों से होती हैं। ऐसा देखा जाता है कि सामाजिक प्रक्षेत्र की विभिन्न प्रकार की घटनाओं से उत्पन्न परिस्थितियां प्रायः हमारे नियंत्रण से बाहर होती हैं, लेकिन हमारे चेतन मन में छिपी सकारात्मक ऊर्जा इतनी शक्तिशाली है कि वह प्रतिकूल चिंतन धाराओं को अनुकूलता में बदल सकती है। दैनिक जीवन की गतिविधियां हमें बार-बार ऐसी स्थितियों में डालती हैं, जहां हमारी शक्ति, हमारे साधन, यहां तक कि हमारा धैर्य भी जवाब देने लगता है, पर मानव होने का अर्थ ही यह है कि हम उन परिस्थितियों से ऊपर उठने की क्षमता भी रखते हैं, जो जिंदगी में सबसे ज्यादा चुनौतीपूर्ण होती है। बाहरी स्थितियां कभी-कभी हमारी सीमाएं बेशक तय कर सकती हैं, लेकिन यह निर्णय हमेशा हमारा होता है कि हम उन परिस्थितियों के प्रति कैसा चिंतन दृष्टिकोण रखते हैं और उसे किस रूप में परखते हैं।

हमारा विवेक यह स्वीकार करता है कि हम दर्द से नहीं टूटते, बल्कि हम बिना उद्देश्य और लक्ष्य के दर्द से टूट जाते हैं। जब हमें ज्ञात होता है कि हमें क्यों जीना है, कैसे जीना है, तो इसका मार्ग हमारा विवेक तय करता है। भौतिक संसार की प्रतिकूल धाराओं पर विजय का ध्वज फहराने वाले हम प्राणी कभी-कभी खुद के भीतर के संघर्षों से थक-हार भी जाते हैं। मन में संचालित द्वंद्व और संशय, कभी अपने किसी काम, निर्णय, अतीत या अनुभव को लेकर अपने को कोसने लगते हैं। किसी पीड़ा का दंश जब मन के किसी कोने में पड़ाव बना लेता है, तो हमारा चेतन मन विवेक के अस्तित्व की गहराई को झकझोरने लगता है।

व्यक्तित्व की परिधि में स्वाभिमान की शक्ति जहां स्वयं जीवन पथ में सुगमता और सरलता के पुष्प बिछाती हैं, वहीं 'अहं' यानी 'इगो' के तरंग मस्तिष्क मंडल में आत्मकेंद्रित सह आत्ममुग्धता के भाव का बीजारोपण करते हैं। यह आचरण व्यक्ति के मस्तिष्क में एक दिन में स्थान नहीं ग्रहण करता, बल्कि क्रमशः इसकी वृद्धि हमारे आसपास सामाजिक तथा पारिवारिक परिवेश की घटनाओं के कारण होती है। कुछ लोग मानते हैं कि अहं व्यक्ति के स्वभाव का वह अक्षय अंश है, जिससे मुक्ति कठिन है, लेकिन किसी आकस्मिक घटना, प्रेरणा या अध्ययन के कारण इस भाव का तिरोधान संभव भी हो जाता है। इसका एक पक्ष हमारे आत्मसम्मान, आत्मविश्वास और आत्म-प्रगति को दर्शाता है, जो हमें अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित भी करता है। दूसरी ओर, यह हमें अहंकार और स्वार्थ के सांचे में ढालते हुए आत्मश्लाघा के आंगन की यात्रा भी करा देता है। यह हमें अपने दायित्व के बारे में सकारात्मकता की उपस्थिति कराते हुए अपने लक्ष्यों, अधिकारों और जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक भी करता है।

अहं के अपने नुकसान भी हैं। यह हमें एकपक्षीय प्रवृत्ति की ओर प्रवृत्त करते हुए हमारे पारिवारिक या सामाजिक रिश्ते में विघ्न भी उत्पन्न करता है, जिसके कारण हम अपने लक्ष्य-मार्ग से भटक जाते हैं। यह वृत्ति हमें कभी-कभी दूसरों की भावनाओं, अपेक्षाओं और जरूरतों को नजरअंदाज करने के लिए विवश कर देता है, जिससे आपसी संबंधों के सेतु कमजोर हो जाते हैं। पैर जमाए अहं की वजह से हम दूसरों के साथ अपने संबंध सामान्य बनाए रखने में विफल इसलिए होते हैं, क्योंकि हठी स्वभाव की वजह से हम अपनी बातें उन्हें मानने पर अधिक जोर देते हैं, बिना यह विचारे कि अपनी बातों में तथ्य और दम कितना धरातलीय है। अहं के वशीभूत होने से हम अपनी गलतियों को स्वीकारने की स्थिति से विमुख होकर सामने वाले के समक्ष कुतर्क गढ़कर आत्म-प्रवंचना से ग्रस्त हो जाते हैं, जिससे हम आगे बढ़ने के बजाय पीछे रह जाते हैं। यह मानसिक स्थिति हमें अंदर से अधिक दबाव और तनाव के साये में रोके रहता है, क्योंकि हम हर समय अपनी कृत्रिम छवि बनाए रखने की आभासी कोशिश करते रहते हैं, बिना यह सोचे कि हमारे व्यक्तित्व की अच्छाई की कसौटी पर कैसा आकलन किया जा रहा है।

दुनिया मेरे आगे

> अहं के वहम का शिकार होने पर हम दूसरों से सीखने की प्रवृत्ति और क्षमता भी खो देते हैं, क्योंकि यह हमें निष्पक्ष वैचारिक चिंतन धुरी से अलग कर देता है। सवाल यह है कि अहं यानी मिथ्या मर्यादा की कमजोर कड़ी को धीरे-धीरे नियंत्रित करते हुए उसे समूल नष्ट कैसे किया जाए।

अहं के वहम का शिकार होने पर हम दूसरों से सीखने की प्रवृत्ति और क्षमता भी खो देते हैं, क्योंकि यह हमें निष्पक्ष वैचारिक चिंतन धुरी से अलग कर देता है। सवाल यह है कि अहं यानी मिथ्या मर्यादा की कमजोर कड़ी को धीरे-धीरे नियंत्रित करते हुए उसे समूल नष्ट कैसे किया जाए। इसके लिए आत्मावलोकन एक प्रभावकारी मानसिक अवस्था मानी गई है, जहां इस प्रवृति के एक-एक तार को तोड़ने की जरूरत है। हालांकि यह एक जटिल और धैर्यपूर्ण अभ्यास है, लेकिन प्रबल इच्छाशक्ति के सहारे इससे निवारण के यत्न किए जा सकते हैं। हर इंसान के मस्तिष्क कोश में असीम क्षमताएं निहित हैं, जिसके सकारात्मक गुण से व्यक्ति अपने भीतर व्याप्त अहं के कणों को बाहर निकालने में सफल हो सकता है। इस चेष्टा से व्यक्ति खुद को शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक तौर पर उन्नत करने का अतिरिक्त गुण भी विकसित करने की सामर्थ्य दिखा सकता है। जब हम अपने विचारों और मन पर नियंत्रण करने का अभ्यास शुरू करना चाहते हैं, तो बाह्य भौतिक उपसर्गों से निवृत्ति पाना भी प्रारंभ कर लेते हैं। यह सिलसिला हमें अपने व्यक्तित्व में अनुकूल क्षमता के स्रोत ढूंढ़ने में सहायक होता है। आज जब कृत्रिम बुद्धिमता के नूतन संस्करण में हमारे जीवन की गतिविधियां तीव्र रूप में सम्मिलित हो रही हैं, तो पुरखों द्वारा निर्मित नैसर्गिक मानवीय प्रवृत्तियों के कुछ भूले-भटके सूत्रों में से अहं जैसे प्रतिकूल सूत्र को विसर्जित करने का प्रयास करें। इससे हमारे सामाजिक ताने-बाने के तत्त्वों की पुनर्स्थापना के द्वार खुल सकेंगे।

सत्ता की छाया

विद्यालय की पाठ्यपुस्तकें किसी भी राष्ट्र की सामूहिक स्मृति और भविष्य की दिशा तय करती हैं। जब इन्हीं पुस्तकों की सामग्री बार-बार विवादों में घिरने लगे, तो सवाल केवल एक अध्याय का नहीं रह जाता, बल्कि शिक्षा की आत्मा का हो जाता है। हाल के वर्षों में एनसीईआरटी की किताबों में किए गए बदलाव, चाहे वे इतिहास के प्रसंगों का संक्षेपण हों, संवेदनशील घटनाओं का लोप हो या वैचारिक संतुलन में परिवर्तन, ये इस आशंका को जन्म देते हैं कि कहीं पाठ्यक्रम तथ्य से अधिक विचारधारा का वाहक तो नहीं बनता जा रहा। किसी भी लोकतंत्र में शिक्षा का उद्देश्य आलोचनात्मक चेतना विकसित करना होता है, न कि पूर्वनिर्धारित निष्कर्षों को स्थापित करना। यदि राजनीतिक, धार्मिक या संस्थागत दबावों के तहत सामग्री बदली जाती है, तो यह न केवल शैक्षणिक स्वायत्तता पर प्रश्नचिह्न है, बल्कि विद्यार्थियों के बौद्धिक अधिकारों पर भी आघात है। तथ्य असुविधाजनक हो सकते हैं, परंतु उन्हें हटाना समाधान नहीं है। इतिहास को काट-छांट कर प्रस्तुत करने से वह सरल अवश्य दिख सकता है, किंतु सत्य से विद्यार्थियों को वंचित कर देता है।

– मो अजहर आलम अंसारी, पूर्णिया

जागरूकता की जरूरत

'अंधविश्वास की मार' (संपादकीय, 2 मार्च) तार्किक एवं विचारणीय है। दुर्भाग्य की बात है कि कोई भी इस गंभीर मुद्दे पर विचार नहीं करता, बल्कि इसी पुराने ढर्रे पर लोग चलते रहते हैं। इसकी वजह यह है कि हमारे माहौल में धर्म के नाम पर जनता के जेहन में इतना खौफ भर दिया जाता है कि न चाहते हुए भी लोग शातिरों के जाल में फंस जाते हैं। दरअसल, इतनी शैक्षिक और वैज्ञानिक प्रगति के बाद भी हम अंधविश्वास की मार झेल रहे हैं, तो कहीं न कहीं हमारी शिक्षा में दोष है। दुख तो तब होता है, जब अशिक्षित तो छोड़िए, पढ़े-लिखे और समाज का मार्गदर्शन करने वाले भी इस जाल में फंसे हुए रहते हैं। इस मार से बाहर निकालने के लिए स्कूलों में 'अंधविश्वास' के खिलाफ एक अनिवार्य विषय प्राथमिक कक्षाओं से पढ़ाया जाना चाहिए। अंधविश्वास के विरुद्ध जब तक चेतना जागृत नहीं होंगी, तब तक असहाय लोगों का शोषण होता रहेगा। नई पीढ़ी को भी जागरूक करना होगा।

– हेमा हरि उपाध्याय 'अक्षत', उज्जैन

गहराता संकट

मध्य प्रदेश में जल संकट अब चेतावनी से आगे बढ़ कर आपदा का रूप ले रहा है। सिवनी जिले में मार्च की शुरुआत में ही स्थिति इतनी गंभीर हो गई है कि प्रशासन इसे जल अभावग्रस्त घोषित करने की तैयारी कर रहा है। बांधों का जलस्तर तेजी से गिर रहा है और भूजल एकदम निचले स्तर तक जा चुका है। आदिवासी इलाकों में महिलाएं और बच्चे कई किलोमीटर दूर से पानी ढोने को मजबूर हैं, जबकि कई पेयजल योजनाओं के नलकूप सूख चुके हैं। उधर, इंदौर, भोपाल और उज्जैन जैसे शहरों में दूषित पानी से नागरिकों की मौत की घटनाएं व्यवस्था की कमजोरियों को ही उजागर करती हैं। इंदौर का भागीरथपुरा कांड इसका बड़ा उदाहरण है। राष्ट्रीय हरित पंचाट और उच्च न्यायालय के निर्देशों के बावजूद पाइपलाइन और सीवर में खामियां बनी हुई हैं। यदि अभी जल संरक्षण, वर्षा जल संचयन और पेयजल ढांचे में सुधार नहीं हुआ, तो यह संकट राज्यव्यापी आपदा में बदल सकता है।

– आरके जैन 'अरिजीत', बड़वानी

मानवता के विरुद्ध

वर्तमान समय में विश्व शांति गंभीर संकट के दौर से गुजर रही है। एक ओर रूस-यूक्रेन जंग चल रही है, वहीं दूसरी ओर अमेरिका-इजराइल और ईरान के बीच युद्ध ने पूरी दुनिया को चिंतित कर दिया है। कुछ ही दिनों के हमलों में कई लोगों की जान जाने की खबरें सामने आ चुकी हैं। किसी भी युद्ध का प्रभाव केवल युद्धरत देशों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि उसका असर पूरी दुनिया की राजनीति, अर्थव्यवस्था और सामाजिक जीवन पर पड़ता है। अमेरिका-ईरान संघर्ष से वैश्विक स्तर पर तेल की कीमतों में अस्थिरता, व्यापार में बाधा और सुरक्षा संबंधी चिंताएं बढ़ गई हैं। युद्ध कभी भी किसी समस्या का स्थायी समाधान नहीं है। इसमें सबसे बड़ी हार मानवता की होती है। ऐसी स्थिति में अंतरराष्ट्रीय समुदाय की प्रमुख शक्तियों की जिम्मेदारी है कि वे संवाद, कूटनीति और समझदारी से इस युद्ध को रोकने का प्रयास करें।

– हिमांशु शेखर, गयाजी